माओ त्सेतुङ
की
संकलित रचनाएं

ग्रन्थ ३

★

माओ त्सेतुङ की संकलित रचनाएं ३

दुनिया के मजदूरो, एक हो!

माओ त्सेतुङ की संकलित रचनाएं

ग्रन्थ ३

विदेशी भाषा प्रकाशन-गृह
पेकिङ १९७५

पहला संस्करण १९७५

यह ग्रन्थ जन प्रकाशन-गृह, पेकिङ द्वारा १९६८ में प्रकाशित "माओ त्सेतुङ की संकलित रचनाएं", ग्रन्थ ३ के चीनी संस्करण का हिन्दी अनुवाद है। विदेशी भाषा संस्करण की आवश्यकता के अनुसार नोटों में कुछ फेर-बदल किए गए हैं।

चीन लोक गणराज्य में मुद्रित

विषय-सूची

जापानी-आक्रमण-विरोधी युद्ध का काल (२)

जापानी-आक्रमण-विरोधी युद्ध का काल (२)

"देहातों की जांच-पड़ताल" की प्रस्तावना और पश्चलेख

मार्च और अप्रैल १९४१

प्रस्तावना

१७ मार्च १९४१

पार्टी की मौजूदा ग्रामीण नीति इस समय भूमि-क्रान्ति की नीति नहीं है जैसी कि वह दस वर्ष के गृहयुद्ध के दौरान थी, बल्कि आज वह जापान-विरोधी राष्ट्रीय संयुक्त मोर्चे का निर्माण करने की ग्रामीण नीति है। समूची पार्टी को चाहिए कि वह ७ जुलाई और २५ दिसम्बर १९४० के केन्द्रीय कमेटी के निर्देशों[१] और आगामी सातवीं राष्ट्रीय कांग्रेस के निर्देशों पर अमल करे। कामरेडों को समस्याओं का अध्ययन करने का तरीका निकालने में मदद देने के उद्देश्य से निम्नलिखित सामग्री प्रकाशित की जा रही है। हमारे बहुत से कामरेडों का काम करने का ढंग अब भी अपरिपक्व और लापरवाहीपूर्ण है, वे चीजों को अच्छी तरह समझने की कोशिश नहीं करते और यहां तक कि वे नीचे के स्तर की परिस्थितियों से बिलकुल अनभिज्ञ हैं, परन्तु फिर भी वे कार्य-संचालन की जिम्मेदारी सम्भाले हुए हैं। यह एक अत्यन्त ही खतरनाक स्थिति है।

चीनी समाज में विभिन्न वर्गों की वास्तविक स्थितियों के बारे में सही मायनों में ठोस ज्ञान हासिल किए बिना कोई भी नेतृत्व सचमुच अच्छा नहीं हो सकता।

परिस्थिति की जानकारी प्राप्त करने का एकमात्र तरीका यह है कि सामाजिक जांच-पड़ताल की जाए, हर सामाजिक वर्ग के वास्तविक जीवन की परिस्थिति की जांच-पड़ताल की जाए। जिन लोगों के कन्धों पर कार्य-संचालन की जिम्मेदारी है, उनके लिए परिस्थिति की जानकारी प्राप्त करने का बुनियादी तरीका यह है कि वे एक योजना के मुताबिक चन्द शहरों और देहातों में अपना ध्यान केन्द्रित करके मार्क्सवाद के बुनियादी दृष्टिकोण को, यानी वर्ग-विश्लेषण के तरीके को इस्तेमाल करते हुए कई बार पूरी जांच-पड़ताल करें। सिर्फ इसी तरह हम चीन की सामाजिक समस्याओं के बारे में सर्वाधिक प्रारम्भिक ज्ञान प्राप्त कर सकते हैं।

ऐसा करने के लिए पहले नीचे देखना चाहिए, अपना सिर उठाकर आसमान की तरफ ही नहीं देखना चाहिए। जब तक कोई व्यक्ति नीचे देखने में दिलचस्पी नहीं रखता और ऐसा करने के लिए संकल्पबद्ध नहीं रहता, तब तक वह जिन्दगीभर चीन की हालत सही मायनों में नहीं समझ सकता।

दूसरे, जांच-पड़ताल मीटिंगें करनी चाहिए। निश्चय ही, सिर्फ इधर-उधर नजर घुमाने और सुनी-सुनाई बातों से किसी चीज के बारे में सर्वांगीण ज्ञान प्राप्त नहीं किया जा सकता। हुनान प्रान्त और चिङकाङशान से सम्बन्धित जो सामग्री मैंने जांच-पड़ताल मीटिंगों के जरिए प्राप्त की थी, वह खो गई है। यहां जो सामग्री प्रकाशित की गई है वह मुख्यतया "शिङक्वो की जांच-पड़ताल", "छाङकाङ श्याङ की जांच-पड़ताल" और "छाएशी श्याङ की जांच-पड़ताल" की सामग्री है। जांच-पड़ताल मीटिंगें करना सबसे आसान, सबसे अधिक व्यावहारिक और सबसे अधिक विश्वसनीय तरीका है जिससे मैंने बहुत लाभ उठाया है; यह किसी भी विश्वविद्यालय से बेहतर विद्यालय है। इन मीटिंगों में भाग लेने वाले लोग मध्यम या निम्न रैंकों के सही मायनों में अनुभवी कार्यकर्ता, अथवा साधारण लोग होने चाहिए। हुनान प्रान्त की पांच काउन्टियों और चिङकाङशान की दो काउन्टियों की जांच-पड़ताल के दौरान मैं प्रत्येक काउन्टी के मध्यम रैंक के जिम्मेदार कार्यकर्ताओं से मिला; श्युनऊ की जांच-पड़ताल के समय मैं मध्यम और निम्न रैंकों के कुछ कार्यकर्ताओं, एक गरीब श्यूछाए[१], एक व्यापारी संघ के दिवालिया भूतपूर्व प्रेसिडेन्ट, और काउन्टी की मालगुजारी वसूल करने के काम के इनचार्ज एक सेवाच्युत छोटे क्लर्क से मिला। इन सभी लोगों ने मुझे बहुत सी ऐसी बातें बताईं जो मैंने इसके पहले कभी नहीं सुनी थीं। जिस आदमी ने पहली बार मेरे सामने चीनी जेलों की गिरी हुई हालत की पूरी तस्वीर रखी वह एक साधारण जेलर था जिससे मेरी मुलाकात हुनान प्रान्त की हङशान काउन्टी की जांच-पड़ताल के दौरान हुई थी। शिङक्वो काउन्टी और छाङकाङ व छाएशी श्याङों की अपनी जांच-पड़ताल के दौरान मैं श्याङ के स्तर पर काम करने वाले कामरेडों और साधारण किसानों से मिला। ये कार्यकर्ता, किसान, श्यूछाए, जेलर, व्यापारी और मालगुजारी-क्लर्क सभी मेरे आदरणीय शिक्षक थे और उनके शिष्य के रूप में मुझे उनके प्रति बड़ा सम्मान-जनक, मेहनती तथा कामरेडों जैसा रवैया अपनाना पड़ता था;

अन्यथा वे मेरी तरफ ध्यान न देते, और जानकारी रखते हुए भी वे मुझे न बताते, या अगर बताते भी तो पूरी तरह से नहीं बताते। जांच-पड़ताल के लिए ज्यादा बड़ी मीटिंगें करने की जरूरत नहीं है; तीन से पांच या सात अथवा आठ लोगों की मीटिंगें काफी हैं। इसमें काफी समय लगाना चाहिए और जांच-पड़ताल के लिए एक रूपरेखा तैयार कर लेनी चाहिए; यही नहीं, हमें खुद भी सवाल पूछने चाहिए, जो कुछ बताया जाए उसे नोट करना चाहिए, और मीटिंग में मौजूद लोगों के साथ विचार-विनिमय करना चाहिए। इसलिए यह बात निश्चित है कि हम तब तक जांच-पड़ताल नहीं कर सकते या अच्छी तरह से नहीं कर सकते, जब तक हमारे अन्दर उत्साह पैदा नहीं हो जाता, अपनी नजर नीचे की तरफ रखने का संकल्प पैदा नहीं हो जाता और ज्ञान-पिपासा पैदा नहीं हो जाती, तथा जब तक हम मिथ्याभिमान का लबादा उतारकर एक जिज्ञासु शिष्य नहीं बन जाते। यह समझ लेना जरूरी है कि जन-समुदाय ही सच्चे वीर होते हैं, जबकि हम खुद अक्सर बड़े बचकाने और अनजान साबित होते हैं; इस बात को समझे बिना अत्यन्त प्रारम्भिक किस्म का ज्ञान प्राप्त करना भी असम्भव है।

मैं इस बात को दोहराना चाहूंगा कि इस सन्दर्भ-सामग्री को प्रकाशित करने का हमारा मुख्य उद्देश्य है निम्न स्तर पर मौजूद हालतों का पता लगाने के लिए एक तरीका बतलाना; इसका उद्देश्य यह नहीं है कि साथी लोग विशिष्ट सामग्री और उससे निकाले गए नतीजों को कंठस्थ कर लें। सामान्य तौर पर, चीन का शिशु पूंजीपति वर्ग सामाजिक परिस्थितियों के बारे में न तो अभी तक कोई अपेक्षाकृत सांगोपांग या यहां तक कि कोई प्रारम्भिक

सामग्री पेश कर सका है और न ही कभी कर पाएगा, जैसा कि योरप, अमरीका और जापान के पूंजीपति वर्ग ने किया है; इसलिए हमारे पास सामाजिक परिस्थितियों के बारे में खुद ही सामग्री जुटाने के अलावा और कोई चारा नहीं है। खास तौर पर, व्यावहारिक काम करने वाले लोगों को चाहिए कि वे बदलती हुई परिस्थिति की जानकारी हमेशा हासिल करते रहें, और यह एक ऐसा काम है जिसके लिए किसी भी देश की कम्युनिस्ट पार्टी दूसरों पर निर्भर नहीं रह सकती। इसलिए, व्यावहारिक काम करने वाले हर व्यक्ति को नीचे के स्तर में जाकर स्थितियों की जांच-पड़ताल करनी चाहिए। इस प्रकार की जांच-पड़ताल करना खास तौर पर उन लोगों के लिए जरूरी है जो सिद्धान्त को तो जानते हैं लेकिन वास्तविक स्थितियों को नहीं जानते, क्योंकि इसके बिना वे सिद्धान्त को व्यवहार के साथ नहीं मिला पाएंगे। हालांकि मेरे इस कथन को कि "बिना जांच-पड़ताल किए किसी को बोलने का हक नहीं है" "संकीर्ण अनुभववाद" का नाम देकर उसकी खिल्ली उड़ाई गई है, फिर भी आज तक मुझे अपने इस कथन पर जरा भी अफसोस नहीं; अफसोस करना तो दूर रहा, उल्टे मैं आज भी यह बात डंके की चोट पर कहता हूं कि जिसने जांच-पड़ताल न की हो, उसे बोलने का हक कतई हासिल नहीं हो सकता। बहुत से लोग ऐसे हैं जो "सरकारी गाड़ी से नीचे उतरते ही" शोरगुल मचाने लगते हैं, अन्धाधुन्ध रायजनी करने लगते हैं, किसी चीज की नुक्ताचीनी करने लगते हैं तो किसी चीज की निन्दा; लेकिन दरअसल ऐसे सभी लोगों को असफलता का मुंह देखना पड़ता है। क्योंकि जो विचार और जो आलोचनाएं पूरी जांच-पड़ताल पर आधारित

नहीं हैं, वे महज फिजूल की बकवास हैं। इन "शाही दूतों" की मेहरबानी से, जो जहां-तहां दौड़ते फिरते हैं, हमारी पार्टी को अनगिनत मौकों पर नुकसान उठाना पड़ा है। स्तालिन ने ठीक ही कहा है, "सिद्धान्त को यदि क्रान्तिकारी व्यवहार से न मिलाया जाए तो वह निरुद्देश्य साबित होता है।" उन्होंने आगे कहा है और ठीक ही कहा है, "अगर हमारे व्यवहार का रास्ता क्रान्तिकारी सिद्धान्त के जरिए रोशन नहीं किया जाएगा, तो हमारा व्यवहार अंधेरे में भटकता रहेगा।"[३] किसी भी व्यक्ति पर "संकीर्ण अनुभववादी" का लेबिल नहीं लगाना चाहिए, सिर्फ उस "व्यावहारिक व्यक्ति" को छोड़कर, जो अंधेरे में भटकता रहता है तथा दिशा-ज्ञान और दूरदर्शिता नहीं रखता।

आज भी मैं इस बात की सख्त जरूरत महसूस करता हूं कि मैं चीन तथा विश्व के मामलों के बारे में पूरी तरह छान-बीन करूं ; इसका सम्बन्ध चीनी मामलों तथा विश्व मामलों के बारे में मेरे खुद के ज्ञान की कमी से है और इसका मतलब यह नहीं है कि मैं हर चीज जानता हूं और दूसरे लोग अनभिज्ञ हैं। यह मेरी आकांक्षा है कि मैं शिष्य बना रहूं, और दूसरे पार्टी-कामरेडों के साथ मिलकर जन-समुदाय से सीखता रहूं।

पश्चलेख

१९ अप्रैल १९४१

दस वर्ष के गृहयुद्ध काल में प्राप्त किया गया अनुभव मौजूदा जापानी-आक्रमण-विरोधी युद्ध के काल के लिए सबसे अच्छा और

अत्यन्त उपयुक्त है। लेकिन इसका ताल्लुक सिर्फ इस बात से है कि हम किस प्रकार अपने आपको जन-समुदाय के साथ पूरी तरह सम्बद्ध करें और उसे दुश्मन के खिलाफ गोलबन्द करें, न कि कार्यनीतिक कार्यदिशा से। पार्टी की वर्तमान कार्यनीतिक कार्यदिशा पहले की कार्यनीतिक कार्यदिशा से उसूली तौर पर भिन्न है। पहले, पार्टी की कार्यनीतिक कार्यदिशा जमींदारों और प्रतिक्रान्तिकारी पूंजीपति वर्ग का विरोध करने की थी ; अब, यह उन तमाम जमींदारों और पूंजीपति वर्ग के सदस्यों के साथ जो जापान का प्रतिरोध करने के खिलाफ न हों, एकता स्थापित करने की है। दस वर्ष के गृहयुद्ध के अन्तिम काल में भी, एक तरफ तो प्रतिक्रियावादी सरकार और राजनीतिक पार्टी के प्रति जो हमारे ऊपर सशस्त्र आक्रमण कर रही थीं और दूसरी तरफ हमारे खुद के शासन के अन्तर्गत पूंजीवादी स्वरूप वाले तमाम सामाजिक तबकों के प्रति भिन्न-भिन्न नीतियां न अपनाना गलत था ; साथ ही प्रतिक्रियावादी सरकार तथा राजनीतिक पार्टी के भीतर मौजूद अलग-अलग गुटों के प्रति अलग-अलग नीतियां न अपनाना भी गलत था। उस समय, किसानों तथा शहरी निम्न-पूंजीपति वर्ग के निचले तबके को छोड़कर समाज के सभी तबकों के प्रति "केवल संघर्ष" की नीति अपनाई गई थी, जो निस्सन्देह एक गलत नीति थी। भूमि-नीति में, दस वर्ष के गृहयुद्ध के आरम्भिक काल तथा मध्य काल[४] में अपनाई गई उस सही नीति का खण्डन करना भी गलत था जिसके अन्तर्गत जमींदारों को भी उतनी ही जमीन बांटी गई थी जितनी किसानों को, ताकि वे खेती के काम में लगे रहें और विस्थापित न हो जाएं या डाकू बनकर पहाड़ों में न चले जाएं और सार्वजनिक व्यवस्था को तहस-नहस

न कर दें। पार्टी की नीति अब अवश्य ही भिन्न है; अब वह "केवल संघर्ष और बिलकुल संश्रय नहीं" की नीति नहीं है और न ही वह "केवल संश्रय और बिलकुल संघर्ष नहीं" की नीति है (जैसा कि १९२७ का छन तू-श्यूवाद था), बल्कि अब यह एक ऐसी नीति है जिसके अन्तर्गत जापानी-साम्राज्यवाद-विरोधी सभी सामाजिक तबकों के साथ एकता स्थापित की जाती है, उनके साथ संयुक्त मोर्चा कायम किया जाता है, लेकिन उनके अन्दर मौजूद ढुलमुलपन और प्रतिक्रिया-वादीपन के खिलाफ, जो दुश्मन के सामने आत्मसमर्पण करने और कम्युनिस्ट पार्टी व जनता का विरोध करने में अभिव्यक्त होते हैं, अलग-अलग मात्रा के अनुसार अलग-अलग रूप में संघर्ष चलाया जाता है। मौजूदा नीति एक दोहरी नीति है जिसमें "संश्रय" और "संघर्ष" का सम्मिश्रण है। श्रम-नीति में, यह एक तरफ मजदूरों के रहन-सहन के स्तर को समुचित रूप से ऊंचा करने और दूसरी तरफ पूंजीवादी अर्थव्यवस्था के मुनासिब विकास को नुकसान न पहुंचाने की दोहरी नीति है। भूमि-नीति में, यह एक तरफ जमींदारों से लगान व सूद कम करवाने और दूसरी तरफ किसानों से यह कम किया गया लगान व सूद अदा करवाने की दोहरी नीति है। राजनीतिक अधिकारों के क्षेत्र में, यह जापान-विरोधी जमींदारों और पूंजीपतियों को भी मजदूरों और किसानों के समान व्यक्तिगत अधिकार, राजनीतिक अधिकार और सम्पत्ति सम्बन्धी अधिकार देने, लेकिन साथ ही उनके द्वारा की जाने वाली सम्भावित प्रति-क्रान्तिकारी कार्यवाहियों की रोकथाम करने की दोहरी नीति है। राजकीय तथा सहकारी अर्थव्यवस्था का विकास किया जाना चाहिए, परन्तु देहाती आधार-क्षेत्रों में मुख्य आर्थिक तत्व आज राजकीय

नहीं बल्कि निजी मिलकियत है, और अपनी अर्थव्यवस्था के गैर-इजारेदाराना पूंजीवादी तत्व को विकसित होने का मौका देना चाहिए और इसे जापानी साम्राज्यवाद तथा अर्ध-सामन्ती व्यवस्था के खिलाफ इस्तेमाल करना चाहिए। आज चीन के लिए यह सबसे ज्यादा क्रान्तिकारी नीति है, इसका विरोध करना या इसके अमल में रोड़े अटकाना निस्सन्देह एक भूल होगी। पार्टी-सदस्यों की कम्युनिस्ट शुद्धता को बड़ी संजीदगी से और दृढ़ता के साथ कायम रखना, और सामाजिक अर्थव्यवस्था के पूंजीवादी तत्व के लाभदायक हिस्से का बचाव करना तथा उसको उपयुक्त ढंग से विकसित होने देना, ये दोनों ही जापानी-आक्रमण-विरोधी युद्ध के काल में तथा एक जनवादी गणराज्य के निर्माण के काल में हमारे लिए अनिवार्य कार्य हैं। हो सकता है कि इस काल में कुछ कम्युनिस्ट पूंजीपति वर्ग द्वारा आचरण-भ्रष्ट कर दिए जाएं और पार्टी-सदस्यों के बीच पूंजीवादी विचार अपना सर उठाने लगें, उस समय हमें इन पतित विचारों के खिलाफ संघर्ष करना चाहिए; लेकिन हमें पार्टी के अन्दर पूंजीवादी विचारों के खिलाफ किए जाने वाले संघर्ष को गलती से सामाजिक अर्थव्यवस्था के क्षेत्र में ले जाकर अर्थव्यवस्था के पूंजीवादी तत्व का विरोध नहीं करना चाहिए। हमें दोनों के बीच एक स्पष्ट विभाजन-रेखा खींच लेनी चाहिए। चीनी कम्युनिस्ट पार्टी एक जटिल वातावरण में काम कर रही है, हर एक पार्टी-सदस्य और विशेषकर हर कार्यकर्ता को चाहिए कि वह अपने को तपाकर एक ऐसा योद्धा बना ले जो अच्छी तरह मार्क्सवादी कार्यनीति को समझता हो। समस्याओं के प्रति

एकतरफापन और अतिसरलता का रुख कभी भी क्रान्ति को विजय की ओर नहीं ले जा सकता।

नोट

[1] ७ जुलाई १९४० का केन्द्रीय कमेटी का निर्देश "चीनी कम्युनिस्ट पार्टी की केन्द्रीय कमेटी का वर्तमान परिस्थिति तथा पार्टी की नीति के बारे में निर्णय" ही है। २५ दिसम्बर १९४० का केन्द्रीय कमेटी का निर्देश "माओ त्सेतुङ की संकलित रचनाएं", ग्रन्थ २ में सम्मिलित "नीति के बारे में" नामक लेख है।

[2] श्युछाए पुराने चीन में शाही परीक्षाओं में सबसे नीचे की डिग्री प्राप्त करने वाला व्यक्ति होता था।

[3] जे० वी० स्तालिन, "लेनिनवाद के आधारभूत सिद्धान्त" के तीसरे भाग से उद्धृत।

[4] दस वर्ष के गृहयुद्ध का आरम्भिक काल १९२७ के आखिरी दिनों से १९२८ के आखिरी दिनों तक था, जो आम तौर पर चिङकाङशान काल कहलाता है; मध्य काल १९२९ के आरम्भ से लेकर १९३१ के शरद तक रहा, अर्थात केन्द्रीय लाल आधार-क्षेत्र की स्थापना के समय से "घेरा डालने और विनाश करने" की मुहिम के खिलाफ तीसरी जवाबी मुहिम के विजयपूर्वक समाप्त होने तक; और अन्तिम काल १९३१ के आखिरी दिनों से १९३४ के आखिरी दिनों तक यानी तीसरी जवाबी मुहिम के विजयपूर्वक समाप्त होने के समय से लेकर पार्टी की केन्द्रीय कमेटी द्वारा क्वेइचओ प्रान्त के चुनई नामक स्थान में बुलाई गई राजनीतिक ब्यूरो की विस्तृत मीटिंग के समय तक का काल था। जनवरी १९३५ में आयोजित चुनई मीटिंग ने पार्टी के भीतर "वामपंथी" अवसरवादी कार्यदिशा के प्रभुत्व को, जो १९३१ से १९३४ तक चला आ रहा था, समाप्त कर दिया तथा पार्टी में फिर से सही कार्यदिशा की स्थापना कर दी।

अपने अध्ययन में सुधार करो*

मई १९४१

मेरी राय है कि हमें अपनी समूची पार्टी में अध्ययन के तरीके और अध्ययन की प्रणाली में सुधार करना चाहिए। इसके कारण इस प्रकार हैं :

१

चीनी कम्युनिस्ट पार्टी के बीस वर्ष ऐसे बीस वर्ष रहे हैं जिनके दौरान मार्क्सवाद-लेनिनवाद की सर्वव्यापी सच्चाई को चीनी क्रान्ति के ठोस व्यवहार के साथ अधिकाधिक मात्रा में मिलाया गया है। अगर हम इस बात का स्मरण करें कि हमारी पार्टी के शैशव काल में मार्क्सवाद-लेनिनवाद और चीनी क्रान्ति के बारे में

---

* यह कामरेड माओ त्सेतुङ द्वारा येनान में आयोजित कार्यकर्ताओं की एक बैठक में पेश की गई रिपोर्ट है। यह रिपोर्ट तथा "पार्टी की कार्यशैली में सुधार करो" और "घिसेपिटे पार्टी-लेखन का विरोध करो" शीर्षक दो लेख दोष-निवारण आन्दोलन के बारे में कामरेड माओ त्सेतुङ की बुनियादी रचनाएं हैं। इन रचनाओं में कामरेड माओ त्सेतुङ ने आगे बढ़कर विचारधारात्मक स्तर पर, पार्टी की कार्यदिशा के बारे में अतीत काल में पार्टी के अन्दर मौजूद मतभेदों का निचोड़

हमारी समझ कितनी सतही और कितनी कम थी, तो हम यह देख सकते हैं कि उस समय की तुलना में आज वह कितनी ज्यादा गहरी और भरपूर है। विपत्तिग्रस्त चीनी राष्ट्र के श्रेष्ठतम सपूतों ने एक ऐसे सत्य की तलाश में जो देश और जनता का उद्धार कर सके, एक सौ साल तक संघर्ष किया और अपने प्राणों का बलिदान किया तथा शहीद हुए लोगों की जगह लेने नए-नए लोग आगे बढ़ते रहे। इस बात से हम इतने प्रभावित होते हैं कि हमें खुशी भी होती है और गम भी। किन्तु एक सर्वोपरि सत्य के रूप में और अपने राष्ट्र को मुक्त कराने के लिए सर्वोत्तम हथियार के रूप में मार्क्सवाद-लेनिनवाद का पता हमें केवल प्रथम विश्वयुद्ध और रूस की अक्तूबर क्रान्ति के बाद ही चला। और चीनी कम्युनिस्ट पार्टी इस हथियार को इस्तेमाल करने में एक प्रवर्तक, प्रचारक और संगठनकर्ता रह चुकी है। चीनी क्रान्ति के ठोस व्यवहार के सम्पर्क में आते ही मार्क्सवाद-लेनिनवाद की सर्वव्यापी सच्चाई ने चीनी क्रान्ति को एक बिलकुल नए रंग में रंग दिया। जापानी-आक्रमण-विरोधी युद्ध की शुरुआत से ही हमारी पार्टी ने मार्क्सवाद-लेनिनवाद की सर्वव्यापी सच्चाई को आधार बनाकर, इस युद्ध के ठोस व्यवहार के बारे में तथा आज के चीन और विश्व के बारे में अपने अध्ययन

निकाला तथा निम्न-पूंजीपति वर्ग की विचारधारा की उस कार्यशैली का विश्लेषण किया जो मार्क्सवाद-लेनिनवाद का नकाब पहनकर पार्टी में फैल गई थी और जिसकी अभिव्यक्ति मुख्य रूप से मनोगतवादी व संकीर्णतावादी रुझानों में होती थी, तथा इन दोनों रुझानों को व्यक्त करने का ढंग घिसापिटा पार्टी-लेखन था। मार्क्सवाद-लेनिनवाद के विचारधारात्मक उसूलों के अनुरूप कार्यशैली में सुधार करने के लिए, कामरेड माओ त्सेतुङ ने मार्क्सवादी-लेनिनवादी शिक्षा का पार्टी-

को और आगे बढ़ाया है तथा चीनी इतिहास के अध्ययन की शुरुआत भी कर दी है। ये सभी अत्यन्त शुभ लक्षण हैं।

२

लेकिन हमारे अन्दर अब भी खामियां मौजूद हैं और काफी बड़ी खामियां मौजूद हैं। मेरी राय में, जब तक हम इन खामियों को दूर नहीं कर लेते, तब तक हम अपने काम में तथा मार्क्सवाद-लेनिनवाद की सर्वव्यापी सच्चाई को चीनी क्रान्ति के ठोस व्यवहार के साथ मिलाने के अपने महान कार्य में आगे की ओर कदम नहीं उठा सकते।

पहले, वर्तमान परिस्थिति के अध्ययन के प्रश्न को लीजिए। वर्तमान घरेलू और अन्तरराष्ट्रीय परिस्थिति के बारे में अपने अध्ययन में हमने कुछ सफलता जरूर प्राप्त की है, लेकिन उनके प्रत्येक पहलू के बारे में, चाहे वह राजनीतिक, सैनिक, आर्थिक या सांस्कृतिक कोई भी पहलू क्यों न हो, हमारी जैसी बड़ी राजनीतिक पार्टी के लिए जो सामग्री हमने इकट्ठी की है, वह आंशिक है, तथा जो अनुसन्धान कार्य हमने किया है, वह अव्यवस्थित है।

व्यापी आन्दोलन चलाने का आवाहन किया। उनके इस आवाहन के फलस्वरूप पार्टी के अन्दर और बाहर सर्वहारा विचारधारा और निम्न-पूंजीपति वर्ग की विचारधारा के बीच तुरन्त एक भारी वाद-विवाद छिड़ गया। इससे पार्टी के अन्दर और बाहर सर्वहारा विचारधारा की स्थिति सुदृढ़ बन गई तथा कार्यकर्ताओं की व्यापक पांतों ने विचारधारा की दृष्टि से आगे की ओर एक भारी कदम बढ़ाया और पार्टी की एकता एक अभूतपूर्व स्तर पर पहुंच गई।

आम तौर से यह कहा जा सकता है कि इन पहलुओं के बारे में सामग्री इकट्ठी करने और उसका अध्ययन करने की दिशा में हमने पिछले बीस वर्षों में सुव्यवस्थित रूप से और मुकम्मिल तौर पर काम नहीं किया है तथा वस्तुगत यथार्थ की जांच-पड़ताल करने और उसका अध्ययन करने के वातावरण का हमारे बीच अभाव रहा है। "आंखों में पट्टी बांधकर गौरैया पकड़ने वाले व्यक्ति" की भांति या "मछली टटोलने वाले अन्धे व्यक्ति" की भांति आचरण करना, अधकचरेपन और लापरवाही से काम लेना, निरर्थक शब्दजाल का प्रयोग करते रहना, केवल सतही ज्ञान से सन्तुष्ट हो जाना – ऐसी है वह बेहद खराब कार्यशैली, जिसे हमारी पार्टी के अनेक साथी अब भी अपनाए हुए हैं, एक ऐसी कार्यशैली, जो मार्क्सवाद-लेनिनवाद की बुनियादी भावना के बिलकुल विरुद्ध है। मार्क्स, एंगेल्स, लेनिन और स्तालिन ने हमें सिखाया है कि परिस्थितियों का संजीदगी से अध्ययन करना तथा मनोगत इच्छाओं को नहीं बल्कि वस्तुगत यथार्थ को आधार बनाना आवश्यक है; किन्तु हमारे अनेक साथी इस सत्य का प्रत्यक्ष रूप से उल्लंघन करके कार्य करते हैं।

दूसरे, इतिहास के अध्ययन के प्रश्न को लीजिए। यद्यपि कुछ पार्टी-सदस्यों और हमदर्दों ने इस कार्य की शुरुआत कर दी है, फिर भी इसका संचालन एक सुसंगठित ढंग से नहीं किया गया है। चीन के इतिहास के बारे में, चाहे वह पिछले एक सौ साल का इतिहास हो या पुरातन काल का, अनेक पार्टी-सदस्य अब भी अन्धकार में हैं। अनेक मार्क्सवादी-लेनिनवादी विद्वान प्राचीन यूनान का नाम लिए बिना एक भी शब्द नहीं बोल सकते, किन्तु जहां तक खुद उनके

पूर्वजों का सम्बन्ध है, बड़े खेद के साथ कहना पड़ता है कि उन्हें तो भुलाया ही जा चुका है। वर्तमान परिस्थिति का या अतीत-कालीन इतिहास का गम्भीर अध्ययन करने का वातावरण हमारे कामरेडों के बीच कम मौजूद है।

तीसरे, अन्तरराष्ट्रीय क्रान्तिकारी अनुभव का, मार्क्सवाद-लेनिनवाद की सर्वव्यापी सच्चाई का अध्ययन करने के प्रश्न को लीजिए। ऐसा प्रतीत होता है कि अनेक साथी मार्क्सवाद-लेनिनवाद का अध्ययन क्रान्तिकारी व्यवहार की जरूरतों को पूरा करने के लिए नहीं बल्कि केवल अध्ययन के लिए करते हैं। इसका नतीजा यह होता है कि वे पढ़ते तो हैं, लेकिन उसे हजम नहीं कर पाते। वे मार्क्स, एंगेल्स, लेनिन और स्तालिन के दो-चार उद्धरणों का एकतरफा ढंग से उल्लेखभर कर सकते हैं, किन्तु चीन की वर्तमान परिस्थिति का और उसके इतिहास का ठोस अध्ययन करने के लिए अथवा चीनी क्रान्ति की समस्याओं का ठोस विश्लेषण करने और उनका हल निकालने के लिए मार्क्स, एंगेल्स, लेनिन और स्तालिन के रुख, दृष्टिकोण और तरीके को लागू नहीं कर पाते। मार्क्सवाद-लेनिनवाद के प्रति इस प्रकार का रवैया अपनाना अत्यन्त हानिकारक है, खास तौर से मध्यम और उच्च स्तर के कार्यकर्ताओं के लिए तो यह और भी अधिक हानिकारक है।

जिन तीन पहलुओं का मैंने अभी उल्लेख किया है, यानी वर्तमान परिस्थिति के अध्ययन की उपेक्षा, इतिहास के अध्ययन की उपेक्षा और मार्क्सवाद-लेनिनवाद को लागू करने में उपेक्षा, ये सभी बेहद बुरी कार्यशैली के अंग हैं। इस कार्यशैली के प्रसार से हमारे अनेक साथियों को नुकसान पहुंचा है।

हमारी पांतों में सचमुच ऐसे अनेक साथी मौजूद हैं जो इस कार्यशैली की वजह से सही रास्ते से भटक गए हैं। वे अपने देश, प्रान्त, काउन्टी या जिले के अन्दर और बाहर की ठोस परिस्थितियों की सुव्यवस्थित और मुकम्मिल जांच-पड़ताल और अध्ययन करने को तैयार नहीं होते और केवल हुक्म चलाते हैं, जिसका आधार उनके अत्यन्त अल्प ज्ञान और उनकी इस समझ के अलावा और कुछ नहीं है कि "यह बात ऐसी इसलिए होनी चाहिए क्योंकि मुझे ऐसी ही प्रतीत होती है"। क्या यह मनोगतवादी कार्यशैली हमारे अनेक साथियों के बीच अब भी मौजूद नहीं है?

कुछ लोग ऐसे हैं जो हमारे अपने इतिहास के बारे में कुछ भी जानकारी न रखने या बहुत थोड़ी जानकारी रखने पर लज्जित होने के बजाय गर्व का अनुभव करते हैं। विशेष रूप से गम्भीर बात तो यह है कि ऐसे लोग बहुत ही कम हैं जो चीनी कम्युनिस्ट पार्टी के इतिहास और अफ़ीम युद्ध के बाद से सौ साल के चीन के इतिहास को वास्तव में जानते हैं। शायद ही किसी ने पिछले सौ साल के आर्थिक, राजनीतिक, सैनिक और सांस्कृतिक इतिहास के अध्ययन को गम्भीरतापूर्वक अपने हाथ में लिया हो। कुछ लोग खुद अपने देश के बारे में अनभिज्ञ रहकर केवलमात्र प्राचीन यूनान और अन्य देशों की कथाएं ही सुना सकते हैं, यहां तक कि उनका यह ज्ञान भी अत्यन्त दयनीय होता है, जिसमें पुरानी विदेशी पुस्तकों की जूठन के अलावा और कुछ नहीं होता।

अनेक दशाब्दियों तक, विदेशों से शिक्षा प्राप्त करके स्वदेश लौटने वाले अनेक विद्यार्थी इस बीमारी के शिकार रहे हैं। योरप, अमरीका या जापान से शिक्षा प्राप्त करके स्वदेश लौटने पर वे केवल विदेशी बातों को ही तोते की तरह दोहरा सकते हैं। वे ग्रामोफोन बन जाते हैं तथा नई चीजों को समझने और उनका सृजन करने के अपने कर्तव्य को भुला देते हैं। यह बीमारी कम्युनिस्ट पार्टी के अन्दर भी फैल गई है।

हालांकि हम लोग मार्क्सवाद का अध्ययन करते हैं, लेकिन हमारे बहुत से लोग जिस ढंग से उसका अध्ययन करते हैं वह प्रत्यक्षतः मार्क्सवाद के विपरीत है। कहने का तात्पर्य यह है कि वे मार्क्स, एंगेल्स, लेनिन और स्तालिन द्वारा हमें बड़ी संजीदगी के साथ बताए गए एक बुनियादी उसूल – सिद्धान्त और व्यवहार की एकता – का उल्लंघन करते हैं। इस उसूल का उल्लंघन करके वे खुद अपना एक विपरीत उसूल, यानी सिद्धान्त को व्यवहार से अलग रखने का उसूल गढ़ लेते हैं। स्कूली छात्रों तथा काम में लगे हुए कार्यकर्ताओं को शिक्षा देने में, दर्शनशास्त्र के शिक्षक चीनी क्रान्ति के तर्क का अध्ययन करने के लिए विद्यार्थियों का मार्गदर्शन नहीं करते, अर्थशास्त्र के शिक्षक चीनी अर्थव्यवस्था की विशेषताओं का अध्ययन करने के लिए उनका मार्गदर्शन नहीं करते, राजनीति-शास्त्र के शिक्षक चीनी क्रान्ति की कार्यनीतियों का अध्ययन करने के लिए उनका मार्गदर्शन नहीं करते, सैन्य-विज्ञान के शिक्षक चीन की ठोस विशेषताओं के अनुरूप रणनीति और कार्यनीति का अध्ययन करने के लिए उनका मार्गदर्शन नहीं करते, वगैरह-वगैरह। इसका नतीजा यह होता है कि गलतियां फैलती रहती हैं जिनसे लोगों को भारी नुकसान पहुंचता है। ऐसे व्यक्ति भी हैं जो यह भी नहीं जानते कि येनान में सीखी हुई बात को फ़ूश्येन[१] में कैसे लागू किया जाए। अर्थशास्त्र के प्रोफेसर सीमान्त क्षेत्र की

मुद्रा और क्वोमिन्ताङ-मुद्रा के पारस्परिक सम्बन्ध[२] को नहीं समझा पाते, इसलिए यह स्वाभाविक है कि विद्यार्थी भी इसे नहीं समझा पाते। इस तरह अनेक विद्यार्थियों में एक उल्टी मनोवृत्ति पैदा हो गई है ; चीन की समस्याओं के प्रति दिलचस्पी जाहिर करने और पार्टी के आदेशों पर गम्भीरतापूर्वक अमल करने के बजाय वे लोग अपने शिक्षकों से सीखे गए तथाकथित शाश्वत और अपरिवर्तनशील कठमुल्ला-सूत्रों से ही चिपके रहते हैं।

निस्सन्देह, जो कुछ मैंने अभी कहा है, वह हमारी पार्टी के अन्दर मौजूद बेहद बुरी मिसाल है और मैं यह नहीं कह रहा हूं कि यह व्यापक रूप से मौजूद है। लेकिन इस किस्म के लोग मौजूद अवश्य हैं ; इससे भी बड़ी बात यह है कि वे तादाद में थोड़े भी नहीं हैं, तथा उनसे भारी नुकसान होता है। हमें इस मसले के प्रति हल्का-फुल्का रवैया नहीं अपनाना चाहिए।

३

इस विचार को और अधिक स्पष्ट करने के लिए मैं दो परस्पर विपरीत रवैयों की तुलना करना चाहता हूं।

पहला रवैया मनोगतवादी रवैया है।

इस रवैये को अपनाने वाला व्यक्ति वातावरण का सुव्यवस्थित रूप से और मुकम्मिल तौर पर अध्ययन नहीं करता बल्कि केवल मनोगत भावावेश में आकर कार्य करता है, और उसके दिमाग में आज के चीन की केवल एक धुंधली सी तस्वीर मौजूद रहती है। इस रवैये को अपनाकर वह इतिहास को अलग-अलग टुकड़ों में बांट देता है, वह केवल प्राचीन यूनान के बारे में जानता है और चीन के बारे में अनभिज्ञ रहता है, तथा बीते कल और परसों के चीन के बारे में अन्धकार में है। इस रवैये को अपनाने वाला व्यक्ति अमूर्त रूप से और उद्देश्यहीन होकर मार्क्सवादी-लेनिनवादी सिद्धान्त का अध्ययन करता है। वह मार्क्स, एंगेल्स, लेनिन और स्तालिन के सिद्धान्तों का अध्ययन उनके रुख, दृष्टिकोण और तरीके का पता लगाने के लिए नहीं करता, जिनकी मदद से चीनी क्रान्ति की सैद्धान्तिक और कार्यनीति विषयक समस्याओं का हल निकाला जा सके, बल्कि केवल सिद्धान्त के लिए सिद्धान्त का अध्ययन करता है। वह निशाना साधकर तीर नहीं चलाता बल्कि बगैर निशाना साधे ही तीर चलाता रहता है। मार्क्स, एंगेल्स, लेनिन और स्तालिन ने हमें यह सिखाया है कि वस्तुगत यथार्थ को आधार बनाकर हमें ऐसे नियम निर्धारित करने चाहिए जो हमारी कार्यवाही का मार्ग-दर्शन कर सकें। इस उद्देश्य के लिए, जैसा कि मार्क्स ने कहा है, हमें सामग्री को विस्तार के साथ अपने हाथ में लेना चाहिए तथा उसका वैज्ञानिक विश्लेषण व संश्लेषणात्मक अध्ययन करना चाहिए।[३] हमारे अनेक लोग इस ढंग से कार्य नहीं करते, बल्कि इसका उल्टा करते हैं। उनमें से काफी लोग अनुसन्धान-कार्य में तो लगे हुए हैं लेकिन आज के चीन या अतीत के चीन का अध्ययन करने के प्रति उनकी कोई दिलचस्पी नहीं है, बल्कि उनकी दिलचस्पी केवल उन खोखले "सिद्धान्तों" का अध्ययन करने तक ही सीमित है जिनका वास्तविकता से कोई सम्बन्ध नहीं। बहुत से अन्य लोग व्यावहारिक कार्य में लगे हुए हैं, किन्तु वे भी वस्तुगत परिस्थितियों का अध्ययन करने की ओर कोई ध्यान नहीं देते, बल्कि अक्सर केवल भावावेश

में आकर कार्य करते हैं तथा नीति की जगह अपनी व्यक्तिगत भावनाओं को प्रतिष्ठित कर देते हैं। ये दोनों ही प्रकार के लोग मनोगत तत्व पर निर्भर रहते हैं और वस्तुगत यथार्थ के अस्तित्व को नजरअन्दाज कर देते हैं। भाषण देते समय वे लोग शीर्षकों की लम्बी शृंखला क, ख, ग, घ, १, २, ३, ४ का प्रयोग करते हैं और लेख लिखते समय लम्बी-चौड़ी बातें बघारते हैं। तथ्यों के जरिए सत्य की तलाश करने की कोई इच्छा उनके अन्दर नहीं होती, बल्कि वे केवल वाक्चातुरी के जरिए वाहवाही लूटने के इच्छुक रहते हैं। वे एक ऐसी वस्तु के समान होते हैं जो चमकीली होते हुए भी सारगर्भित नहीं, सख्त होते हुए भी मजबूत नहीं। वे अपने को सदा सही समझते हैं, वे अपने को विश्व में अव्वल दर्जे का धुरन्धर विद्वान और एक ऐसा "शाही दूत" मानते हैं जिसका दखल हर जगह पर होता है। हमारी पांतों में कुछ साथियों की कार्यशैली ऐसी ही है। इस कार्यशैली के जरिए अपना आचरण निर्धारित करने का मतलब है स्वयं अपना नुकसान करना, इसे दूसरे लोगों को सिखाने का मतलब है उन्हें नुकसान पहुंचाना, और इसे क्रान्ति का निर्देशन करने के लिए इस्तेमाल करने का मतलब है क्रान्ति को नुकसान पहुंचाना। संक्षेप में, यह मनोगतवादी तरीका, जो विज्ञान और मार्क्सवाद-लेनिनवाद के विरुद्ध है, कम्युनिस्ट पार्टी का एक बहुत बड़ा दुश्मन है, मजदूर वर्ग का एक बहुत बड़ा दुश्मन है, जनता और हमारे राष्ट्र का एक बहुत बड़ा दुश्मन है ; यह पार्टी-भावना में अशुद्धता की ही अभिव्यक्ति है। एक बहुत बड़ा दुश्मन हमारे सामने खड़ा है और हमें उसको उखाड़ फेंकना है। जब मनोगतवाद को उखाड़ फेंका जाएगा, सिर्फ तभी मार्क्सवाद-लेनिनवाद के सत्य को प्रतिष्ठित

किया जा सकता है, सिर्फ तभी पार्टी-भावना को सुदृढ़ बनाया जा सकता है, सिर्फ तभी क्रान्ति को विजयी बनाया जा सकता है। हमें इस बात को दृढ़ता से कहना चाहिए कि वैज्ञानिक रुख के अभाव अर्थात सिद्धान्त और व्यवहार को मिलाने वाले मार्क्सवादी-लेनिनवादी रुख के अभाव का मतलब यह है कि हमारे अन्दर या तो पार्टी-भावना है ही नहीं अथवा वह बहुत कमजोर है।

इस किस्म के व्यक्ति का चित्रण एक पद्यांश में किया गया है, जो इस प्रकार है :

> दीवार पर उगने वाला नरकट
> —ऊपर से भारी-भरकम,
> किन्तु तना कमजोर, जड़ें छिछली;
> पर्वत पर उगने वाला बांस-अंकुर
> —तेज-नुकीला, मोटी छाल वाला,
> किन्तु अन्दर से खोखला।

क्या यह उन लोगों का हूबहू चित्रण नहीं है जिनमें वैज्ञानिक रुख का अभाव है, जो सिर्फ मार्क्स, एंगेल्स, लेनिन और स्तालिन की रचनाओं के कुछ शब्द और वाक्य रट लेते हैं तथा जिन्हें एक ऐसी प्रतिष्ठा प्राप्त है जिसके पात्र वास्तविक ज्ञान की दृष्टि से वे नहीं हैं। अगर कोई व्यक्ति वास्तव में अपने इस मर्ज का इलाज करना चाहता है, तो मैं उसे यही सलाह दूंगा कि वह इस पद्यांश को याद कर ले, अथवा और ज्यादा साहस दिखाना हो तो इसे अपने कमरे की दीवार पर चिपका ले। मार्क्सवाद-लेनिनवाद एक विज्ञान है, और विज्ञान का मतलब है ईमानदारी से हासिल किया हुआ ठोस

ज्ञान ; इसमें चालबाजी करने की कोई गुंजाइश नहीं है। तो फिर आइए, हम ईमानदार बनें।

दूसरा रवैया मार्क्सवादी-लेनिनवादी रवैया है।

इस रवैये को अपनाने वाले लोग वातावरण की सुव्यवस्थित तथा मुकम्मिल जांच-पड़ताल और अध्ययन करने के लिए मार्क्सवादी-लेनिनवादी सिद्धान्त और तरीके को लागू करते हैं। वे केवल जोश में आकर ही कार्य नहीं करते बल्कि, जैसा स्तालिन ने कहा है, क्रान्तिकारी उत्साह और व्यावहारिकता का समन्वय भी करते हैं।[४] इस रवैये को अपनाकर वे इतिहास को अलग-अलग टुकड़ों में नहीं बांटते। उनके लिए केवल प्राचीन यूनान की जानकारी प्राप्त करना ही काफी नहीं है, बल्कि चीन की जानकारी हासिल करना भी जरूरी है ; उन्हें न केवल विदेशों के क्रान्तिकारी इतिहास की जानकारी हासिल कर लेनी चाहिए, बल्कि चीन के क्रान्तिकारी इतिहास की जानकारी भी हासिल कर लेनी चाहिए, न केवल आज के चीन की बल्कि बीते कल और परसों के चीन की जानकारी भी हासिल कर लेनी चाहिए। इस रवैये को अपनाने वाले लोग एक निश्चित उद्देश्य के लिए, अर्थात चीनी क्रान्ति के वास्तविक आन्दोलन के साथ मार्क्सवाद-लेनिनवाद के सिद्धान्त को मिलाने के लिए तथा इस सिद्धान्त के जरिए चीनी क्रान्ति की सैद्धान्तिक और कार्यनीति विषयक समस्याओं के हल में सहायक रुख, दृष्टिकोण और तरीके का पता लगाने के लिए, मार्क्सवाद-लेनिनवाद का अध्ययन करते हैं। यह रवैया निशाना साधकर तीर चलाने का रवैया है। हमारा "निशाना" है चीनी क्रान्ति और हमारा "तीर" है मार्क्सवाद-लेनिनवाद। हम चीनी कम्युनिस्टों को इस तीर की इसलिए तलाश रही

है कि हम चीनी क्रान्ति के निशाने और पूरब की क्रान्ति के निशाने को बेधना चाहते हैं। इस प्रकार का रवैया अपनाने का मतलब है तथ्यों के जरिए सत्य की तलाश करना। "तथ्यों" में वे समस्त वस्तुएं शामिल हैं जिनका अस्तित्व वस्तुगत रूप से विद्यमान है, "सत्य" का मतलब है उनके अन्दरूनी सम्बन्ध अर्थात उनको संचालित करने वाले नियम, और "तलाश करने" का मतलब है अध्ययन करना। अपने देश, प्रान्त, काउन्टी या जिले के अन्दर और बाहर विद्यमान वास्तविक स्थितियों को आधार बनाकर हमें अपने कार्य का मार्गदर्शन करने वाले नियम निर्धारित करने चाहिए, ऐसे नियम जो वास्तविक स्थितियों के अन्दर निहित हों और काल्पनिक न हों, अर्थात हमें अपने चारों ओर होने वाली घटनाओं के अन्दरूनी सम्बन्धों का पता लगा लेना चाहिए। और ऐसा करने के लिए हमें मनोगत कल्पना पर निर्भर नहीं रहना चाहिए, क्षणिक उत्साह पर निर्भर नहीं रहना चाहिए, निष्प्राण पुस्तकों पर निर्भर नहीं रहना चाहिए, बल्कि ऐसे तथ्यों पर निर्भर रहना चाहिए जिनका अस्तित्व वस्तुगत रूप से विद्यमान हो ; हमें सामग्री को विस्तार से अपने हाथ में लेना चाहिए और मार्क्सवाद-लेनिनवाद के आम उसूलों के मार्गदर्शन में उससे सही निष्कर्ष निकालने चाहिए। इस प्रकार निकाले गए निष्कर्ष क, ख, ग, घ क्रम में घटनाओं की सूचीमात्र, या निरर्थक बातों से भरे हुए लेखमात्र नहीं होते, बल्कि वैज्ञानिक निष्कर्ष होते हैं। इस प्रकार का रवैया तथ्यों के जरिए सत्य की तलाश करने वाला रवैया है और वाक्चातुरी के जरिए वाहवाही लूटने वाला रवैया नहीं है। यह पार्टी-भावना को जाहिर करता है, सिद्धान्त और व्यवहार को मिलाने वाली मार्क्सवादी-

लेनिनवादी कार्यशैली को जाहिर करता है। कम्युनिस्ट पार्टी के प्रत्येक सदस्य को कम से कम यह रवैया अवश्य अपनाना चाहिए। जो व्यक्ति इस रवैये को अपनाता है, वह न तो "ऊपर से भारी-भरकम, किन्तु कमजोर तने और छिछली जड़ों" वाला होता है और न ही "तेज-नुकीला, मोटी छाल वाला, किन्तु अन्दर से खोखला" होता है।

४

उपर्युक्त विचारों के अनुरूप मैं ये सुझाव पेश करना चाहता हूं :

१. अपने चारों ओर की परिस्थिति का सुव्यवस्थित और मुकम्मिल अध्ययन करने के कार्य को हमें समूची पार्टी के सामने रखना चाहिए। मार्क्सवाद-लेनिनवाद के सिद्धान्त और तरीके के आधार पर हमें अपने दुश्मनों की, अपने मित्रों की और स्वयं अपनी आर्थिक, वित्तीय, राजनीतिक, सैनिक, सांस्कृतिक और पार्टी की गतिविधियों के विकास की स्थिति की सविस्तार जांच-पड़ताल और अध्ययन करना चाहिए तथा उसके बाद उचित व आवश्यक निष्कर्ष निकालने चाहिए। इस उद्देश्य को पूरा करने के लिए हमें अपने साथियों का ध्यान इन व्यावहारिक मसलों की जांच-पड़ताल करने और उनका अध्ययन करने की ओर आकर्षित करना चाहिए। हमें अपने साथियों को यह समझा देना चाहिए कि परिस्थितियों के बारे में जानकारी हासिल करना और नीति में निपुण बनना कम्युनिस्ट पार्टी के नेतृत्वकारी संगठनों का दोहरा बुनियादी कार्य है ; पहले का मतलब है विश्व को जानना और

दूसरे का मतलब है विश्व को बदलना। हमें अपने साथियों को यह भी समझा देना चाहिए कि बिना जांच-पड़ताल किए किसी को बोलने का हक नहीं है, तथा लम्बी-चौड़ी बातें बघारने और क, ख, ग, घ क्रम में घटनाओं की सूचीमात्र पेश कर देने से कोई लाभ नहीं होगा। मिसाल के लिए प्रचार-कार्य को ही लीजिए ; अगर हम अपने दुश्मनों के, अपने मित्रों के और स्वयं अपने प्रचार की स्थिति के बारे में नहीं जानते, तो हम अपने लिए एक सही प्रचार-नीति निर्धारित करने में असमर्थ रहेंगे। किसी भी विभाग में कार्य करने के लिए पहले वहां की स्थिति से अवगत होना जरूरी है, सिर्फ तभी उस कार्य को ठीक ढंग से निपटाया जा सकता है। जांच-पड़ताल और अध्ययन करने की योजनाओं को समूची पार्टी में कार्यान्वित करना पार्टी की कार्यशैली को बदलने की बुनियादी कड़ी है।

२. जहां तक चीन के पिछले सौ साल के इतिहास का सम्बन्ध है, हमें चाहिए कि पारस्परिक सहयोग व उचित श्रम-विभाजन के साथ इसका अध्ययन करने के लिए सुयोग्य व्यक्तियों को जुटाएं और इस प्रकार वर्तमान अव्यवस्था को दूर करें। इसके लिए यह जरूरी है कि पहले आर्थिक इतिहास, राजनीतिक इतिहास, सैनिक इतिहास और सांस्कृतिक इतिहास के अनेक क्षेत्रों में विश्लेषणात्मक अध्ययन किया जाए, सिर्फ तभी संश्लेषणात्मक अध्ययन करना सम्भव हो सकेगा।

३. जहां तक कार्यकर्ताओं की शिक्षा का सम्बन्ध है, वह चाहे काम पर लगे हुए कार्यकर्ताओं की शिक्षा हो अथवा कार्यकर्ता-स्कूल में शिक्षा प्राप्त करने वाले कार्यकर्ताओं की, उनके बारे में एक ऐसी

नीति अपनाई जानी चाहिए जो इस प्रकार की शिक्षा में चीनी क्रान्ति की व्यावहारिक समस्याओं के अध्ययन को केन्द्र बनाती हो और मार्क्सवाद-लेनिनवाद के बुनियादी उसूलों को मार्गदर्शक के रूप में इस्तेमाल करती हो, तथा बिलकुल निर्जीव व पृथक रूप से मार्क्सवाद-लेनिनवाद का अध्ययन करने के तरीके को तिलांजलि दे देनी चाहिए। मार्क्सवाद-लेनिनवाद के अध्ययन में हमें अपनी मुख्य पाठ्य-सामग्री के रूप में "सोवियत संघ की कम्युनिस्ट पार्टी (बोलशेविक) का इतिहास, संक्षिप्त कोर्स" को इस्तेमाल करना चाहिए। इसमें पिछले सौ साल के विश्व कम्युनिस्ट आन्दोलन का सर्वोत्तम संश्लेषण किया गया है और निचोड़ निकाला गया है। यह सिद्धान्त और व्यवहार को मिलाने का एक आदर्श है, और समूचे विश्व में अब तक का एकमात्र सर्वग्राही आदर्श है। जब हम यह देखेंगे कि लेनिन और स्तालिन ने किस प्रकार मार्क्सवाद की सर्वव्यापी सच्चाई को सोवियत क्रान्ति के ठोस व्यवहार के साथ मिलाया और फलस्वरूप मार्क्सवाद का विकास किया, तो हम यह जान सकेंगे कि हमें चीन में कैसे कार्य करना चाहिए।

हम अनेक बार रास्ते से भटक चुके हैं। लेकिन गलती अक्सर सही बात की पूर्वगामी होती है। मुझे विश्वास है कि चीनी क्रान्ति और विश्वक्रान्ति की पृष्ठभूमि में, जो सजीवता और विविधता से अत्यधिक ओतप्रोत है, हमारे अध्ययन में इस सुधार से निश्चित रूप से अच्छे नतीजे हासिल किए जाएंगे।

नोट

[1] फ़ूश्येन काउन्टी येनान से लगभग ७० किलोमीटर दक्षिण में है।

[2] सीमान्त क्षेत्र की मुद्रा शेनशी-कानसू-निङश्या सीमान्त क्षेत्र के सरकारी बैंक द्वारा कागजी नोटों की शकल में जारी की गई थी। क्वोमिन्ताङ-मुद्रा चार बड़े क्वोमिन्ताङ नौकरशाह-पूंजीपति बैंकों द्वारा बरतानवी व अमरीकी साम्राज्य-वादियों के समर्थन में १९३५ के बाद जारी की गई कागजी मुद्रा थी। यहां कामरेड माओ त्सेतुङ ने इन दोनों मुद्राओं की विनिमय-दरों में होने वाले उतार-चढ़ाव का उल्लेख किया है।

[3] देखिए कार्ल मार्क्स, " 'पूंजी' ग्रन्थ १ के द्वितीय जर्मन संस्करण का पश्चलेख", जिसमें उन्होंने लिखा है : "बाद वाले तरीके [जांच-पड़ताल के तरीके] में सामग्री को सविस्तार इकट्ठा करना होता है, उसके विकास के विभिन्न रूपों का विश्लेषण करना होता है, उनके अन्दरूनी सम्बन्धों का पता लगाना होता है। जब यह कार्य पूरा हो जाए, सिर्फ तभी वास्तविक आन्दोलन का भलीभांति वर्णन किया जा सकता है।"

[4] देखिए : जे० वी० स्तालिन, "लेनिनवाद के आधारभूत सिद्धान्त" का नवां भाग "कार्यशैली"।

दूरपूर्वी म्यूनिख बनाने की साजिश का पर्दाफाश करो*

२५ मई १९४१

१. चीन के हितों को दांव पर लगाकर जापान और अमरीका के बीच समझौता तथा कम्युनिज्म के खिलाफ और सोवियत संघ के खिलाफ एक पूर्वी म्यूनिख का सृजन – यह है वह नई साजिश जिसे जापान, अमरीका और च्याङ काई-शेक इस समय रच रहे हैं। हमें इस साजिश का पर्दाफाश कर देना चाहिए और इसका मुकाबला करना चाहिए।

२. आज जबकि जापानी साम्राज्यवादियों ने अपने उन फौजी हमलों का आखिरी दौर खत्म कर दिया है जिनका मकसद च्याङ काई-शेक को आत्मसमर्पण के लिए मजबूर करना था, यह निश्चित है कि च्याङ को आत्मसमर्पण के लिए फुसलाने की कार्यवाहियां की जाएंगी। यह दुश्मन द्वारा बारी-बारी अथवा एक साथ एक तरफ मारने और दूसरी तरफ पुचकारने की पुरानी नीति की ही पुनरावृत्ति है। हमें इस नीति का पर्दाफाश कर देना चाहिए और इसका मुकाबला करना चाहिए।

---

* यह अन्तःपार्टी निर्देश कामरेड माओ त्सेतुङ ने चीनी कम्युनिस्ट पार्टी की केन्द्रीय कमेटी के लिए लिखा था।

३. अपने फौजी हमलों के साथ-साथ जापान ने अफवाहें फैलाने की एक मुहिम भी चला दी है जिसमें उसने इस प्रकार की हवाइयां छोड़ी हैं कि "आठवीं राह सेना क्वोमिन्ताङ की केन्द्रीय सेना के साथ तालमेल कायम करके नहीं लड़ना चाहती", यह कि "आठवीं राह सेना हर मौके का फायदा उठाकर अपना इलाका बढ़ा रही है", यह कि "वह एक अन्तरराष्ट्रीय मार्ग खोल रही है", यह कि "वह एक अन्य केन्द्रीय सरकार कायम कर रही है", वगैरह-वगैरह। यह एक मक्कारीभरी जापानी स्कीम है, जिसका मकसद क्वोमिन्ताङ और कम्युनिस्ट पार्टी के बीच फूट के बीज बोना तथा इस प्रकार क्वोमिन्ताङ को आत्मसमर्पण के लिए फुसलाने का कार्य आसान बना देना है। क्वोमिन्ताङ की "केन्द्रीय समाचार-एजेन्सी" और क्वोमिन्ताङ के समाचारपत्र इन अफवाहों की नकल कर रहे हैं और उन्हें फैला रहे हैं तथा जापान के कम्युनिस्ट-विरोधी प्रचार का ढिंढोरा पीटने से जरा भी हिचकिचा नहीं रहे हैं, और उनके इरादे अत्यन्त सन्देहास्पद हैं। इसका भी हमें पर्दाफाश करना चाहिए और इसका मुकाबला करना चाहिए।

४. हालांकि नई चौथी सेना के बारे में यह ऐलान किया गया है कि उसने "बगावत कर दी है" और आठवीं राह सेना को क्वोमिन्ताङ से एक भी गोली अथवा एक भी पैसा नहीं मिला है, फिर भी उन्होंने एक क्षण के लिए भी दुश्मन के खिलाफ लड़ना नहीं छोड़ा। यही नहीं, आठवीं राह सेना ने दक्षिणी शानशी की मौजूदा मुहिम[१] में अपनी कार्यवाहियों का तालमेल क्वोमिन्ताङ फौजों के साथ कायम करने में पहलकदमी की है, तथा पिछले दो हफ्तों से वह उत्तरी चीन में सभी मोर्चों पर हमले करती रही है, और इस समय भी

वहां भीषण लड़ाइयां हो रही हैं। कम्युनिस्ट पार्टी के नेतृत्व में काम करने वाली सशस्त्र शक्तियां और जनता जापानी-आक्रमण-विरोधी युद्ध का मुख्य सम्बल बन चुकी हैं। कम्युनिस्ट पार्टी पर लगाए गए सभी लांछनों का मकसद है प्रतिरोध-युद्ध में तोड़फोड़ करना और आत्मसमर्पण के लिए रास्ता खोल देना। हमें आठवीं राह सेना और नई चौथी सेना की फौजी सफलताओं का विस्तार करना चाहिए तथा तमाम पराजयवादियों और आत्मसमर्पणवादियों का विरोध करना चाहिए।

नोट

[१] दक्षिणी शानशी मुहिम का तात्पर्य चुङथ्याओ पहाड़ों की मुहिम से है। मई १९४१ में ५०,००० से ज्यादा सैनिकों वाली एक हमलावर जापानी फौज ने दक्षिणी शानशी में पीली नदी के उत्तर में स्थित चुङथ्याओ पहाड़ों के इलाके पर हमला कर दिया। उस इलाके में क्वोमिन्ताङ की सात फौजी कोर तैनात थीं तथा उसके उत्तर-पूर्व में काओफिङ के इलाके में क्वोमिन्ताङ की चार अन्य फौजी कोर तैनात थीं, कुल मिलाकर उनके सैनिकों की तादाद २,५०,००० थी। चूंकि पीली नदी के उत्तर में स्थित क्वोमिन्ताङ फौजों का मुख्य कार्य था कम्युनिस्टों के खिलाफ लड़ना, इसलिए उन्होंने जापानियों के खिलाफ लड़ने के लिए अपने को कभी तैयार नहीं किया, तथा उनमें से ज्यादातर फौजों ने जापानी आक्रमणकारियों का हमला होने पर लड़ाई से बचने की कोशिश की। इसलिए आठवीं राह सेना द्वारा इस मुहिम में क्वोमिन्ताङ फौजों को दुश्मन के खिलाफ मदद देने की भरपूर कोशिशों के बावजूद, क्वोमिन्ताङ फौजों को पूरी तरह खदेड़ दिया गया तथा उन्होंने तीन हफ्ते के अरसे में ५०,००० से ज्यादा सैनिक गंवाए, जबकि उनके बाकी सैनिक भागकर पीली नदी के दक्षिण में चले गए।

फासिस्टवाद-विरोधी अन्तरराष्ट्रीय संयुक्त मोर्चे के बारे में*

२३ जून १९४१

२२ जून को जर्मनी के फासिस्ट शासकों ने सोवियत संघ पर हमला कर दिया। यह न सिर्फ सोवियत संघ के खिलाफ बल्कि सभी राष्ट्रों की आजादी व स्वाधीनता के खिलाफ एक विश्वासघातपूर्ण आक्रमण का अपराध है। फासिस्ट आक्रमण के खिलाफ सोवियत संघ का यह पवित्र प्रतिरोध-युद्ध न सिर्फ उसकी अपनी रक्षा के लिए चलाया जा रहा है बल्कि फासिस्ट गुलामी से मुक्ति प्राप्त करने के लिए संघर्षशील सभी राष्ट्रों की रक्षा के लिए भी चलाया जा रहा है।

इस समय समूची दुनिया के कम्युनिस्टों का कार्य यह है कि वे फासिस्टवाद के खिलाफ संघर्ष करने, तथा सोवियत संघ की रक्षा करने, चीन की रक्षा करने और सभी राष्ट्रों की आजादी व स्वाधीनता की रक्षा करने के हेतु, सभी देशों की जनता को गोलबन्द करके एक अन्तरराष्ट्रीय संयुक्त मोर्चा कायम करें। मौजूदा काल में, तमाम कोशिशों को फासिस्ट गुलामी का मुकाबला करने पर

* यह अन्तःपार्टी निर्देश कामरेड माओ त्सेतुङ ने चीनी कम्युनिस्ट पार्टी की केन्द्रीय कमेटी के लिए लिखा था।

केन्द्रित किया जाना चाहिए।

चीनी कम्युनिस्ट पार्टी के सामने समूचे देश में निम्नलिखित कार्य मौजूद हैं :

१. जापान-विरोधी राष्ट्रीय संयुक्त मोर्चे पर डटे रहना, क्वो-मिन्ताङ-कम्युनिस्ट सहयोग पर डटे रहना, जापानी साम्राज्य-वादियों को चीन से बाहर खदेड़ देना, तथा इन उपायों के जरिए सोवियत संघ की मदद करना।

२. बड़े पूंजीपतियों के वर्ग के प्रतिक्रियावादियों की सभी सोवियत-विरोधी और कम्युनिस्ट-विरोधी गतिविधियों का दृढ़ता से मुकाबला करना।

३. वैदेशिक सम्बन्धों के क्षेत्र में, हमारे मुश्तरका दुश्मन के खिलाफ बरतानिया, अमरीका और अन्य देशों में हर ऐसे व्यक्ति के साथ एकता कायम करना जो जर्मनी, इटली और जापान के फासिस्ट शासकों का विरोध करता हो।

शेनशी-कानसू-निङश्या सीमान्त क्षेत्र की प्रतिनिधि-सभा में भाषण

२१ नवम्बर १९४१

प्रतिनिधि-सभा के सदस्यो! साथियो! सीमान्त क्षेत्र की प्रतिनिधि-सभा का आज जो उद्घाटन हो रहा है वह एक बहुत महत्वपूर्ण बात है। प्रतिनिधि-सभा का महज एक ही उद्देश्य है, जापानी साम्राज्यवाद को उखाड़ फेंकना और एक नव-जनवादी चीन का निर्माण करना अथवा, दूसरे शब्दों में, क्रान्तिकारी तीन जन-सिद्धान्तों वाले चीन का निर्माण करना। आज के चीन के लिए अन्य कोई लक्ष्य नहीं हो सकता। कारण यह है कि इस समय हमारे मुख्य दुश्मन अन्दरूनी दुश्मन नहीं, बल्कि जापानी फासिस्ट तथा जर्मन व इटालवी फासिस्ट हैं। इस समय सोवियत लाल सेना सोवियत संघ और सारी मानव जाति के भाग्य के लिए लड़ रही है, तथा जहां तक हमारा ताल्लुक है हम जापानी साम्राज्यवाद से लोहा ले रहे हैं। जापानी साम्राज्यवाद का आक्रमण अभी बाकायदा जारी है और उसका उद्देश्य है चीन को अपना गुलाम बना लेना। चीनी कम्युनिस्ट पार्टी इस बात का पक्षपोषण करती है कि जापानी साम्राज्यवाद को उखाड़ फेंकने के लिए देशभर की तमाम जापान-विरोधी शक्तियों को एकताबद्ध किया जाए,

ग्रौर तमाम जापान-विरोधी पार्टियों, वर्गों व जातियों के साथ सहयोग स्थापित किया जाए ; गद्दारों को छोड़कर बाकी सब लोगों को चाहिए कि वे इस मुश्तरका संघर्ष के लिए एकताबद्ध हो जाएं। कम्युनिस्ट पार्टी का लगातार यही रुख रहा है। चार वर्ष से ग्रधिक ग्ररसे से चीनी जनता बड़ी बहादुरी के साथ जापानी-ग्राक्रमण-विरोधी युद्ध कर रही है। यह एक ऐसा युद्ध है जो क्वो-मिन्ताङ ग्रौर कम्युनिस्ट पार्टी के सहयोग तथा तमाम वर्गों, पार्टियों व जातियों के सहयोग से चलाया जा रहा है। लेकिन इस युद्ध में ग्रभी विजय हासिल नहीं हुई है, इसे जीतने के लिए हमें बराबर लड़ते जाना है ग्रौर इस बात का ध्यान रखना है कि क्रान्तिकारी तीन जन-सिद्धान्त वास्तव में ग्रमल में लाए जाएं।

क्रान्तिकारी तीन जन-सिद्धान्तों पर ग्रमल करना ग्राखिर क्यों जरूरी है? यह इसलिए क्योंकि ग्रभी तक डा० सुन यात-सेन द्वारा निर्धारित क्रान्तिकारी तीन जन-सिद्धान्तों पर चीन के सभी हिस्सों में ग्रमल नहीं किया गया है। हम क्यों नहीं यह मांग करते कि समाजवाद पर फौरन इसी समय ग्रमल शुरू किया जाए। इसमें कोई शक नहीं कि समाजवाद एक बेहतर व्यवस्था है, ग्रौर एक लम्बे ग्ररसे से सोवियत संघ में इस पर ग्रमल किया जा रहा है। लेकिन जहां तक ग्राज के चीन का ताल्लुक है, यहां उसे स्थापित करने के लिए परिस्थिति ग्रभी भी ग्रनुकूल नहीं है। हमारे शेनशी-कानसू-निङश्या सीमान्त क्षेत्र में क्रान्तिकारी तीन जन-सिद्धान्तों को लागू किया गया है। ग्रपनी किसी भी व्यावहारिक समस्या को सुलझाने के सिलसिले में हम इन सिद्धान्तों से ग्रागे नहीं बढ़े हैं। जहां तक इन सिद्धान्तों का ताल्लुक है, ग्राज राष्ट्रवाद के सिद्धान्त का मतलब

है जापानी साम्राज्यवाद को उखाड़ फेंकना ग्रौर जनवाद के सिद्धान्त तथा जन-जीविका के सिद्धान्त का मतलब है किसी एक तबके के हित के लिए नहीं, बल्कि जापान का विरोध करने वाली समस्त जनता के हित के लिए काम करना। सारे देश की जनता को व्यक्तिगत ग्राजादी का, राजनीतिक गतिविधियों में हिस्सा लेने के ग्रधिकार का तथा सम्पत्ति को सुरक्षित रखने के ग्रधिकार का उपभोग करने का ग्रवसर मिलना चाहिए। सारे देश में जनता को ग्रपनी राय जाहिर करने का मौका मिलना चाहिए, ग्रौर उसे पहनने के लिए कपड़े, खाने के लिए ग्रन्न, जीविका के लिए रोजगार तथा शिक्षा के लिए स्कूल चाहिए ; संक्षेप में हरेक के लिए कुछ न कुछ प्रबन्ध ग्रवश्य होना चाहिए। चीनी समाज के दोनों सिरे छोटे हैं ग्रौर दरमियाना हिस्सा बड़ा है। मतलब यह कि एक सिरे पर सर्वहारा वर्ग है तथा दूसरे सिरे पर जमींदार वर्ग व बड़े पूंजीपतियों का वर्ग ; इन दोनों सिरों पर मौजूद लोगों की संख्या बहुत कम है, जबकि जनता में एक विशाल बहुसंख्या किसानों, शहरी निम्न-पूंजीपति वर्ग के लोगों तथा मध्यवर्ती वर्गों के ग्रन्य लोगों की है। कोई भी राजनीतिक पार्टी चीन के मामलों को सुचारु रूप से तब तक नहीं चला सकती जब तक कि उसकी नीति में इन वर्गों के हितों का खयाल नहीं रखा जाता, जब तक कि इन वर्गों के सदस्यों के लिए कुछ न कुछ प्रबन्ध नहीं कर दिया जाता, ग्रौर जब तक कि उन्हें ग्रपनी राय जाहिर करने का ग्रधिकार नहीं दिया जाता। चीनी कम्युनिस्ट पार्टी द्वारा प्रस्तुत नीतियां, जापान का विरोध करने वाली समस्त जनता को एकताबद्ध करने की कोशिश करती हैं ग्रौर ऐसा करने वाले हर वर्ग के हितों का खयाल रखती हैं,

और खास तौर से किसानों, शहरी निम्न-पूंजीपति वर्ग के लोगों तथा मध्यवर्ती वर्गों के अन्य लोगों के हितों का खयाल रखती हैं। कम्युनिस्ट पार्टी की नीतियां, जो हर तबके के लोगों को मौका देती हैं कि वे अपनी राय का इजहार करें तथा इस बात को पक्का कर लें कि उन्हें जीविका के लिए रोजगार तथा खाने के लिए अन्न मिलेगा, ऐसी नीतियां हैं जो असली क्रान्तिकारी तीन जन-सिद्धान्तों को प्रतिबिम्बित करती हैं। भूमि-सम्बन्धों में हम एक तरफ तो लगान व सूद कम कर देते हैं ताकि किसानों को अन्न मिल सके, और दूसरी तरफ कम किए हुए लगान व सूद की अदायगी का प्रबन्ध कर देते हैं ताकि जमींदार भी अपना गुजारा कर सकें। जहां तक श्रम और पूंजी के बीच के सम्बन्धों का ताल्लुक है, इस विषय में एक तरफ तो हम मजदूरों की सहायता करते हैं ताकि उन्हें काम व खाना दोनों चीजें उपलब्ध हो सकें और दूसरी तरफ हम उद्योगों को विकसित करने की नीति पर चलते हैं ताकि पूंजीपतियों को कुछ न कुछ मुनाफा प्राप्त हो सके। यह सब करने का हमारा उद्देश्य है सारे देश की जनता को जापान का विरोध करने के मुश्तरका संघर्ष के लिए एकताबद्ध करना। इसे ही हम नव-जनवाद की नीति कहकर पुकारते हैं। यह एक ऐसी नीति है जो चीन की मौजूदा हालत में बिलकुल ठीक बैठती है, और हम आशा करते हैं कि इसे शेनशी-कानसू-निङश्या सीमान्त क्षेत्र या दुश्मन के पृष्ठभाग में स्थित जापान-विरोधी आधार-क्षेत्रों तक ही सीमित नहीं रखा जाएगा बल्कि सारे देश में लागू किया जाएगा।

हमने इस नीति को सफलतापूर्वक कार्यान्वित किया है और सारे चीन की जनता ने इसका अनुमोदन किया है। लेकिन हमारे काम

में कुछ कमियां भी रह गई हैं। कुछ कम्युनिस्टों ने अभी तक यह नहीं सीखा कि गैरपार्टी लोगों के साथ किस तरह जनवादी ढंग से सहयोग किया जाए, उनकी कार्यशैली रुद्धद्वारवाद या संकीर्णतावाद की संकुचित भावना पर आधारित है ; वे अभी भी इस बुनियादी सिद्धान्त को नहीं समझ पाते कि कम्युनिस्ट लोग जापान का विरोध करने वाले गैरपार्टी लोगों से सहयोग करने के लिए कर्तव्यबद्ध हैं और गैरपार्टी लोगों के लिए अपने दरवाजे बन्द कर लेने का उन्हें कोई अधिकार नहीं है। इस सिद्धान्त का मतलब यह है कि हमें आम जनता के विचारों को ध्यान से सुनना चाहिए, उसके साथ घनिष्ठ सम्पर्क बनाए रखना चाहिए तथा उससे अलग-थलग होकर नहीं बैठ जाना चाहिए। "शेनशी-कानसू-निङश्या सीमान्त क्षेत्र के प्रशासनिक कार्यक्रम" में एक धारा यह रखी गई है कि कम्युनिस्टों को चाहिए कि वे गैरपार्टी लोगों के साथ जनवादी ढंग से सहयोग करें और स्वेच्छाचारिता से काम न लें तथा सब कुछ अपने हाथ में ही रखने की कोशिश न करें। यह धारा ठीक ऐसे ही कामरेडों को नजर में रखकर लिखी गई है जो अभी भी पार्टी की नीति को अच्छी तरह नहीं समझ पा रहे। कम्युनिस्टों को चाहिए कि वे गैरपार्टी लोगों के विचारों को ध्यान से सुनें और उन्हें जो कुछ भी कहना हो कह लेने का मौका दें। जो कुछ वे कहते हैं, अगर वह ठीक हो तो हमें उसका स्वागत करना चाहिए और उनकी अच्छाइयों से सीख लेना चाहिए ; अगर उनकी बात गलत हो तो भी जो कुछ वे कहना चाहते हैं उसे कह लेने का मौका उन्हें अवश्य देना चाहिए और फिर धीरज के साथ अपनी बात उन्हें समझा देनी चाहिए। एक कम्युनिस्ट को हठधर्मी नहीं होना चाहिए, और न ही उसे

दूसरों पर रोब जमाने की कोशिश करनी चाहिए, उसे ऐसा हरगिज नहीं समझना चाहिए कि वह खुद तो हर चीज का माहिर है और दूसरों को कतई कुछ भी नहीं आता ; उसे अपने आपको अपने छोटे से कमरे की चारदीवारी के अन्दर बन्द नहीं कर लेना चाहिए, या अपने मुंह मियां मिट्ठू बनने तथा शेखी बघारने की कोशिश नहीं करनी चाहिए, और न ही दूसरों पर सवारी गांठने की कोशिश करनी चाहिए। कट्टर प्रतिक्रियावादियों को छोड़कर, जो जापानी आक्रमणकारियों और देशद्रोहियों के साथ सांठगांठ करके प्रतिरोध व एकता की जड़ काट रहे हैं तथा जिन्हें निस्सन्देह बोलने का कोई अधिकार नहीं है, हरेक व्यक्ति बोलने की आजादी का हकदार है, और जो बात वह कह रहा है वह अगर गलत भी हो तो भी कोई हर्ज नहीं। राज्य के मामले सारे राष्ट्र के सार्वजनिक मामले हैं ; ये मामले एक पार्टी या ग्रुप के निजी मामले नहीं हैं। इसलिए कम्युनिस्टों का यह कर्तव्य है कि वे गैरपार्टी लोगों के साथ जनवादी ढंग से सहयोग करें और गैरपार्टी लोगों को बाहर रखने तथा हर चीज पर अपनी इजारेदारी कायम कर लेने का उन्हें कतई अधिकार नहीं है। कम्युनिस्ट पार्टी एक ऐसी राजनीतिक पार्टी है जो राष्ट्र और जनता के हित के लिए काम करती है और उसका इसमें रत्तीभर भी निजी स्वार्थ नहीं है। उसे जनता की निगरानी में रहना चाहिए और जनता की इच्छा के विरुद्ध हरगिज नहीं जाना चाहिए। उसके सदस्यों को जनता के साथ रहना-सहना चाहिए और अपने आपको जनता से ऊपर नहीं समझना चाहिए। प्रतिनिधि-सभा के सदस्यो व कामरेडो, गैरपार्टी लोगों के साथ जनवादी ढंग से सहयोग करने का कम्युनिस्ट पार्टी का सिद्धान्त अटल तथा अपरिवर्तनीय है।

जब तक पार्टी मौजूद रहेगी, तब तक उसमें शामिल होने वाले हमेशा अल्पसंख्या में रहेंगे और उससे बाहर रहने वाले हमेशा बहुसंख्या में रहेंगे ; इसलिए हमारे पार्टी-सदस्यों को चाहिए कि वे गैरपार्टी लोगों के साथ हमेशा सहयोग करें, और उन्हें इसी जगह, प्रतिनिधि-सभा में ही, इस कार्य का शुभारम्भ कर देना चाहिए। मेरा खयाल है कि हमारी इस नीति को अपनाकर प्रतिनिधि-सभा के कम्युनिस्ट सदस्य यहां पर बहुत अच्छी शिक्षा प्राप्त कर सकेंगे और वे रूढ़िवादवाद व संकीर्णतावाद को दूर कर सकेंगे। हम कोई ऐसा छोटा सम्प्रदाय नहीं जो अपनी राय दूसरों पर थोपता फिरता हो, और हमारे लिए यह सीखना निहायत जरूरी है कि हम गैर-पार्टी लोगों के लिए अपने दरवाजे कैसे खोलें, उनके साथ किस तरह जनवादी ढंग से सहयोग करें, और दूसरों के साथ किस तरह सलाह-मशविरा करें। शायद अब भी इस तरह के कम्युनिस्ट होंगे जो कहेंगे, "अगर दूसरों के साथ सहयोग करना लाजमी है, तो हमें अलग रहने दीजिए।" लेकिन मुझे विश्वास है कि ऐसे लोग केवल इने-गिने होंगे। मैं आपको विश्वास दिलाता हूं कि हमारे सदस्यों की भारी बहुसंख्या हमारी पार्टी की केन्द्रीय कमेटी की कार्यदिशा को निश्चित रूप से कार्यान्वित करेगी। साथ ही मैं चाहता हूं कि तमाम गैरपार्टी कामरेड इस बात को समझ लें कि हम क्या चाहते हैं, और यह बात भी समझ लें कि कम्युनिस्ट पार्टी कोई छोटा सम्प्रदाय या गुट नहीं है जो अपनी स्वार्थ-सिद्धि के लिए काम करता हो। ऐसा हरगिज नहीं है! कम्युनिस्ट पार्टी सच्चे दिल से और ईमानदारी के साथ राज्य के मामलों को ठीक-ठाक करके व्यवस्थित कर देना चाहती है। लेकिन हमारे काम में अभी भी बहुत सी

कमियां हैं। अपनी गलतियां कबूल करने से हम डरते नहीं और उन्हें ठीक कर लेने के लिए हम संकल्पबद्ध हैं। पार्टी के अन्दर शिक्षा-कार्य को जोरदार बनाकर तथा गैरपार्टी लोगों के साथ जनवादी ढंग से सहयोग करके हम इस कार्य को पूरा करेंगे। पार्टी के भीतर और पार्टी के बाहर दोनों तरफ से आलोचना की बौछार से ही हमारी कमियों को दूर किया जा सकेगा और राज्य के मामलों को सचमुच ठीक-ठाक करके व्यवस्थित किया जा सकेगा।

प्रतिनिधि-सभा के सदस्यो! इस सभा में शामिल होने के लिए आपने यहां तक आने का कष्ट उठाया है, और मैं बहुत खुश हूं कि मुझे इस विशिष्ट सम्मेलन का अभिनन्दन करने का सौभाग्य प्राप्त हुआ है। मैं इस सम्मेलन की सफलता की कामना करता हूं।

पार्टी की कार्यशैली में सुधार करो*

१ फरवरी १९४२

आज पार्टी स्कूल का उद्घाटन किया जा रहा है और मैं इसकी सफलता की कामना करता हूं।

मैं पार्टी की कार्यशैली की समस्या के बारे में कुछ बातें कहना चाहता हूं।

एक क्रान्तिकारी पार्टी की जरूरत क्यों होती है? एक क्रान्तिकारी पार्टी की जरूरत इसलिए होती है क्योंकि दुनिया में ऐसे दुश्मन मौजूद हैं जो जनता का उत्पीड़न करते हैं और जनता दुश्मन द्वारा किए जाने वाले इस उत्पीड़न को समाप्त करना चाहती है। पूंजीवाद और साम्राज्यवाद के युग में कम्युनिस्ट पार्टी जैसी क्रान्तिकारी पार्टी की जरूरत होती है। ऐसी पार्टी के बिना जनता द्वारा दुश्मन के उत्पीड़न का खात्मा करना बिलकुल नामुमकिन है। हम कम्युनिस्ट हैं, हम दुश्मन को उखाड़ फेंकने के संघर्ष में जनता का नेतृत्व करना चाहते हैं, और इसलिए हमें अपनी पांतों को भलीभांति व्यवस्थित रखना चाहिए, हमें कदम से कदम मिलाकर चलना चाहिए, हमारे सिपाही चुनिन्दा सिपाही होने चाहिए और हमारे

* यह भाषण कामरेड माओ त्सेतुङ ने चीनी कम्युनिस्ट पार्टी की केन्द्रीय कमेटी के पार्टी स्कूल के उद्घाटन के अवसर पर दिया था।

हथियार अच्छे हथियार होने चाहिए। इन शर्तों को पूरा किए बिना दुश्मन को उखाड़ फेंकना मुमकिन नहीं है।

आज हमारी पार्टी के सामने समस्या क्या है? पार्टी की आम कार्यदिशा सही है, और उसमें कोई समस्या पेश नहीं आती, तथा पार्टी के काम में कामयाबियां हासिल हुई हैं। पार्टी के पास कई लाख सदस्य हैं जो शत्रु के खिलाफ अत्यन्त कठिन और कठोर संघर्षों में जनता की अगुवाई कर रहे हैं। यह बात हर आदमी जानता है और इसमें तनिक भी सन्देह नहीं।

तो क्या पार्टी के सामने अब भी कोई समस्या है या नहीं? मैं कहता हूं कि है और किसी मायने में वह काफी गम्भीर है।

यह समस्या क्या है? यह हकीकत है कि कुछ कामरेडों के दिमाग में कुछ बातें ऐसी हैं जो हमें एकदम दुरुस्त और उचित नहीं जान पड़तीं।

दूसरे शब्दों में, हमारी अध्ययन-शैली में, हमारी पार्टी के भीतरी और बाहरी सम्बन्धों को निभाने की शैली में और हमारी लेखन-शैली में अब भी कुछ कमी है। अध्ययन-शैली में कुछ कमी से हमारा मतलब मनोगतवाद के रोग से है। हमारे पार्टी-सम्बन्धों को निभाने की शैली में कुछ कमी से हमारा मतलब संकीर्णतावाद के रोग से है। लेखन-शैली में कुछ कमी से हमारा मतलब घिसेपिटे पार्टी-लेखन[1] के रोग से है। ये सब गलत हैं, पर ये शीतकाल में चलने वाली उत्तरी हवा की तरह नहीं जो पूरे आकाश में फैल जाती है। मनोगतवाद, संकीर्णतावाद और घिसापिटा पार्टी-लेखन अब प्रभुत्वशाली शैलियां नहीं हैं, बल्कि उल्टी और दूषित हवाओं के झोंकेमात्र हैं, जो हवाई हमले से बचाव के लिए बनाई गई खन्दकों

से आती हैं। (हंसी) मगर यह बुरी बात है कि हमारी पार्टी में ऐसी हवाएं अब भी चल रही हैं। हमें वे खन्दकें बन्द करनी हैं जो उन्हें पैदा करती हैं। हमारी समूची पार्टी को ये खन्दकें बन्द करने का काम अपने जिम्मे ले लेना चाहिए और हमारे पार्टी स्कूल को भी ऐसा ही करना चाहिए। इन तीन दूषित हवाओं – मनोगतवाद, संकीर्णतावाद और घिसापिटा पार्टी-लेखन – की अपनी ऐतिहासिक जड़ें हैं। यद्यपि वे समूची पार्टी पर प्रभुत्व जमाए हुए नहीं हैं, पर वे अब भी लगातार गड़बड़ी पैदा करती हैं और हम पर हमला करती हैं। इसीलिए उनका प्रतिरोध करना और उनका अध्ययन करना, उनका विश्लेषण करना और उनकी व्याख्या करना जरूरी है।

अध्ययन-शैली में सुधार करने के लिए मनोगतवाद का विरोध करना, पार्टी-सम्बन्धों को निभाने की शैली में सुधार करने के लिए संकीर्णतावाद का विरोध करना, और लेखन-शैली में सुधार करने के लिए घिसेपिटे पार्टी-लेखन का विरोध करना – यह है वह कार्य जो हमारे सामने मौजूद है।

दुश्मन को उखाड़ फेंकने के कार्य को सम्पन्न करने के लिए, हमें पार्टी के भीतर इन शैलियों में सुधार करने का कार्य सम्पन्न करना होगा। अध्ययन-शैली और लेखन-शैली पार्टी की कार्यशैली के अंग भी हैं। एक बार हमारी पार्टी की कार्यशैली के बिलकुल ठीक हो जाने पर, देशभर की जनता हमारे उदाहरण से सीखेगी। पार्टी के बाहर जिन लोगों की कार्यशैली इसी प्रकार खराब है, वे लोग अगर अच्छे और ईमानदार हैं, तो हमारे उदाहरण से सीखेंगे और अपनी गलतियां सुधार लेंगे तथा इस तरह उसका असर समूचे राष्ट्र पर पड़ेगा। जब तक हमारी कम्युनिस्ट पांतें सुव्यवस्थित हैं और कदम

से कदम मिलाकर चलती हैं, जब तक हमारे सिपाही चुनिन्दा सिपाही हैं और हमारे हथियार अच्छे हथियार हैं, तब तक दुश्मन को भी चाहे वह कितना ही शक्तिशाली क्यों न हो, उखाड़ फेंका जा सकता है।

अब मैं मनोगतवाद के बारे में कहना चाहता हूं।

मनोगतवाद एक दूषित अध्ययन-शैली है; यह मार्क्सवाद-लेनिनवाद के विरुद्ध है और इसका कम्युनिस्ट पार्टी के साथ अस्तित्व नहीं रह सकता। जो कुछ हम चाहते हैं, वह मार्क्सवादी-लेनिनवादी अध्ययन-शैली है। जिसे हम अध्ययन-शैली कहते हैं, उससे हमारा मतलब सिर्फ स्कूलों की अध्ययन-शैली से ही नहीं है, बल्कि समूची पार्टी की अध्ययन-शैली से है। यह नेतृत्वकारी संस्थाओं के साथियों, तमाम कार्यकर्ताओं और पार्टी-सदस्यों के सोचने की विधि का एक सवाल है, मार्क्सवाद-लेनिनवाद के प्रति हमारे रुख का, अपने-अपने काम के प्रति पार्टी के तमाम साथियों के रुख का एक सवाल है। इस प्रकार यह एक अत्यन्त महत्वपूर्ण सवाल है, सचमुच प्राथमिक महत्व का सवाल है।

बहुत से लोगों के दिमाग में कुछ ऊलजलूल विचार घुसे हुए हैं। मिसाल के लिए, लोगों के दिमाग में इस बारे में ऊलजलूल विचार पाए जाते हैं कि एक सिद्धान्तकार किसे कहते हैं, एक बुद्धि-जीवी किसे कहते हैं तथा सिद्धान्त को व्यवहार से मिलाने का क्या मतलब है।

पहले हम इस बात का पता लगाएं कि हमारी पार्टी का सैद्धान्तिक स्तर ऊंचा है या नीचा? आजकल अपेक्षाकृत अधिक मार्क्सवादी-लेनिनवादी पुस्तकों का अनुवाद हो रहा है तथा ज्यादा लोग उन्हें

पढ़ रहे हैं। यह एक बहुत अच्छी बात है। लेकिन क्या इसीलिए हम यह कह सकते हैं कि इससे हमारी पार्टी का सैद्धान्तिक स्तर बहुत ऊंचा हो गया है? यह सच है कि यह स्तर पहले से कुछ ऊंचा हो गया है। लेकिन चीनी क्रान्तिकारी आन्दोलन की समृद्ध विषय-वस्तु से हमारे सैद्धान्तिक मोर्चे का तालमेल स्थापित नहीं हो पाया है और दोनों की तुलना से यह जाहिर होता है कि सैद्धान्तिक पक्ष बहुत पीछे है। आम तौर पर कहा जा सकता है कि हमारा सिद्धान्त हमारे क्रान्तिकारी व्यवहार के साथ अब भी चल नहीं पा रहा, यह सवाल तो दूर रहा कि सिद्धान्त को व्यवहार के आगे चलना चाहिए था। हम अपने समृद्ध और विविध प्रकार के व्यवहार को अभी समुचित सैद्धान्तिक स्तर तक उठा नहीं पाए हैं। हमने अभी तक अपने क्रान्तिकारी व्यवहार की तमाम समस्याओं पर, यहां तक कि महत्वपूर्ण समस्याओं पर भी, विचार नहीं किया और उन्हें सैद्धान्तिक स्तर तक ऊंचा नहीं उठाया। जरा सोचिए तो, हममें से कितने लोग ऐसे हैं जिन्होंने चीन की अर्थव्यवस्था, राजनीति, फौजी मामलों अथवा संस्कृति के बारे में सिद्धान्तों की, ऐसे सिद्धान्तों की रचना की है जिन्हें सचमुच सिद्धान्त माना जा सके, तथा जिन्हें क्षुद्र और छिछले नहीं बल्कि वैज्ञानिक और सम्पूर्ण कहा जा सके? विशेषकर आर्थिक सिद्धान्त के क्षेत्र में, अफीम युद्ध से आज तक चीन में पूंजीवाद के विकास की एक शताब्दी बीत चुकी है, पर अभी तक एक भी ऐसा सैद्धान्तिक ग्रन्थ नहीं लिखा गया जो चीन के आर्थिक विकास की वास्तविकताओं के अनुरूप हो और सच्चे अर्थों में वैज्ञानिक हो। मिसाल के लिए, क्या हम यह कह सकते हैं कि चीन की आर्थिक समस्याओं के अध्ययन में हमारा सैद्धान्तिक स्तर ऊंचा हो चुका है?

क्या हम यह कह सकते हैं कि हमारी पार्टी के पास सुयोग्य आर्थिक सिद्धान्तकार मौजूद हैं ? हम ऐसा कदापि नहीं कह सकते। हमने बहुत से मार्क्सवादी-लेनिनवादी ग्रन्थ पढ़ लिए हैं, लेकिन तब क्या हम यह दावा कर सकते हैं कि हमारे पास सिद्धान्तकार मौजूद हैं ? हम यह दावा नहीं कर सकते। कारण, मार्क्सवाद-लेनिनवाद एक ऐसा सिद्धान्त है जिसकी रचना मार्क्स, एंगेल्स, लेनिन और स्तालिन ने व्यवहार के आधार पर की है, और वह एक आम निष्कर्ष है जिसे उन्होंने ऐतिहासिक और क्रान्तिकारी वास्तविकता से निकाला था। अगर हम सिर्फ उनके ग्रन्थों को पढ़ें लेकिन उनके सिद्धान्त की रोशनी में आगे बढ़कर चीनी इतिहास और क्रान्ति की वास्तविकताओं का अध्ययन न करें अथवा सिद्धान्त की दृष्टि से चीन के क्रान्तिकारी व्यवहार पर सावधानी के साथ विचार करने का प्रयत्न न करें, तो हम मार्क्सवादी सिद्धान्तकार होने का दम नहीं भर सकते। अगर हम चीनी कम्युनिस्ट पार्टी के सदस्य होकर चीन की समस्याओं की तरफ से अपनी आंखें मूंद लें और मार्क्सवादी रचनाओं से सिर्फ इक्के-दुक्के निष्कर्षों और सिद्धान्तों को ही रट लें, तो सैद्धान्तिक मोर्चे पर हमारी उपलब्धियां वाकई बहुत कम होंगी। अगर कोई व्यक्ति मार्क्सवादी अर्थशास्त्र या दर्शनशास्त्र को केवल याद कर ले, उन्हें पहले परिच्छेद से दसवें परिच्छेद तक धाराप्रवाह रूप से रटता रहे, लेकिन उन्हें लागू करने में सर्वथा असमर्थ हो, तो क्या उसे मार्क्सवादी सिद्धान्तकार कहा जा सकता है ? नहीं, उसे ऐसा नहीं कहा जा सकता ! हमें किस तरह के सिद्धान्तकारों की जरूरत है ? हमें ऐसे सिद्धान्तकारों की जरूरत है जो, मार्क्सवादी-लेनिनवादी रुख, दृष्टिकोण और तरीके के अनुसार, इतिहास और क्रान्ति के

दौरान पैदा होने वाली व्यावहारिक समस्याओं की सही व्याख्या कर सकें और चीन की आर्थिक, राजनीतिक, सैनिक, सांस्कृतिक तथा अन्य समस्याओं की वैज्ञानिक व्याख्या और उनका सैद्धान्तिक विवेचन कर सकें। हमें ऐसे ही सिद्धान्तकारों की जरूरत है। इस तरह का सिद्धान्तकार बनने के लिए, किसी व्यक्ति के लिए यह जरूरी है कि उसने मार्क्सवाद-लेनिनवाद के सारतत्व को, मार्क्सवादी-लेनिनवादी रुख, दृष्टिकोण और तरीके को तथा औपनिवेशिक क्रान्ति व चीनी क्रान्ति के बारे में लेनिन और स्तालिन के सिद्धान्तों को भलीभांति आत्मसात कर लिया हो और वह चीन की व्यावहारिक समस्याओं का गहरा और वैज्ञानिक विश्लेषण करने तथा इन समस्याओं के विकास के नियमों का पता लगाने के लिए उन्हें लागू करने में समर्थ हो। हमें वास्तव में ऐसे ही सिद्धान्तकारों की जरूरत है।

हमारी पार्टी की केन्द्रीय कमेटी ने अब एक फैसला किया है जिसमें हमारे तमाम साथियों का आवाहन किया गया है कि वे चीन के इतिहास और उसकी अर्थव्यवस्था, राजनीति, सैनिक मामलों और संस्कृति के गम्भीर अध्ययन में मार्क्सवादी-लेनिनवादी रुख, दृष्टिकोण और तरीके को लागू करना और पूरी सामग्री के आधार पर हर समस्या का ठोस विश्लेषण करके सैद्धान्तिक निष्कर्ष निकालना सीख लें। इस जिम्मेदारी को हमें अपने ऊपर लेना है।

पार्टी स्कूल के हमारे साथियों को मार्क्सवादी सिद्धान्त को एक निष्प्राण कठमुल्ला-सूत्र नहीं समझना चाहिए। यह जरूरी है कि मार्क्सवादी सिद्धान्त में महारत हासिल कर ली जाए और उसे लागू किया जाए ; उसमें महारत केवल इसलिए हासिल की जाए

ताकि उसे लागू किया जा सके। अगर आप एक या दो व्यावहारिक समस्याओं का विश्लेषण करने में भी मार्क्सवादी-लेनिनवादी दृष्टिकोण का इस्तेमाल कर सकते हैं, तो आपकी प्रशंसा होनी चाहिए और आपको कुछ न कुछ कामयाबी का श्रेय मिलना चाहिए। आप जितनी ज्यादा समस्याओं का इस तरह विश्लेषण करते जाएंगे तथा जितना अधिक व्यापक और गहरा विश्लेषण करते जाएंगे, उतनी ही ज्यादा बड़ी कामयाबियां आपको हासिल होती जाएंगी। हमारे पार्टी स्कूल में विद्यार्थियों को अच्छे अथवा कमजोर विद्यार्थी का ग्रेड देने का नियम भी निर्धारित किया जाना चाहिए, जो इस बात पर आधारित हो कि मार्क्सवाद-लेनिनवाद के अध्ययन के बाद वे चीन की समस्याओं को कैसे देखते हैं, इस बात पर आधारित हो कि वे समस्याओं को स्पष्ट रूप से देखते हैं या नहीं और वे उन्हें निपुणता से देखते भी हैं या नहीं।

अब हम "बुद्धिजीवियों" का सवाल लेते हैं। चूंकि चीन एक अर्ध-औपनिवेशिक व अर्ध-सामन्ती देश है और उसकी संस्कृति भलीभांति उन्नत नहीं हुई है, इसलिए बुद्धिजीवियों को विशेष मूल्यवान समझा जाता है। बुद्धिजीवियों के सवाल पर पार्टी की केन्द्रीय कमेटी ने दो साल से ज्यादा अरसे पहले यह फैसला[२] किया था कि हमें व्यापक बुद्धिजीवियों को अपनी ओर लाने का प्रयत्न करना चाहिए और जब तक वे क्रान्तिकारी हैं और जापान का प्रतिरोध करने में भाग लेने को तैयार हैं, तब तक हमें उन सबका स्वागत करना चाहिए। बुद्धिजीवियों का आदर करना हमारे लिए बहुत ही मुनासिब बात है क्योंकि क्रान्तिकारी बुद्धिजीवियों के बगैर क्रान्ति सफल नहीं हो सकती। लेकिन हम सब यह जानते हैं कि

बहुत से बुद्धिजीवी ऐसे हैं जो अपने आपको बड़ा विद्वान समझते हैं और यह समझे बिना अपनी पण्डिताई की शान बघारते फिरते हैं कि ऐसा करना बुरा और हानिकर है, और इससे उनकी अपनी ही प्रगति रुक जाती है। उन्हें इस सत्य को जान लेना चाहिए कि ऐसे बहुत से तथाकथित बुद्धिजीवी, वास्तव में अपेक्षाकृत रूप से, अत्यन्त ज्ञानहीन होते हैं और कभी-कभी मजदूरों व किसानों को उनसे कहीं ज्यादा जानकारी होती है। यहां कुछ लोग कह उठेंगे, "वाह! आप तो एकदम उलटी गंगा बहा रहे हैं और बेतुकी बात कह रहे हैं।" (हंसी) लेकिन साथियो, आप उत्तेजित न हों। मैं जो कुछ कह रहा हूं, उसका कुछ मतलब है।

ज्ञान क्या है? जब से वर्ग-समाज बना है दुनिया में सिर्फ दो ही प्रकार का ज्ञान देखने में आया है – उत्पादन के संघर्ष का ज्ञान और वर्ग-संघर्ष का ज्ञान। प्राकृतिक विज्ञान और सामाजिक विज्ञान उक्त दो प्रकार के ज्ञान का निचोड़ हैं तथा दर्शनशास्त्र प्रकृति सम्बन्धी ज्ञान और सामाजिक ज्ञान का सामान्यीकरण और समाकलन है। क्या ज्ञान की और भी कोई किस्म है? नहीं। अब हम एक नजर उन विद्यार्थियों पर डालें जिनकी शिक्षा-दीक्षा उन स्कूलों में हुई है जो समाज की व्यावहारिक कार्यवाहियों से बिलकुल कटे हुए हैं। उनकी क्या हालत है? एक व्यक्ति इस प्रकार के प्राथमिक स्कूल से क्रमश: इसी प्रकार के विश्वविद्यालय में जाता है, स्नातक बन जाता है और यह समझ लिया जाता है कि उसके पास ज्ञान का भण्डार है। लेकिन जो कुछ भी उसने हासिल किया है वह केवल किताबी ज्ञान ही है। उसने अभी तक किसी भी व्यावहारिक कार्यवाही में हिस्सा नहीं लिया अथवा उसने जो कुछ सीखा है उसे

जीवन के किसी क्षेत्र में लागू नहीं किया। क्या ऐसे व्यक्ति को पूर्ण रूप से विकसित बुद्धिजीवी समझा जा सकता है? मेरी राय में ऐसा समझना मुश्किल है क्योंकि उसका ज्ञान अभी तक अपूर्ण है। तब अपेक्षाकृत रूप से पूर्ण ज्ञान आखिर क्या है? समस्त अपेक्षाकृत पूर्ण ज्ञान तक पहुंचने की दो अवस्थाएं होती हैं : पहली अवस्था इन्द्रियग्राह्य ज्ञान की अवस्था है और दूसरी अवस्था बुद्धिसंगत ज्ञान की ; बुद्धिसंगत ज्ञान इन्द्रियग्राह्य ज्ञान की उच्चस्तरीय विकसित अवस्था है। विद्यार्थियों का किताबी ज्ञान किस प्रकार का ज्ञान है? अगर यह मान भी लिया जाए कि उनका तमाम ज्ञान सत्य है, तो भी यह ज्ञान ऐसा नहीं है जिसे उन्होंने अपने व्यक्तिगत अनुभव से प्राप्त किया हो, बल्कि यह ज्ञान उन सिद्धान्तों से मिलकर बना है जिन्हें उनके पुरखों ने उत्पादन के संघर्ष और वर्ग-संघर्ष के अनुभवों का निचोड़ निकालकर निर्धारित किया था। यह बहुत जरूरी है कि विद्यार्थी इस प्रकार का ज्ञान प्राप्त करें, लेकिन उन्हें यह समझ लेना चाहिए कि जहां तक उनका अपना सम्बन्ध है, एक प्रकार से उनके लिए यह ज्ञान एकतरफा है, एक ऐसी चीज है जिसकी परख दूसरे लोगों ने तो कर ली है लेकिन उन्होंने खुद अभी तक नहीं की है। सबसे महत्वपूर्ण बात तो यह है कि इस ज्ञान को जीवन में और व्यवहार में लागू करने में निपुणता हासिल की जाए। इसलिए, मैं उन लोगों को जिन्होंने सिर्फ किताबी ज्ञान प्राप्त किया है और जिनका वास्तविकता से अभी वास्ता नहीं पड़ा, तथा उन लोगों को भी जिन्होंने थोड़ा-बहुत व्यावहारिक अनुभव प्राप्त कर रखा है, यह सलाह दूंगा कि वे अपनी कमियों को महसूस करें तथा कुछ और विनम्र बनें।

जिन्होंने सिर्फ किताबी ज्ञान प्राप्त किया है उन्हें सच्चे मायने में बुद्धिजीवी कैसे बनाया जा सकता है? इसका सिर्फ एक ही तरीका है कि वे व्यावहारिक कार्य में भाग लें और व्यावहारिक कार्यकर्ता बनें तथा जो लोग सैद्धान्तिक कार्य में लगे हुए हैं वे महत्वपूर्ण व्यावहारिक समस्याओं का अध्ययन करें। इस प्रकार हम अपने उद्देश्य में सफल होंगे।

मैंने जो कुछ कहा है शायद उससे कुछ लोग नाराज हो जाएं। वे कहेंगे, "आपकी व्याख्या के अनुसार तो मार्क्स को भी बुद्धिजीवी नहीं समझा जा सकता।" मेरा कहना है कि वे गलती पर हैं। मार्क्स ने क्रान्तिकारी आन्दोलन के व्यवहार में भाग लिया और क्रान्तिकारी सिद्धान्त की रचना भी की। पूंजीवाद के सबसे साधारण तत्व तिजारती माल से शुरू करके उन्होंने पूंजीवादी समाज के आर्थिक ढांचे का पूर्ण रूप से अध्ययन किया। लाखों-करोड़ों लोग तिजारती माल को हर रोज देखते और इस्तेमाल करते थे, लेकिन वे इसके इतने आदी हो चुके थे कि इस ओर उनका ध्यान भी नहीं गया। सिर्फ मार्क्स ने ही तिजारती माल का वैज्ञानिक ढंग से अध्ययन किया। उन्होंने तिजारती माल के वास्तविक विकास के बारे में महान अनुसन्धान-कार्य किया, और जो चीजें सार्वभौमिक रूप से मौजूद थीं उनसे एक पूर्ण वैज्ञानिक सिद्धान्त खोज निकाला। उन्होंने प्रकृति, इतिहास और सर्वहारा क्रान्ति का अध्ययन किया और द्वन्द्वात्मक भौतिकवाद, ऐतिहासिक भौतिकवाद और सर्वहारा क्रान्ति के सिद्धान्त की रचना की। इस प्रकार मार्क्स मानव-बुद्धि के चरम उत्कर्ष का प्रतिनिधित्व करने वाले एक अत्यन्त पूर्ण रूप से विकसित बुद्धिजीवी बन गए ; वे उन लोगों से बुनियादी तौर

पर भिन्न थे जिन्हें सिर्फ किताबी ज्ञान प्राप्त है। मार्क्स ने व्यावहारिक संघर्षों के दौरान विस्तृत रूप से जांच-पड़ताल की और अध्ययन किया, सामान्यीकरण का काम किया और फिर अपने निष्कर्षों को व्यावहारिक संघर्षों की कसौटी पर परखा – इसी को हम सैद्धान्तिक कार्य कहते हैं। हमारी पार्टी को बहुत बड़ी संख्या में ऐसे साथियों की जरूरत है जो यह सीखें कि यह काम कैसे किया जाना चाहिए। हमारी पार्टी में बहुत से साथी ऐसे हैं जो इस प्रकार का सैद्धान्तिक अनुसन्धान-कार्य करना सीख सकते हैं; उनमें से अधिकांश लोग समझदार और होनहार हैं और हमें उनकी कद्र करनी चाहिए। लेकिन उन्हें सही उसूलों पर चलना चाहिए और अतीत की गलतियों को दोहराना नहीं चाहिए। उन्हें कठमुल्लावाद का परित्याग कर देना चाहिए और अपने आपको पुस्तकों में लिखित वाक्यांशों तक ही सीमित नहीं रखना चाहिए।

दुनिया में सिर्फ एक ही किस्म का सच्चा सिद्धान्त होता है – वह सिद्धान्त जो वस्तुगत यथार्थ से निकाला गया हो और वस्तुगत यथार्थ की कसौटी पर परखा जा चुका हो; हमारी समझ में और कोई चीज सिद्धान्त कहलाने लायक नहीं है। स्तालिन ने कहा है कि व्यवहार से सम्बन्ध न रखने वाला सिद्धान्त निरुद्देश्य सिद्धान्त हो जाता है।[१] निरुद्देश्य सिद्धान्त व्यर्थ और मिथ्या होता है और उसे त्याग देना चाहिए। जो लोग निरुद्देश्य सिद्धान्त बघारते हैं, हमें उनकी ओर तिरस्कार से उंगली उठानी चाहिए। मार्क्सवाद-लेनिनवाद अत्यन्त सही, अत्यन्त वैज्ञानिक और अत्यन्त क्रान्तिकारी सत्य है जो वस्तुगत यथार्थ से पैदा हुआ है और जिसे वस्तुगत यथार्थ की कसौटी पर परखा जा चुका है; लेकिन बहुत से लोग, जो मार्क्सवाद-लेनिनवाद का अध्ययन करते हैं, उसे निष्प्राण कठमुल्ला-सूत्र समझते हैं, और इस तरह वे सिद्धान्त के विकास को अवरुद्ध कर देते हैं और अपने को तथा दूसरे साथियों को नुकसान पहुंचाते हैं।

दूसरी तरफ, अगर हमारे उन साथियों ने, जो व्यावहारिक कार्य में लगे हुए हैं, अपने अनुभव का दुरुपयोग किया तो वे भी नुकसान उठाएंगे। यह सच है कि उनका अनुभव प्रायः बड़ा ही समृद्ध होता है, जो हमारे लिए अत्यन्त मूल्यवान है। लेकिन अगर वे अपने ही अनुभव से सन्तुष्ट बने रहें, तो यह बहुत ही खतरनाक बात होगी। उन्हें महसूस करना चाहिए कि उनका ज्ञान अधिकांशतः इन्द्रियग्राह्य और आंशिक होता है और उनमें बुद्धिसंगत तथा सम्पूर्ण ज्ञान का अभाव होता है; दूसरे शब्दों में, उनमें सिद्धान्त का अभाव होता है और उनका ज्ञान भी अपेक्षाकृत रूप से अपूर्ण होता है। अपेक्षाकृत रूप से पूर्ण ज्ञान के बगैर, क्रान्तिकारी कार्य को भलीभांति कर पाना असम्भव है।

इस प्रकार, अपूर्ण ज्ञान दो तरह का होता है, एक तो पका-पकाया ज्ञान जो किताबों में पाया जाता है और दूसरा वह ज्ञान जो अधिकांशतः इन्द्रियग्राह्य और आंशिक होता है; यह दोनों ही तरह का ज्ञान एकतरफा होता है। इन दोनों के समन्वय से ही विशद और अपेक्षाकृत पूर्ण ज्ञान की प्राप्ति हो सकती है।

मगर सिद्धान्त का अध्ययन करने के लिए मजदूर वर्ग और किसान-समुदाय से आए हुए हमारे कार्यकर्ताओं को पहले प्रारम्भिक शिक्षा प्राप्त करनी चाहिए। इसके बगैर वे मार्क्सवादी-लेनिनवादी सिद्धान्त नहीं सीख पाएंगे। यह शिक्षा प्राप्त करके वे मार्क्सवाद-लेनिनवाद का अध्ययन किसी भी समय कर सकते हैं। मैं अपने

बचपन में कभी किसी मार्क्सवादी-लेनिनवादी स्कूल में नहीं गया और मुझे सिर्फ ऐसी चीजें सिखाई गई जैसे, "गुरु जी ने कहा है : 'सीखते जाना और जो कुछ सीखा है उसे लगातार दोहराते रहना कितनी खुशी की बात है।'"४ हालांकि यह पाठ्य-सामग्री बहुत पुरानी थी, लेकिन इसने मुझे काफी लाभ पहुंचाया क्योंकि इससे मैंने पढ़ना सीखा। आजकल हम कनफ्यूशियस के ग्रन्थ नहीं पढ़ते, बल्कि ऐसे नए विषय पढ़ते हैं जैसे आधुनिक चीनी भाषा, इतिहास, भूगोल और प्रारम्भिक प्राकृतिक विज्ञान जिनको यदि एक बार सीख लिया जाए, तो वे हर जगह उपयोगी साबित होते हैं। हमारी पार्टी की केन्द्रीय कमेटी अब इस बात पर खास जोर देती है कि मजदूर वर्ग और किसान-समुदाय से आए हुए हमारे कार्यकर्ता प्रारम्भिक शिक्षा प्राप्त करें ताकि वे उसके बाद राजनीति-शास्त्र, सैन्य-विज्ञान या अर्थशास्त्र, किसी भी शाखा का अध्ययन कर सकें। अन्यथा, अपने समृद्ध अनुभव के बावजूद वे लोग सिद्धान्त का हरगिज अध्ययन नहीं कर पाएंगे।

इससे जाहिर हो जाता है कि मनोगतवाद का मुकाबला करने के लिए हमें इन दो प्रकार के लोगों को, जिस चीज की उनमें कमी है उसकी पूर्ति करने में मदद देनी चाहिए तथा दोनों का आपस में समन्वय करना चाहिए। किताबी ज्ञान रखने वाले लोगों को व्यवहार की दिशा में आगे बढ़ना चाहिए ; यही एक तरीका है जिससे वे पुस्तकों से ही सन्तुष्ट होकर नहीं बैठ जाएंगे और कठमुल्लावादी गलतियां करने से बच जाएंगे। जिन लोगों को काम का अनुभव है, उन्हें सिद्धान्त का अध्ययन करना चाहिए और गम्भीरता से पढ़ना चाहिए ; सिर्फ तभी वे लोग अपने अनुभव को व्यवस्थित और

समन्वित कर सकेंगे तथा उसे सिद्धान्त के स्तर तक ऊंचा उठा पाएंगे, सिर्फ तभी वे लोग अपने आंशिक अनुभव को सर्वव्यापी सच्चाई समझने के भ्रम में नहीं पड़ेंगे तथा अनुभववादी गलती से बच सकेंगे। कठमुल्लावाद और अनुभववाद ये दोनों ही मनोगतवाद के दो रूप हैं, जो दो विपरीत ध्रुवों से पैदा होते हैं।

अतएव हमारी पार्टी में दो तरह का मनोगतवाद – कठमुल्लावाद और अनुभववाद – मौजूद है। उनमें से प्रत्येक केवल अंश को ही देखता है, सम्पूर्ण को नहीं। अगर लोग सतर्क न रहे, और उन्होंने यह न महसूस किया कि इस प्रकार का एकतरफापन एक त्रुटि है और उसे दूर करने का प्रयत्न न किया, तो उनके गुमराह हो जाने की सम्भावना है।

मगर इन दो प्रकार के मनोगतवादों में कठमुल्लावाद अब भी हमारी पार्टी में मौजूद मुख्य खतरा है। इसकी वजह यह है कि कठमुल्लावादी, मजदूर वर्ग और किसान-समुदाय से आए हुए कार्यकर्ताओं को, जो उनकी असलियत को आसानी से पहचान नहीं पाते, धौंस देने, अपने वश में करने और अपना पिछलग्गू बनाने के लिए मार्क्सवाद का जामा आसानी से पहन सकते हैं ; वे भोलेभाले नौजवानों पर भी धौंस जमाकर उन्हें अपने जाल में फंसा सकते हैं। अगर हम कठमुल्लावाद पर काबू पा लें, तो किताबी ज्ञान रखने वाले कार्यकर्ता स्वेच्छापूर्वक अनुभवी कार्यकर्ताओं के साथ मिलेंगे और व्यावहारिक चीजों का अध्ययन करने लगेंगे, और तब सिद्धान्त और अनुभव का समन्वय करने वाले बहुत से अच्छे कार्यकर्ता और साथ ही कुछ वास्तविक सिद्धान्तकार भी पैदा हो जाएंगे। अगर हम कठमुल्लावाद पर काबू पा लें, तो व्यावहारिक अनुभव वाले

साथियों को अच्छे शिक्षक मिल जाएंगे, जो उनके अनुभव को सिद्धान्त के स्तर तक ऊंचा उठाने और इस तरह अनुभववादी गलतियों से बचने में उनकी सहायता करेंगे।

"सिद्धान्तकार" और "बुद्धिजीवी" के बारे में ऊलजलूल विचारों के अलावा, बहुत से साथियों में "सिद्धान्त को व्यवहार से मिलाने" के बारे में भी एक ऊलजलूल विचार पाया जाता है और यह वाक्यांश हमेशा उनकी जबान पर मौजूद रहता है। वे बात तो हमेशा "मिलाने" की करते हैं लेकिन दरअसल उनका मतलब "अलग करना" होता है, क्योंकि मिलाने का ये कोई प्रयत्न नहीं करते। मार्क्सवादी-लेनिनवादी सिद्धान्त को आखिर चीनी क्रान्ति के व्यवहार के साथ कैसे मिलाया जाए? बोलचाल की आम भाषा में कहा जाए तो यह कार्य "निशाना साधकर तीर चलाने" के समान किया जाना चाहिए। तीर का निशाने से जो सम्बन्ध है, वही मार्क्सवाद-लेनिनवाद का चीनी क्रान्ति से है। लेकिन कुछ साथी "बगैर निशाना साधे ही तीर चला रहे हैं", अन्धाधुन्ध तीर चला रहे हैं; ऐसे लोग क्रान्ति को नुकसान पहुंचा सकते हैं। कुछ अन्य साथी तीर को सिर्फ हाथ में सहलाते हुए वाह-वाह कर रहे हैं कि "कैसा उम्दा तीर है! कैसा उम्दा तीर है!" लेकिन वे लोग उसे चलाना हरगिज नहीं चाहते। ये लोग विलक्षण कलाकृतियों के पारखी व प्रशंसक मात्र हैं और क्रान्ति से उनका लगभग कोई वास्ता नहीं। मार्क्सवाद-लेनिनवाद का तीर चीनी क्रान्ति के निशाने को बेधने के लिए इस्तेमाल किया जाना चाहिए। जब तक इस बात को स्पष्ट रूप से समझा नहीं जाएगा, तब तक हमारी पार्टी का सैद्धान्तिक स्तर हरगिज ऊंचा नहीं किया जा सकेगा और चीनी क्रान्ति हरगिज सफल नहीं हो सकेगी।

हमारे साथियों को यह बात समझ लेनी चाहिए कि हम मार्क्सवाद-लेनिनवाद का अध्ययन दिखावे के लिए नहीं करते, और न इसलिए करते हैं कि उसमें कोई रहस्य निहित है, बल्कि केवल इसलिए करते हैं कि यही वह विज्ञान है जो सर्वहारा वर्ग के क्रान्तिकारी कार्य को विजय की ओर ले जाता है। अब भी ऐसे लोगों की संख्या कुछ कम नहीं जो मार्क्सवादी-लेनिनवादी ग्रन्थों के चन्द उद्धरणों को बनी-बनाई एक ऐसी अचूक दवा समझते हैं जो एक बार हाथ लग जाने के बाद तमाम रोगों का आसानी से इलाज कर देगी। ऐसे लोग बाल-सुलभ अज्ञानता के शिकार हैं और हमें उनको समझाना चाहिए। जो लोग मार्क्सवाद-लेनिनवाद को धार्मिक मंत्र समझ बैठते हैं, वे ठीक ऐसे ही अनभिज्ञ लोग हैं। इन लोगों से हमें साफ-साफ कह देना चाहिए, "आपका मंत्र बेकार है।" मार्क्स, एंगेल्स, लेनिन और स्तालिन ने बार-बार बताया है कि हमारा सिद्धान्त कोई कठमुल्ला-सूत्र नहीं, बल्कि कार्यवाही का मार्गदर्शक है। लेकिन ऐसे लोग इस बात को, जो सबसे ज्यादा, सचमुच बेहद ज्यादा महत्व की है, भूल जाते हैं। चीनी कम्युनिस्टों को सिद्धान्त को व्यवहार से मिलाने वाला केवल तभी माना जाएगा जबकि वे मार्क्सवादी-लेनिनवादी रुख, दृष्टिकोण और तरीके को तथा चीनी क्रान्ति के बारे में लेनिन और स्तालिन की शिक्षाओं को लागू करने में निपुण बन जाएंगे, और इससे भी आगे बढ़कर जब वे चीनी इतिहास और क्रान्ति की वास्तविकताओं के बारे में गम्भीर अनुसन्धान के जरिए विभिन्न क्षेत्रों में चीन की जरूरतों को पूरा करने के लिए सृजनात्मक ढंग से सैद्धान्तिक कार्य कर सकेंगे। अमली तौर पर कुछ किए बिना, सिद्धान्त और व्यवहार को मिलाने की सिर्फ

बातें करते फिरना बेकार है, चाहे कोई सौ साल तक भी ऐसी बातें क्यों न बघारता रहे। समस्याओं के प्रति एक मनोगतवादी और एकतरफा रवैये का विरोध करने के लिए हमें कठमुल्लावादी मनोगतवादिता और एकतरफापन को नष्ट करना चाहिए।

समूची पार्टी के अन्दर अध्ययन-शैली में सुधार करने के लिए मनोगतवाद के विरुद्ध संघर्ष करने के बारे में आज जो कुछ बताना था, बता दिया है।

अब मैं संकीर्णतावाद के प्रश्न को लेता हूं।

बीस साल की अग्नि-दीक्षा के बाद हमारी पार्टी में अब संकीर्णतावाद का प्रभुत्व नहीं रह गया है। मगर पार्टी के भीतरी सम्बन्धों और उसके बाहरी सम्बन्धों में संकीर्णतावाद के अवशेष अब भी पाए जाते हैं। भीतरी सम्बन्धों में संकीर्णतावादी प्रवृत्तियों से पार्टी के अन्दर साथियों में अलगाव पैदा होता है और पार्टी की अन्दरूनी एकता तथा एकजुटता को नुकसान पहुंचता है, जबकि बाहरी सम्बन्धों में संकीर्णतावादी प्रवृत्तियों से पार्टी का अपने बाहर के लोगों से अलगाव बढ़ता है और समूची जनता को एकताबद्ध करने के पार्टी के कार्य में बाधा पहुंचती है। इन दोनों पहलुओं की बुराइयों का उन्मूलन करके ही तमाम पार्टी-सदस्यों के बीच और हमारे देश की समूची जनता के बीच एकता स्थापित करने के महान कार्य में पार्टी निर्बाध रूप से आगे बढ़ सकती है।

पार्टी के भीतर संकीर्णतावाद के अवशेष क्या हैं? मुख्य रूप से वे इस प्रकार हैं:

पहला, "स्वतंत्रता" का दावा करना। कुछ साथी सम्पूर्ण के हित को नहीं बल्कि सिर्फ अंश के हित को ही देखते हैं; वे हमेशा

उस आंशिक काम पर ही अनुचित रूप से जोर देते हैं जिसके लिए वे खुद जिम्मेदार हैं और सम्पूर्ण के हित को हमेशा खुद अपने ही आंशिक हितों के अधीन रखना चाहते हैं। वे पार्टी की जनवादी केन्द्रीयता की प्रणाली को नहीं समझते; वे यह नहीं समझते कि कम्युनिस्ट पार्टी को सिर्फ जनवाद की ही जरूरत नहीं, बल्कि केन्द्रीयता की उससे भी ज्यादा जरूरत है। वे जनवादी केन्द्रीयता की प्रणाली को भूल जाते हैं, जिसमें अल्पमत बहुमत के मातहत, निचला स्तर ऊपरी स्तर के मातहत, अंश सम्पूर्ण के मातहत और सभी पार्टी-सदस्य पार्टी की केन्द्रीय कमेटी के मातहत होते हैं। चाङ क्वो-थाओ अपने को केन्द्रीय कमेटी से "स्वतंत्र" रखने का दावा करता था, और इसका नतीजा यह हुआ कि उसने पार्टी के साथ गद्दारी का "दावा" कर डाला और क्वोमिन्ताङ का जासूस बन गया। हालांकि जिस संकीर्णतावाद की हम यहां चर्चा कर रहे हैं वह इतना ज्यादा गम्भीर किस्म का नहीं है, फिर भी उसके प्रति हमें सतर्क रहना चाहिए और विभिन्न रूपों में जाहिर होने वाली फूट को बिलकुल खत्म कर देना चाहिए। हमें अपने साथियों को इस बात के लिए प्रोत्साहन देना चाहिए कि वे सम्पूर्ण के हितों को ध्यान में रखें। हर पार्टी-सदस्य के लिए, तथा कार्य की हर शाखा में, हर वक्तव्य में और हर कार्यवाही में, समूची पार्टी के हितों को प्रस्थान-बिन्दु बनाया जाना चाहिए; इस उसूल का उल्लंघन करने की इजाजत हरगिज नहीं दी जा सकती।

जो लोग इस प्रकार की "स्वतंत्रता" का दावा करते हैं, वे अक्सर "पहले मैं" के सिद्धान्त से चिपके रहते हैं तथा व्यक्ति और पार्टी के बीच के सम्बन्धों के सवाल के बारे में आम तौर पर गलत रुख

अपनाते हैं। हालांकि अपने कथनों में वे पार्टी की इज्जत करने का दिखावा करते हैं, लेकिन व्यवहार में अपने आपको प्रमुख स्थान और पार्टी को गौण स्थान देते हैं। ऐसे लोग आखिर चाहते क्या हैं? वे लोग शोहरत और ओहदे के भूखे होते हैं और वाहवाही लूटना चाहते हैं। जब भी उन्हें काम की किसी शाखा में कोई जिम्मेदारी सौंपी जाती है तो वे अपनी "स्वतंत्रता" का आग्रह करने लग जाते हैं। अपने इस मकसद को पूरा करने के लिए वे कुछ लोगों को अन्दर खींच लेते हैं, कुछ लोगों को बाहर धकेल देते हैं तथा अपने साथियों के बीच डींग हांकने, चापलूसी करने और दलाली करने का तरीका अपनाकर पूंजीपति वर्ग की राजनीतिक पार्टियों की निकम्मी कार्यशैली को कम्युनिस्ट पार्टी के भीतर लागू करते हैं। वे अपनी बेईमानी के कारण ही असफल होते हैं। मैं समझता हूं कि हमें ईमानदारी से काम करना चाहिए, क्योंकि ईमानदारी का रवैया अपनाए बिना इस दुनिया में कोई भी काम पूरा करना असम्भव है। ईमानदार लोग कौन हैं? मार्क्स, एंगेल्स, लेनिन और स्तालिन ईमानदार हैं, वैज्ञानिक लोग ईमानदार हैं। बेईमान लोग कौन हैं? त्रात्सकी, बुखारिन, छन तू-श्यू और चाङ क्वो-थाओ अत्यन्त बेईमान हैं और वे लोग भी बेईमान हैं जो व्यक्तिगत हित अथवा किसी आंशिक हित के लिए "स्वतंत्रता" का दावा करते हैं। तमाम धूर्त लोग और ऐसे तमाम लोग जो अपने काम में वैज्ञानिक रवैया नहीं अपनाते, अपने को बड़ा सूझबूझ वाला और चालाक समझते हैं, लेकिन वास्तव में वे बहुत ही बेवकूफ होते हैं और उनका अन्त अच्छा नहीं होगा। हमारे पार्टी स्कूल के विद्यार्थियों को इस समस्या पर अवश्य ध्यान देना चाहिए। हमें एक केन्द्रित, एकीकृत पार्टी का निर्माण करना चाहिए और गुटबाजी के तमाम सिद्धान्तहीन संघर्षों का पूरी तरह सफाया कर देना चाहिए। हमें व्यक्तिवाद और संकीर्णतावाद का विरोध करना चाहिए, ताकि हम अपनी समूची पार्टी को कदम से कदम मिलाकर चलने और समान उद्देश्य के लिए संघर्ष करने के योग्य बना सकें।

बाहर से आए हुए और स्थानीय कार्यकर्ताओं को एकताबद्ध हो जाना चाहिए और संकीर्णतावादी प्रवृत्तियों का विरोध करना चाहिए। बाहर से आए हुए और स्थानीय कार्यकर्ताओं के आपसी सम्बन्धों की तरफ विशेष ध्यान दिया जाना जरूरी है, क्योंकि बहुत से जापान-विरोधी आधार-क्षेत्र सिर्फ आठवीं राह सेना अथवा नई चौथी सेना के पहुंचने के बाद ही स्थापित किए गए हैं और बहुत सा स्थानीय काम सिर्फ बाहर के कार्यकर्ताओं के आने के बाद ही विकसित हुआ है। हमारे साथियों को यह बात समझ लेनी चाहिए कि इन परिस्थितियों में हमारे आधार-क्षेत्र सिर्फ तभी सुदृढ़ बन सकते हैं और हमारी पार्टी वहां अपनी जड़ें सिर्फ तभी जमा सकती है जब इन दोनों प्रकार के कार्यकर्ता पूर्ण रूप से एकताबद्ध हो जाएं और जब स्थानीय कार्यकर्ताओं को बड़ी संख्या में तैयार करके उन्हें तरक्की दी जाए ; अन्यथा यह असम्भव है। बाहर से आए हुए और स्थानीय इन दोनों ही तरह के कार्यकर्ताओं की अपनी-अपनी खूबियां और कमियां हैं और किसी भी प्रकार की उन्नति करने के लिए उनका एक दूसरे की खूबियों से सीखकर अपनी कमियों को दूर करना जरूरी है। जहां तक स्थानीय परिस्थितियों की जानकारी प्राप्त करने और जनता के साथ सम्बन्ध कायम करने की बात है, बाहर से आए हुए कार्यकर्ता इसमें आम

तौर से स्थानीय कार्यकर्ताओं का मुकाबला नहीं कर पाते। मिसाल के तौर पर मुझे ही लीजिए। यद्यपि मैं उत्तरी शेनशी में पांच-छै साल तक रह चुका हूं, फिर भी यहां की परिस्थितियों को समझने और यहां की जनता के साथ सम्बन्ध कायम करने के मामले में स्थानीय साथियों से बहुत पीछे हूं। शानशी, हूपे, शानतुङ तथा अन्य प्रान्तों के जापान-विरोधी आधार-क्षेत्रों में काम करने के लिए जाने वाले हमारे साथियों को इस बात को अवश्य ध्यान में रखना चाहिए। यही नहीं, एक ही आधार-क्षेत्र में, कुछ इलाकों के पहले विकसित होने और कुछ के बाद में विकसित होने के कारण, एक इलाके के स्थानीय कार्यकर्ताओं और उसके बाहर से आए हुए कार्यकर्ताओं के बीच भी फर्क होता है। एक अधिक विकसित इलाके से कम विकसित इलाके में जाने वाले कार्यकर्ता भी उस इलाके की दृष्टि से बाहर के कार्यकर्ता हैं, और उन्हें भी स्थानीय कार्यकर्ताओं का पोषण करने और उनकी सहायता करने की ओर बहुत अधिक ध्यान देना चाहिए। उन स्थानों में जहां काम के इनचार्ज बाहर से आए हुए कार्यकर्ता हैं, अगर स्थानीय कार्यकर्ताओं के साथ उनके सम्बन्ध अच्छे न हों, तो आम तौर पर इसकी मुख्य जिम्मेदारी उनकी ही होनी चाहिए। और मुख्य इनचार्ज साथियों की जिम्मेदारी और ज्यादा होनी चाहिए। कुछ स्थानों में इस समस्या पर अब तक काफी ध्यान नहीं दिया गया। कुछ लोग स्थानीय कार्यकर्ताओं को हेय दृष्टि से देखते हैं और "ये गंवार, स्थानीय लोग क्या जानें!" कहकर उनका मजाक उड़ाते हैं। ऐसे लोग स्थानीय कार्यकर्ताओं के महत्व को बिलकुल नहीं समझ पाते ; वे न तो स्थानीय कार्यकर्ताओं की खूबियों को और न खुद अपनी कमियों को ही समझते हैं और

एक गलत, संकीर्णतावादी रवैया अपनाते हैं। बाहर से आए हुए तमाम कार्यकर्ताओं को स्थानीय कार्यकर्ताओं से आत्मीयता बरतनी चाहिए और उनकी लगातार मदद करनी चाहिए तथा उनका मजाक उड़ाने या उन पर प्रहार करने की हरगिज इजाजत नहीं दी जानी चाहिए। बेशक, स्थानीय कार्यकर्ताओं को भी बाहर से आए हुए कार्यकर्ताओं की खूबियों से सीखना चाहिए और गलत, संकीर्ण विचारों से अपना पीछा छुड़ा लेना चाहिए ताकि वे और बाहर से आए हुए कार्यकर्ता आपस में मिलकर एकरूप हो जाएं, "उनके" और "हमारे" का कोई भेद न रहे और इस प्रकार संकीर्णतावादी प्रवृत्तियों से बचा जा सके।

यही बात सेना में काम करने वाले कार्यकर्ताओं और स्थानीय काम करने वाले अन्य कार्यकर्ताओं के सम्बन्धों पर भी लागू होती है। उन्हें पूर्ण रूप से एकताबद्ध हो जाना चाहिए और संकीर्णतावादी प्रवृत्तियों का विरोध करना चाहिए। सेना के कार्यकर्ताओं को स्थानीय कार्यकर्ताओं की मदद करनी चाहिए और स्थानीय कार्यकर्ताओं को सेना के कार्यकर्ताओं की। अगर उनके बीच मतभेद पैदा हो जाए, तो दोनों को एक दूसरे के प्रति सहनशीलता का रवैया अपनाकर अपनी उचित आत्म-आलोचना करनी चाहिए। जिन जगहों पर सेना के कार्यकर्ता वास्तव में नेतृत्व के पदों पर हैं, अगर वहां स्थानीय कार्यकर्ताओं के साथ उनके सम्बन्ध अच्छे न हों, तो आम तौर पर इसकी मुख्य जिम्मेदारी उन पर ही होनी चाहिए। यह जरूरी है कि पहले सेना के कार्यकर्ता खुद अपनी जिम्मेदारी को समझें और स्थानीय कार्यकर्ताओं के प्रति विनम्रतापूर्ण रवैया अपनाएं, सिर्फ तभी आधार-क्षेत्रों में हमारे युद्ध-प्रयासों

के और निर्माण-कार्य के सुचारु रूप से आगे बढ़ने की परिस्थिति उत्पन्न हो सकेगी।

विभिन्न फौजी यूनिटों, विभिन्न इलाकों और विभिन्न विभागों में भी आपसी सम्बन्धों पर यही बात लागू होती है। हमें स्वार्थपूर्ण विभागवाद की प्रवृत्ति का विरोध करना चाहिए, जिसके जरिए किसी एक इकाई के हितों की देखभाल दूसरी इकाइयों के हितों की उपेक्षा करके की जाती है। जो कोई व्यक्ति दूसरों की कठिनाइयों के प्रति उदासीनता का रुख अपनाता है, अनुरोध करने पर भी कार्यकर्ताओं को दूसरी इकाइयों में भेजने से इनकार करता है, अथवा सिर्फ अपेक्षाकृत कम अच्छे कार्यकर्ताओं को ही दूसरी इकाइयों में भेजता है, "पड़ोसी के खेत को अपने फालतू पानी की निकासी का साधन बनाना" चाहता है, तथा अन्य विभागों, इलाकों अथवा लोगों का जरा भी खयाल नहीं रखता – ऐसा व्यक्ति एक स्वार्थी विभागवादी होता है, जो कम्युनिस्ट भावना को बिलकुल खो बैठता है। सम्पूर्ण का खयाल न रखना और अन्य विभागों, इलाकों और लोगों के प्रति पूरी तरह उदासीन रहना, एक स्वार्थी विभागवादी की विशेषता है। हमें इस बात की अधिकाधिक कोशिश करनी चाहिए कि ऐसे लोगों को शिक्षित करें तथा उन्हें यह समझा दें कि स्वार्थी विभागवाद एक संकीर्णतावादी प्रवृत्ति है और अगर इसे विकसित होने दिया गया तो यह बहुत खतरनाक साबित हो सकती है।

एक अन्य समस्या पुराने और नए कार्यकर्ताओं के सम्बन्धों की है। जापानी-आक्रमण-विरोधी युद्ध शुरू होने के बाद से हमारी पार्टी ने अपना बहुत ज्यादा विकास किया है, और भारी संख्या में नए कार्यकर्ताओं का उदय हुआ है। यह एक बहुत अच्छी बात है।

सोवियत संघ की कम्युनिस्ट पार्टी (बोलशेविक) की अठारहवीं कांग्रेस में कामरेड स्तालिन ने अपनी रिपोर्ट में कहा था, "...पुराने कार्यकर्ता पर्याप्त संख्या में हरगिज नहीं हैं, वे जरूरत से बहुत थोड़े हैं और प्रकृति के नियमों के अन्तर्गत उनमें से कुछ लोगों की अवस्था भी ढलती जा रही है।" यहां कामरेड स्तालिन न सिर्फ कार्यकर्ताओं की स्थिति की चर्चा कर रहे थे, बल्कि प्रकृति के नियमों की भी चर्चा कर रहे थे। अगर हमारी पार्टी के पास पुराने कार्यकर्ताओं के साथ एकता व सहयोग कायम करके काम करने वाले बहुत से नए कार्यकर्ता नहीं होंगे, तो हमारा काम ठप्प हो जाएगा। इसलिए तमाम पुराने कार्यकर्ताओं को चाहिए कि वे नए कार्यकर्ताओं का अत्यन्त उत्साह से स्वागत करें और उनके प्रति अत्यन्त स्नेहपूर्ण आत्मीयता का बरताव करें। निस्सन्देह, नए कार्यकर्ताओं की अपनी कमियां होती हैं। उन्हें क्रान्ति में शामिल हुए बहुत समय नहीं हुआ और उनमें अनुभव की कमी है, तथा उनमें से कुछ लोग अनिवार्य रूप से पुराने समाज की अस्वस्थ विचारधारा के अवशेष, निम्न-पूंजीवादी व्यक्तिवाद की विचारधारा की जूठन अपने साथ लेकर आए हैं। पर ऐसी कमियां शिक्षा के जरिए और क्रान्ति की ज्वालाओं में तपकर कदम-ब-कदम दूर हो सकती हैं। नए कार्यकर्ताओं की खूबी, जैसा कि स्तालिन ने कहा है, यह है कि वे नई चीजों के प्रति अत्यन्त संवेदनशील होते हैं और इसलिए बड़े ही उत्साही और सक्रिय होते हैं – ये गुण ऐसे हैं जो कुछ पुराने कार्यकर्ताओं में नहीं होते।[१] नए और पुराने कार्यकर्ताओं को एक दूसरे का आदर करना चाहिए, एक दूसरे से सीखना चाहिए और एक दूसरे की खूबियों से सीखकर अपनी कमियों को दूर करना चाहिए, ताकि वे हमारे

मुश्तरका कार्य के लिए एकदिल हो सकें और संकीर्णतावादी प्रवृत्तियों से बच सकें। जिन जगहों पर पुराने कार्यकर्ता मुख्य रूप से काम के इनचार्ज हैं, अगर वहां नए कार्यकर्ताओं के साथ उनके सम्बन्ध अच्छे न हों, तो आम तौर पर इसकी मुख्य जिम्मेदारी पुराने कार्यकर्ताओं पर ही होगी।

अंश और सम्पूर्ण के आपसी सम्बन्ध, व्यक्ति और पार्टी के आपसी सम्बन्ध, बाहर से आए हुए और स्थानीय कार्यकर्ताओं के आपसी सम्बन्ध, सैनिक कार्यकर्ताओं और स्थानीय कार्यकर्ताओं के आपसी सम्बन्ध, सेना की किन्हीं दो यूनिटों के आपसी सम्बन्ध, किन्हीं दो इलाकों के आपसी सम्बन्ध, किन्हीं दो विभागों के आपसी सम्बन्ध तथा पुराने और नए कार्यकर्ताओं के आपसी सम्बन्ध – ये तमाम उपरोक्त सम्बन्ध पार्टी के भीतरी सम्बन्ध हैं। इन तमाम सम्बन्धों में कम्युनिज्म की भावना को बढ़ाना और संकीर्णतावादी प्रवृत्तियों के खिलाफ सतर्क रहना जरूरी है, ताकि हमारी पार्टी की पांतें सुव्यवस्थित रहें, कदम से कदम मिलाकर चलें और फलतः अच्छी तरह लड़ सकें। यह एक बहुत ही महत्वपूर्ण समस्या है जिसे पार्टी की कार्यशैली में सुधार करते समय हमें पूर्ण रूप से हल करना चाहिए। संकीर्णतावाद संगठनात्मक सम्बन्धों में मनोगतवाद की ही एक अभिव्यक्ति है; अगर हम मनोगतवाद से मुक्ति पाना चाहते हैं और तथ्यों के जरिए सत्य की तलाश करने की मार्क्सवादी-लेनिनवादी भावना को बढ़ावा देना चाहते हैं, तो हमें पार्टी से संकीर्णतावाद के अवशेषों का सफाया कर देना चाहिए और इस बात को प्रस्थान-बिन्दु बनाना चाहिए कि पार्टी के हित किसी व्यक्ति के और किसी अंश के हितों से ऊपर हैं, ताकि पार्टी में पूर्ण एकता

और एकजुटता कायम की जा सके।

संकीर्णतावाद के अवशेषों को न सिर्फ पार्टी के भीतरी सम्बन्धों से खत्म कर दिया जाना चाहिए, बल्कि उन्हें पार्टी के बाहरी सम्बन्धों से भी खत्म कर दिया जाना चाहिए। इसकी वजह यह है: हम महज समूची पार्टी के साथियों को एकताबद्ध करके ही दुश्मन को नहीं हरा सकते, बल्कि सिर्फ समूचे देश की जनता को एकताबद्ध करके ही उसे हरा सकते हैं। चीनी कम्युनिस्ट पार्टी पिछले बीस वर्ष से समूचे देश की जनता को एकताबद्ध करने का महान और कठिन कार्य करती आई है, और जापानी-आक्रमण-विरोधी युद्ध शुरू होने के बाद से इस कार्य में पहले से भी ज्यादा बड़ी उपलब्धियां हासिल की गई हैं। मगर इसका मतलब यह नहीं कि हमारे तमाम साथियों का जनता के साथ व्यवहार का ढंग बिलकुल सही है और वे संकीर्णतावादी प्रवृत्तियों से मुक्त हैं। ऐसा नहीं है। दरअसल, साथियों के एक हिस्से में संकीर्णतावादी प्रवृत्तियां अब भी पाई जाती हैं और कुछ लोगों में तो ये प्रवृत्तियां बहुत ही गम्भीर रूप से मौजूद हैं। हमारे बहुत से साथी गैरपार्टी लोगों के प्रति एक दम्भपूर्ण रवैया अपनाते हैं, उन्हें हिकारत की नजर से देखते हैं, उनको तुच्छ समझते हैं अथवा उनका आदर करने और उनकी खूबियों को स्वीकार करने से इनकार करते हैं। यह वाकई एक संकीर्णतावादी प्रवृत्ति है। ऐसे साथी एक-दो मार्क्सवादी पुस्तकें पढ़कर और अधिक विनम्र होने के बजाय और अधिक अहंकार से भर जाते हैं, तथा यह महसूस किए बगैर कि उनका अपना ही ज्ञान अधूरा है, हमेशा दूसरों को निकम्मा समझते हैं। हमारे साथियों को इस सत्य को समझ लेना चाहिए कि गैरपार्टी लोगों की तुलना में हमारे पार्टी-

सदस्य सदा ही अल्पसंख्या में होते हैं। मान लीजिए हर सौ व्यक्तियों में से एक व्यक्ति कम्युनिस्ट हो, तो चीन की ४५ करोड़ आबादी में ४५ लाख कम्युनिस्ट हुए। अगर हमारे पार्टी-सदस्यों की संख्या इस हद तक भी बढ़ जाए तो भी वह कुल आबादी का केवल एक प्रतिशत ही होगी, जबकि गैरपार्टी लोगों की संख्या ६६ प्रतिशत होगी। तो फिर क्या कारण है कि हम गैरपार्टी लोगों से सहयोग न करें ? जहां तक उन लोगों का सम्बन्ध है जो हमारे साथ सहयोग करना चाहते हैं अथवा सहयोग कर भी सकते हैं, हमारा एकमात्र कर्तव्य यह है कि हम उनके साथ सहयोग करें, तथा उन्हें अपने से दूर रखने का हमें कोई अधिकार नहीं। लेकिन कुछ पार्टी-सदस्य यह बात नहीं समझते और जो लोग हमारे साथ सहयोग करना चाहते हैं उन्हें हिकारत की नजर से देखते हैं अथवा उन्हें दूर ही रखते हैं। ऐसा करने का कोई कारण नहीं है। क्या मार्क्स, एंगेल्स, लेनिन और स्तालिन ने कोई कारण बताया है ? उन्होंने नहीं बताया है। इसके विपरीत, उन्होंने हमेशा हमें यह सच्ची सीख दी है कि हम जन-समुदाय के साथ घनिष्ठ सम्बन्ध कायम करें और उससे अलग न रहें। अथवा क्या चीनी कम्युनिस्ट पार्टी की केन्द्रीय कमेटी ने हमें कोई कारण बताया है ? नहीं। उसके तमाम प्रस्तावों में एक भी ऐसा नहीं जो यह कहता हो कि हम अपने को जन-समुदाय से अलग कर लें और इस प्रकार अपने को अलगाव की स्थिति में डाल लें। इसके विपरीत, केन्द्रीय कमेटी ने हमेशा हमें यही सीख दी है कि हम जन-समुदाय से घनिष्ठ सम्बन्ध स्थापित करें और उससे अलगाव पैदा न करें। इस प्रकार जन-समुदाय से अलगाव पैदा करने वाली तमाम कार्यवाहियों का कोई भी कारण मौजूद नहीं ; यह

केवल उन संकीर्णतावादी विचारों का धृष्टतापूर्ण परिणाम है जिन्हें हमारे कुछ कामरेडों ने खुद ही ईजाद किया है। चूंकि हमारे कुछ कामरेडों में इस प्रकार का संकीर्णतावाद बहुत गम्भीर रूप में मौजूद है और पार्टी की कार्यदिशा को लागू करने में बाधक है, इसलिए हमें इस समस्या का मुकाबला करने के लिए पार्टी के भीतर व्यापक रूप से शिक्षा के कार्य को चलाना चाहिए। सबसे बड़ी बात यह है कि हमें अपने कार्यकर्ताओं को समझाना चाहिए कि यह समस्या कितनी गम्भीर है, और जब तक पार्टी-सदस्य गैरपार्टी कार्यकर्ताओं और गैरपार्टी लोगों के साथ एकताबद्ध नहीं हो जाते, तब तक दुश्मन को हराना और क्रान्ति को सफल बनाना कितना नामुमकिन है।

तमाम संकीर्णतावादी विचार मनोगतवादी होते हैं और क्रान्ति की वास्तविक आवश्यकताओं से मेल नहीं खाते ; अतएव संकीर्णतावाद के खिलाफ संघर्ष तथा मनोगतवाद के खिलाफ संघर्ष साथ-साथ चलाया जाना चाहिए।

घिसेपिटे पार्टी-लेखन के सवाल पर बात करने के लिए आज समय नहीं है ; मैं इसकी चर्चा किसी दूसरी मीटिंग में करूंगा। घिसापिटा पार्टी-लेखन कचरा ढोने की गाड़ी के समान है, वह भी मनोगतवाद और संकीर्णतावाद की ही अभिव्यक्ति का एक रूप है। वह लोगों को नुकसान पहुंचाता है और क्रान्ति को नष्ट करता है, इसलिए उसका सफाया करना हमारे लिए निहायत जरूरी है।

मनोगतवाद का विरोध करने के लिए हमें भौतिकवाद और द्वन्द्ववाद का प्रचार करना चाहिए। मगर हमारी पार्टी में बहुत से साथी ऐसे हैं जो भौतिकवाद और द्वन्द्ववाद के प्रचार पर जोर नहीं देते। कुछ लोग मनोगतवादी प्रचार को सहन कर लेते हैं और उसके

प्रति उदासीनता बरतते हैं। वे सोचते हैं कि उनका मार्क्सवाद में विश्वास है, लेकिन वे भौतिकवाद के प्रचार-प्रसार का प्रयत्न नहीं करते और जब वे मनोगतवादी चीजें पढ़ते या सुनते हैं तो उन पर विचार नहीं करते अथवा अपनी राय जाहिर नहीं करते। यह एक कम्युनिस्ट का रवैया नहीं है। इससे हमारे बहुत से साथी मनोगतवादी विचारों के जहर का शिकार हो जाते हैं, जिससे उनकी संवेदनशीलता शिथिल बन जाती है। इसलिए हमें अपने साथियों के मस्तिष्क को मनोगतवाद तथा कठमुल्लावाद के कुहासे से मुक्त करने के लिए पार्टी के अन्दर जागरण आन्दोलन चलाना चाहिए और मनोगतवाद, संकीर्णतावाद और घिसेपिटे पार्टी-लेखन का बहिष्कार करने का आवाहन करना चाहिए। ऐसी बुराइयां जापानी माल की तरह हैं, क्योंकि केवल हमारा दुश्मन ही यह चाहता है कि हम उन्हें बरकरार रखें और उनके नशे में मदहोश रहें ; इसलिए जिस तरह हम जापानी माल का बहिष्कार करते हैं,[१] उसी तरह हमें इन सब चीजों के बहिष्कार का भी अनुमोदन करना चाहिए। हमें मनोगतवाद, संकीर्णतावाद तथा घिसेपिटे पार्टी-लेखन की तमाम रद्दी चीजों का बहिष्कार कर देना चाहिए, उनकी बिक्री मुश्किल बना देनी चाहिए और उन्हें जुटाने वालों को पार्टी के सैद्धान्तिक स्तर के पिछड़ेपन का लाभ उठाकर अपना व्यापार चलाने की छूट नहीं देनी चाहिए। हमारे साथियों को इस मकसद के लिए अपनी सूंघने की शक्ति को अच्छी तरह विकसित करना चाहिए, तथा उन्हें किसी भी चीज को अपनाने अथवा बहिष्कृत करने का निर्णय करने से पहले उसे सूंघकर अच्छे और बुरे की परख करनी चाहिए। कम्युनिस्टों को हर चीज का कारण खोजने की कोशिश

करनी चाहिए, उन्हें अपना दिमाग लगाकर बड़ी सावधानी के साथ इस बात पर विचार करना चाहिए कि वह वास्तविकता के अनुरूप है अथवा नहीं और वास्तव में मजबूत बुनियाद पर कायम है अथवा नहीं ; उन्हें किसी भी हालत में अन्धानुकरण नहीं करना चाहिए और गुलामी की मनोवृत्ति को प्रोत्साहन नहीं देना चाहिए।

अन्त में, मनोगतवाद, संकीर्णतावाद और घिसेपिटे पार्टी-लेखन का विरोध करते समय हमें दो बातें ध्यान में रखनी चाहिए : पहले, "भावी गलतियों से बचने के लिए पिछली गलतियों से सबक सीखना" तथा दूसरे, "मरीज को बचाने के लिए उसकी बीमारी का इलाज करना"। अतीत काल में की गई गलतियों का पर्दाफाश करते समय इस बात की परवाह नहीं करनी चाहिए कि ऐसा करने से किसी की भावनाओं को ठेस पहुंचेगी ; यह जरूरी है कि अतीत काल की तमाम बुरी बातों के प्रति वैज्ञानिक रुख अपनाकर उनका विश्लेषण किया जाए और उनकी आलोचना की जाए, ताकि भविष्य में काम ज्यादा सावधानी के साथ और बेहतर रूप से किया जा सके। इसी का मतलब है "भावी गलतियों से बचने के लिए पिछली गलतियों से सबक सीखना"। लेकिन गलतियों का पर्दाफाश करने और कमियों की आलोचना करने का हमारा मकसद, बीमारी का इलाज करने वाले डाक्टर की ही तरह, केवल यह होता है कि मरीज को बचा लिया जाए और उसे मौत के मुंह में न धकेल दिया जाए। अन्धी आंत के रोग से पीड़ित मरीज की अन्धी आंत को जब सर्जन निकाल देता है तो उसकी जान बच जाती है। यदि कोई ऐसा व्यक्ति जिसने गलतियां की हों, इलाज के डर से अपनी बीमारी को छिपाता नहीं अथवा अपनी गलतियों पर इस हद तक अड़ा नहीं रहता कि

उसके मर्ज का इलाज असम्भव हो जाए, यदि वह ईमानदारी से और सच्चे दिल से अपना इलाज कराना चाहता है और अपने तौर-तरीके सुधारना चाहता है, तो हमें उसका स्वागत करना चाहिए और उसकी बीमारी का इलाज करना चाहिए, ताकि वह एक अच्छा कामरेड बन सके। अगर हमने स्वच्छंदतापूर्वक उस पर अन्धाधुन्ध प्रहार किए तो हम अपने मकसद में हरगिज कामयाब नहीं हो सकते। किसी विचारधारात्मक अथवा राजनीतिक बीमारी का इलाज करते समय हमें बदमिजाजी और जल्दबाजी से काम नहीं लेना चाहिए तथा "मरीज को बचाने के लिए उसकी बीमारी का इलाज करने" का रुख अपनाना चाहिए। यही एकमात्र सही और कारगर तरीका है।

पार्टी स्कूल के उद्घाटन के इस अवसर पर मैंने काफी विस्तार से अपनी बात कह दी है, और मुझे आशा है कि जो कुछ मैंने कहा है, हमारे साथी उस पर विचार करेंगे। (जोरदार तालियां)

नोट

[1] देखिए : "चीन के क्रान्तिकारी युद्ध की रणनीति विषयक समस्याएं", नोट ३७ ("माओ त्सेतुङ की संकलित रचनाएं", ग्रन्थ १)। घिसापिटा लेखन, अथवा "अष्टपदी निबन्ध" शब्दों के खिलवाड़ से भरा होता था, केवल शैली पर जोर देता था और सारहीन होता था। ऐसे निबन्ध का प्रत्येक पैरा एक निश्चित नियम के अनुसार लिखा जाता था, यहां तक कि उसकी अक्षर संख्या भी निश्चित होती थी, लेखक केवल शीर्षक के अर्थ के मुताबिक खींचातानी करके इसी प्रकार का निबन्ध लिख डालता था। "घिसापिटा पार्टी-लेखन"

क्रान्तिकारी पांतों में कुछ लोगों द्वारा लिखे जाने वाले लेखों की खासियत है, जो तथ्यों का विश्लेषण करने के बजाय क्रान्तिकारी प्रतीत होने वाले वाक्यांशों और परिभाषाओं का ढेर उल्टे-सीधे ढंग से लगा देते हैं। "अष्टपदी निबन्ध" की भांति उनके ये लेख भी निरर्थक शब्दजाल के अलावा और कुछ नहीं होते।

[2] यह बुद्धिजीवियों को भरती करने के बारे में चीनी कम्युनिस्ट पार्टी की केन्द्रीय कमेटी द्वारा दिसम्बर १९३९ में किया गया फैसला था, जो "माओ त्सेतुङ की संकलित रचनाएं", ग्रन्थ २ में "बुद्धिजीवियों को बड़ी तादाद में भरती करो" शीर्षक से प्रकाशित हो चुका है।

[3] देखिए : जे० वी० स्तालिन की रचना "लेनिनवाद के आधारभूत सिद्धान्त", भाग ३।

[4] यह "कनफ्यूशियस का सूक्ति-संग्रह" नामक पुस्तक का पहला वाक्य है। इस पुस्तक में कनफ्यूशियस और उसके शिष्यों की बातचीत का ब्यौरा दिया गया है।

[5] देखिए : जे० वी० स्तालिन, "सोवियत संघ की कम्युनिस्ट पार्टी (बोलशेविक) की अठारहवीं कांग्रेस में केन्द्रीय कमेटी के काम की रिपोर्ट", भाग ३, परिच्छेद २।

[6] जापानी माल का बहिष्कार करना संघर्ष का एक तरीका था, जिसे जापानी साम्राज्यवाद द्वारा किए गए आक्रमण के विरुद्ध चीनी जनता ने बीसवीं सदी के पूर्वार्ध में, जैसे १९१९ के देशभक्तिपूर्ण ४ मई आन्दोलन में, १८ सितम्बर १९३१ की घटना के बाद और जापानी-आक्रमण-विरोधी युद्ध के दौरान, बार-बार इस्तेमाल किया।

घिसेपिटे पार्टी-लेखन का विरोध करो*

८ फरवरी १९४२

कामरेड खाए-फ़ङ ने आज की मीटिंग के उद्देश्य पर अभी-अभी प्रकाश डाला है। अब मैं आपको यह बताना चाहता हूं कि वे कौन से तरीके हैं जो मनोगतवाद और संकीर्णतावाद द्वारा अपने प्रचार-कार्य के साधन के रूप में या अपनी अभिव्यक्ति की शैली के रूप में घिसेपिटे पार्टी-लेखन का इस्तेमाल करने के लिए अपनाए जाते हैं। हम मनोगतवाद और संकीर्णतावाद के विरुद्ध संघर्ष कर रहे हैं, लेकिन अगर इसके साथ ही हमने घिसेपिटे पार्टी-लेखन से अपना पीछा नहीं छुड़ाया, तो उनके लिए छिपकर बैठने का स्थान फिर भी बना रहेगा। यदि हम उसे भी नष्ट कर डालें, तो मनोगतवाद और संकीर्णतावाद को हम "मात" दे देंगे तथा इन दोनों दैत्यों को अपने असली रूप में सामने आने के लिए बाध्य कर देंगे, ये दोनों मानो "सड़क पार करने वाले चूहे हों, जिन्हें देखकर प्रत्येक व्यक्ति 'मारो! मारो!' चिल्लाने लगता है," और हम उनका आसानी से विनाश करने में समर्थ हो सकेंगे।

---

* यह भाषण कामरेड माओ त्सेतुङ ने येनान में आयोजित कार्यकर्ताओं की एक बैठक में दिया था।

यदि कोई व्यक्ति केवल अपने ही पढ़ने के लिए घिसेपिटे पार्टी-लेखन तैयार करता है, तो इससे कोई ज्यादा नुकसान नहीं होता। यदि वह उन्हें किसी दूसरे व्यक्ति को दे देता है तो इससे पाठकों की संख्या दुगुनी हो जाती है और नुकसान भी कम नहीं होता। और यदि वह उन्हें किसी दीवार पर चस्पां करवाता है, उनके मिमियोग्राफ तैयार करवाता है, उन्हें समाचारपत्रों में प्रकाशित करवाता है या पुस्तक के रूप में प्रकाशित करवाता है, तब समस्या सचमुच एक बड़ा रूप धारण कर लेती है क्योंकि इस तरह उनका असर काफी लोगों पर पड़ता है। और घिसेपिटे पार्टी-लेख लिखने वाले लोग हमेशा पाठकों की बड़ी संख्या की तलाश में रहते हैं। इस प्रकार घिसेपिटे पार्टी-लेखन का पर्दाफाश करना और बिनाश करना हमारे लिए अनिवार्य हो गया है।

घिसापिटा पार्टी-लेखन "विदेशी घिसेपिटे लेखन" की ही एक किस्म है, जिस पर लू शुन काफी समय पहले प्रहार कर चुके हैं।[1] तो फिर हम लोग इसे पार्टी का "अष्टपदी लेखन" क्यों कहते हैं? इसकी वजह यह है कि विदेशी छाप के साथ-साथ उसमें कुछ स्वदेशी गन्ध भी मौजूद रहती है। शायद इसे भी एक किस्म की सृजनात्मक रचना का नाम दिया जा सकता है! कौन कहता है कि हमारे लोगों ने सृजनात्मक रचनाएं तैयार नहीं की हैं? आखिर यह भी तो एक सृजनात्मक रचना ही है! (जोर की हंसी)

हमारी पार्टी में घिसेपिटे पार्टी-लेखन का एक लम्बा इतिहास है; विशेष रूप से भूमि-क्रान्ति के दौरान कभी-कभी इसकी बहुत ज्यादा भरमार होने लगती थी।

ऐतिहासिक दृष्टि से विचार किया जाए, तो घिसेपिटे पार्टी-

लेखन का जन्म ४ मई आन्दोलन की प्रतिक्रिया के रूप में हुआ है।

४ मई आन्दोलन के दौरान, आधुनिक विचार वाले लोगों ने क्लासिकी चीनी भाषा के प्रयोग का विरोध किया और प्रचलित चीनी भाषा के प्रयोग की हिमायत की, परम्परागत कठमुल्ला-सूत्रों का विरोध किया और विज्ञान व जनवाद की हिमायत की; यह बिलकुल उचित था। उस समय का यह आन्दोलन एक सजीव और ओजस्वी आन्दोलन था, प्रगतिशील और क्रान्तिकारी आन्दोलन था। उन दिनों शासक वर्गों द्वारा विद्यार्थियों को कनफ्यूशियस के विचारों की शिक्षा दी जाती थी और जनता को बाध्य किया जाता था कि वह कनफ्यूशियसवाद के तमाम छल-कपट की पूजा धार्मिक कठमुल्ला-सूत्रों के रूप में करे, तथा सभी लेखक क्लासिकी भाषा का प्रयोग करते थे। संक्षेप में, शासक वर्गों और उनके पिछलग्गुओं द्वारा जो भी लिखा और पढ़ाया जाता था वह विषय और शैली दोनों की दृष्टियों से घिसेपिटे लेखन और कठमुल्ला-सूत्रों के रूप में ही होता था। ये पुराने घिसेपिटे लेखन और पुराने कठमुल्ला-सूत्र थे। ४ मई आन्दोलन की एक अत्यन्त महान उपलब्धि यह थी कि उसने जनता के सामने पुराने घिसेपिटे लेखन और पुराने कठमुल्ला-सूत्रों के भद्देपन का पर्दाफाश किया तथा उनका विरोध करने के लिए जनता का आवाहन किया। उसी से सम्बन्धित इस आन्दोलन की एक अन्य महान उपलब्धि थी साम्राज्यवाद के विरुद्ध उसका संघर्ष, किन्तु पुराने घिसेपिटे लेखन और पुराने कठमुल्ला-सूत्रों के विरुद्ध किया गया संघर्ष ४ मई आन्दोलन की महान उपलब्धियों में से एक है। बाद में विदेशी घिसेपिटे लेखन और विदेशी कठमुल्ला-सूत्रों का जन्म हुआ। हमारी पार्टी के कुछ लोगों ने

मार्क्सवाद की अवहेलना करके विदेशी घिसेपिटे लेखन और विदेशी कठमुल्ला-सूत्रों को मनोगतवाद, संकीर्णतावाद और घिसेपिटे पार्टी-लेखन के रूप में विकसित किया। ये नए घिसेपिटे लेखन और नए कठमुल्ला-सूत्र हैं। अनेक साथियों के दिमाग में इनकी जड़ें इतनी गहरी जमी हुई हैं कि उनका पुनःसंस्कार करने के लिए हमें अभी भी अत्यन्त कठिन प्रयास करना होगा। इस प्रकार हम देखते हैं कि सजीव, ओजस्वी, प्रगतिशील और क्रान्तिकारी ४ मई आन्दोलन को, जिसने सामन्तवाद के पुराने घिसेपिटे लेखन और पुराने कठमुल्ला-सूत्रों के विरुद्ध संघर्ष किया था, बाद में कुछ लोगों द्वारा उससे बिलकुल विपरीत चीज में बदल दिया गया, और इस तरह नए घिसेपिटे लेखन और नए कठमुल्ला-सूत्रों का जन्म हुआ। नए घिसेपिटे लेखन और नए कठमुल्ला-सूत्र सजीव और ओजस्वी नहीं बल्कि निर्जीव और रूखे-फीके हैं, प्रगतिशील नहीं बल्कि प्रतिगामी हैं, क्रान्तिकारी नहीं बल्कि क्रान्ति के रास्ते का रोड़ा हैं। कहने का तात्पर्य यह है कि विदेशी घिसापिटा लेखन या घिसापिटा पार्टी-लेखन ४ मई आन्दोलन के मौलिक स्वरूप की ही एक प्रतिक्रिया है। फिर भी ४ मई आन्दोलन की खुद अपनी भी कमजोरियां थीं। उसके अनेक नेताओं में मार्क्सवाद की आलोचनात्मक भावना का अभाव था और वे जो तरीका इस्तेमाल करते थे, वह आम तौर पर पूंजीपति वर्ग का तरीका, अर्थात आकारवादी तरीका होता था। पुराने घिसेपिटे लेखन और पुराने कठमुल्ला-सूत्रों का विरोध करके तथा विज्ञान और जनवाद की हिमायत करके उन्होंने बिलकुल उचित ही किया, किन्तु तत्कालीन परिस्थिति, इतिहास और विदेशी चीजों के प्रति उनके दृष्टिकोण में ऐतिहासिक भौतिकवाद की

आलोचनात्मक भावना का अभाव था, और वे बुरी चीज को निरपेक्ष रूप से और सम्पूर्ण रूप से बुरा तथा अच्छी चीज को निरपेक्ष रूप से और सम्पूर्ण रूप से अच्छा समझते थे। विभिन्न समस्याओं के प्रति अपनाए गए उनके इस आकारवादी दृष्टिकोण का प्रभाव आन्दोलन के आगे के विकास-क्रम पर पड़ा। ४ मई आन्दोलन अपने आगे के विकास-क्रम में दो अलग-अलग धाराओं में विभाजित हो गया। एक भाग ने विरासत के रूप में उसकी वैज्ञानिक और जनवादी भावना को अपनाया तथा मार्क्सवाद के आधार पर उसका रूपान्तर किया ; कम्युनिस्टों और कुछ गैरपार्टी मार्क्सवादियों ने ऐसा ही काम किया। दूसरे भाग ने पूंजीपति वर्ग का रास्ता पकड़ा ; यह था आकारवाद का दक्षिण पक्ष की ओर विकास। लेकिन कम्युनिस्ट पार्टी के अन्दर की स्थिति भी एक जैसी नहीं थी ; उसके भी कुछ सदस्य सही रास्ते से भटक गए और मार्क्सवाद को पक्के तौर पर आत्मसात किए बिना आकारवाद की गलतियां, अर्थात मनोगत-वाद, संकीर्णतावाद और घिसेपिटे पार्टी-लेखन की गलतियां कर बैठे। यह था आकारवाद का "वामपक्ष" की ओर विकास। इस प्रकार हम देखते हैं कि घिसापिटा पार्टी-लेखन कोई आकस्मिक घटना नहीं बल्कि यह एक ओर तो ४ मई आन्दोलन के सकारात्मक तत्वों की प्रतिक्रिया है तथा दूसरी ओर उसके नकारात्मक तत्वों की विरासत है, उनका जारी रूप या विकसित रूप है। इस बात को समझना हमारे लिए उपयोगी है। जिस प्रकार ४ मई आन्दोलन के दौरान पुराने घिसेपिटे लेखन और पुराने कठमुल्लावाद के विरुद्ध संघर्ष करना एक क्रान्तिकारी और आवश्यक कार्य था, उसी प्रकार आज मार्क्सवाद का इस्तेमाल करते हुए नए घिसेपिटे लेखन और

नए कठमुल्लावाद की आलोचना करना भी एक क्रान्तिकारी और आवश्यक कार्य है। यदि ४ मई आन्दोलन के दौरान पुराने घिसेपिटे लेखन और पुराने कठमुल्लावाद के विरुद्ध संघर्ष न किया गया होता, तो चीनी जनता अपने विचारों को इनके बन्धन से मुक्त न कर पाती और चीन के आजाद व स्वाधीन होने की कोई उम्मीद न होती। ४ मई आन्दोलन के दौरान इस कार्य की केवल शुरुआत ही की गई थी, और एक महान प्रयास – क्रान्तिकारी पुन:संस्कार करने की दिशा में एक भारी कार्य – करने की आवश्यकता आज भी मौजूद है, जिससे कि हमारी समूची जनता पुराने घिसेपिटे लेखन और पुराने कठमुल्लावाद के चंगुल से पूरी तरह छुटकारा पाने में समर्थ हो सके। यदि हम आज नए घिसेपिटे लेखन और नए कठमुल्लावाद का विरोध नहीं करेंगे, तो चीनी जनता के विचार एक अन्य प्रकार के आकारवाद के बन्धन में जकड़ जाएंगे। यदि हम पार्टी-सदस्यों के एक हिस्से (निस्सन्देह केवल एक ही हिस्से) के बीच मौजूद घिसेपिटे पार्टी-लेखन के जहर को नष्ट नहीं करेंगे और उसे कठमुल्लावाद की गलती से छुटकारा नहीं दिलाएंगे, तो हमारे लिए यह असम्भव हो जाएगा कि हम उसके अन्दर एक सजीव और ओजस्वी क्रान्तिकारी भावना जागृत कर सकें, मार्क्सवाद के प्रति गलत रवैया अपनाने की उनकी बुरी आदत का उन्मूलन कर सकें तथा सच्चे मार्क्सवाद का व्यापक प्रचार-प्रसार और विकास कर सकें; इतना ही नहीं, हमारे लिए यह भी असम्भव होगा कि हम समूची जनता के बीच मौजूद पुराने घिसेपिटे लेखन और पुराने कठमुल्लावाद के प्रभाव के विरुद्ध तथा बहुत से लोगों के बीच मौजूद विदेशी घिसेपिटे लेखन और विदेशी कठमुल्लावाद के प्रभाव के विरुद्ध

एक शक्तिशाली संघर्ष चला सकें तथा इन प्रभावों को नष्ट करने और हमेशा के लिए उनका सफाया कर देने के अपने मकसद को हासिल कर सकें।

मनोगतवाद, संकीर्णतावाद और घिसापिटा पार्टी-लेखन – ये तीनों ही मार्क्सवाद-विरोधी हैं तथा सर्वहारा वर्ग को इनकी जरूरत नहीं, जबकि शोषक वर्गों को इनकी जरूरत है। वे हमारी पार्टी के अन्दर निम्न-पूंजीपति वर्ग की विचारधारा का ही एक प्रतिबिम्ब हैं। चीन एक ऐसा देश है जिसमें निम्न-पूंजीपति वर्ग के लोग भारी संख्या में हैं और हमारी पार्टी इस विशाल वर्ग से घिरी हुई है; हमारे पार्टी-सदस्यों की एक बड़ी संख्या इसी वर्ग से आई है, और पार्टी में शामिल होते समय अनिवार्य रूप से अपने साथ निम्न-पूंजीपति वर्ग के प्रभाव के रूप में एक लम्बा या छोटा पुछल्ला भी अन्दर ले आई है। अगर निम्न-पूंजीपति वर्ग के क्रान्तिकारियों के उन्माद और एकतरफापन की रोकथाम न की गई और उनका रूपान्तर न किया गया, तो वे मनोगतवाद और संकीर्णतावाद को सहज रूप से जन्म देंगे, जिनकी अभिव्यक्ति का एक रूप विदेशी घिसापिटा लेखन या घिसापिटा पार्टी-लेखन है।

इन चीजों पर काबू पाना और हमेशा के लिए इनका सफाया कर देना कोई आसान काम नहीं है। इसको उचित ढंग से, अर्थात तर्क के जरिए लोगों को प्रयत्नपूर्वक समझाकर पूरा किया जाना चाहिए। यदि तर्क के जरिए समझाने का कार्य हम अच्छी तरह और उचित ढंग से करते हैं, तो यह कारगर साबित होगा। तर्क के जरिए समझाने की इस प्रक्रिया में पहला काम जो हमें करना चाहिए वह है मरीज को जोर-जोर से झकझोरकर यह बताना कि "तुम बीमार

हो !" ताकि उसे झटका लगे और वह पसीना-पसीना हो जाए ; इसके बाद उसे इलाज करवाने की नेक सलाह देना।

अब हम घिसेपिटे पार्टी-लेखन का विश्लेषण करते हैं और उसकी बुराइयों का पता लगाते हैं। जहर को जहर से मारने के लिए हम आठ भाग वाले घिसेपिटे लेखों के रूप [१] का ही अनुकरण करेंगे और निम्नांकित "आठ पैर" निर्धारित करेंगे, जो आठ प्रमुख आरोप कहे जा सकते हैं।

घिसेपिटे पार्टी-लेखन के विरुद्ध हमारा पहला आरोप यह है कि वह खोखले शब्दजाल से पन्ने पर पन्ने भरता जाता है। हमारे कुछ साथियों को लम्बे किन्तु सारहीन लेख लिखने का शौक है, जो बहुत कुछ "एक फूहड़ स्त्री के पैर की पट्टियों की तरह लम्बे और दुर्गन्धयुक्त" होते हैं। आखिर उनको इतने लम्बे और सारहीन लेख लिखने की क्या जरूरत है? इस प्रश्न का केवल यही एक उत्तर हो सकता है कि वे यह तय कर चुके हैं कि जन-समुदाय उन लेखों को न पढ़े। चूंकि ये लेख लम्बे और सारहीन होते हैं, इसलिए जन-समुदाय उनको देखते ही सिर हिलाकर ना कर देता है। उनको पढ़ने की उम्मीद उससे कैसे की जा सकती है? ऐसे लेख सीधे-सादे लोगों को धोखा देने के अलावा, जिनके बीच वे बुरा प्रभाव फैलाते हैं और बुरी आदतें पनपाते हैं, और किसी मतलब के नहीं होते। पिछले वर्ष २२ जून को सोवियत संघ ने आक्रमण के विरुद्ध अपने विशाल युद्ध की शुरुआत की थी, फिर भी ३ जुलाई को स्तालिन द्वारा दिया गया भाषण केवल हमारे "मुक्ति दैनिक" के सम्पादकीय जितना ही लम्बा था। लेकिन अगर हमारे इन महानुभावों में से किसी ने वह भाषण तैयार किया होता, तो जरा सोचिए, वह कितना लम्बा

होता! कम से कम दसियों हजार शब्द तो उसमें जरूर होते। हम युद्ध के दौर से गुजर रहे हैं और हमें यह सीखना चाहिए कि अपेक्षाकृत संक्षिप्त और सारगर्भित लेख कैसे लिखे जाते हैं। यद्यपि यहां येनान में कोई लड़ाई नहीं चल रही, किन्तु मोर्चे पर हमारे सैनिक निरन्तर युद्ध में लगे हुए हैं और पृष्ठभाग में हमारी जनता कामकाज में लगी हुई है। यदि हमारे द्वारा लिखे गए लेख बहुत लम्बे होंगे तो उनको कौन पढ़ेगा? मोर्चे पर मौजूद हमारे कुछ साथी भी लम्बी रिपोर्टें लिखना पसन्द करते हैं। वे मेहनत से उनको लिखते हैं और पढ़ने के लिए यहां हमारे पास भेज देते हैं। लेकिन उनको पढ़ने का साहस कौन करे? अगर लम्बे और सारहीन लेख किसी मतलब के नहीं होते तो छोटे और सारहीन लेख क्या उनसे बेहतर होते हैं? नहीं, वे भी किसी मतलब के नहीं होते। वैसे तो हमको सभी प्रकार की सारहीन बातचीत बन्द कर देनी चाहिए। लेकिन हमारा सबसे मुख्य और सबसे पहला कार्य यह है कि हम फूहड़ स्त्री की लम्बी और दुर्गन्धयुक्त पैर की पट्टियों को कूड़ेदानी में फेंक दें। कुछ लोग पूछ सकते हैं, "क्या 'पूंजी' बहुत लम्बी नहीं है? उसके बारे में हमको क्या करना चाहिए?" इसका सीधा जवाब यह है कि उसे पढ़ते चले जाइए। एक कहावत है, "अलग-अलग पहाड़ों पर अलग-अलग गीत गाने चाहिए" ; एक अन्य कहावत है, "भोजन रुचि के अनुकूल तथा कपड़े शरीर के अनुकूल होने चाहिए"। हम जो भी काम करें, उसे वास्तविक परिस्थितियों के अनुरूप करना चाहिए, और यही बात लेख लिखने तथा भाषण देने के बारे में भी लागू होती है। जिस चीज का हम विरोध करते हैं वह है खोखले शब्दजाल से भरे हुए लम्बे और घिसेपिटे लेख लिखना, किन्तु हमारा

यह मतलब कतई नहीं है कि अच्छा होने के लिए हर चीज को अनिवार्य रूप से छोटा ही होना चाहिए। यह सच है कि युद्धकाल में हमें संक्षिप्त लेखों की आवश्यकता है, किन्तु इससे भी बड़ी बात यह है कि हमें ऐसे लेखों की आवश्यकता है जो सारगर्भित हों। सारहीन लेखों का कोई औचित्य नहीं है, और उनके बारे में हमें भारी आपत्ति है। यही बात भाषण देने के बारे में भी लागू होती है ; हमें चाहिए कि सभी प्रकार के खोखले, लम्बे भाषण देना बन्द कर दें।

घिसेपिटे पार्टी-लेखन के विरुद्ध हमारा दूसरा आरोप यह है कि वह जनता को डराने-धमकाने के लिए एक खास अन्दाज अख्तियार करता है। कोई-कोई घिसापिटा पार्टी-लेखन न केवल लम्बा और सारहीन होता है बल्कि जनता को जानबूझकर डराने-धमकाने के इरादे से एक खास अन्दाज भी अख्तियार करता है ; यह बेहद खराब किस्म के जहर से भरा होता है। लम्बे और सारहीन लेख लिखना अपरिपक्वता की निशानी हो सकती है, किन्तु जनता को भयभीत करने के लिए एक खास अन्दाज अख्तियार करना न केवल अपरिपक्वता की निशानी है बल्कि सरासर बदमाशी की निशानी भी है। ऐसे लोगों की आलोचना करते हुए लू शुन ने एक बार कहा था, "गाली-गलौज करने और धमकियां देने को संघर्ष करना हरगिज नहीं कहा जा सकता"।[1] जो चीज वैज्ञानिक है वह आलोचना से कभी नहीं डरती, क्योंकि विज्ञान सत्य है और वह खण्डन से नहीं डरता। किन्तु जो लोग घिसेपिटे पार्टी-लेखन के रूप में मनोगतवादी और संकीर्णतावादी लेख लिखते हैं या भाषण देते हैं, वे अपना खण्डन किए जाने से डरते हैं, परले दर्जे के बुजदिल होते हैं, और इसलिए दूसरे लोगों को भयभीत करने के लिए एक खास अन्दाज अख्तियार

करते हैं, तथा यह समझते हैं कि ऐसा करके वे जनता का मुंह बन्द कर सकते हैं और "बाजी मार" सकते हैं। ऐसा अन्दाज अख्तियार करना सत्य को प्रतिबिम्बित नहीं कर सकता बल्कि सत्य के लिए बाधास्वरूप होता है। सत्य जनता को भयभीत करने के लिए एक खास अन्दाज अख्तियार नहीं करता बल्कि सच्चाई और ईमानदारी से अपनी बात जनता के सामने रखता है और आचरण करता है। अनेक साथियों के लेखों और भाषणों में अक्सर दो वाक्यांशों का प्रयोग किया जाता था ; उनमें एक वाक्यांश है "निर्मम संघर्ष" तथा दूसरा है "निष्ठुर प्रहार"। दुश्मन के खिलाफ या शत्रुतापूर्ण विचारधारा के खिलाफ इस प्रकार के तरीके अपनाना बिलकुल जरूरी है, किन्तु खुद अपने ही साथियों के खिलाफ उनको इस्तेमाल करना गलत है। अक्सर ऐसा होता है कि दुश्मन तथा शत्रुतापूर्ण विचारधारा पार्टी के अन्दर घुस आती है, जैसा कि "सोवियत संघ की कम्युनिस्ट पार्टी (बोलशेविक) का इतिहास, संक्षिप्त कोर्स" के उपसंहार की चौथी मद में बताया गया है। निस्सन्देह, इन दुश्मनों के विरुद्ध हमें निर्मम संघर्ष चलाना चाहिए और उन पर निष्ठुर प्रहार करना चाहिए, क्योंकि ये बदमाश भी पार्टी के विरुद्ध इन्हीं तरीकों का इस्तेमाल करते हैं ; यदि हम उनके प्रति सहनशील बन गए तो उनके जाल में फंस जाएंगे। किन्तु अपने उन साथियों के विरुद्ध जो कभी-कभार कोई गलती कर बैठते हैं, हमें ऐसे तरीके इस्तेमाल नहीं करने चाहिए ; हमें उनके प्रति आलोचना और आत्म-आलोचना का तरीका अपनाना चाहिए जिसका उल्लेख "सोवियत संघ की कम्युनिस्ट पार्टी (बोलशेविक) का इतिहास, संक्षिप्त कोर्स" के उपसंहार की पांचवीं मद में किया गया है। अतीत

काल में कुछ साथियों द्वारा हमारे उन साथियों के विरुद्ध, जो कभी-कभार कोई गलती कर बैठते थे, "निर्मम संघर्ष" चलाने और उन पर "निष्ठुर प्रहार" करने की हिमायत जोरशोर से इसलिए की जाती थी क्योंकि वे एक तरफ तो गलती करने वाले व्यक्तियों का कोई विश्लेषण नहीं करते थे और दूसरी तरफ डराने-धमकाने के लिए एक खास अन्दाज अख्तियार करते थे। किसी भी व्यक्ति के साथ इस ढंग का बरताव करना ठीक नहीं है, क्योंकि दुश्मन का विरोध करते समय डराने-धमकाने की यह कार्यनीति बिलकुल बेकार साबित होती है, और खुद अपने ही साथियों के विरुद्ध इसका इस्तेमाल करने से केवल नुकसान ही हो सकता है। यह एक ऐसी कार्यनीति है जिसे शोषक वर्ग और आवारा सर्वहारा वर्ग आदतन अपनाते हैं, लेकिन सर्वहारा वर्ग को उसकी कोई जरूरत नहीं है। सर्वहारा वर्ग का सबसे तीक्ष्ण और सबसे कारगर हथियार है उसका गम्भीर और जुझारू वैज्ञानिक रवैया। कम्युनिस्ट पार्टी दूसरे लोगों को डराने-धमकाने के भरोसे जीवित नहीं रहती, बल्कि मार्क्सवाद-लेनिनवाद के सत्य के भरोसे जीवित रहती है, तथ्यों के जरिए सत्य की तलाश करने के भरोसे और विज्ञान के भरोसे जीवित रहती है। इस बात को बताने की जरूरत नहीं है कि पाखण्ड का सहारा लेकर अपने लिए शोहरत और ओहदा हासिल करने का विचार तो और भी ज्यादा घृणास्पद है। संक्षेप में, फैसला करते और आदेश देते समय किसी भी संस्था को, या लेख लिखते समय और भाषण देते समय किसी भी साथी को बिना किसी अपवाद के मार्क्सवादी-लेनिनवादी सत्य पर निर्भर रहना चाहिए और एक उपयोगी उद्देश्य की सेवा करने का प्रयास करना चाहिए। केवल इसी आधार पर

क्रान्ति में विजय प्राप्त की जा सकती है ; इसके अलावा अन्य सभी चीजें बेकार हैं।

घिसेपिटे पार्टी-लेखन के विरुद्ध हमारा तीसरा आरोप यह है कि वह पाठकों का विचार किए बिना अन्धाधुन्ध तीर चलाता है। कुछ साल पहले येनान शहर की चारदीवारी पर यह नारा लिखा गया था, "मजदूरो और किसानो, एक हो जाओ तथा जापानी-आक्रमण-विरोधी युद्ध में विजय प्राप्त करने के लिए संघर्ष करो!" इस नारे में व्यक्त किया गया विचार कतई बुरा नहीं था, किन्तु "工人" ["कुङ रन", जिसका अर्थ है मजदूर] का "工" ["कुङ", जिसका अर्थ है मजदूरी करना] अक्षर अपनी खड़ी लकीर के टेढ़ी-मेढ़ी हो जाने से "𠀁" बन गया था। और "人" ["रन", जिसका अर्थ है लोग] अक्षर कैसे लिखा हुआ था? उसके दाएं पैर में तीन तिरछी लकीरें जुड़ जाने से वह "𠆢" बन गया था। इसको लिखने वाला साथी निस्सन्देह प्राचीन विद्वानों का शिष्य रहा होगा, किन्तु यह देखकर सचमुच आश्चर्य होता है कि जापानी-आक्रमण-विरोधी युद्ध के समय एक ऐसे स्थान पर, येनान शहर की दीवार पर, ऐसे अक्षरों को लिखने की आखिर उसको क्या जरूरत थी। शायद उसने यह कसम खा रखी थी कि आम जनता उनको न पढ़े ; अन्यथा इसकी और क्या वजह हो सकती थी। सच्चे दिल से प्रचार-कार्य करने वाले कम्युनिस्टों को चाहिए कि वे अपने पाठकों और श्रोताओं का खयाल रखें और इस बात को ध्यान में रखें कि कौन-कौन लोग उनके लेख और नारे पढ़ते हैं या उनके भाषण और उनकी वार्ता सुनते हैं ; अन्यथा असल में यही समझा जाएगा कि वे इस बात पर तुले हुए हैं कि न तो उनके लेखों को पढ़ा जाए और न उनके

भाषणों को ही सुना जाए। अनेक लोग अक्सर यह मानकर चलते हैं कि जो कुछ वे लिखते या बोलते हैं, उसे हर आदमी आसानी से समझ सकता है, जबकि बात ऐसी है नहीं। जब वे घिसेपिटे पार्टी-लेखन के रूप में लेख लिखते हैं या भाषण देते हैं तो जनता उनकी बात भला कैसे समझ सकती है? "भैंस के सामने बीन बजाने" वाली कहावत में श्रोताओं के प्रति तिरस्कार की भावना निहित है। यदि हम इसको श्रोताओं के प्रति सम्मान की भावना में बदल दें तो तिरस्कार का पात्र खुद बीन बजाने वाला हो जाएगा। श्रोताओं का खयाल किए बिना बेसुरे ढंग से बीन बजाने की आखिर उसको क्या जरूरत है? इससे भी ज्यादा गई-गुजरी बात तो यह है कि वह कौवे की कांवकांव की तरह कर्कश घिसेपिटे पार्टी-लेखनों की रचना करता है और फिर भी यह जिद करता है कि जनता उसकी कांवकांव को सुने। निशाना साधकर ही तीर चलाना चाहिए; श्रोताओं को ध्यान में रखकर ही बीन बजाना चाहिए; तब फिर पाठकों या श्रोताओं को ध्यान में रखे बिना कोई व्यक्ति लेख कैसे लिख सकता है या भाषण कैसे दे सकता है? मान लीजिए, हम किसी व्यक्ति के साथ, चाहे वह कोई भी क्यों न हो, दोस्ती करना चाहते हैं, तो क्या एक दूसरे की भावनाओं को समझे बिना, एक दूसरे के विचारों को जाने बिना हम एक दूसरे के अन्तरंग मित्र बन सकते हैं? प्रचार-कार्य में जुटे हुए कार्यकर्ताओं द्वारा अपने पाठकों व श्रोताओं के बारे में जांच-पड़ताल किए बिना, अध्ययन किए बिना और विश्लेषण किए बिना टरटराते रहने से कोई लाभ न होगा।

घिसेपिटे पार्टी-लेखन के विरुद्ध हमारा चौथा आरोप यह है कि उसकी भाषा बिलकुल नीरस होती है जिसे देखकर "प्येसान"* की

याद आ जाती है। हमारे घिसेपिटे पार्टी-लेखन की ही तरह शांघाई के "छोटे प्येसान" नामक पात्र भी बड़े रूखे और भद्दे होते हैं। यदि किसी लेख या भाषण में, कक्षा के तरीके की भांति, केवल चन्द शब्दों को ही अदल-बदल कर बार-बार इस्तेमाल किया जाए, तथा ओजस्विता और भावप्रबलता का पूर्ण अभाव हो, तो क्या वह नीरस भाषा वाले और भद्दे रूप वाले "प्येसान" की ही तरह नहीं हो जाएगा? यदि कोई व्यक्ति सात वर्ष की आयु में प्राइमरी स्कूल में दाखिल होता है, किशोरावस्था में मिडिल स्कूल में प्रवेश करता है और तरुणावस्था में कालेज से स्नातक बनकर निकलता है तथा आम जनता से कभी कोई सम्पर्क नहीं रखता, तो उसे निर्जीव व नीरस भाषा के लिए दोषी नहीं ठहराया जाना चाहिए। किन्तु हम लोग आम जनता के लिए कार्य करने वाले क्रान्तिकारी हैं, और यदि हम आम जनता की भाषा नहीं सीखते तो हम अपना कार्य ठीक ढंग से नहीं कर सकते। हमारे अनेक साथी, जो इस समय प्रचार-कार्य में लगे हुए हैं, भाषा का अध्ययन नहीं करते। उनका प्रचार अत्यन्त नीरस होता है और केवल चन्द व्यक्ति ही उनके लेख पढ़ना या उनके भाषण सुनना पसन्द करते हैं। भाषा का अध्ययन करना, और वह भी मेहनत के साथ, आखिर हमारे लिए क्यों जरूरी है? यह इसलिए जरूरी है क्योंकि भाषा का पूर्ण ज्ञान प्राप्त करना कोई आसान काम नहीं है, बल्कि उसके लिए परिश्रमपूर्वक प्रयत्न करने की आवश्यकता होती है। पहली बात तो यह है कि हमें आम जनता से भाषा सीखनी चाहिए। जनता का शब्द-भण्डार भरपूर, ओजपूर्ण, सजीव और वास्तविक जीवन की अभिव्यक्ति करने वाला होता है। हमारे बहुत से साथियों को भाषा का पूर्ण ज्ञान हासिल न होने की वजह

से हमारे लेखों और भाषणों में ओजपूर्ण, सजीव और प्रभावोत्पादक अभिव्यक्तियां बहुत कम होती हैं, तथा वे एक हृष्ट-पुष्ट व स्वस्थ व्यक्ति की भांति नहीं, बल्कि एक दुबले-पतले "प्येसान" की भांति, अस्थिपंजर प्रतीत होते हैं। दूसरी बात यह है कि हमें जिन अभिव्यक्तियों की आवश्यकता प्रतीत हो, उन्हें विदेशी भाषाओं से लेकर अपनी भाषा में आत्मसात कर लेना चाहिए। हमें विदेशी अभिव्यक्तियों को यांत्रिक रूप से अपनी भाषा में शामिल नहीं कर लेना चाहिए या मनमाने ढंग से उनका इस्तेमाल नहीं करना चाहिए बल्कि जो अभिव्यक्तियां अच्छी हों और हमारी जरूरतों को पूरा करती हों, उन्हें अपना लेना चाहिए। हमारे वर्तमान शब्द-भण्डार में पहले से ही अनेक विदेशी शब्द शामिल हैं, क्योंकि चीनी भाषा का पुराना शब्द-भण्डार अपर्याप्त था। मिसाल के लिए आज हम "कानपू" [कार्यकर्ताओं] की बैठक कर रहे हैं, और "कानपू" शब्द की उत्पत्ति एक विदेशी शब्द से हुई है। विदेशों की अनेक नई-नई चीजों को, न केवल नए प्रगतिशील विचारों को बल्कि नई-नई अभिव्यक्तियों को भी हमें लगातार आत्मसात करते रहना चाहिए। तीसरी बात यह है कि हमें क्लासिकी चीनी भाषा में जो कुछ अब भी सजीव है, उसे सीख लेना चाहिए। चूंकि हमने क्लासिकी चीनी भाषा का मेहनत से अध्ययन नहीं किया, इसीलिए उसमें जो कुछ अब भी सजीव है उसका उचित और पूर्ण रूप से इस्तेमाल हम नहीं कर सके हैं। निस्सन्देह, अप्रचलित शब्दों और सन्दर्भ-संकेतों के प्रयोग का हम दृढ़ता से विरोध करते हैं, और यह निश्चित है ; किन्तु जो चीज अच्छी है और अब भी उपयोगी है, उसे अवश्य अपना लेना चाहिए। जो लोग घिसेपिटे पार्टी-लेखन के प्रभाव से बुरी

तरह दूषित हो गए हैं, वे जनता की भाषा में, विदेशी भाषाओं में या क्लासिकी चीनी भाषा में जो कुछ भी हमारे लिए उपयोगी है, उसका मेहनत से अध्ययन नहीं करते, इसलिए जनता उनके नीरस और निर्जीव प्रचार का स्वागत नहीं करती, तथा ऐसे प्रभावहीन व अयोग्य प्रचारक हमारे लिए बिलकुल बेकार साबित होते हैं। हमारे प्रचारकों में कौन लोग शामिल हैं ? उनमें न केवल शिक्षक, पत्रकार, लेखक और कलाकार शामिल हैं बल्कि हमारे सभी कार्यकर्ता भी शामिल हैं। मिसाल के लिए सैनिक कमाण्डरों को ही लीजिए। यद्यपि वे कोई सार्वजनिक वक्तव्य नहीं देते, तो भी उन्हें सैनिकों से बातचीत करनी पड़ती है और जनता से अपने सम्बन्ध कायम करने होते हैं। यह प्रचार नहीं तो और क्या है ? जब भी कोई व्यक्ति दूसरे लोगों से बात करता है तो वह प्रचार-कार्य कर रहा होता है। यदि वह गूंगा नहीं है, तो उसे हमेशा कुछ न कुछ शब्द बोलने ही पड़ते हैं। इसलिए यह अनिवार्य है कि हमारे सभी साथी भाषा का अध्ययन करें।

घिसेपिटे पार्टी-लेखन के विरुद्ध हमारा पांचवां आरोप यह है कि वह शीर्षकों के एक जटिल समूह के अन्तर्गत विषयों को पेश करता है, मानो चीनी दवा की दुकान खोली जा रही हो। किसी चीनी दवा की दुकान पर जाकर एक नजर डालिए, वहां आपको अनेक अलमारियां और दराजें दिखाई देंगी, जिन पर किसी न किसी दवा का नाम लिखा होगा – टनकल, फाक्सग्लव, रेवन्दचीनी, शोरा . . . वास्तव में वहां मौजूद हर चीज का नाम लिखा होगा। इस तरीके को हमारे साथियों ने भी अपना लिया है। अपने लेखों और भाषणों में, अपनी पुस्तकों और रिपोर्टों में वे सबसे पहले बड़े चीनी अंक,

दूसरे नम्बर पर छोटे चीनी अंक, तीसरे नम्बर पर दस पुराने चीनी अंक, चौथे नम्बर पर बारह पुराने समयसूचक अक्षर, और फिर अंग्रेजी वर्णमाला के A,B,C,D के बड़े अक्षर, फिर अंग्रेजी वर्णमाला के a,b,c,d के छोटे अक्षर, उसके बाद अरबी के अंक और न जाने क्या-क्या इस्तेमाल करते हैं। हम कितने भाग्यशाली हैं कि हमारे पूर्वजों और विदेशियों ने हमारे लिए इन तमाम संकेत-चिन्हों की रचना कर दी, ताकि हम तनिक भी कोशिश किए बिना चीनी दवा की दुकान खोल सकें। कोई भी लेख जो ऐसे संकेत-चिन्हों से भरा होता है, जो समस्याओं को पेश नहीं करता, उनका विश्लेषण नहीं करता या उनका समाधान प्रस्तुत नहीं करता, और जो किसी भी चीज के पक्ष में या विपक्ष में अपनी बात नहीं कहता, अपने तमाम शब्दजाल के बावजूद वास्तविक सार से रहित होता है तथा एक चीनी दवा की दुकान के अलावा और कुछ भी नहीं होता। मेरे कहने का मतलब यह नहीं है कि इस प्रकार के संकेत-चिन्ह जैसे दस पुराने चीनी अंक आदि, इस्तेमाल नहीं किए जाने चाहिए, बल्कि यह है कि समस्याओं के प्रति इस प्रकार का तरीका गलत है। चीनी दवा की दुकान की नकल करके अपनाया गया यह तरीका, जो हमारे अनेक साथियों को बहुत पसन्द है, वास्तव में अत्यन्त भोंड़ा, अत्यन्त बचकाना और अत्यन्त अधकचरा तरीका है। यह एक आकारवादी तरीका है जो वस्तुओं का वर्गीकरण उनके अन्दरूनी सम्बन्धों के अनुसार करने के बजाय उनके बाहरी लक्षणों के अनुसार करता है। यदि कोई व्यक्ति अन्दरूनी तौर पर एक दूसरे से असम्बद्ध धारणाओं के समूह को अपना लेता है और उन्हें केवल वस्तुओं के बाहरी लक्षणों के अनुसार ही, किसी लेख, भाषण या रिपोर्ट में

प्रस्तुत करता है, तो वह धारणाओं के साथ खिलवाड़ करता है तथा अन्य लोगों को भी उसी प्रकार का खिलवाड़ करने के रास्ते पर ले जा सकता है। इसका नतीजा यह होता है कि वे लोग समस्याओं पर विचार करने के लिए तथा वस्तुओं के सारतत्व तक पहुंचने के लिए अपनी बुद्धि का इस्तेमाल नहीं करते, बल्कि क, ख, ग, घ क्रम में घटनाओं की सूचीमात्र पेश करके ही सन्तुष्ट हो जाते हैं। समस्या क्या चीज है? किसी वस्तु में निहित अन्तरविरोध को ही समस्या कहते हैं। जहां कहीं भी हल न हुए अन्तरविरोधों का अस्तित्व होगा, वहां समस्या पैदा हो जाएगी। जब आपके सामने कोई समस्या विद्यमान हो, तो आपको एक पक्ष का समर्थन और दूसरे पक्ष का विरोध करना ही होगा तथा समस्या को पेश करना ही होगा। किसी समस्या को पेश करने के लिए पहले आपको समस्या या अन्तर-विरोध के दो बुनियादी पहलुओं की प्रारम्भिक जांच-पड़ताल और उनका प्रारम्भिक अध्ययन करना चाहिए, उसके बाद ही आप अन्तर-विरोध के स्वरूप को समझ सकते हैं। यह समस्या का पता लगाने की प्रक्रिया है। प्रारम्भिक जांच-पड़ताल और अध्ययन के जरिए समस्या का पता लगाया जा सकता है, समस्या को पेश किया जा सकता है, किन्तु अभी उसे हल नहीं किया जा सकता। समस्या को हल करने के लिए सुव्यवस्थित और मुकम्मिल जांच-पड़ताल व अध्ययन करना जरूरी है। यह विश्लेषण की प्रक्रिया है। समस्या को पेश करने के लिए भी विश्लेषण करना जरूरी होता है, अन्यथा घटनाओं के चकरा देने वाले और अव्यवस्थित ढेर के सामने आप समस्या या अन्तरविरोध की तह तक पहुंचने में असमर्थ रहेंगे। लेकिन यहां पर विश्लेषण की प्रक्रिया से हमारा मतलब है सुव्यवस्थित

और मुकम्मिल विश्लेषण। अक्सर ऐसा होता है कि कोई समस्या तो पेश कर दी जाती है किन्तु उसका हल नहीं निकल पाता, क्योंकि वस्तुओं के अन्दरूनी सम्बन्धों का पता अभी नहीं लगाया गया है, क्योंकि सुव्यवस्थित रूप से और मुकम्मिल तौर पर विश्लेषण करने की इस प्रक्रिया को अभी लागू नहीं किया गया है; परिणामस्वरूप हम अब भी समस्या के आकार-प्रकार को स्पष्ट रूप से नहीं देख पाते, संश्लेषण नहीं कर पाते और इसलिए समस्या को भलीभांति सुलझा भी नहीं पाते। यदि कोई लेख या भाषण महत्वपूर्ण है और उसका मकसद दूसरों का मार्गदर्शन करना है, तो उसे पहले किसी विशेष समस्या को पेश करना चाहिए, फिर उसका विश्लेषण करना चाहिए और तब उसका संश्लेषण करना चाहिए, ताकि समस्या के स्वरूप को स्पष्ट किया जा सके तथा उसको हल करने के तरीके को पेश किया जा सके ; यह सब करने के लिए आकारवादी तरीके बेकार साबित होते हैं। चूंकि बचकाने, भोंड़े, अधकचरे और आलस्य-पूर्ण आकारवादी तरीके हमारी पार्टी में प्रचलित हैं, इसलिए हमें उनका पर्दाफाश कर देना चाहिए ; केवल इसी प्रकार हमारी पार्टी में प्रत्येक व्यक्ति समस्याओं का निरीक्षण करने के लिए, उनको पेश करने के लिए, उनका विश्लेषण करने के लिए और उनको हल करने के लिए मार्क्सवादी तरीके का इस्तेमाल करना सीख सकता है ; केवल इसी प्रकार हम अपना कार्य ठीक ढंग से कर सकते हैं और केवल इसी प्रकार हमारा क्रान्तिकारी कार्य विजयी हो सकता है।

घिसेपिटे पार्टी-लेखन के विरुद्ध हमारा छठा आरोप यह है कि उसमें उत्तरदायित्व की भावना का अभाव होता है, वह जहां भी जन्म लेता है जनता को नुकसान पहुंचाता है। वे सभी दोष जिनका उल्लेख ऊपर किया गया है, आंशिक रूप से अपरिपक्वता की वजह से और आंशिक रूप से पर्याप्त जिम्मेदारी की भावना के अभाव की वजह से उत्पन्न होते हैं। इस बात को स्पष्ट करने के लिए हम मुंह धोने की मिसाल को लें। हम सभी लोग प्रतिदिन अपना-अपना मुंह धोते हैं, हमारे अनेक साथी दिन में कई बार मुंह धोते हैं, और उसके बाद शीशे के सामने खड़े होकर "जांच-पड़ताल और अध्ययन" के तौर पर अपना निरीक्षण करते हैं (जोर की हंसी), इस खयाल से कि कहीं कोई कमी न रह गई हो। जिम्मेदारी की यह भावना कितनी बड़ी है ! यदि लेख लिखने और भाषण देने में भी हम इसी तरह जिम्मेदारी की भावना का परिचय दें, तो हमारा काम बुरा नहीं होगा। जो चीज पेश करने लायक नहीं है, उसे मत पेश कीजिए। इस बात को हमेशा ध्यान में रखिए कि उसका प्रभाव अन्य लोगों के विचारों और कार्यों पर पड़ सकता है। यदि कोई व्यक्ति एक या दो दिन तक अपना मुंह नहीं धोता, तो बेशक यह बात अच्छी नहीं है, और यदि धोने के बाद भी मुंह पर एक या दो गन्दे धब्बे लगे रह जाते हैं, तो यह भी अच्छा नहीं लगता, मगर इन सब बातों से कोई गम्भीर खतरा नहीं है। किन्तु लेख लिखने या भाषण देने की बात बिलकुल भिन्न है ; उनका मकसद ही दूसरों को प्रभावित करना होता है। फिर भी हमारे साथी इस कार्य में असावधानी बरतते हैं ; इसका मतलब है महत्वपूर्ण बात के मुकाबले गौण बात को तरजीह देना। अनेक लोग पहले से अध्ययन या तैयारी किए बिना ही लेख लिखते हैं या भाषण देते हैं, और जिस तरह वे अपना मुंह धोने के बाद शीशा देखना पसन्द करते हैं उसी तरह लेख लिखने

के बाद उसे कई बार दोहराने की तकलीफ गवारा नहीं करते, बल्कि लापरवाही से उसे प्रकाशित होने के लिए भेज देते हैं। अक्सर इसका नतीजा यह होता है कि "कलम से तो लगातार एक हजार शब्द निकलते चले जाते हैं, लेकिन विषय-वस्तु से दस हजार ली दूर हटते चले जाते हैं।" ऐसे लेखक प्रतिभाशाली भले ही प्रतीत हों, वास्तव में वे जनता को नुकसान पहुंचाते हैं। इस बुरी आदत को, जिम्मेदारी की भावना में मौजूद इस कमजोरी को दूर किया जाना चाहिए।

घिसेपिटे पार्टी-लेखन के विरुद्ध हमारा सातवां आरोप यह है कि वह समूची पार्टी में जहर फैलाता है और क्रान्ति को नुकसान पहुंचाता है। उसके विरुद्ध हमारा आठवां आरोप यह है कि उसके प्रसार से देश बरबाद हो जाएगा और जनता तबाह हो जाएगी। ये दोनों ही आरोप अपने आप में स्पष्ट हैं और उनके बारे में विस्तार से बताने की जरूरत नहीं है। दूसरे शब्दों में, यदि घिसेपिटे पार्टी-लेखन का रूपान्तर नहीं किया गया और बिना किसी रोकथाम के उसे विकसित होने दिया गया, तो सचमुच इसके अत्यन्त गम्भीर परिणाम होंगे। मनोगतवाद और संकीर्णतावाद का जहर घिसेपिटे पार्टी-लेखन में छिपा रहता है, और अगर इस जहर को फैलने दिया गया तो यह पार्टी और देश दोनों ही को खतरे में डाल देगा।

उपर्युक्त आठों आरोप घिसेपिटे पार्टी-लेखन के खिलाफ संघर्ष करने के लिए हमारा आवाहन हैं।

एक शैली के रूप में, घिसेपिटे पार्टी-लेखन क्रान्तिकारी भावना की अभिव्यक्ति करने के लिए न केवल अनुपयुक्त होते हैं, बल्कि उसका गला भी आसानी से घोंट देते हैं। क्रान्तिकारी भावना का

विकास करने के लिए यह जरूरी है कि घिसेपिटे पार्टी-लेखन का परित्याग कर दिया जाए और उसके स्थान पर मार्क्सवादी-लेनिनवादी लेखन-शैली को अपनाया जाए, एक ऐसी शैली को जो ओजपूर्ण, सजीव, नवीनता से ओतप्रोत और सशक्त हो। यह लेखन-शैली काफी समय से चली आ रही है, किन्तु उसको समृद्ध बनाने और हमारे बीच उसका व्यापक रूप से प्रसार करने की जरूरत अब भी बनी हुई है। जब हम विदेशी घिसेपिटे लेखन और घिसेपिटे पार्टी-लेखन का विनाश कर देंगे, तब हम अपनी नई लेखन-शैली को समृद्ध बना सकेंगे और उसका व्यापक रूप से प्रसार कर सकेंगे, तथा इस प्रकार पार्टी के क्रान्तिकारी कार्य को आगे बढ़ा सकेंगे।

पार्टी की घिसीपिटी कार्यशैली केवल लेखों और भाषणों तक ही सीमित नहीं है, बल्कि बैठकों का संचालन करने की हमारी विधि में भी पाई जाती है। "१. उद्घाटन की घोषणा; २. रिपोर्ट; ३. विचार-विमर्श; ४. निष्कर्ष; और ५. समापन।" यदि छोटी या बड़ी प्रत्येक बैठक में, प्रत्येक स्थान पर और हर समय इसी गैरलचीली विधि का अनुसरण किया जाएगा तो क्या वह पार्टी की एक अन्य घिसीपिटी कार्यशैली नहीं कहलाएगी? जब हमारी बैठकों में "रिपोर्टें" पेश की जाती हैं तो वे अक्सर इस क्रम से चलती हैं: "१. अन्तरराष्ट्रीय परिस्थिति; २. घरेलू परिस्थिति; ३. सीमान्त क्षेत्र; तथा ४. हमारा अपना विभाग"; और ये बैठकें अक्सर सुबह से रात तक बराबर चलती रहती हैं, यहां तक कि वे लोग भी, जिनके पास कहने के लिए कुछ भी नहीं है, बोलने से नहीं चूकते, मानो उनका कुछ न कहना दूसरे लोगों के लिए कोई खेद की बात हो। संक्षेप में, वास्तविक परिस्थितियों की अवहेलना करने

तथा गैरलचीली पुरानी शैलियों और आदतों से हठपूर्वक चिपके रहने का रवैया हमारे बीच मौजूद है। क्या हमें इन सब चीजों में भी सुधार नहीं करना चाहिए?

आजकल अनेक लोगों द्वारा एक राष्ट्रीय, वैज्ञानिक और लोकप्रिय शैली में रूपान्तर करने का आवाहन किया जा रहा है। यह बहुत अच्छी बात है। किन्तु रूपान्तर का मतलब है ऊपर से नीचे तक और अन्दर से बाहर तक मुकम्मिल परिवर्तन। फिर भी कुछ लोग जिन्होंने लेशमात्र भी परिवर्तन नहीं किया है, रूपान्तर करने का आवाहन कर रहे हैं। इसलिए मैं इन साथियों को यही सलाह दूंगा कि वे "रूपान्तर" करने के पहले थोड़ा सा परिवर्तन करने की ही शुरुआत करें, अन्यथा वे कठमुल्लावाद और घिसेपिटे पार्टी-लेखन के जाल में ही फंसे रहेंगे। इसको ऊंचे लक्ष्य किन्तु निम्न योग्यता रखना, भारी महत्वाकांक्षा किन्तु अल्प गुण रखना कहा जा सकता है, और इससे कुछ भी हासिल नहीं होगा। इसलिए अगर कोई व्यक्ति "लोकप्रिय शैली की ओर रूपान्तर" करने के बारे में चिकनी-चुपड़ी बातें करता है, किन्तु वास्तव में खुद अपने छोटे से दायरे तक ही महदूद रहता है, तो बेहतर यही है कि वह सावधान रहे, अन्यथा किसी दिन जनता के बीच से कोई व्यक्ति उस पर झपट पड़ेगा और पूछ बैठेगा, "यह सब कैसा 'रूपान्तर' है जनाब? क्या मैं भी उसे एक झलक देख सकता हूं?" और तब वह व्यक्ति चक्कर में पड़ जाएगा। इसलिए यदि कोई व्यक्ति केवल बकवास नहीं कर रहा है बल्कि वाकई ईमानदारी से लोकप्रिय शैली की ओर रूपान्तर करना चाहता है, तो उसको जन-साधारण के बीच जाना चाहिए और उससे सीखना चाहिए, अन्यथा उसका "रूपान्तर" हवाई होकर रह जाएगा। कुछ लोग लोकप्रिय शैली की ओर रूपान्तर करने की रट तो लगाते रहते हैं किन्तु जन-साधारण की भाषा में तीन वाक्य भी नहीं बोल पाते। इससे यह जाहिर होता है कि जनता से सीखने का वास्तव में उनका कोई इरादा नहीं है। उनका दिमाग अभी खुद उनके छोटे दायरे तक ही महदूद है।

"प्रचार-कार्य निर्देशिका" शीर्षक पुस्तिका की प्रतियां जिसमें चार लेख शामिल हैं, इस मीटिंग में आपको वितरित की गई हैं, और मैं सलाह देता हूं कि आप उसे पढ़ें और बार-बार पढ़ें।

इस पुस्तिका के पहले भाग में, जिसे "सोवियत संघ की कम्युनिस्ट पार्टी (बोलशेविक) का इतिहास, संक्षिप्त कोर्स" से उद्धृत किया गया है, लेनिन द्वारा प्रचार-कार्य के लिए अपनाए जाने वाले तरीकों की चर्चा की गई है। उसमें अन्य बातों के साथ-साथ यह भी बताया गया है कि प्रचार के लिए पर्चे लिखने का लेनिन का ढंग कैसा था :

> लेनिन के मार्गदर्शन में "मजदूर वर्ग के मुक्ति-संघर्ष की सेंट पीटर्सबर्ग समिति" ने सबसे पहले रूस में समाजवाद को मजदूर आन्दोलन के साथ मिलाने की शुरुआत की। किसी कारखाने में हड़ताल हो जाने पर यह "संघर्ष समिति", जिसको अपने दलों के सदस्यों के जरिए कारखानों की हालत के बारे में अच्छी तरह से जानकारी हासिल होती रहती थी, फौरन पर्चे निकालकर और समाजवादी ऐलानों के जरिए मजदूरों का समर्थन करती थी। इन पर्चों में उद्योगपतियों द्वारा मजदूरों के उत्पीड़न का पर्दाफाश किया जाता था, मजदूरों को यह बताया जाता था

कि उन्हें अपने हितों के लिए किस प्रकार संघर्ष करना चाहिए, और उनमें मजदूरों की मांगों को पेश किया जाता था। ये पर्चे पूंजीवाद के नासूरों के बारे में, मजदूरों की गरीबी के बारे में, १२ से १४ घण्टे तक कमरतोड़ सख्त मेहनत वाले उनके श्रम-दिन के बारे में और उनके अधिकारों के पूर्ण अभाव के बारे में सच्चाई को स्पष्ट रूप से पेश करते थे। उनमें उचित राजनीतिक मांगों को भी पेश किया जाता था।

जरा "अच्छी तरह से जानकारी हासिल होती रहती थी" और "सच्चाई को स्पष्ट रूप से पेश करते थे" पर ध्यान दीजिए! उसमें आगे बताया गया है:

> १८९४ के अन्त में लेनिन ने बाबुश्किन नामक मजदूर के सहयोग से इस प्रकार का प्रथम आन्दोलनकारी पर्चा लिखा और सेंट पीटर्सबर्ग के सेमयान्निकोव कारखाने के मजदूरों के नाम, जो हड़ताल पर थे, एक अपील लिखी।

यदि आपको कोई पर्चा लिखना है तो आपको उन साथियों से सलाह-मशविरा कर लेना चाहिए जिन्हें हालात के बारे में अच्छी जानकारी है। लेनिन इस प्रकार की जांच-पड़ताल और अध्ययन के आधार पर ही लेख लिखते थे और कार्य करते थे।

> ऐसे प्रत्येक पर्चे ने मजदूरों की भावना को पक्का करने में बड़ी मदद पहुंचाई है। उन्होंने यह देख लिया कि समाजवादी पार्टी के लोग उनकी सहायता कर रहे हैं और उनकी रक्षा कर रहे हैं।[४]

क्या हम लेनिन से सहमत हैं? अगर हैं, तो हमें लेनिन की भावना को अपनाकर कार्य करना चाहिए। यानी हमें उसी ढंग से कार्य करना चाहिए जिस ढंग से लेनिन करते थे, और निरर्थक शब्दजाल से पन्ने पर पन्ने नहीं भरने चाहिए, या अपने पाठकों या श्रोताओं का विचार किए बिना अन्धाधुन्ध तीर नहीं चलाना चाहिए, या घमण्डी और डींगें हांकने वाला नहीं बन जाना चाहिए।

पुस्तिका का दूसरा भाग कम्युनिस्ट इन्टरनेशनल की सातवीं विश्व कांग्रेस में दिमित्रोव द्वारा दिए गए बयानों से उद्धृत किया गया है। दिमित्रोव ने क्या कहा था? उन्होंने कहा था:

> हमें जनता के सामने अपनी बात किताबी सूत्रों की भाषा में नहीं, बल्कि जनता के उद्देश्य के लिए संघर्ष करने वाले उन योद्धाओं की भाषा में कहने का ढंग सीखना चाहिए जिनका प्रत्येक शब्द, जिनका प्रत्येक विचार लाखों लाख लोगों के अन्तरतम के विचारों और भावनाओं को प्रतिबिम्बित करता है।

उन्होंने आगे कहा:

> ...जब तक हम उस भाषा को बोलना नहीं सीख लेते जिसे जनता समझती हो, तब तक हमारे फैसलों को जनता आत्मसात नहीं कर सकती।
>
> हमेशा सरल और ठोस शब्दों में, ऐसे साकार शब्दों में जिनसे जनता परिचित हो और जो उसके लिए बोधगम्य हों, बात करने में हम लोग निपुण नहीं हैं। हम अब भी अमूर्त सूत्रों के प्रयोग से, जिनको हमने रटकर याद किया है, पीछा नहीं

छुड़ा पाए हैं। वास्तव में, अगर आप हमारे पर्चों, अखबारों, प्रस्तावों और निबन्धों को पढ़ें, तो आप उन्हें अक्सर ऐसी बोझिल भाषा और शैली में लिखा हुआ पाएंगे कि उनको समझना, सामान्य मजदूरों की बात तो दूर रही, हमारी पार्टी के कार्यकर्ताओं के लिए भी मुश्किल होता है।

ठीक है न? क्या दिमित्रोव ने हमारी कमजोरी को साफ-साफ नहीं बता दिया है? स्पष्ट है कि घिसेपिटे पार्टी-लेखन का अस्तित्व चीन के साथ-साथ विदेशों में भी विद्यमान है, इस तरह आप यह देख सकते हैं कि यह एक आम बीमारी है। (हंसी) बहरहाल, हर हालत में, हमको कामरेड दिमित्रोव के निर्देशानुसार अपनी बीमारी को तुरन्त दूर कर लेना चाहिए।

हममें से प्रत्येक को नीचे लिखी बात को एक विधान, एक बोलशेविक विधान, एक प्रारम्भिक नियम बना लेना चाहिए:

लिखते समय या बोलते समय आपको हमेशा सामान्य मजदूर समुदाय को ध्यान में रखना चाहिए, जो अवश्य आपकी बात को समझे, अवश्य आपकी अपील पर यकीन करे और अवश्य आपका अनुसरण करने के लिए तैयार रहे। आपको उन लोगों को ध्यान में रखना चाहिए जिनके लिए आप लिखते हैं, जिनसे आप बात करते हैं।[१]

यह है वह नुस्खा जो कम्युनिस्ट इन्टरनेशनल द्वारा हमारे लिए तैयार किया गया है, एक ऐसा नुस्खा जिसको अनिवार्य रूप से लागू किया जाना चाहिए। आइए, हम अपने लिए इसको एक "विधान" बना लें!

पुस्तिका का तीसरा लेख "लू शुन की पूर्ण ग्रन्थावली" से चुना गया है। लू शुन ने इसे "सप्तर्षि"* नामक पत्रिका को दिए गए जवाब के रूप में लिखा था, जिसमें इस बात की चर्चा की गई है कि लिखने का ढंग कैसा होना चाहिए। इस बारे में लू शुन का क्या कहना था? उन्होंने लिखने के बारे में कुल मिलाकर आठ नियम निर्धारित किए, जिनमें से कुछ नियमों को विचार के लिए मैं यहां पर पेश कर रहा हूं।

नियम १: "सभी प्रकार की वस्तुओं पर सूक्ष्म रूप से ध्यान दो; उनका ज्यादा से ज्यादा निरीक्षण करो, और अगर आपने केवल बहुत थोड़ा निरीक्षण किया है, तो उनके बारे में मत लिखो।"

उनका कथन यह है कि केवल एक वस्तु या आधी वस्तु पर नहीं, बल्कि "सभी प्रकार की वस्तुओं पर सूक्ष्म रूप से ध्यान दो।" उनका कहना है कि उन पर केवल एक नजर या आधी नजर मत डालो, बल्कि उनका "ज्यादा से ज्यादा निरीक्षण करो।" हम क्या करते हैं? क्या हम अक्सर ठीक इसका उल्टा नहीं करते और केवल थोड़ा सा निरीक्षण करके ही लिखने नहीं लग जाते?

नियम २: "जब आपके पास कहने के लिए कुछ न हो, तो उस समय अपने को लिखने के लिए बाध्य मत करो।"

हम क्या करते हैं? क्या हम अक्सर बहुत ज्यादा लिखने के लिए अपने को बाध्य नहीं करते, जबकि यह बिलकुल स्पष्ट है कि हमारे पास कहने के लिए कुछ भी नहीं है? बिना जांच-पड़ताल और

अध्ययन किए कलम उठाना और "लिखने के लिए अपने को बाध्य करना" सरासर गैरजिम्मेदारी की बात है।

नियम ४ : "कोई चीज लिखने के बाद कम से कम दो बार उसको अवश्य दोहराओ, और उसमें से अनावश्यक शब्दों, वाक्यों और पैराग्राफों को बिना किसी अफसोस के बाहर निकाल दो। बेहतर यह है कि समूचे उपन्यास की सामग्री को एक रेखाचित्र में भर दो, लेकिन रेखाचित्र की सामग्री को बढ़ाकर उपन्यास के रूप में कभी मत पेश करो।"

कनफ्यूशियस ने सलाह दी थी, "दो बार विचार करो",[8] और हान य्वी ने कहा था, "कोई भी कार्य सूझबूझ के जरिए ही पूरा किया जाता है।"[9] यह प्राचीन काल की बात थी। आज मसले अत्यन्त जटिल हो गए हैं, और कभी-कभी उनके बारे में तीन या चार बार विचार करना भी पर्याप्त नहीं होता। लू शुन ने कहा था, "कम से कम दो बार जरूर दोहराओ।" और अधिक से अधिक कितनी बार दोहराना चाहिए ? यह उन्होंने नहीं बताया, लेकिन मेरी राय में किसी भी महत्वपूर्ण लेख के प्रकाशित होने के पहले उसको दस बार से भी अधिक पढ़ने और सचेतन रूप से संशोधित करने में कोई नुकसान नहीं है। लेख वस्तुगत यथार्थ को प्रतिबिम्बित करते हैं, जो टेढ़ामेढ़ा व पेचीदा होता है, और उसको उचित रूप से प्रतिबिम्बित करने के पहले उसका बार-बार अध्ययन किया जाना चाहिए ; इस बारे में असावधान रहना लिखने के प्रारम्भिक ज्ञान के बारे में अनभिज्ञ रहना है।

नियम ६ : "ऐसे नए-नए विशेषणों या अन्य शब्दों को मत गढ़ो जो आपके सिवाय और किसी के लिए बोधगम्य न हों।"

हमने अनेक ऐसी नई-नई अभिव्यक्तियों को "गढ़ लिया" है जो "किसी के लिए बोधगम्य नहीं" हैं। अक्सर केवल एक वाक्यांश में ही चालीस या पचास शब्द होते हैं, और उसमें "ऐसे नए-नए विशेषणों या अन्य शब्दों" की भरमार होती है "जो . . . किसी के लिए बोधगम्य न हों"। अनेक लोग ऐसे हैं जो मुंह से लू शुन का अनुसरण करने का दावा करते कभी नहीं थकते, लेकिन ठीक वही लोग वस्तुत: उनके द्वारा निर्धारित नियमों का पालन नहीं करते।

पुस्तिका में शामिल अन्तिम लेख चीनी कम्युनिस्ट पार्टी की छठी केन्द्रीय कमेटी के छठे पूर्ण अधिवेशन में स्वीकृत उस रिपोर्ट से लिया गया है जिसमें यह बताया गया है कि प्रचार-कार्य की राष्ट्रीय शैली का विकास कैसे किया जाना चाहिए। १९३८ में आयोजित उस अधिवेशन में हमने कहा था कि "चीन की विशिष्टताओं से अलग मार्क्सवाद की कोई भी चर्चा करना केवल हवाई मार्क्सवाद, खोखला मार्क्सवाद है।" कहने का मतलब यह है कि हमें मार्क्सवाद के बारे में सभी प्रकार की हवाई बातचीत का विरोध करना चाहिए और चीन के कम्युनिस्टों को मार्क्सवाद का अध्ययन, उसे चीनी क्रान्ति की वास्तविकताओं के साथ जोड़कर करना चाहिए।

रिपोर्ट में कहा गया था :

विदेशी घिसेपिटे लेखन को मिटा देना चाहिए, खोखले और हवाई राग कम अलापने चाहिए और कठमुल्लावाद को आराम करने देना चाहिए ; इनके स्थान पर नवीन और जीवन्त चीनी

ढंग व भावना अपनानी चाहिए, जिन्हें चीन की आम जनता पसन्द करती है। अन्तरराष्ट्रवाद की अन्तर्वस्तु को राष्ट्रीय रूप से अलग करना उन लोगों का व्यवहार है जो अन्तरराष्ट्रवाद की प्रारम्भिक बात भी कतई नहीं समझते। इसके विपरीत हमें इन दोनों को घनिष्ठ रूप से जोड़ना चाहिए। इस मामले में हमारी पांतों में गम्भीर खामियां हैं, जिन्हें संजीदगी से दूर करना चाहिए।

यद्यपि उस रिपोर्ट में विदेशी घिसेपिटे लेखन को मिटा देने की मांग की गई थी, तथापि हमारे कुछ साथी उसे अब भी बढ़ावा दे रहे हैं। यद्यपि खोखले और हवाई राग कम अलापने की मांग की गई थी, फिर भी हमारे कुछ साथी उनको और ज्यादा अलापने की जिद पकड़े हुए हैं। यद्यपि कठमुल्लावाद को आराम करने देने की मांग की गई थी, फिर भी हमारे कुछ साथी उससे उठ जाने का अनुरोध कर रहे हैं। संक्षेप में, अनेक लोगों ने छठे पूर्ण अधिवेशन में स्वीकृत इस रिपोर्ट को एक कान से सुनकर दूसरे कान से बाहर निकाल दिया है, मानो उन्होंने जानबूझकर उसका विरोध करने की ठान रखी हो।

अब केन्द्रीय कमेटी ने यह निर्णय किया है कि हमें घिसेपिटे पार्टी-लेखन, कठमुल्लावाद तथा इस प्रकार की तमाम अन्य बातों का हमेशा के लिए परित्याग कर देना चाहिए और इसीलिए मैंने यहां आकर आपसे विस्तारपूर्वक चर्चा की है। मैं आशा करता हूं कि मैंने जो कुछ कहा है उस पर हमारे साथी गौर करेंगे और उसका विश्लेषण करेंगे, तथा हमारा प्रत्येक साथी खुद अपने बारे में भी विश्लेषण

करेगा। प्रत्येक साथी को खुद अपने को जांचना-परखना चाहिए, और फिर वह जिस नतीजे पर पहुंचे, उसके बारे में अपने घनिष्ठ मित्रों व आसपास के कामरेडों से विचार-विमर्श करना चाहिए तथा खुद अपनी कमजोरियों से सचमुच पीछा छुड़ा लेना चाहिए।

नोट

[१] ४ मई आन्दोलन के बाद कुछ छिछले किस्म के पूंजीवादी और निम्न-पूंजीवादी बुद्धिजीवियों ने विदेशी घिसेपिटे लेखन का विकास किया और क्रान्तिकारी सांस्कृतिक कार्यकर्ताओं के बीच उसका प्रसार किया, जिससे उनमें एक लम्बे अर्से तक उसका अस्तित्व बना रहा। लू शुन ने अपने अनेक निबन्धों में क्रान्तिकारी सांस्कृतिक कार्यकर्ताओं की पांतों में पाए जाने वाले विदेशी घिसेपिटे लेखन का विरोध किया और उसकी इन शब्दों में भर्त्सना की :

पुराने या नए सभी प्रकार के घिसेपिटे लेखन का पूरी तरह से सफाया कर दिया जाना चाहिए ... मिसाल के तौर पर, अगर कोई व्यक्ति "गाली-गलौज करने", "धमकियां देने" या "फैसला सुनाने" के अलावा, तथा प्रतिदिन विकसित होने वाले नए तथ्यों और घटनाक्रमों की व्याख्या करने के लिए विज्ञान से उत्पन्न सूत्रों को विशिष्ट व ठोस रूप से लागू करने के बजाय केवल पुराने सूत्रों की नकल करने और प्रत्येक तथ्य के बारे में उनको अविवेकपूर्ण ढंग से लागू करने के अलावा और कुछ भी नहीं कर सकता, तो यह भी एक प्रकार की घिसीपिटी कार्यशैली ही है। ("चू श्यू-श्या के पत्र का उत्तर")

[२] देखिए : "चीन के क्रान्तिकारी युद्ध की रणनीति विषयक समस्याएं", नोट ३७ ("माओ त्सेतुङ की संकलित रचनाएं", ग्रन्थ १)।

[३] "गाली-गलौज करने और धमकियां देने को संघर्ष करना हरगिज नहीं कहा जा सकता" – यह १९३२ में लू शुन द्वारा लिखे गए एक निबन्ध का शीर्षक

है, जो "खिचड़ी बोली" शीर्षक संकलन में शामिल है, ("लू शुन की पूर्ण ग्रन्थावली", ग्रन्थ ५)।

४ शांघाई की बोली में शहरों के ऐसे आवारागर्दों को "प्येसान" कहा जाता था जिनके पास जीविका कमाने का कोई उचित साधन नहीं था और जो भीख मांगकर या चोरी करके गुजर-बसर करते थे। ऐसे लोग आम तौर पर बहुत दुबले-पतले होते थे।

५ देखिए : "सोवियत संघ की कम्युनिस्ट पार्टी (बोलशेविक) का इतिहास, संक्षिप्त कोर्स", अध्याय १, परिच्छेद ३।

६ जार्जी दिमित्रोव, "फासिज्म के विरुद्ध मजदूर वर्ग की एकता", भाग ६।

७ "सप्तर्षि" १९३१ और १९३२ में वामपंथी चीनी लेखक संघ द्वारा प्रकाशित की जाने वाली एक मासिक पत्रिका थी। "'सप्तर्षि' द्वारा पेश किए गए प्रश्न के उत्तर में" शीर्षक लू शुन का लेख "दो दिल" शीर्षक संकलन में शामिल है। ("लू शुन की पूर्ण ग्रन्थावली", ग्रन्थ ४)

८ "कनफ्यूशियस का सूक्ति-संग्रह", अध्याय ५, "कुङ्ये छाङ"।

९ हान य्वी (७६८-८२४) थाङ वंश के जमाने का एक प्रसिद्ध चीनी लेखक था। "ज्ञानदृष्टि के बारे में" शीर्षक निबन्ध में उसने लिखा था, "कोई भी कार्य सूझबूझ के जरिए ही पूरा किया जाता है और सूझबूझ के अभाव में असफल रहता है।"

येनान की कला-साहित्य गोष्ठी में भाषण

मई १९४२

प्रस्तावना

२ मई १९४२

साथियो! इस गोष्ठी में भाग लेने के लिए आज आप लोगों को इसलिए निमंत्रित किया गया है कि हम अपने विचारों का आदान-प्रदान कर सकें तथा साहित्य व कला के कार्य और आम क्रान्तिकारी कार्य के आपसी सम्बन्धों को जांच-परख सकें। हमारा उद्देश्य इस बात की गारन्टी करना है कि क्रान्तिकारी साहित्य व कला अपने विकास का सही रास्ता अपनाएं, तथा हमारे राष्ट्रीय दुश्मन का तख्ता उलट देने और हमारी राष्ट्रीय मुक्ति का कार्य पूरा करने में क्रान्तिकारी साहित्य व कला अन्य क्रान्तिकारी कार्यों की पहले से अधिक अच्छी तरह मदद करें।

चीनी जनता की मुक्ति के लिए किए जाने वाले हमारे संघर्ष में विभिन्न प्रकार के मोर्चे मौजूद हैं, इनमें कलम का मोर्चा है और बन्दूक का मोर्चा है, यानी सांस्कृतिक मोर्चा है और फौजी मोर्चा है। दुश्मन को शिकस्त देने के लिए हमें मुख्य रूप से बन्दूकधारी सेना पर निर्भर रहना चाहिए। लेकिन केवलमात्र ऐसी सेना का होना

ही काफी नहीं है, हमारे पास एक सांस्कृतिक सेना भी होनी चाहिए, जो हमारी अपनी पांतों को एकताबद्ध करने के लिए और दुश्मन को शिकस्त देने के लिए निहायत जरूरी है। ४ मई आन्दोलन से चीन में इस प्रकार की सांस्कृतिक सेना अस्तित्व में आ गई है, तथा उसने चीनी क्रान्ति की सहायता की है, चीन की सामन्ती संस्कृति और साम्राज्यवादी आक्रमण की सेवा करने वाली दलाल-पूंजीवादी संस्कृति के प्रभाव-क्षेत्र को कदम-ब-कदम कम कर दिया है और उनकी शक्ति को कदम-ब-कदम घटा दिया है। नई संस्कृति का विरोध करने के लिए चीन के प्रतिक्रियावादी अब केवल "गुण का मुकाबला मात्रा से करने" का एक ही तरीका अपना सकते हैं। दूसरे शब्दों में, प्रतिक्रियावादियों के पास पैसा मौजूद है, तथा यद्यपि वे किसी श्रेष्ठ रचना का सृजन नहीं कर सकते, फिर भी भरपूर शक्ति से भारी मात्रा में जैसे-तैसे सृजन तो कर ही सकते हैं। ४ मई आन्दोलन से कला-साहित्य हमारे सांस्कृतिक मोर्चे का एक महत्व-पूर्ण और सफल अंग रहा है। दस वर्ष के गृहयुद्ध के दौरान, क्रान्तिकारी कला-साहित्य के आन्दोलन का भारी विकास हुआ है। यह आन्दोलन और उस समय का क्रान्तिकारी युद्ध दोनों ही एक सामान्य दिशा में आगे बढ़े हैं, लेकिन ये दोनों ही बिरादराना सेनाएं अपने व्यावहारिक कार्य में परस्पर एक दूसरे से मेल-जोल नहीं रख सकीं, क्योंकि प्रतिक्रियावादियों ने उन्हें एक दूसरे से जुदा कर रखा था। यह एक बहुत अच्छी बात है कि जापानी-आक्रमण-विरोधी युद्ध शुरू होने के बाद, अधिकाधिक क्रान्तिकारी लेखक और कलाकार येनान और अन्य जापान-विरोधी आधार-क्षेत्रों में आते जा रहे हैं। लेकिन इसका यह मतलब हरगिज नहीं होता कि आधार-क्षेत्रों में

आने भर से ही वे यहां की जनता के साथ पूर्ण रूप से एकरूप हो गए हैं। अगर हमें अपने क्रान्तिकारी कार्य को आगे बढ़ाना है, तो इन दोनों को पूर्णतया एकरूप कर दिया जाना चाहिए। हमारी आज की सभा का उद्देश्य इस बात की गारन्टी करना है कि साहित्य व कला समूची क्रान्तिकारी मशीनरी के एक अभिन्न अंग के रूप में अच्छी तरह फिट हो जाएं, वे जनता को एकताबद्ध और शिक्षित करने तथा दुश्मन पर प्रहार करने और उसे नष्ट कर देने वाले शक्तिशाली हथियार बन जाएं, तथा वे जनता को इस योग्य बना दें कि वह एकदिल व एकजान होकर दुश्मन का मुकाबला कर सके। इस उद्देश्य को पूरा करने के लिए आखिर किन समस्याओं को हल करना आवश्यक है? मेरा खयाल है कि वे समस्याएं इस प्रकार हैं: लेखकों व कलाकारों के वर्ग-दृष्टिबिन्दु की समस्या, उनके रुख की समस्या, उनके पाठकों-दर्शकों की समस्या, उनके कार्य की समस्या और उनके अध्ययन की समस्या।

वर्ग-दृष्टिबिन्दु की समस्या। हमारा दृष्टिबिन्दु सर्वहारा वर्ग का और आम जनता का दृष्टिबिन्दु है। कम्युनिस्ट पार्टी के सदस्यों के लिए इसका मतलब है पार्टी के दृष्टिबिन्दु पर कायम रहना, पार्टी-भावना को कायम रखना और पार्टी की नीति पर कायम रहना। क्या हमारे लेखकों व कलाकारों में ऐसे लोग हैं जो इस समस्या को सही रूप में नहीं समझ पाते अथवा स्पष्ट रूप से नहीं समझ पाते? मैं समझता हूं कि ऐसे लोग हैं। हमारे अनेक साथी अक्सर अपने सही दृष्टिबिन्दु से भटकते रहे हैं।

रुख की समस्या। हमारे दृष्टिबिन्दु से ही किसी ठोस मसले के बारे में हमारे ठोस रुख का जन्म होता है। मिसाल के लिए क्या

हमें गुणगान करना चाहिए अथवा पर्दाफाश करना चाहिए ? यह एक रुख का सवाल है। इन दोनों में से कौन सा रुख अपनाया जाए ? मेरा खयाल है कि हमें दोनों तरह का रुख अपनाना चाहिए। सवाल है आखिर हमारे सामने है कौन ? तीन तरह के लोग हैं – दुश्मन, संयुक्त मोर्चे के हमारे संश्रयकारी और हमारे अपने लोग ; अन्तिम श्रेणी के लोग आम जनता और उसका हिरावल दस्ता ही हैं। इन तीनों प्रकार के लोगों के प्रति हमें अलग-अलग किस्म का रुख अपनाना चाहिए। दुश्मन के प्रति, यानी जापानी साम्राज्यवाद के प्रति और जनता के तमाम अन्य दुश्मनों के प्रति, क्रान्तिकारी लेखकों व कलाकारों का कार्य यह है कि वे ऐसे लोगों के खूंखारपन और उनकी चालबाजी का पर्दाफाश करें तथा साथ ही यह भी बताएं कि इनकी पराजय अनिवार्य है, जिससे जापान-विरोधी सेना और जनता को एकदिल व एकजान होकर इनका तख्ता उलट देने के लिए दृढ़तापूर्वक संघर्ष करने का प्रोत्साहन प्राप्त हो सके। संयुक्त मोर्चे के भीतर अपने अलग-अलग संश्रयकारियों के प्रति हमारा रुख यह होना चाहिए कि हम उनके साथ संश्रय भी कायम करें और उनकी आलोचना भी करें, तथा उनके साथ अलग-अलग किस्म का संश्रय कायम करें और उनकी अलग-अलग किस्म की आलोचना करें। हम उनके द्वारा जापान का प्रतिरोध किए जाने का समर्थन करते हैं, तथा इसमें हासिल उनकी कामयाबी की भी प्रशंसा करते हैं। लेकिन अगर वे प्रतिरोध-युद्ध में सक्रियता से भाग नहीं लेते, तो हमें उनकी आलोचना करनी चाहिए। अगर कोई व्यक्ति कम्युनिस्ट पार्टी और जनता का विरोध करता है और प्रतिक्रियावादी रास्ते पर दिन पर दिन नीचे की ओर फिसलता

जाता है, तो हम उसका दृढ़तापूर्वक विरोध करेंगे। जहां तक विशाल जन-समुदाय, उसकी मेहनत, उसके संघर्ष, उसकी सेना और उसकी पार्टी का ताल्लुक है, हमें अवश्य उनकी प्रशंसा करनी चाहिए। जनता की भी अपनी कमियां होती हैं। सर्वहारा वर्ग में भी बहुत से लोग निम्न-पूंजीपति वर्ग के विचार रखते हैं, तथा किसान और शहरी निम्न-पूंजीपति वर्ग के लोग भी पिछड़े हुए विचार रखते हैं, ये सभी संघर्ष के दौरान उनके लिए एक बोझ हैं। उन्हें शिक्षित करने के लिए, तथा उन्हें उक्त बोझ अपने कन्धे से उतार देने और अपनी कमियों व गलतियों को दूर करने में मदद देने के लिए हमें दीर्घकाल तक धीरज से काम लेना चाहिए, ताकि वे लम्बे डग भरते हुए आगे बढ़ सकें। उन्होंने संघर्ष के दौरान अपना पुनःसंस्कार कर लिया है अथवा कर रहे हैं। हमारे कला-साहित्य को इस पुनःसंस्कार की प्रक्रिया का चित्रण करना चाहिए। अगर वे अपनी गलतियों से चिपके नहीं रहते तो हमें केवल उनके नकारात्मक पहलू को देखकर उनकी खिल्ली उड़ाने की गलती, यहां तक कि उनके प्रति दुश्मनी रखने की गलती नहीं करनी चाहिए। हमारी रचनाओं से उन्हें एकताबद्ध होने, प्रगति करने, एकदिल व एकजान होकर दृढ़तापूर्वक आगे बढ़ने, पिछड़ी हुई चीजों का परित्याग करने और क्रान्तिकारी चीजों का विकास करने में मदद मिलनी चाहिए, तथा हमारी रचनाओं का उन पर उल्टा असर हरगिज नहीं पड़ना चाहिए।

पाठकों-दर्शकों की समस्या, यानी यह कि हमारी साहित्यिक रचनाओं और कलाकृतियों का सृजन आखिर किन लोगों के लिए किया जाता है। शेनशी-कानसू-निङश्या सीमान्त क्षेत्र में और

उत्तरी चीन व मध्य चीन के जापान-विरोधी आधार-क्षेत्रों में यह समस्या क्वोमिन्ताङ-शासित क्षेत्रों के मुकाबले भिन्न है, तथा प्रतिरोध-युद्ध के पहले के शांघाई से तो और भी अधिक भिन्न है। उस काल में शांघाई में क्रान्तिकारी कला-साहित्य के पाठकों-दर्शकों में मुख्यतया विद्यार्थियों, दफ्तर के कर्मचारियों और दुकान-कर्मचारियों का महज एक हिस्सा था। प्रतिरोध-युद्ध शुरू होने के बाद, क्वोमिन्ताङ-शासित क्षेत्रों में पाठकों-दर्शकों का दायरा कुछ विस्तृत हो गया, लेकिन उसमें फिर भी मुख्यतया पहले जैसे ही लोग रहे, क्योंकि वहां की सरकार ने मजदूरों, किसानों और सैनिकों को क्रान्तिकारी कला-साहित्य के सम्पर्क में नहीं आने दिया। हमारे आधार-क्षेत्रों में परिस्थिति बिलकुल भिन्न है। यहां कला-साहित्य की रचनाओं के पाठक-दर्शक मजदूर, किसान, सैनिक और क्रान्तिकारी कार्यकर्ता हैं। विद्यार्थी भी हमारे आधार-क्षेत्रों में मौजूद हैं, लेकिन वे पुराने किस्म के विद्यार्थियों से भिन्न प्रकार के हैं, वे या तो भूतपूर्व कार्यकर्ता हैं अथवा भावी कार्यकर्ता। सभी किस्म के कार्यकर्ता, सेना के योद्धा, कारखानों के मजदूर और गांवों के किसान, ये सभी लोग साक्षर बनने के बाद किताबें और अखबार पढ़ना चाहते हैं, तथा जो लोग साक्षर नहीं हैं वे नाटक-आपेरा देखना चाहते हैं, ड्राइंगों और चित्रों को देखना चाहते हैं, गीत गाना चाहते हैं और संगीत सुनना चाहते हैं; ये लोग ही हमारी साहित्यिक रचनाओं व कला-कृतियों के पाठक-दर्शक हैं। सिर्फ कार्यकर्ताओं को ही लीजिए। यह न समझें कि उनकी तादाद थोड़ी है, इन लोगों की संख्या क्वोमिन्ताङ-शासित क्षेत्र में प्रकाशित होने वाली किसी भी पुस्तक के पाठकों की संख्या के मुकाबले कहीं ज्यादा है। वहां आम तौर पर

एक किताब के एक संस्करण की सिर्फ २,००० प्रतियां छापी जाती हैं, और तीन संस्करण मिलाकर भी सिर्फ ६,००० प्रतियां ही होती हैं; लेकिन जहां तक आधार-क्षेत्रों का ताल्लुक है, अकेले येनान में ही १०,००० से अधिक कार्यकर्ता ऐसे हैं जो किताबें पढ़ सकते हैं। यही नहीं, उनमें बहुत से लोग लम्बे अरसे में तपे हुए क्रान्तिकारी हैं जो देश के सभी भागों से यहां आए हुए हैं और यहां से विभिन्न स्थानों में काम करने जाएंगे, इसलिए उनके बीच शिक्षा-कार्य बहुत महत्वपूर्ण है। हमारे लेखकों और कलाकारों को चाहिए कि वे उन लोगों के बीच अच्छी तरह काम करें।

चूंकि हमारे कला-साहित्य के पाठक-दर्शक मजदूर, किसान व सैनिक तथा इनके कार्यकर्तागण हैं, इसलिए सवाल यह पैदा होता है कि उन्हें समझ लिया जाए और उनका अच्छी तरह परिचय प्राप्त कर लिया जाए। उन्हें समझने और उनका अच्छी तरह परिचय प्राप्त करने के लिए, पार्टी व सरकार के संगठनों में, देहातों व कारखानों में तथा आठवीं राह सेना व नई चौथी सेना में विभिन्न प्रकार के लोगों व तथ्यों को समझने और उनका अच्छी तरह परिचय प्राप्त कर लेने के लिए बहुत सा कार्य करना होगा। हमारे लेखकों व कलाकारों को अपना साहित्यिक व कलात्मक सृजन-कार्य करना होगा, लेकिन उनका सर्वप्रथम कार्य है जनता को समझना और उसका अच्छी तरह परिचय प्राप्त कर लेना। इस सम्बन्ध में हमारे लेखकों व कलाकारों की हालत कैसी रही है? मैं कहना चाहता हूं कि उनमें ज्ञान और समझ की कमी है, वे "अपने शौर्य-प्रदर्शन के लिए कहीं भी जगह न ढूंढ़ सकने वाले वीर" की तरह हैं। ज्ञान की कमी होने का क्या मतलब है? इसका मतलब है जनता को अच्छी

तरह न पहचानना। लेखकों और कलाकारों को न तो उन लोगों की जानकारी है जिनका वे चित्रण करते हैं और न अपने पाठकों-दर्शकों की ही अच्छी जानकारी है, या उन्हें उनके बारे में जरा भी जानकारी नहीं है। हमारे लेखकों व कलाकारों को न तो मजदूरों, किसानों और सैनिकों की ही अच्छी जानकारी है और न उनके कार्यकर्ताओं की ही। समझ की कमी होने का क्या मतलब है? इसका मतलब है भाषा को न समझना, यानी ग्राम जनता की समृद्ध और सजीव भाषा के बारे में पर्याप्त ज्ञान न होना। चूंकि बहुत से लेखक व कलाकार ग्राम जनता से अलग-थलग रहते हैं और खोखला जीवन व्यतीत करते हैं, इसलिए यह स्वाभाविक ही है कि वे जनता की भाषा से अपरिचित हैं। परिणामस्वरूप उनकी रचनाओं में न केवल भाषा की नीरसता मौजूद रहती है बल्कि उनकी खुद की गढ़ी हुई ऐसी अनुपयुक्त अभिव्यक्तियां भी होती हैं जो सामान्य रूप से प्रयोग में नहीं आतीं। बहुत से साथी "लोकप्रिय शैली" की बहुत बातें करते हैं। लेकिन वास्तव में लोकप्रिय शैली का मतलब क्या है? इसका मतलब यह है कि हमारे लेखकों व कलाकारों के विचारों व भावनाओं को मजदूरों, किसानों व सैनिकों के जन-समुदाय के विचारों व भावनाओं के साथ एकरूप हो जाना चाहिए। यह एकरूपता प्राप्त करने के लिए उन्हें बड़ी लगन के साथ ग्राम जनता की भाषा सीखनी चाहिए। अगर आप ग्राम जनता की भाषा में बहुतेरी बातों को समझ ही न पाएं, तो भला साहित्यिक और कलात्मक सृजन की बात कैसे कर सकेंगे? "अपने शौर्य-प्रदर्शन के लिए कहीं भी जगह न ढूंढ़ सकने वाले वीर" से हमारा मतलब यह है कि आपकी तथाकथित महान सच्चाइयों के संग्रह के लिए

ग्राम जनता के दिल में कोई जगह नहीं। आप ग्राम जनता के सामने जितने ही ज्यादा बड़े दिग्गज बनने की कोशिश करते हैं और जितने ही ज्यादा बड़े "वीर" बनने की कोशिश करते हैं, तथा जितनी ही ज्यादा मात्रा में आप जनता को इस प्रकार की सामग्री भिड़ाते हैं, जनता द्वारा उसे स्वीकार किए जाने की सम्भावना उतनी ही कम होती है। अगर आप चाहते हैं कि ग्राम जनता आपको समझे, अगर आप चाहते हैं कि ग्राम जनता के साथ एकरूप हो जाएं, तो आपको तपकर फौलाद बनने की एक दीर्घकालीन और यहां तक कि एक कष्टदायक प्रक्रिया में से गुजरने का पक्का इरादा रखना चाहिए। यहां मैं अपने खुद के अनुभव का जिक्र कर दूं कि मेरी अपनी भावनाओं में कैसे तब्दीली आई। मैंने अपनी जिन्दगी एक विद्यार्थी के रूप में शुरू की और स्कूल में एक ग्राम विद्यार्थी के तौर-तरीके अपना लिए; तब मैं अपने उन साथी विद्यार्थियों के सामने थोड़ा सा भी शारीरिक श्रम करने में, मसलन अपना असबाब उठाने में अपनी तौहीन समझता था, जो अपने कन्धे पर अथवा हाथों पर कोई भी सामान नहीं उठा सकते थे। उस समय मैं समझता था कि दुनिया में केवल बुद्धिजीवी ही साफ-सुथरे होते हैं, जबकि मजदूर व किसान उनके मुकाबले गन्दे रहते हैं। दूसरे बुद्धिजीवी साथियों के कपड़े, जिन्हें मैं साफ-सुथरा समझता था, पहन लेने में मुझे कोई एतराज नहीं होता था, जबकि किसी मजदूर अथवा किसान के कपड़े मैं पहनना नहीं चाहता था क्योंकि उन्हें मैं गन्दा समझता था। लेकिन जब मैं एक क्रान्तिकारी बन गया तथा मजदूरों व किसानों और क्रान्तिकारी सेना के सैनिकों के साथ रहने लगा, तो मैं कदम-ब-कदम उनसे अच्छी तरह परिचित हो गया और वे भी कदम-ब-

कदम मुझसे अच्छी तरह परिचित हो गए। तभी और सिर्फ तभी मैं पूंजीपति वर्ग और निम्न-पूंजीपति वर्ग की अपनी उन भावनाओं को बुनियादी रूप से बदल सका जिनका बीजारोपण मेरे अन्दर पूंजीवादी स्कूलों में हुआ था। तब से ही मैं यह अनुभव करने लगा कि मजदूरों व किसानों के मुकाबले वे बुद्धिजीवी जिनका पुनःसंस्कार अभी नहीं हुआ, साफ-सुथरे नहीं हैं, और आखिरकार मजदूर व किसान ही सबसे अधिक साफ-सुथरे लोग हैं; चाहे उनके हाथ मिट्टी से सने हुए हों और पांव गोबर से लथपथ हों, फिर भी वे पूंजीपति वर्ग और निम्न-पूंजीपति वर्ग के बुद्धिजीवियों के मुकाबले कहीं अधिक साफ-सुथरे होते हैं। इसका मतलब होता है भावनाओं का रूपान्तर, एक वर्ग से दूसरे वर्ग में रूपान्तर। अगर हमारे वे लेखक व कलाकार जो बुद्धिजीवियों की पांतों से आए हुए हैं, यह चाहते हों कि उनकी रचनाओं को आम जनता पसन्द करे, तो उन्हें अपने विचारों और भावनाओं का रूपान्तर कर लेना चाहिए और उनका पुनःसंस्कार कर लेना चाहिए। इस प्रकार के रूपान्तर के बिना, इस प्रकार के पुनःसंस्कार के बिना, वे लोग कोई भी काम अच्छी तरह नहीं कर पाएंगे और बिलकुल नाकाबिल साबित होंगे।

अन्तिम समस्या अध्ययन की समस्या है, जिससे मेरा तात्पर्य है मार्क्सवाद-लेनिनवाद और समाज का अध्ययन करना। जो कोई भी अपने आपको मार्क्सवादी क्रान्तिकारी लेखक कहता हो और खास तौर से जो लेखक कम्युनिस्ट पार्टी का सदस्य हो, उसे मार्क्सवाद-लेनिनवाद का ज्ञान अवश्य होना चाहिए। लेकिन इस समय कुछ साथी मार्क्सवाद की बुनियादी धारणाओं से अनभिज्ञ हैं। मिसाल के लिए, यह एक बुनियादी मार्क्सवादी धारणा है कि मनुष्य

का अस्तित्व ही उसकी चेतना का निर्णय करता है, वर्ग-संघर्ष और राष्ट्रीय संघर्ष की वस्तुगत परिस्थितियां ही हमारे विचारों और भावनाओं का निर्णय करती हैं। लेकिन हमारे कुछ साथी इसे उलटकर देखते हैं और यह समझते हैं कि हर चीज "प्रेम" से शुरू होनी चाहिए। जहां तक प्रेम का ताल्लुक है, एक वर्ग-समाज में प्रेम केवल वर्ग-प्रेम ही हो सकता है, लेकिन ये साथी एक ऐसे प्रेम को खोजते हैं जो वर्गों से परे है और अमूर्त है, तथा एक अमूर्त आजादी, एक अमूर्त सत्य और एक अमूर्त मानव-स्वभाव को खोजते हैं, वगैरह-वगैरह। इससे यह जाहिर होता है कि इन साथियों पर पूंजीपति वर्ग का बहुत गहरा असर पड़ा है। उन्हें अपने आपको इस असर से पूरी तरह मुक्त कर लेना चाहिए तथा बड़ी नम्रता के साथ मार्क्सवाद-लेनिनवाद का अध्ययन करना चाहिए। लेखकों व कलाकारों द्वारा साहित्यिक रचनाओं व कलाकृतियों के सृजन का अध्ययन बिलकुल उचित है, लेकिन मार्क्सवाद-लेनिनवाद एक ऐसा विज्ञान है जिसका सभी क्रान्तिकारियों को अध्ययन करना चाहिए, लेखक व कलाकार इसके अपवाद नहीं हैं। लेखकों व कलाकारों को चाहिए कि वे समाज का अध्ययन करें, अर्थात वे समाज के विभिन्न वर्गों का अध्ययन करें, उनके आपसी सम्बन्धों और उनकी अपनी-अपनी स्थितियों का, तथा उनकी बाह्य आकृति और मनोवृत्ति का अध्ययन करें। जब इन सब बातों को स्पष्ट कर दिया जाएगा, सिर्फ तभी हमारे कला-साहित्य की विषय-वस्तु बड़ी समृद्ध हो सकेगी और उसकी दिशा सही हो सकेगी।

आज मैं इन समस्याओं को केवल एक प्रस्तावना के रूप में उठा

रहा हूं, मुझे उम्मीद है कि आप सब लोग इन समस्याओं और अन्य सम्बन्धित समस्याओं के बारे में अपने विचार प्रकट करेंगे।

उपसंहार

२३ मई १९४२

साथियो! हमारी गोष्ठी की इस महीने में तीन बैठकें हुई हैं। सत्य की खोज में हम लोगों ने गरमागरम बहस की है, जिसमें बीसियों पार्टी-कामरेडों और गैरपार्टी-कामरेडों ने भाषण दिए हैं, तथा समस्याओं को स्पष्ट रूप से पेश किया है और उन्हें अधिक ठोस रूप दिया है। मैं समझता हूं कि इससे कला-साहित्य के समूचे आन्दोलन को बहुत फायदा पहुंचेगा।

किसी भी समस्या पर विचार करते समय, हमें वास्तविक स्थिति को आधार बनाकर शुरुआत करनी चाहिए, न कि परिभाषाओं को आधार बनाकर। यदि हम साहित्य व कला की परिभाषाओं को पाठ्य-पुस्तकों में खोजने लगेंगे और इसके बाद उन्हें कला-साहित्य के वर्तमानकालीन आन्दोलनों के निर्देशक उसूलों का निर्णय करने तथा आज के जमाने में पैदा होने वाले विभिन्न मतों और मतभेदों को परखने के लिए इस्तेमाल करेंगे, तो हम एक गलत पद्धति का अनुसरण करेंगे। हम मार्क्सवादी हैं, और मार्क्सवाद हमें यह सिखाता है कि किसी भी समस्या से निपटते समय हमें वस्तुगत तथ्यों से शुरुआत करनी चाहिए अमूर्त परिभाषाओं से नहीं, तथा इन तथ्यों का

विश्लेषण करके ही हमें अपने निर्देशक उसूलों, नीतियों और उपायों को निर्धारित करना चाहिए। कला-साहित्य सम्बन्धी कार्य के अपने वर्तमान वाद-विवाद में भी हमें ऐसा ही करना चाहिए।

इस समय तथ्य क्या हैं? वे इस प्रकार हैं: जापानी-आक्रमण-विरोधी युद्ध, जिसे चीन पिछले पांच वर्षों से लड़ रहा है; विश्वव्यापी फासिस्ट-विरोधी युद्ध; जापानी-आक्रमण-विरोधी युद्ध में चीन के बड़े जमींदारों के वर्ग और बड़े पूंजीपतियों के वर्ग द्वारा ढुलमुल रुख अपनाया जाना तथा मनमाने ढंग से जनता का उत्पीड़न करने की नीति को अपनाया जाना; ४ मई आन्दोलन से साहित्य व कला के क्षेत्र में क्रान्तिकारी आन्दोलन चलाया जाना – पिछले २३ वर्षों में क्रान्ति के लिए उसका महान योगदान और उसकी अनेक कमियां; आठवीं राह सेना और नई चौथी सेना के जापान-विरोधी जनवादी आधार-क्षेत्रों का होना तथा इन आधार-क्षेत्रों में लेखकों और कलाकारों का एक बड़ी तादाद में आठवीं राह सेना और नई चौथी सेना तथा मजदूरों व किसानों के साथ एकरूप हो जाना; वातावरण और कर्तव्य दोनों की दृष्टि से इन आधार-क्षेत्रों के लेखकों व कलाकारों तथा क्वोमिन्ताङ-शासित क्षेत्रों के लेखकों व कलाकारों के बीच का अन्तर; तथा साहित्य व कला के वे विवादास्पद प्रश्न जो येनान और अन्य जापान-विरोधी आधार-क्षेत्रों में उठे हुए हैं। ये सभी ऐसे वास्तविक और अकाट्य तथ्य हैं जिनके आधार पर हमें अपनी समस्याओं पर विचार करना है।

आखिर हमारी समस्याओं का केन्द्र क्या है? मेरे विचार से वह बुनियादी तौर पर यह है: आम जनता के लिए कार्य करने का सवाल और यह सवाल कि इसे कैसे किया जाए। जब तक ये दोनों सवाल

हल नहीं हो जाते अथवा उचित ढंग से हल नहीं हो जाते, तब तक हमारे लेखक व कलाकार अपने आपको अपने वातावरण और अपने कर्तव्यों के अनुरूप अच्छी तरह नहीं ढाल सकेंगे तथा उन्हें सिलसिलेवार अनेक अन्दरूनी और बाहरी कठिनाइयों का सामना करना पड़ेगा। मेरा निष्कर्ष इन दो सवालों पर ही केन्द्रित रहेगा तथा साथ ही मैं इन दो सवालों से सम्बन्धित कुछ अन्य सवालों की भी चर्चा करूंगा।

१

पहली समस्या यह है: हमारा कला-साहित्य आखिर किसके लिए है?

इस समस्या को मार्क्सवादियों ने, खास तौर पर लेनिन ने, काफी समय पहले ही हल कर दिया था। बहुत पहले १६०५ में ही लेनिन ने जोर देकर बताया था कि हमारे साहित्य व कला को "लाखों-करोड़ों मेहनतकश जनता की...सेवा करनी" चाहिए।[१] जो साथी जापान-विरोधी आधार-क्षेत्रों में कला-साहित्य के कार्य में लगे हुए हैं, उन्हें शायद ऐसा लगे कि यह समस्या हल हो चुकी है तथा इस सम्बन्ध में और अधिक वाद-विवाद करने की आवश्यकता नहीं है। वास्तव में बात ऐसी नहीं है। बहुत से साथी इसका स्पष्ट हल खोज नहीं पाए हैं। परिणामस्वरूप उनकी भावनाएं, उनकी रचनाएं, उनकी गतिविधियां और साहित्य व कला के निर्देशक उसूलों के बारे में उनके विचार अनिवार्य रूप से आम जनता और ठोस संघर्ष की आवश्यकताओं से कम या ज्यादा मात्रा में मेल नहीं

खाते। इसमें सन्देह नहीं कि उन अनेक सांस्कृतिक व्यक्तियों, लेखकों, कलाकारों, तथा साहित्य व कला के क्षेत्र में काम करने वाले अन्य कार्यकर्ताओं में से, जो कम्युनिस्ट पार्टी तथा आठवीं राह सेना और नई चौथी सेना के साथ मिलकर महान मुक्ति-संघर्ष में जुटे हुए हैं, केवल चन्द लोग ऐसे हो सकते हैं जो कैरियरवादी हों और जो हमारे साथ केवल अस्थाई रूप से ही हों, लेकिन उनकी भारी बहुसंख्या हमारे मुश्तरका कार्य के लिए बड़ी मेहनत से काम कर रही है। इन साथियों के भरोसे हमने अपने साहित्य, नाटक, संगीत और ललित कलाओं के क्षेत्रों में भारी उपलब्धियां प्राप्त की हैं। इन लेखकों व कलाकारों में से बहुत से लोगों ने प्रतिरोध-युद्ध शुरू होने के बाद ही अपना काम शुरू किया है, बहुत से अन्य लोगों ने प्रतिरोध-युद्ध से पहले भी बहुत लम्बे समय तक क्रान्तिकारी कार्य किया है, बहुत सी कठिनाइयों का सामना किया है तथा अपने कार्यों और रचनाओं से व्यापक जनता में असर पैदा किया है। ऐसी हालत में भला हम यह क्यों कहते हैं कि इन साथियों में भी कुछ लोग ऐसे हैं जो इस समस्या का स्पष्ट हल अभी तक नहीं खोज पाए कि आखिर कला-साहित्य है किसके लिए? क्या इस बात की कल्पना की जा सकती है कि अब भी कुछ लोग ऐसे हैं जो इस बात की वकालत करते हैं कि क्रान्तिकारी कला-साहित्य जनता के विशाल समुदाय के लिए नहीं बल्कि शोषकों और उत्पीड़कों के लिए होता है?

इसमें सन्देह नहीं कि ऐसा कला-साहित्य भी मौजूद है जो शोषकों और उत्पीड़कों के लिए है। जो कला-साहित्य जमींदार वर्ग के लिए होता है, वह सामन्ती कला-साहित्य कहलाता है। चीन के सामन्ती युग में शासक वर्ग का कला-साहित्य ऐसा ही था। आज भी इस

प्रकार के कला-साहित्य का चीन में काफी प्रभुत्व है। जो कला-साहित्य पूंजीपति वर्ग के लिए होता है, वह पूंजीपति वर्ग का कला-साहित्य कहलाता है। ल्याङ श-छ्यू[१] जैसे लोग, जिनकी लू शुन ने आलोचना की थी, कला-साहित्य को वर्गों से परे बताते हैं, लेकिन वास्तव में वे लोग पूंजीपति वर्ग के कला-साहित्य का पक्षपोषण करते हैं और सर्वहारा कला-साहित्य का विरोध करते हैं। जो कला-साहित्य साम्राज्यवादियों के लिए होता है – जैसे चओ च्वो-रन, चाङ चि-फिङ[१] और उनके समान अन्य लोगों की रचनाएं – वह देशद्रोही कला-साहित्य कहलाता है। जहां तक हमारे कला-साहित्य का सम्बन्ध है, यह उपर्युक्त विभिन्न प्रकार के लोगों के लिए नहीं, बल्कि जनता के लिए ही है। हम यह बता चुके हैं कि वर्तमान दौर में चीन की नई संस्कृति सर्वहारा वर्ग के नेतृत्व में आम जनता की साम्राज्यवाद-विरोधी व सामन्तवाद-विरोधी संस्कृति है। आज जो कुछ सचमुच आम जनता के लिए होता है, वह निश्चयपूर्वक सर्वहारा वर्ग के नेतृत्व में होता है। जो कुछ पूंजीपति वर्ग के नेतृत्व में होता है, वह आम जनता के लिए हरगिज नहीं हो सकता। स्वाभाविक है कि यही बात नए कला-साहित्य पर भी लागू होती है, जो नई संस्कृति का एक अंग है। हमें कला-साहित्य की समृद्ध विरासत को, कला-साहित्य की श्रेष्ठ परम्पराओं को, जो चीन में और अन्य देशों में अतीत काल से चली आ रही हैं, स्वीकार कर लेना चाहिए, लेकिन हमारा उद्देश्य फिर भी आम जनता की सेवा होना चाहिए। और न हम अतीत काल के साहित्यिक व कलात्मक रूपों का इस्तेमाल करने से ही इनकार करते हैं। लेकिन हमारे हाथ में आने के बाद ये पुराने रूप भी, जिनका पुनःसंस्कार करके हम उनमें एक नई

विषय-वस्तु भर देते हैं, जनता की सेवा करने वाली एक क्रान्तिकारी वस्तु बन जाते हैं।

आम जनता में आखिर कौन लोग शामिल हैं? व्यापकतम जनता में, जिसकी संख्या हमारी आबादी के ९० प्रतिशत से भी ज्यादा है, मजदूर, किसान, सैनिक और शहरी निम्न-पूंजीपति वर्ग शामिल हैं। इसलिए हमारा कला-साहित्य सबसे पहले मजदूरों के लिए है, एक ऐसे वर्ग के लिए जो क्रान्ति का नेतृत्व करता है। दूसरे, वह किसानों के लिए है, जो क्रान्ति में हमारे सबसे व्यापक और सबसे दृढ़ संश्रयकारी हैं। तीसरे, वह सशस्त्र मजदूरों व किसानों अर्थात आठवीं राह सेना और नई चौथी सेना तथा जनता की अन्य सशस्त्र फौजों के लिए है, जो क्रान्तिकारी युद्ध की मुख्य शक्ति हैं। चौथे, वह शहरी निम्न-पूंजीपति वर्ग के मेहनतकश जन-समुदाय और बुद्धिजीवियों के लिए है ; ये दोनों ही प्रकार के लोग क्रान्ति में हमारे संश्रयकारी हैं तथा हमारे साथ दीर्घकाल तक सहयोग कर सकते हैं। ये चार प्रकार के लोग मिलकर चीनी राष्ट्र का एक सबसे बड़ा अंग और व्यापकतम जन-समुदाय बन जाते हैं।

हमारा कला-साहित्य ऊपर बताए गए चार प्रकार के लोगों के लिए ही होना चाहिए। उनकी सेवा करने के लिए, हमें सर्वहारा वर्ग का दृष्टिबिन्दु अपनाना चाहिए, निम्न-पूंजीपति वर्ग का दृष्टि-बिन्दु नहीं। आज, ऐसे लेखक, जो व्यक्तिवादी, निम्न-पूंजीपति वर्ग के दृष्टिबिन्दु से चिपके रहते हैं, क्रान्तिकारी मजदूरों, किसानों और सैनिकों के विशाल जन-समुदाय की सच्ची सेवा नहीं कर सकते। उनकी दिलचस्पी मुख्य रूप से अल्पसंख्यक निम्न-पूंजीपति वर्ग के बुद्धिजीवियों पर ही केन्द्रित रहती है। यही इस बात का मुख्य

कारण है कि हमारे कुछ साथी "कला-साहित्य किसके लिए?" की समस्या सही ढंग से हल नहीं कर पाते। यह बात कहते समय मैं सिद्धान्त की चर्चा नहीं कर रहा हूं। सिद्धान्त के रूप में अथवा अपनी कथनी में, हमारी पांतों का कोई भी व्यक्ति मजदूरों, किसानों और सैनिकों के विशाल जन-समुदाय को निम्न-पूंजीपति वर्ग के बुद्धिजीवियों से कम महत्वपूर्ण नहीं समझता। मैं यहां व्यवहार की बात कर रहा हूं, करनी की बात कर रहा हूं। तो क्या अपने व्यवहार में, अपनी करनी में, वे लोग निम्न-पूंजीपति वर्ग के बुद्धि-जीवियों को मजदूरों, किसानों और सैनिकों से अधिक महत्वपूर्ण समझते हैं? मैं समझता हूं, वे ऐसा करते हैं। बहुत से साथी निम्न-पूंजीपति वर्ग के बुद्धिजीवियों का अध्ययन करने और उनकी मनोवृत्ति का विश्लेषण करने में अपेक्षाकृत ज्यादा दिलचस्पी दिखाते हैं, तथा वे लोग इन बुद्धिजीवियों का चित्रण करने और उनकी कमियों की उपेक्षा करने अथवा पैरवी करने में ही अपना ध्यान केन्द्रित करते हैं, बजाय इसके कि वे इन बुद्धिजीवियों का इस बात के लिए पथप्रदर्शन करें कि वे उनके साथ मजदूरों, किसानों और सैनिकों के विशाल जन-समुदाय से सम्पर्क रखें, उनके व्यावहारिक संघर्ष में भाग लें, उनका चित्रण करें और उन्हें शिक्षा दें। निम्न-पूंजीपति वर्ग में पैदा होने और खुद भी बुद्धिजीवी होने के कारण, बहुत से साथी केवल बुद्धिजीवियों में ही अपने मित्रों की खोज करते हैं तथा उन्हीं का अध्ययन करने और चित्रण करने में अपना ध्यान केन्द्रित करते हैं। इस प्रकार का अध्ययन और चित्रण यदि सर्वहारा वर्ग के दृष्टि-बिन्दु से किया जाए, तो वह उचित होता है। लेकिन वे ऐसा नहीं करते, अथवा पूरी तरह ऐसा नहीं करते। वे निम्न-पूंजीपति वर्ग

का दृष्टिबिन्दु अपना लेते हैं तथा ऐसी रचनाओं का सृजन करते हैं जिनमें निम्न-पूंजीपति वर्ग की ही आत्माभिव्यक्ति होती है, बहुत सी साहित्यिक रचनाओं और कलाकृतियों में हमें ऐसी ही हालत दिखाई देती है। वे लोग अक्सर निम्न-पूंजीपति वर्ग में पैदा होने वाले बुद्धिजीवियों के प्रति हार्दिक सहानुभूति प्रकट करते हैं, और उनकी कमियों के प्रति भी सहानुभूति प्रकट करते हैं यहां तक कि उनकी कमियों की प्रशंसा करते हैं। दूसरी तरफ ये साथी मजदूरों, किसानों और सैनिकों के विशाल जन-समुदाय से बहुत कम सम्पर्क रखते हैं, उन्हें समझने और उनका अध्ययन करने की कम कोशिश करते हैं, उनके बीच अपने घनिष्ठ मित्र बनाने की कम कोशिश करते हैं और उनका चित्रण करने में कुशल नहीं होते, और जब कभी उनका चित्रण भी करते हैं तो उनके पात्रों की पोशाक तो मेहनतकश जनता की होती है लेकिन चेहरा निम्न-पूंजीपति वर्ग के बुद्धिजीवियों का ही होता है। कुछ बातों में तो वे मजदूरों, किसानों और सैनिकों तथा इनमें से आने वाले कार्यकर्ताओं को पसन्द करते हैं, लेकिन कुछ मौकों पर और कुछ बातों में वे लोग उन्हें पसन्द नहीं करते: वे लोग उनकी भावनाओं को या उनके तौर-तरीकों को अथवा उनके नवजात कला-साहित्य को (दीवार-पत्रों, भित्तिचित्रों, लोकगीतों, लोक-कथाओं इत्यादि को) पसन्द नहीं करते। कभी-कभी वे लोग इन चीजों को भी पसन्द करने लगते हैं, लेकिन यह सब तभी होता है जब वे किसी अनोखी चीज की तलाश में अथवा किसी ऐसी चीज की तलाश में हों जिससे कि वे अपनी रचनाओं को अलंकृत कर सकें, यहां तक कि इन चीजों में से किसी पिछड़ी हुई वस्तु की तलाश में भी हों। किसी दूसरे मौके पर वे लोग इन चीजों को खुलेआम घृणा

की नजर से देखते हैं तथा निम्न-पूंजीपति वर्ग के बुद्धिजीवियों की, यहां तक कि पूंजीपति वर्ग की चीजों के प्रति भी पक्षपातपूर्ण रुख अपना लेते हैं। इन साथियों के पांव निम्न-पूंजीपति वर्ग के बुद्धिजीवियों के पक्ष में जमे हुए हैं, अथवा और अधिक अलंकृत शब्दों में कहा जाए तो उनकी अन्त:चेतना में अब भी निम्न-पूंजीपति वर्ग के बुद्धिजीवियों का ही राज्य कायम है। इस प्रकार वे अभी तक "किसके लिए?" की समस्या को नहीं सुलझा पाए अथवा स्पष्ट रूप से नहीं सुलझा पाए। यह बात सिर्फ येनान में आए हुए नवागन्तुकों पर ही लागू नहीं होती, बल्कि ऐसे साथियों में भी जो लड़ाई के मोर्चे पर जा चुके हैं और हमारे आधार-क्षेत्रों में तथा आठवीं राह सेना और नई चौथी सेना में अनेक वर्षों तक काम कर चुके हैं, बहुत से लोग ऐसे हैं जिन्होंने इस समस्या को अभी पूरी तरह हल नहीं किया। इसे पूरी तरह हल करने में एक लम्बा अरसा लगता है, कम से कम आठ-दस वर्ष लग जाते हैं। लेकिन इसमें चाहे कितना ही समय क्यों न लगे, हमें इसे हर हालत में हल करना है, तथा इसे स्पष्ट रूप से और पूर्ण रूप से हल करना है। हमारे लेखकों और कलाकारों को अपना यह काम पूरा कर लेना चाहिए और अपना दृष्टिबिन्दु बदल लेना चाहिए ; उन्हें मजदूरों, किसानों व सैनिकों के बीच और व्यावहारिक संघर्षों के बीच जाने की प्रक्रिया तथा मार्क्सवाद और समाज का अध्ययन करने की प्रक्रिया के जरिए कदम-ब-कदम अपने पांव मजदूरों, किसानों और सैनिकों के पक्ष में जमा लेने चाहिए, सर्वहारा वर्ग के पक्ष में जमा लेने चाहिए। केवल इसी तरह हम एक ऐसे कला-साहित्य का सृजन कर सकते हैं जो सचमुच मजदूरों, किसानों और सैनिकों के लिए हो और सचमुच सर्वहारा वर्ग का कला-साहित्य हो।

"किसके लिए?" का सवाल एक बुनियादी सवाल है, यह एक उसूली सवाल है। अतीत काल में हमारे कुछ साथियों के बीच जिस मतभेद और विचार-भिन्नता, विरोध और फूट की उत्पत्ति हुई, वह इस बुनियादी व उसूली सवाल के बारे में नहीं बल्कि कुछ अपेक्षाकृत गौण सवालों के बारे में, अथवा ऐसे सवालों के बारे में पैदा हुई जिनमें कोई उसूली विवाद नहीं था। लेकिन इस उसूली सवाल के बारे में दो प्रतिद्वन्द्वी पक्षों के बीच शायद ही कोई विचार-भिन्नता हो और वे लगभग पूर्ण मतैक्य प्रदर्शित कर चुके हैं, किसी हद तक इन दोनों का रुझान मजदूरों, किसानों और सैनिकों को हिकारत की नजर से देखने तथा अपने आपको आम जनता से अलग-थलग कर लेने की तरफ है। मैंने "किसी हद तक" इसलिए कहा है क्योंकि ये साथी आम तौर पर मजदूरों, किसानों और सैनिकों को उस तरह हिकारत की नजर से नहीं देखते अथवा अपने आपको आम जनता से उस तरह अलग-थलग नहीं कर लेते जिस तरह क्वो-मिन्ताङ करती है, लेकिन फिर भी उनमें यह प्रवृत्ति अवश्य मौजूद है। जब तक यह बुनियादी समस्या हल नहीं हो जाती, तब तक बहुत सी अन्य समस्याओं को भी आसानी से हल नहीं किया जा सकेगा। मिसाल के लिए कला-साहित्य जगत में संकीर्णतावाद को ही लीजिए। यह भी एक उसूली सवाल है, लेकिन संकीर्णतावाद का उन्मूलन केवल ये नारे लगाकर और उन्हें सच्चे रूप से कार्यान्वित करके ही किया जा सकता है – "मजदूरों और किसानों के लिए!", "आठवीं राह सेना और नई चौथी सेना के लिए!" तथा "जनता के बीच जाओ!" अन्यथा संकीर्णतावाद की समस्या कभी हल नहीं की जा सकेगी। लू शुन ने एक बार कहा था :

समान उद्देश्य एक संयुक्त मोर्चे की पूर्वशर्त है।...इस तथ्य से कि हमारा मोर्चा अभी एक संयुक्त मोर्चा नहीं बन सका, यह जाहिर होता है कि हम अपने उद्देश्यों का एकीकरण नहीं कर पाए, तथा कुछ लोग केवल छोटे-छोटे ग्रुपों के लिए अथवा वस्तुतः केवल अपने ही लिए काम कर रहे हैं। अगर हम सब लोगों का उद्देश्य मजदूरों और किसानों के विशाल जन-समुदाय की सेवा करना हो जाए, तो हमारा मोर्चा निस्सन्देह एक संयुक्त मोर्चा बन जाएगा।[४]

यह समस्या उस जमाने में शांघाई में मौजूद थी, अब यह छुङकिङ में भी मौजूद है। ऐसे स्थानों में इस समस्या को मुकम्मिल तौर पर हल करना बहुत मुश्किल है, क्योंकि वहां के शासक क्रान्तिकारी लेखकों और कलाकारों का दमन करते हैं, उन्हें मजदूरों, किसानों और सैनिकों के जन-समुदाय में जाने की आजादी नहीं देते। हमारे यहां परिस्थिति बिलकुल अलग है। हम क्रान्तिकारी लेखकों और कलाकारों को प्रोत्साहन देते हैं कि वे सक्रिय रूप से मजदूरों, किसानों और सैनिकों के साथ सम्पर्क कायम करें, उन्हें पूरी आजादी देते हैं कि वे आम जनता के बीच जाएं तथा सच्चे अर्थों में एक क्रान्तिकारी कला-साहित्य का सृजन करें। इसलिए हमारे यहां यह समस्या हल होने के निकट पहुंच चुकी है। लेकिन हल होने के निकट पहुंचने का मतलब यह हरगिज नहीं कि वह पूर्ण रूप से और मुकम्मिल तौर पर हल हो चुकी है। हमें मार्क्सवाद का अध्ययन और समाज का अध्ययन करना चाहिए, जैसा कि हम कहते आए हैं, हमारा उद्देश्य इस समस्या को पूर्ण रूप से और मुकम्मिल तौर पर हल करना है।

मार्क्सवाद से हमारा तात्पर्य एक ऐसे जीवन्त मार्क्सवाद से है जो आम जनता के जीवन में और उसके संघर्षों में एक पुरअसर भूमिका अदा करता हो, केवल कथनी में मौजूद मार्क्सवाद से नहीं। अगर कथनी में मौजूद मार्क्सवाद को वास्तविक जीवन के मार्क्सवाद में बदल दिया जाए, तो संकीर्णतावाद नहीं रहेगा। इससे न सिर्फ संकीर्णतावाद की समस्या हल हो जाएगी, बल्कि बहुत सी अन्य समस्याएं भी हल हो जाएंगी।

२

किसकी सेवा की जाए, यह समस्या हल कर लेने के बाद, दूसरी समस्या यह आती है कि कैसे सेवा की जाए। हमारे कुछ साथियों के शब्दों में : क्या हमें स्तर उन्नत करने के कार्य में लग जाना चाहिए अथवा लोक-प्रचलित करने के कार्य में लग जाना चाहिए?

अतीत काल में कुछ साथियों ने लोक-प्रचलित करने के कार्य के महत्व को किसी सीमा तक, अथवा एक गम्भीर सीमा तक कम करके आंका अथवा नजरअन्दाज किया, तथा स्तर उन्नत करने के कार्य पर जरूरत से ज्यादा जोर दे डाला। स्तर उन्नत करने के कार्य पर जोर अवश्य देना चाहिए, लेकिन केवल एकतरफा तौर पर और अलग-थलग रूप से ऐसा करना, जरूरत से ज्यादा मात्रा में ऐसा करना, गलत होगा। इस सिलसिले में "किसके लिए?" की समस्या को स्पष्ट रूप से हल न किया जाना भी, जिसकी मैंने ऊपर चर्चा की है, अभिव्यक्त हुआ है। चूंकि ये साथी "किसके लिए?" की समस्या का स्पष्ट हल नहीं निकाल पाते, इसलिए

उनके पास लोक-प्रचलित करने और स्तर उन्नत करने की बात को परखने के लिए कोई सही किस्म की कसौटी नहीं होती, तथा दोनों के बीच के सही सम्बन्धों का पता लगाने की तो उनमें इससे भी कम सामर्थ्य होती है। चूंकि हमारा कला-साहित्य बुनियादी तौर पर मजदूरों, किसानों और सैनिकों के लिए है, इसलिए लोक-प्रचलित करने का मतलब होता है मजदूरों, किसानों और सैनिकों में लोक-प्रचलित करना, तथा स्तर उन्नत करने का मतलब होता है उनके वर्तमान स्तर से आगे की ओर बढ़ना। हमें उनके बीच कौन सी चीजों को लोक-प्रचलित करना चाहिए? क्या हमें ऐसी चीजों को लोक-प्रचलित करना चाहिए जिनकी जरूरत सामन्ती जमींदार वर्ग को होती है और जिन्हें यह वर्ग आसानी से स्वीकार कर लेता है? क्या हमें ऐसी चीजों को लोक-प्रचलित करना चाहिए जिनकी जरूरत पूंजीपति वर्ग को होती है और जिन्हें यह वर्ग आसानी से स्वीकार कर लेता है? क्या हमें ऐसी चीजों को लोक-प्रचलित करना चाहिए जिनकी जरूरत निम्न-पूंजीपति वर्ग के बुद्धिजीवियों को होती है और जिन्हें ये लोग आसानी से स्वीकार कर लेते हैं? नहीं, इनमें से किसी भी चीज से हमारा काम नहीं चलेगा। हमें केवल ऐसी ही चीजों को लोक-प्रचलित करना चाहिए जिनकी जरूरत मजदूरों, किसानों और सैनिकों को होती है और जिन्हें वे आसानी से स्वीकार कर लेते हैं। परिणामस्वरूप, मजदूरों, किसानों और सैनिकों को शिक्षित करने के कार्य से पहले हमारे सामने इन लोगों से सीखने का कार्य मौजूद है। यह बात स्तर उन्नत करने के बारे में और भी अधिक लागू होती है। स्तर उन्नत करने के लिए एक आधार होना चाहिए। मिसाल के लिए पानी की एक बाल्टी को ही लीजिए;

उसे अगर जमीन से नहीं उठाया जाता तो क्या उसे वायुमंडल से उठाया जाता है? इसी तरह आखिर कला-साहित्य को किस आधार से उन्नत किया जाना चाहिए? क्या सामन्ती वर्ग के आधार से? क्या पूंजीपति वर्ग के आधार से? क्या निम्न-पूंजीपति वर्ग के बुद्धिजीवियों के आधार से? नहीं, इनमें से किसी भी आधार से नहीं, उसे केवल मजदूरों, किसानों और सैनिकों के जन-समुदाय के आधार से ही उन्नत किया जाना चाहिए। और न इसका मतलब यह होता है कि मजदूरों, किसानों और सैनिकों को ऊंचा उठाकर सामन्ती वर्ग, पूंजीपति वर्ग अथवा निम्न-पूंजीपति वर्ग के बुद्धिजीवियों के "उन्नत स्तर" तक पहुंचा दिया जाए; इसका मतलब यह है कि कला-साहित्य के स्तर को उसी दिशा में उन्नत किया जाए जिस दिशा में मजदूर, किसान और सैनिक खुद आगे बढ़ रहे हों, एक ऐसी दिशा जिसमें सर्वहारा वर्ग आगे बढ़ रहा है। यहां मजदूरों, किसानों और सैनिकों से सीखने का कार्य फिर हमारे सामने आ जाता है। केवल मजदूरों, किसानों और सैनिकों से आरम्भ करके ही हम लोक-प्रचलित करने और स्तर उन्नत करने के कार्य को सही रूप में समझ सकते हैं तथा इन दोनों के बीच के सही सम्बन्धों का पता लगा सकते हैं।

सभी किस्म के कला-साहित्य का स्रोत आखिर क्या है? विचारधारात्मक रूप में साहित्यिक रचनाएं और कलाकृतियां मनुष्य के मस्तिष्क पर किसी किस्म के सामाजिक जीवन के प्रतिबिम्बों की उपज होती हैं। क्रान्तिकारी कला-साहित्य क्रान्तिकारी लेखकों और कलाकारों के मस्तिष्क पर पड़ने वाले जन-जीवन के प्रतिबिम्बों की उपज होता है। जनता का जीवन वस्तुतः साहित्य और कला

के लिए कच्चे माल की खान ही होता है, एक ऐसा कच्चा माल जो अपने स्वाभाविक रूप में होता है, एक ऐसा कच्चा माल जो अनगढ़ होते हुए भी अत्यन्त सजीव, समृद्ध और मौलिक होता है ; इसके साथ तुलना करने पर समस्त कला-साहित्य बिलकुल फीका जान पड़ता है ; यह कला-साहित्य का एक अनन्त स्रोत है, उसका एकमात्र स्रोत है। यह कच्चा माल उसका एकमात्र स्रोत इसलिए है क्योंकि उसका केवल यही स्रोत हो सकता है, कोई भी अन्य स्रोत नहीं हो सकता। कुछ लोग पूछेंगे, क्या किताबें, पुराने जमाने की और विदेशों की साहित्यिक रचनाएं व कलाकृतियां उसका एक अन्य स्रोत नहीं हैं? वास्तव में, अतीत काल की साहित्यिक रचनाएं और कलाकृतियां एक स्रोत न होकर महज एक धारा हैं, उनका सृजन हमारे पूर्ववर्ती लोगों और विदेशियों ने अपने समय की और अपने स्थान की जनता के जीवन में प्राप्त किए गए साहित्यिक और कलात्मक कच्चे माल के आधार पर किया था। हमें साहित्यिक और कलात्मक विरासत की तमाम श्रेष्ठ चीजों को अपना लेना चाहिए, आलोचनात्मक रूप से उसकी तमाम लाभदायक चीजों को आत्मसात कर लेना चाहिए और जब हम अपने समय और अपने स्थान की जनता के जीवन में मौजूद साहित्यिक और कलात्मक कच्चे माल से अपनी कृतियों का सृजन कर रहे हों, उस समय उसे एक उदाहरण के तौर पर इस्तेमाल करना चाहिए। इस प्रकार के उदाहरण के होने या न होने में बड़ा फर्क है, एक ऐसा फर्क जो अपरिष्कृत और परिष्कृत कृतियों के बीच होता है, अनगढ़ और सुगढ़ कृतियों के बीच होता है, निम्न स्तर और उन्नत स्तर की कृतियों के बीच होता है, तथा धीमी रफ्तार और तेज रफ्तार

से सृजन की जाने वाली कृतियों के बीच होता है। इसलिए हमें किसी भी हालत में अपने पूर्ववर्ती लोगों और विदेशियों की विरासत को हरगिज ठुकराना नहीं चाहिए अथवा उसे उदाहरण के रूप में इस्तेमाल करने से हरगिज इनकार नहीं करना चाहिए, चाहे वे कृतियां सामन्ती वर्ग अथवा पूंजीपति वर्ग की ही क्यों न हों। लेकिन विरासत को अपनाने और उसे उदाहरण के रूप में इस्तेमाल करने के कार्य को अपने खुद के सृजन-कार्य की जगह नहीं रख देना चाहिए, ऐसा हरगिज नहीं हो सकता। हमारे पूर्ववर्ती लोगों और विदेशियों की कृतियों का आलोचनात्मक विवेचन किए बिना उन्हें अपनी कृतियों में रोप देना अथवा उनका अनुकरण करना कला-साहित्य के क्षेत्र में एक अत्यन्त असृजनशील और हानिकारक कठमुल्लावाद है। चीन के क्रान्तिकारी लेखकों व कलाकारों को, होनहार लेखकों व कलाकारों को, आम जनता के बीच जाना चाहिए ; उन्हें लम्बे समय के लिए बिना किसी शर्त के दिलोजान से मजदूरों, किसानों और सैनिकों के जन-समुदाय के बीच जाना चाहिए, संघर्ष की ज्वालाओं में कूद पड़ना चाहिए, अपने एकमात्र स्रोत के पास, सबसे व्यापक और सबसे समृद्ध स्रोत के पास जाना चाहिए, ताकि वे सभी प्रकार के लोगों, सभी वर्गों, सभी प्रकार के जन-समुदायों, जीवन और संघर्ष के सभी सजीव रूपों, तथा साहित्य व कला के समस्त कच्चे माल का निरीक्षण कर सकें, उन्हें अनुभव कर सकें, उनका अध्ययन कर सकें और उनका विश्लेषण कर सकें। सिर्फ तभी वे सृजन-कार्य आरम्भ कर सकेंगे। अन्यथा आपको अपनी रचनाओं के लिए कोई भी सामग्री नहीं मिल पाएगी तथा आप महज एक नकली लेखक या एक नकली कलाकार बन जाएंगे, एक ऐसा लेखक

या कलाकार जिसके बारे में लू शुन ने अपनी वसीयत में अपने बेटे को आगाह कर दिया था कि वह हरगिज ऐसा न बने।[५]

हालांकि मनुष्य का सामाजिक जीवन ही साहित्य व कला का एकमात्र स्रोत होता है तथा उसकी विषय-वस्तु कला-साहित्य के मुकाबले अतुलनीय रूप से अधिक सजीव और समृद्ध होती है, फिर भी लोग केवल जीवन को देखकर ही सन्तुष्ट नहीं हो सकते बल्कि साहित्य और कला की मांग भी करते हैं। ऐसा क्यों होता है ? इसकी वजह यह है कि यद्यपि ये दोनों ही सुन्दर होते हैं, तथापि साहित्यिक रचनाओं और कलाकृतियों में प्रतिबिम्बित होने वाला मानव जीवन रोजमर्रा के वास्तविक जीवन से अधिक ऊंचे धरातल पर, अधिक तीव्र, अधिक केन्द्रित, अधिक विशिष्टतापूर्ण, आदर्श के अधिक निकट तथा इसलिए कहीं अधिक व्यापक प्रभाव वाला हो सकता है और उसे ऐसा होना भी चाहिए। क्रान्तिकारी कला-साहित्य को चाहिए कि वह वास्तविक जीवन के आधार पर विभिन्न प्रकार के पात्रों की सृष्टि करे तथा इतिहास को आगे बढ़ाने में आम जनता की मदद करे। मिसाल के लिए, एक तरफ भूख, ठण्ड और उत्पीड़न के कष्ट मौजूद हैं तथा दूसरी तरफ मनुष्य द्वारा मनुष्य के शोषण और उत्पीड़न का अस्तित्व भी मौजूद है। ये बातें हर जगह मौजूद हैं और लोग इन्हें एक मामूली सी बात समझते हैं। लेखक और कलाकार इस प्रकार की रोजमर्रा की घटनाओं का केन्द्रीकरण करते हैं, उनके बीच के अन्तरविरोधों और संघर्षों को मूर्त रूप देते हैं तथा ऐसी साहित्यिक रचनाओं और कलाकृतियों का सृजन करते हैं जो जनता को जागृत करती हैं, उसमें उत्साह भर देती हैं तथा अपने आसपास के वातावरण का रूपान्तर कर देने के हेतु

उसे एकताबद्ध हो जाने और संघर्ष करने के लिए प्रेरित करती हैं। इस प्रकार के कला-साहित्य के बिना हमारा यह कार्य पूरा नहीं हो सकता, अथवा कम से कम इतने ज्यादा कारगर रूप से और इतनी तेजी से पूरा नहीं हो सकता।

कला-साहित्य के कार्य में, लोक-प्रचलित करने और स्तर उन्नत करने का तात्पर्य क्या होता है ? इन दोनों कार्यों के बीच क्या सम्बन्ध है ? लोक-प्रचलित कृतियां सरल और सुबोध होती हैं और इसलिए आज उन्हें व्यापक जनता अपेक्षाकृत अधिक आसानी के साथ और तेजी से अपना लेती है। उन्नत स्तर की रचनाएं अपेक्षाकृत अधिक परिष्कृत होती हैं, इसलिए इनका सृजन करना ज्यादा कठिन है तथा वे आम तौर से इस समय व्यापक जनता में ज्यादा आसानी और तेजी के साथ लोक-प्रचलित नहीं हो पातीं। मजदूरों, किसानों और सैनिकों के सामने यह समस्या है : वे लोग इस समय दुश्मन के खिलाफ एक निर्मम और रक्तपातपूर्ण संघर्ष में जुटे हुए हैं, लेकिन सामन्ती वर्ग और पूंजीपति वर्ग के दीर्घकालीन शासन के कारण अनपढ़ और अशिक्षित रह गए हैं, इसलिए वे बड़ी उत्सुकता के साथ व्यापक पैमाने पर एक जागरण आन्दोलन की मांग कर रहे हैं, तथा ऐसी जानकारी और साहित्यिक रचनाओं व कलाकृतियों की मांग कर रहे हैं जो उनकी फौरी जरूरतों को पूरा कर सकें और जिन्हें वे आसानी से हृदयंगम कर सकें, ताकि उनका संघर्ष करने का उत्साह और विजय प्राप्त करने का विश्वास बढ़ सके, उनकी एकता मजबूत हो सके तथा वे एकदिल व एकजान होकर दुश्मन से लोहा ले सकें। उनकी मौलिक आवश्यकता "रेशमी कपड़े पर अधिक फूल" नहीं बल्कि "बरफीले मौसम में काम आने वाला ईंधन" है।

इसलिए वर्तमान परिस्थिति में लोक-प्रचलित करने का काम अधिक आवश्यक काम है। लोक-प्रचलित करने के काम के महत्व को कम करके आंकना अथवा नजरअन्दाज करना गलत होगा।

फिर भी, लोक-प्रचलित करने के काम और स्तर उन्नत करने के काम के बीच कोई अपरिवर्तनीय विभाजन-रेखा नहीं खींची जा सकती। हालत सिर्फ यह नहीं है कि उन्नत स्तर की कुछ रचनाओं को आज भी लोक-प्रचलित किया जा सकता है, बल्कि यह भी है कि व्यापक जनता का सांस्कृतिक स्तर लगातार उन्नत होता जा रहा है। यदि लोक-प्रचलित करने के काम का स्तर हमेशा एक जैसा बना रहा, तथा महीने के महीने और साल के साल एक जैसी सामग्री को सप्लाई किया गया, हमेशा उसी "नन्हें ग्वाले"[६] और उसी "आदमी, हाथ, मुंह, चाकू, गाय, बकरी"[७] वाली सामग्री को ही सप्लाई किया गया, तो क्या शिक्षा देने वाले और शिक्षा प्राप्त करने वाले की यह हालत नहीं होगी कि एक के पास छै हैं और दूसरे के पास आधा दर्जन? इस प्रकार के लोक-प्रचलित करने के काम से भला क्या फायदा होगा? जनता यह मांग करती है कि लोक-प्रचलित किया जाए, और इसके बाद वह यह भी मांग करती है कि स्तर उन्नत किया जाए; वह हर महीने और हर साल स्तर उन्नत करते जाने की मांग करती है। यहां लोक-प्रचलित करने का मतलब है जनता के लिए लोक-प्रचलित करना, तथा स्तर उन्नत करने का मतलब है जनता के लिए स्तर उन्नत करना। और इस प्रकार का स्तर उन्नत करने का काम वायुमण्डल में अथवा बन्द दरवाजों के पीछे से नहीं होता, बल्कि लोक-प्रचलित करने के काम पर ही आधारित होता है। इस प्रकार के स्तर उन्नत करने के काम का

निर्णय लोक-प्रचलित करने का काम ही करता है और साथ ही यह लोक-प्रचलित करने के काम का पथप्रदर्शन भी करता है। समूचे चीन में क्रान्ति का विकास और क्रान्तिकारी संस्कृति का विकास असन्तुलित रूप से हो रहा है और उनका प्रसार कदम-ब-कदम हो रहा है। किसी-किसी क्षेत्र में तो लोक-प्रचलित करने का काम पूरा हो गया है और लोक-प्रचलित करने के आधार पर स्तर उन्नत करने का काम हो रहा है, जबकि बाकी क्षेत्रों में लोक-प्रचलित करने का काम अभी शुरू ही नहीं हुआ। इसलिए किसी एक क्षेत्र में लोक-प्रचलित करने के आधार पर स्तर उन्नत करने के काम में प्राप्त किए गए श्रेष्ठ अनुभवों को दूसरे क्षेत्रों में भी लागू किया जा सकता है तथा वे वहां लोक-प्रचलित करने और स्तर उन्नत करने के काम का पथप्रदर्शन करने में सहायक हो सकते हैं और इस प्रकार वे हमें बहुत से टेढ़ेमेढ़े रास्तों में भटकने से बचा सकते हैं। अन्तर-राष्ट्रीय पैमाने पर, दूसरे देशों के श्रेष्ठ अनुभव, और खास तौर से सोवियत संघ के अनुभव भी हमारा पथप्रदर्शन करने में सहायक हो सकते हैं। इसलिए हमारे यहां स्तर उन्नत करने का काम लोक-प्रचलित करने के काम पर ही आधारित है, जबकि लोक-प्रचलित करने के काम का पथप्रदर्शन स्तर उन्नत करने का काम ही करता है। ठीक यही वजह है कि लोक-प्रचलित करने के जिस काम की हम चर्चा कर रहे हैं वह स्तर उन्नत करने के काम में बाधक न होकर स्तर उन्नत करने के उस काम का आधार बन जाता है जिसे हम आजकल एक सीमित पैमाने पर कर रहे हैं, तथा वह भविष्य में और अधिक व्यापक पैमाने पर स्तर उन्नत करने के लिए भी आवश्यक स्थितियां तैयार कर देता है।

स्तर उन्नत करने के एक ऐसे काम के अलावा जो आम जनता की जरूरतों को प्रत्यक्ष रूप से पूरा करता है, स्तर उन्नत करने का एक ऐसा काम भी होता है जो आम जनता की जरूरतों को अप्रत्यक्ष रूप से पूरा कर सकता है, अर्थात स्तर उन्नत करने का एक ऐसा काम जिसकी हमारे कार्यकर्ताओं को आवश्यकता होती है। कार्यकर्ता लोग आम जनता के आगे बढ़े हुए तत्व होते हैं और आम तौर पर जनता से ज्यादा शिक्षित होते हैं; उनके लिए अपेक्षाकृत उन्नत स्तर का कला-साहित्य निहायत जरूरी है। इस बात को नजरअन्दाज करना गलत होगा। जो कुछ कार्यकर्ताओं के लिए किया जाता है वह भी पूरे तौर पर जनता के लिए ही होता है, क्योंकि केवल कार्यकर्ताओं के जरिए ही हम आम जनता को शिक्षित कर सकते हैं और उसका पथप्रदर्शन कर सकते हैं। अगर हम इस मकसद के खिलाफ काम करेंगे, अगर हम जो कुछ अपने कार्यकर्ताओं को देंगे उससे उन्हें आम जनता को शिक्षित करने और उसका पथप्रदर्शन करने में सहायता नहीं मिलेगी, तो स्तर उन्नत करने का हमारा काम बगैर निशाना साधे ही तीर चलाने के समान होगा तथा विशाल जन-समुदाय की सेवा करने के बुनियादी उसूल से विमुख हो जाएगा।

सारांश रूप में : क्रान्तिकारी लेखक व कलाकार अपने सृजनात्मक श्रम से जनता के जीवन में मौजूद साहित्यिक व कलात्मक कच्चे माल को विचारधारात्मक रूप में एक ऐसा कला-साहित्य बना देते हैं जो विशाल जन-समुदाय की सेवा करता है। इसमें उन्नत स्तर वाला वह कला-साहित्य भी शामिल है, जिसे प्रारम्भिक स्तर के कला-साहित्य के आधार पर विकसित किया जाता है तथा जिसकी जन-समुदाय के उस भाग को जरूरत होती है जिसका स्तर उन्नत

हो चुका हो, अथवा सबसे पहले जन-समुदाय के कार्यकर्ताओं को जरूरत होती है। इसमें प्रारम्भिक स्तर वाला वह कला-साहित्य भी शामिल है, जिसका पथप्रदर्शन उल्टे उन्नत स्तर वाला कला-साहित्य करता है तथा जिसकी इस समय आम जनता की भारी बहुसंख्या को फौरी जरूरत है। हमारा समूचा कला-साहित्य, चाहे उसका स्तर उन्नत हो अथवा प्रारम्भिक, विशाल जन-समुदाय के लिए ही है तथा सबसे पहले मजदूरों, किसानों और सैनिकों के लिए ही है; इसका सृजन मजदूरों, किसानों और सैनिकों के लिए किया जाता है तथा यह उन्हीं के इस्तेमाल के लिए होता है।

स्तर उन्नत करने और लोक-प्रचलित करने के बीच के सम्बन्धों की समस्या को हल कर चुकने के बाद अब हम विशेषज्ञों और लोक-प्रचलित करने का काम करने वाले लोगों के बीच के सम्बन्धों की समस्या को भी हल कर सकते हैं। हमारे विशेषज्ञ न सिर्फ कार्यकर्ताओं के लिए हैं, बल्कि मुख्यतया आम जनता के लिए ही हैं। हमारे साहित्य-विशेषज्ञों को चाहिए कि वे आम जनता के दीवार-पत्रों तथा सेना और देहातों में लिखी जाने वाली रिपोर्ताजों की ओर ध्यान दें। हमारे नाटक-विशेषज्ञों को चाहिए कि वे सेना और देहातों की छोटी-छोटी नाटक-मण्डलियों की ओर ध्यान दें। हमारे संगीत-विशेषज्ञों को चाहिए कि वे आम जनता के गीतों की ओर ध्यान दें। हमारे ललित कला विशेषज्ञों को चाहिए कि वे आम जनता की ललित कलाओं की ओर ध्यान दें। इन सभी साथियों को चाहिए कि वे कला-साहित्य को आम जनता में लोक-प्रचलित करने के काम में जुटे हुए साथियों के साथ घनिष्ठ सम्पर्क कायम करें। उन्हें चाहिए कि वे एक तरफ तो लोक-प्रचलित करने का काम करने

वाले लोगों की मदद करें और उनका पथप्रदर्शन करें, तथा दूसरी तरफ इन साथियों से सीखें तथा इनके जरिए अपना खजाना भरने और अपने आपको समृद्ध बनाने के लिए आम जनता से पोषक तत्व प्राप्त कर लें, ताकि उनकी विशेषताएं एक ऐसा "हवाई किला" न बन जाएं जो आम जनता और वास्तविकता से अपना नाता तोड़ बैठा है तथा विषय-वस्तु अथवा जीवन से शून्य बन बैठा है। हमें विशेषज्ञों का सम्मान करना चाहिए, क्योंकि वे लोग हमारे कार्य के लिए बड़े मूल्यवान साबित होते हैं। लेकिन हमें उन्हें यह बता देना चाहिए कि कोई भी क्रान्तिकारी लेखक अथवा कलाकार सिर्फ तभी उपयोगी काम कर सकता है जब वह आम जनता से घनिष्ठ सम्बन्ध कायम कर लेता है, उसके विचारों और उसकी भावनाओं को वाणी प्रदान करता है तथा उसका एक वफादार प्रवक्ता बनकर उसकी सेवा करता है। केवल आम जनता का प्रवक्ता बनकर ही वह उसको शिक्षित कर सकता है तथा केवल आम जनता का शिष्य बनकर ही वह उसका शिक्षक बन सकता है। अगर वह अपने आपको आम जनता का मालिक समझेगा, एक ऐसा रईसजादा समझेगा जो "नीचे के तबकों" पर सवारी गांठता फिरता है, तो वह चाहे कितना ही प्रतिभाशाली क्यों न हो, आम जनता को उसकी जरूरत नहीं रहेगी और उसके काम का कोई भविष्य नहीं होगा।

क्या हमारा यह रुख एक उपयोगितावादी रुख है? भौतिकवादी लोग सामान्यतया उपयोगितावाद का विरोध नहीं करते बल्कि सामन्ती वर्ग, पूंजीपति वर्ग और निम्न-पूंजीपति वर्ग के उपयोगितावाद का विरोध करते हैं; वे लोग उन पाखण्डियों का विरोध करते हैं जो अपनी कथनी में तो उपयोगितावाद का विरोध

करते हैं, लेकिन अपनी करनी में एक अत्यन्त स्वार्थी और एक अत्यन्त अदूरदर्शी उपयोगितावाद को अपना लेते हैं। दुनिया में कोई भी "वाद" ऐसा नहीं होता जो उपयोगितावादी विचार से परे हो; वर्ग-समाज में या तो इस वर्ग का उपयोगितावाद होता है, या उस वर्ग का। हम लोग सर्वहारा क्रान्तिकारी उपयोगितावादी हैं तथा हमारा प्रस्थान-बिन्दु उस व्यापकतम आम जनता के वर्तमान और भावी हितों की एकता है जिसकी संख्या हमारी कुल आबादी के ९० प्रतिशत से ज्यादा है; इसलिए हम ऐसे क्रान्तिकारी उपयोगितावादी हैं जो व्यापकतम और अत्यन्त दीर्घकालीन उद्देश्यों के लिए काम कर रहे हैं, ऐसे संकीर्ण उपयोगितावादी नहीं जो केवल आंशिक और फौरी उद्देश्यों को ही देखते हों। मिसाल के लिए, अगर आप अपनी खुद की अथवा एक छोटे से गुट की उपयोगिता के लिए एक ऐसी रचना को बाजार पर थोप देंगे और आम जनता में इसका प्रचार करेंगे जो सिर्फ अल्पसंख्यक लोगों को ही पसन्द हो तथा जो बहुसंख्यक लोगों के लिए अनावश्यक हो अथवा हानिकारक भी हो, और साथ ही आप आम जनता को उसके उपयोगितावाद के लिए कोसेंगे, तो आप न सिर्फ आम जनता को अपमानित करेंगे बल्कि अपने आत्मज्ञान की कमी को भी जाहिर कर देंगे। कोई भी वस्तु सिर्फ तभी अच्छी कहलाएगी जब वह विशाल जन-समुदाय को सचमुच फायदा पहुंचाती है। आपकी रचना "वसन्त में हिमछटा" जैसी श्रेष्ठ हो सकती है, लेकिन अगर वह फिलहाल सिर्फ अल्पसंख्यक लोगों की ही जरूरतें पूरी करती हो तथा आम जनता अब भी "कंगालों का गीत"[८] ही गा रही हो, तो आपको उसका स्तर उन्नत करने के बदले महज आम जनता को कोसने से कोई फायदा नहीं

होगा। अब सवाल यह है कि "वसन्त में हिमछटा" और "कंगालों का गीत" के बीच, स्तर उन्नत करने और लोक-प्रचलित करने के बीच, एकता कैसे कायम की जाए। इस प्रकार की एकता के बिना किसी भी विशेषज्ञ की सर्वोत्कृष्ट कला भी एक अत्यन्त संकीर्ण उपयोगितावादी कला बने बिना नहीं रह सकती; आप इस प्रकार की कला को चाहे "विशुद्ध और ऊंचे स्तर की" बताते फिरें, लेकिन यह आपका खुद का दिया गया नाम है तथा आम जनता इसका अनुमोदन नहीं करेगी।

जहां एक बार हमने बुनियादी उसूल की समस्याओं को, यानी मजदूरों, किसानों व सैनिकों की सेवा करने की समस्या को और "उनकी सेवा कैसे की जाए" की समस्या को हल कर लिया, तो ऐसी ही अन्य समस्याओं को, जैसे जीवन के उजले पक्ष के बारे में लिखा जाए अथवा स्याह पक्ष के बारे में, तथा एकता की समस्या को भी हल किया जा सकेगा। अगर हम सब लोग इस बुनियादी उसूल के बारे में एकराय हो जाएं, तो कला-साहित्य के क्षेत्र में काम करने वाले हमारे सभी कार्यकर्ताओं, कला-साहित्य के सभी स्कूलों, प्रकाशनों और संगठनों को, तथा हमारी समस्त साहित्यिक व कलात्मक गतिविधियों को इस उसूल का पालन करना चाहिए। इस उसूल से भटकना गलत होगा तथा इससे मेल न खाने वाली हर बात को समुचित रूप से सुधार लेना चाहिए।

३

चूंकि हमारा कला-साहित्य विशाल जन-समुदाय के लिए है, इसलिए हम पार्टी के भीतरी सम्बन्धों की समस्या पर, यानी पार्टी द्वारा कला-साहित्य के क्षेत्र में किए जाने वाले काम और पार्टी द्वारा किए जाने वाले समूचे काम के बीच के सम्बन्धों की समस्या पर और आगे विचार-विमर्श कर सकते हैं, तथा इसके अलावा पार्टी के बाहरी सम्बन्धों की समस्या, यानी पार्टी द्वारा कला-साहित्य के क्षेत्र में किए जाने वाले काम और गैरपार्टी व्यक्तियों द्वारा इस क्षेत्र में किए जाने वाले काम के बीच के सम्बन्धों की समस्या – कला-साहित्य जगत में संयुक्त मोर्चे की समस्या पर भी विचार-विमर्श कर सकते हैं।

आइए, अब हम पहली समस्या पर विचार करें। आज की दुनिया में समूची संस्कृति और समस्त कला-साहित्य निश्चित वर्गों के ही होते हैं, तथा उन्हें निश्चित राजनीतिक कार्यदिशाओं के अनुरूप ढाला जाता है। वास्तव में "कला कला के लिए" के सिद्धान्त को मानने वाली कला, वर्गों से परे रहने वाली कला, तथा राजनीति के समानान्तर रहने अथवा उससे स्वतंत्र रहने वाली कला नाम की कोई चीज नहीं होती। सर्वहारा वर्ग का कला-साहित्य समूचे सर्वहारा क्रान्तिकारी कार्य का एक अंग है; लेनिन के शब्दों में, यह समूची क्रान्तिकारी मशीन के दांते और पेंच[६] के समान है। इसलिए कला-साहित्य के क्षेत्र में किए जाने वाले पार्टी के कार्य का पार्टी के समूचे क्रान्तिकारी कार्य में एक निश्चित और सुनिर्धारित स्थान होता है तथा वह किसी विशेष क्रान्तिकारी काल में पार्टी द्वारा निर्धारित किए जाने वाले क्रान्तिकारी कार्यों के ही अधीन होता है। इस व्यवस्था का विरोध करने के परिणामस्वरूप अनिवार्य रूप से द्विवाद या बहुवाद पैदा हो जाएगा, तथा सार रूप में इसका मतलब होगा "राजनीति मार्क्सवादी, कला पूंजीवादी", जैसा कि

त्रात्सकी ने किया था। हम कला-साहित्य के महत्व को जरूरत से ज्यादा जोर देकर गलत हद तक पहुंचाने का पक्षपोषण नहीं करते, लेकिन इसके महत्व को कम आंकने का पक्षपोषण भी नहीं करते। साहित्य और कला राजनीति के मातहत होते हैं, लेकिन वे खुद भी राजनीति पर अपना महान प्रभाव डालते हैं। क्रान्तिकारी साहित्य और कला समूचे क्रान्तिकारी कार्य का एक अंग हैं, ये दोनों इस कार्य के दांते और पेंच हैं, तथा अन्य अधिक महत्वपूर्ण पुर्जों की तुलना में ये स्वभावत: कम आवश्यक, गौण अथवा दूसरा स्थान लेते हैं, मगर ये समूची मशीन के अनिवार्य दांते और पेंच हैं तथा समूचे क्रान्तिकारी कार्य के अनिवार्य अंग हैं। अगर हमारे पास सबसे सामान्य और सबसे साधारण कला-साहित्य भी मौजूद न होता, तो हम क्रान्तिकारी आन्दोलन को न चला पाते और विजय प्राप्त न कर पाते। इस बात को न समझना गलत होगा। यही नहीं, जब हम यह कहते हैं कि कला-साहित्य राजनीति के मातहत है, तो यहां हमारा मतलब वर्ग-राजनीति से होता है, आम जनता की राजनीति से होता है, चन्द तथाकथित राजनीतिज्ञों की राजनीति से नहीं। राजनीति, चाहे वह क्रान्तिकारी हो अथवा प्रतिक्रान्तिकारी, विभिन्न वर्गों के बीच का संघर्ष है, सिर्फ कुछ व्यक्तियों की कार्यवाही नहीं। विचारधारा व कला के क्षेत्र में क्रान्तिकारी संघर्ष को राजनीतिक संघर्ष के मातहत होना चाहिए क्योंकि केवल राजनीति के जरिए ही वर्ग विशेष और आम जनता की जरूरतें केन्द्रित रूप से अभिव्यक्त होती हैं। क्रान्तिकारी राजनीतिज्ञ, वे राजनीति-विशेषज्ञ जो क्रान्तिकारी राजनीति के विज्ञान को अथवा उसकी कला को समझते हैं, केवल कोटि-कोटि राजनीतिज्ञों – आम जनता – के नेता हैं। उनका कार्य है राजनीतिज्ञों के इस विशाल जन-समुदाय की राय इकट्ठी करना, उसे व्यवस्थित और परिष्कृत करना तथा इसके बाद उसे आम जनता को वापस लौटा देना, जो उसे अपना लेती है और अपने व्यवहार में उतार लेती है। वे लोग ऐसे रईसाना "राजनीतिज्ञ" नहीं हैं जो बन्द दरवाजों के भीतर काम करते हैं तथा अपने आपको बुद्धिमान समझते हैं और अपने आपको दुनिया में अद्वितीय समझते हैं। यह है सर्वहारा वर्ग के राजनीतिज्ञों और पतनशील पूंजीवादी राजनीतिज्ञों के बीच का उसूली फर्क। ठीक यही वजह है कि हमारे कला-साहित्य के राजनीतिक स्वरूप और यथार्थता के बीच पूर्ण एकता स्थापित हो सकती है। इस बात को न समझना तथा सर्वहारा वर्ग की राजनीति को और इस वर्ग के राजनीतिज्ञों को बाजारू बना देना गलत होगा।

इसके बाद हम कला-साहित्य जगत में संयुक्त मोर्चे के सवाल पर विचार करते हैं। चूंकि कला-साहित्य राजनीति के मातहत होता है और चूंकि आज चीन की राजनीति का पहला बुनियादी सवाल जापान का प्रतिरोध करना है, इसलिए हमारी पार्टी के लेखकों व कलाकारों को चाहिए कि वे सबसे पहले जापान का प्रतिरोध करने के मसले पर तमाम गैरपार्टी लेखकों व कलाकारों के साथ (जिनमें पार्टी के हमदर्दों और निम्न-पूंजीपति वर्ग के लेखकों व कलाकारों से लेकर पूंजीपति वर्ग और जमींदार वर्ग तक के वे तमाम लेखक-कलाकार भी शामिल हैं जो जापान का प्रतिरोध करने का पक्षपोषण करते हैं) एकता कायम कर लें। दूसरे, जनवाद के सवाल पर भी हमें उनके साथ एकता कायम कर लेनी चाहिए। जापान-विरोधी लेखकों व कलाकारों का एक हिस्सा इस सवाल के बारे में हमसे

सहमत नहीं है, इसलिए उनके साथ एकता कायम करने का दायरा अनिवार्य रूप से कुछ छोटा हो जाएगा। तीसरे, कला-साहित्य जगत के अपने विशेष सवालों पर, कला-साहित्य की सृजन-प्रणाली और सृजन-शैली से सम्बन्धित सवालों पर, उनके साथ एकता कायम कर लेनी चाहिए ; यहां फिर एक बार एकता का दायरा और भी अधिक छोटा हो जाएगा, क्योंकि हम लोग समाजवादी यथार्थवाद का पक्षपोषण करते हैं और कुछ लोग इस सिलसिले में हमसे सहमत नहीं हैं। जहां किसी एक मसले पर एकता मौजूद है वहां किसी दूसरे मसले पर संघर्ष होता है, आलोचना होती है। ये मसले अलग-अलग होने के साथ ही एक दूसरे से जुड़े हुए भी हैं, जिसका परिणाम यह हुआ है कि एकता पैदा करने वाले मसलों में भी, जैसे जापान का प्रतिरोध करना, संघर्ष और आलोचना को साथ-साथ चलाया जाता है। संयुक्त मोर्चे में, "केवल एकता ही कायम करना और बिलकुल संघर्ष न करना" अथवा "केवल संघर्ष ही करना और बिलकुल एकता कायम न करना" ये दोनों ही नीतियां गलत हैं, जैसा कि अतीत काल में कुछ साथियों ने दक्षिणपंथी आत्मसमर्पण-वाद और दुमछल्लावाद अथवा "वामपंथी" अलगाववाद और संकीर्णतावाद पर अमल करते समय किया। यह बात जितनी राज-नीति के बारे में सही है उतनी ही कला-साहित्य के बारे में भी।

निम्न-पूंजीपति वर्ग के लेखक और कलाकार चीन के कला-साहित्य जगत के संयुक्त मोर्चे की शक्तियों में से एक महत्वपूर्ण शक्ति हैं। उनके विचारों और उनकी रचनाओं में बहुत सी कमियां हैं, लेकिन तुलनात्मक ढंग से विचार किया जाए तो उनका झुकाव क्रान्ति की तरफ है और वे मेहनतकश जनता के नजदीक हैं। इसलिए

उन्हें अपनी कमियों को दूर करने में मदद देना तथा मेहनतकश जनता की सेवा करने वाले मोर्चे के पक्ष में कर लेना हमारे लिए खास तौर पर एक महत्वपूर्ण कार्य है।

४

कला-साहित्य जगत में साहित्य और कला की समालोचना संघर्ष के प्रमुख तरीकों में से एक है। जैसा कि साथियों ने ठीक ही बताया है, इसको विकसित किया जाना चाहिए और इस बारे में हमारा पिछला कार्य बिलकुल नाकाफी रहा है। कला-साहित्य की समालोचना एक पेचीदा सवाल है, जिसके लिए बहुत अधिक मात्रा में विशेष अध्ययन करने की आवश्यकता होती है। यहां पर मैं केवल समालोचना के मापदण्डों के बुनियादी सवाल की ही चर्चा करूंगा। इसके अलावा कुछ साथियों द्वारा उठाए गए कुछ विशेष प्रश्नों तथा कुछ गलत दृष्टिकोणों पर भी संक्षेप में अपने विचार प्रकट करूंगा।

कला-साहित्य की समालोचना के दो मापदण्ड होते हैं – राज-नीतिक और कलात्मक। राजनीतिक मापदण्ड के अनुसार हर ऐसी चीज एक अच्छी चीज कहलाएगी जो जापान का प्रतिरोध करने के कार्य के लिए और एकता के लिए लाभदायक हो, जो आम जनता को इस बात के लिए प्रोत्साहित करे कि वह एकदिल व एकजान बन जाए, जो प्रतिगमन का विरोध करे और लोगों को प्रगति के रास्ते पर आगे बढ़ाए ; दूसरी तरफ, हर ऐसी चीज एक खराब चीज कहलाएगी जो जापान का प्रतिरोध करने के कार्य के लिए और एकता के लिए नुकसानदेह हो, जो आम जनता के बीच फूट

ओर कलह पैदा करे और प्रगति का विरोध करे तथा लोगों को पीछे की तरफ ढकेले। हम अच्छे और बुरे के बीच कैसे फर्क कर सकते हैं – प्रयोजन (मनोगत इच्छा) द्वारा अथवा परिणाम (सामाजिक व्यवहार) द्वारा? आदर्शवादी लोग प्रयोजन पर जोर देते हैं और परिणाम को नजरअन्दाज कर देते हैं, जबकि यांत्रिक भौतिकवादी लोग परिणाम पर जोर देते हैं और प्रयोजन को नजरअन्दाज कर देते हैं। इन दोनों के विपरीत, हम प्रयोजन और परिणाम की एकता के द्वन्द्वात्मक भौतिकवादी सिद्धान्त के समर्थक हैं। आम जनता की सेवा करने का प्रयोजन आम जनता द्वारा समर्थित होने के परिणाम से अभिन्न रूप से जुड़ा हुआ है, इन दोनों की एकता निहायत जरूरी है। किसी एक व्यक्ति या एक छोटे से गुट की सेवा करने का प्रयोजन कोई अच्छी बात नहीं है, और यह भी कोई अच्छी बात नहीं है कि आम जनता की सेवा करने का प्रयोजन होने पर भी आम जनता द्वारा समर्थित होने और उसे लाभ होने का परिणाम हासिल न हो। किसी लेखक या कलाकार की मनोगत इच्छा की जांच करते वक्त, अर्थात इस बात की जांच करते वक्त कि उसका प्रयोजन सही और अच्छा है या नहीं, हम उसका मूल्यांकन उसकी घोषणाओं के आधार पर नहीं, बल्कि समाज में आम जनता पर उसके कार्यों का (मुख्य रूप से उसकी रचनाओं का) जो असर पड़ता है उसके आधार पर करते हैं। मनोगत इच्छा या प्रयोजन को परखने का मापदण्ड सामाजिक व्यवहार तथा उसका परिणाम ही है। हम कला-साहित्य की समालोचना में संकीर्णतावाद को स्थान नहीं देते और हमें जापान का प्रतिरोध करने के लिए एकता स्थापित करने के आम उसूल पर, ऐसी साहित्यिक रचनाओं व कलाकृतियों को बरदाश्त कर लेना

चाहिए जिनमें विभिन्न प्रकार के राजनीतिक दृष्टिकोण पेश किए गए हों। लेकिन साथ ही साथ अपनी समालोचनाओं में हम उसूली दृष्टिबिन्दु पर मजबूती के साथ जमे रहते हैं तथा हमें ऐसी तमाम साहित्यिक रचनाओं व कलाकृतियों की सख्त आलोचना करनी चाहिए और उनका खण्डन करना चाहिए जो राष्ट्र-विरोधी, विज्ञान-विरोधी, जन-विरोधी और कम्युनिस्ट-विरोधी विचार प्रकट करती हों, क्योंकि इन तथाकथित साहित्यिक रचनाओं व कलाकृतियों का प्रयोजन और परिणाम जापान का प्रतिरोध करने के लिए कायम की जाने वाली एकता की जड़ काटना होता है। कलात्मक मापदण्ड के अनुसार, वे तमाम कृतियां जो अपेक्षाकृत ऊंचे कलात्मक स्तर की होती हैं, श्रेष्ठ या अपेक्षाकृत श्रेष्ठ कहलाती हैं जबकि अपेक्षाकृत निम्न कलात्मक स्तर की कृतियां घटिया या अपेक्षाकृत घटिया कहलाती हैं। निस्सन्देह, इस तरह का फर्क करते समय हमें इन कृतियों से पैदा होने वाले सामाजिक परिणाम पर भी ध्यान रखना चाहिए। शायद ही ऐसा कोई लेखक या कलाकार हो, जो खुद अपनी कृति को सुन्दर न समझता हो, तथा हमारी समालोचना को तमाम किस्म की कलाकृतियों के बीच खुली प्रतियोगिता की इजाजत देनी चाहिए; लेकिन इस बात की भी बहुत जरूरत है कि कला-शास्त्र के मापदण्ड के अनुसार इन कृतियों की सही-सही आलोचना की जाए, ताकि अपेक्षाकृत निम्न स्तर की कला को कदम-ब-कदम ऊंचे स्तर तक उठाया जा सके और जो कला व्यापक जन-समुदाय के संघर्ष की मांगों को पूरा नहीं करती उसे रूपान्तरित करके व्यापक जन-समुदाय के संघर्ष की मांगों को पूरा करने वाली कला बनाया जा सके।

एक राजनीतिक मापदण्ड होता है और दूसरा कलात्मक मापदण्ड;

इन दोनों के बीच क्या सम्बन्ध है ? कला को राजनीति के समकक्ष नहीं रखा जा सकता, और न कलात्मक सृजन व समालोचना की किसी एक पद्धति को ही आम विश्व-दृष्टिकोण के समकक्ष रखा जा सकता है। हम न सिर्फ एक अमूर्त और बिलकुल अपरिवर्तनीय राजनीतिक मापदण्ड के अस्तित्व को मानने से इनकार करते हैं, बल्कि एक अमूर्त और बिलकुल अपरिवर्तनीय कलात्मक मापदण्ड के अस्तित्व को मानने से भी इनकार करते हैं ; सभी वर्ग-समाजों में हर वर्ग के खुद अपने राजनीतिक और कलात्मक मापदण्ड होते हैं। लेकिन सभी वर्ग-समाजों में सभी वर्ग हमेशा राजनीतिक माप-दण्ड को प्रमुख स्थान देते हैं और कलात्मक मापदण्ड को गौण। पूंजीपति वर्ग सर्वहारा वर्ग की साहित्यिक रचनाओं व कलाकृतियों के लिए हमेशा अपने दरवाजे बन्द रखता है, चाहे उनकी कलात्मक प्रतिभा कितनी ही ऊंची क्यों न हो। इसी तरह सर्वहारा वर्ग को भी गुजरे जमाने की साहित्यिक रचनाओं व कलाकृतियों की सबसे पहले इस दृष्टि से जांच करनी चाहिए कि जनता के प्रति उनका रुख क्या है और क्या ऐतिहासिक दृष्टि से उनका कोई प्रगतिशील महत्व है या नहीं, तथा उनके प्रति अपना अलग-अलग रुख निश्चित करना चाहिए। कुछ ऐसी कृतियों में भी, जो राजनीतिक दृष्टि से बिलकुल प्रतिक्रिया-वादी हैं, कुछ न कुछ कलात्मक प्रतिभा हो सकती है। जिन रचनाओं की विषय-वस्तु जितनी ही अधिक प्रतिक्रियावादी होती है और जिनकी कलात्मक प्रतिभा जितनी ही अधिक ऊंची होती है, वे जनता के लिए उतनी ही अधिक जहरीली होती हैं, और इस बात की उतनी ही अधिक आवश्यकता होती है कि उन्हें ठुकरा दिया जाए। अपने ह्रास काल में तमाम शोषक वर्गों के कला-साहित्य की एक

आम विशेषता यह होती है कि उनकी प्रतिक्रियावादी राजनीतिक विषय-वस्तु तथा उनके कलात्मक रूप के बीच अन्तरविरोध पैदा हो जाता है। हम जिस चीज की मांग करते हैं वह है राजनीति और कला की एकता, विषय-वस्तु और रूप की एकता, क्रान्तिकारी राजनीतिक विषय-वस्तु और यथासम्भव अधिक पूर्ण कलात्मक रूप की एकता। वे कलाकृतियां जिनमें कलात्मक प्रतिभा का अभाव होता है शक्तिहीन होती हैं, चाहे वे राजनीतिक दृष्टि से कितनी ही प्रगति-शील क्यों न हों। इसलिए हम ऐसी कलाकृतियों का सृजन करने जिनका राजनीतिक दृष्टिकोण गलत होता है, तथा "पोस्टरबाजी व नारेबाजी जैसी शैली" वाली उन कलाकृतियों का सृजन करने जिनका राजनीतिक दृष्टिकोण तो सही होता है लेकिन जिनमें कलात्मकता का अभाव होता है, इन दोनों ही प्रकार की प्रवृत्तियों का विरोध करते हैं। हमें साहित्य और कला के सवालों के बारे में दोनों मोर्चों पर संघर्ष चलाना चाहिए।

ये दोनों तरह की प्रवृत्तियां बहुत से साथियों के दिमाग में पाई जाती हैं। बहुत से साथियों में कलात्मक तकनीक को नजरअन्दाज कर देने की प्रवृत्ति मौजूद है ; इसलिए कलात्मक स्तर को ऊंचा उठाने की तरफ ध्यान देना जरूरी है। लेकिन मेरे खयाल में, इस समय राजनीतिक पक्ष की समस्या एक ज्यादा बड़ी समस्या है। कुछ साथियों में प्रारम्भिक राजनीतिक ज्ञान का अभाव है और इसलिए तरह-तरह के ऊलजलूल विचार उनके दिमाग में भरे हुए हैं। इस सिलसिले में, येनान की कुछ मिसालें मैं आपके सामने पेश करूंगा।

"मानव-स्वभाव का सिद्धान्त।" क्या मानव-स्वभाव जैसी

कोई चीज होती है? निस्सन्देह, होती है। लेकिन मानव-स्वभाव केवल एक मूर्त वस्तु है, वह कोई अमूर्त वस्तु नहीं है। वर्ग-समाज में मानव-स्वभाव का स्वरूप भी वर्गमूलक ही होता है; वर्गों से परे कोई मानव-स्वभाव नहीं होता। हम सर्वहारा वर्ग तथा आम जनता के मानव-स्वभाव की हिमायत करते हैं, जबकि जमींदार वर्ग और पूंजीपति वर्ग खुद अपने वर्गों के मानव-स्वभाव की हिमायत करते हैं, फर्क सिर्फ इतना है कि वे ऐसा कहते तो नहीं लेकिन यह सिद्ध करने की कोशिश करते हैं कि उन्हीं का मानव-स्वभाव एकमात्र मानव-स्वभाव है। निम्न-पूंजीपति वर्ग के कुछ बुद्धिजीवी जिस मानव-स्वभाव का गुणगान करते हैं, वह भी आम जनता से अलग होता है अथवा उसके विरुद्ध होता है; जिसे वे मानव-स्वभाव कहते हैं वह सार रूप में और कुछ नहीं बल्कि पूंजीवादी व्यक्तिवाद ही होता है, इसलिए उनकी दृष्टि में सर्वहारा वर्ग का मानव-स्वभाव उस चीज के बिलकुल विपरीत है जिसे मानव-स्वभाव कहा जाता है। "मानव-स्वभाव का सिद्धान्त", जिसकी येनान के कुछ लोग तथाकथित कला-साहित्य के सिद्धान्त के आधार के रूप में वकालत करते फिरते हैं, मसले को ठीक इसी तरह पेश करता है और यह बिलकुल गलत है।

"कला-साहित्य के लिए बुनियादी प्रस्थान-बिन्दु प्रेम है, मानव-प्रेम है।" प्रेम प्रस्थान-बिन्दु तो हो सकता है, लेकिन एक अन्य बुनियादी प्रस्थान-बिन्दु भी है। प्रेम एक धारणात्मक वस्तु है, वस्तुगत व्यवहार की उपज है। मूलतः, हम धारणा को प्रस्थान-बिन्दु नहीं बनाते, बल्कि वस्तुगत व्यवहार को बनाते हैं। हमारे लेखक व कलाकार, जो बुद्धिजीवियों की ही पांतों से आते हैं, सर्वहारा वर्ग से प्यार करते हैं क्योंकि समाज ने उन्हें यह महसूस करा दिया है कि उनका तथा सर्वहारा वर्ग का एक समान भाग्य है। हम जापानी साम्राज्यवाद से घृणा करते हैं, क्योंकि जापानी साम्राज्यवाद हमारा उत्पीड़न करता है। अकारण प्रेम या घृणा जैसी चीज दुनिया में कतई नहीं होती। जहां तक तथाकथित "मानव-प्रेम" का सम्बन्ध है, मानव जाति के वर्गों में विभाजित हो जाने के बाद से सर्वव्यापी प्रेम जैसी कोई चीज नहीं रही। पिछले सभी शासक वर्गों ने बड़े चाव से "मानव-प्रेम" की वकालत की थी और इसी तरह बहुत से तथाकथित महात्माओं और ज्ञानियों ने भी की थी, लेकिन इस पर किसी ने भी कभी सचमुच अमल नहीं किया, क्योंकि वर्ग-समाज में ऐसा करना असम्भव है। सच्चा मानव-प्रेम सिर्फ तभी सम्भव हो सकता है जबकि सारी दुनिया में वर्गों को खत्म कर दिया जाएगा। वर्गों ने समाज को बहुत से ऐसे समूहों में बांट रखा है जो आपस में एक दूसरे के प्रति शत्रुतापूर्ण रवैया अपनाते हैं; जब वर्ग मिटा दिए जाएंगे, सिर्फ तभी समूचा मानव-प्रेम सम्भव हो सकेगा, लेकिन इस समय ऐसा नहीं हो सकता। हम अपने दुश्मनों से प्रेम नहीं कर सकते, हम सामाजिक बुराइयों से प्रेम नहीं कर सकते, हमारा उद्देश्य है उन्हें नष्ट कर देना। यह एक साधारण ज्ञान की बात है; क्या हमारे लेखकों व कलाकारों में से कोई ऐसा है जो अभी तक इसे नहीं समझ पाता?

"साहित्यिक रचनाएं और कलाकृतियां हमेशा ही उजले और स्याह पर समान रूप से जोर देती हैं, आधे उजले और आधे स्याह पर।" इस कथन में अनेक ऊलजलूल विचार मौजूद हैं। साहित्यिक रचनाएं और कलाकृतियां हमेशा से ही ऐसी नहीं रही हैं। निम्न-पूंजीपति

वर्ग के बहुत से लेखक उजले को कभी खोज ही नहीं पाए। उनकी रचनाएं हमेशा स्याह को ही उभारती हैं और ऐसी रचनाओं को "उघारने वाला साहित्य" कहा जाता है। यही नहीं, उनकी कुछ रचनाएं विशेष रूप से निराशावाद और दुनिया से विरक्ति का ही प्रचार करती हैं। इसके विपरीत सोवियत साहित्य समाजवादी निर्माण के काल में मुख्यतः उजले का ही वर्णन करता है। वह काम में पैदा होने वाली कमियों को भी बताता है और नकारात्मक पात्र भी पेश करता है, लेकिन ऐसा वर्णन केवल समूची उज्ज्वलता को ही उभारता है, तथा वह तथाकथित "आधे उजले और आधे स्याह" के आधार पर नहीं होता। पूंजीपति वर्ग के प्रतिक्रियावादी बनने के काल में, उसके लेखक व कलाकार क्रान्तिकारी आम जनता को गुण्डों के रूप में तथा खुद अपने को पवित्रात्माओं के रूप में पेश करते हैं, तथा इस तरह उजले और स्याह को बिलकुल उल्टा करके पेश करते हैं। केवल सच्चे क्रान्तिकारी लेखक व कलाकार ही इस समस्या को सही तरीके से हल कर सकते हैं कि गुणगान किया जाए या पर्दाफाश किया जाए। उन तमाम अन्धकारपूर्ण शक्तियों का, जो विशाल जन-समुदाय को नुकसान पहुंचाती हैं, पर्दाफाश किया जाना चाहिए और विशाल जन-समुदाय के तमाम क्रान्तिकारी संघर्षों का गुणगान किया जाना चाहिए; यही क्रान्तिकारी लेखकों व कलाकारों का बुनियादी कार्य है।

"साहित्य और कला का कार्य हमेशा से ही यह रहा है कि पर्दा-फाश किया जाए।" यह कथन भी पहले कथन की ही भांति इतिहास-विज्ञान की गैर-जानकारी के कारण पैदा होता है। साहित्य व कला का कार्य जैसा कि हम बता चुके हैं, महज पर्दाफाश करना कभी

नहीं रहा। क्रान्तिकारी लेखक व कलाकार पर्दाफाश करने के लिए अपना निशाना आम जनता को हरगिज नहीं बना सकते, बल्कि केवलमात्र आक्रमणकारियों, शोषकों व उत्पीड़कों को ही तथा जनता पर इन लोगों द्वारा पैदा किए गए बुरे असर को ही अपना निशाना बना सकते हैं। आम जनता में भी कमियां होती हैं, जिन्हें जनता की खुद अपनी ही पांतों के अन्दर आलोचना और आत्म-आलोचना करके दूर किया जाना चाहिए, तथा इस तरह की आलोचना और आत्म-आलोचना करना साहित्य व कला का एक सबसे महत्वपूर्ण काम भी है। लेकिन इसको "जनता का पर्दाफाश करना" हरगिज नहीं समझना चाहिए। जहां तक जनता का ताल्लुक है, बुनियादी सवाल उसे शिक्षित करने तथा उसका स्तर उन्नत करने का है। केवल प्रतिक्रान्तिकारी लेखक व कलाकार ही जनता को "पैदायशी बेवकूफ" के रूप में और क्रान्तिकारी जन-समुदाय को "निरंकुश गुण्डों" के रूप में प्रस्तुत करते हैं।

"आज भी व्यंग्यपूर्ण निबन्ध-लेखन का काल है, और लू शुन की शैली वाली रचनाओं की आज भी आवश्यकता है।" अन्धकार-पूर्ण शक्तियों के शासन में रहते हुए, बोलने की आजादी से वंचित लू शुन ने संघर्ष करने के लिए अपने निबन्धों में अत्यन्त पैने व्यंग्य-बाणों तथा हृदयभेदी व्यंग्योक्तियों का इस्तेमाल किया, और उन्होंने बिलकुल ठीक किया। हमें भी फासिस्टों, चीनी प्रतिक्रिया-वादियों और उन तमाम चीजों पर जो जनता को नुकसान पहुंचाती हैं, अपनी व्यंग्योक्तियों के जरिए तीव्र प्रहार करना चाहिए, लेकिन शेनशी-कानसू-निङश्या सीमान्त क्षेत्र में और दुश्मन के पृष्ठभाग में मौजूद जापान-विरोधी आधार-क्षेत्रों में, जहां क्रान्तिकारी लेखकों

व कलाकारों को जनवाद व आजादी मुकम्मिल तौर पर हासिल है और सिर्फ प्रतिक्रान्तिकारी ही उससे वंचित रखे गए हैं, हमारे व्यंग्यात्मक निबन्धों की शैली महज लू शुन की ही शैली की तरह नहीं होनी चाहिए। यहां हम जो कुछ भी कहना चाहते हैं, बुलन्द आवाज में कह सकते हैं, और घुमा-फिरा कर अपनी बात कहने या व्यंग्योक्तियां इस्तेमाल करने की जरूरत नहीं है क्योंकि जनता को इन्हें समझने में कठिनाई महसूस होती है। "व्यंग्यपूर्ण निबन्ध-लेखन के काल" में भी लू शुन ने जो कुछ जनता के दुश्मनों के लिए नहीं बल्कि जनता के लिए लिखा, उसमें उन्होंने क्रान्तिकारी जनता तथा क्रान्तिकारी पार्टी के खिलाफ कभी भी व्यंग्योक्तियों का इस्तेमाल नहीं किया और न उन पर प्रहार ही किया, और उनके ये निबन्ध शैली की दृष्टि से उन निबन्धों से बिलकुल भिन्न हैं जो दुश्मन को निशाना बनाकर लिखे गए थे। जनता की कमियों की आलोचना करना आवश्यक है, जैसा कि हम पहले ही बता चुके हैं, लेकिन ऐसा करते वक्त सच्चे दिल से जनता का दृष्टिबिन्दु अपनाना चाहिए और दिलोजान से उसकी रक्षा करने व उसे शिक्षित करने के उद्देश्य से ही बोलना चाहिए। अपने साथियों के साथ दुश्मनों जैसा व्यवहार करने का मतलब होगा दुश्मन के दृष्टिबिन्दु को अपना लेना। तो फिर क्या हम व्यंग्य को खत्म कर डालें? नहीं। व्यंग्य का रहना हमेशा आवश्यक है। लेकिन व्यंग्य कई किस्म के होते हैं और हर एक का रवैया अलग-अलग होता है, जैसे अपने दुश्मनों के लिए व्यंग्य, अपने संश्रयकारियों के लिए व्यंग्य और खुद अपनी पांतों के लोगों के लिए व्यंग्य। हम सामान्य रूप से व्यंग्योक्ति का विरोध नहीं करते, लेकिन जिस चीज को हमें खत्म करना चाहिए वह है व्यंग्योक्ति का दुरुपयोग।

"मैं प्रशंसा और गुणगान का काम नहीं करता। उन लोगों की रचनाएं जो उजले का गुणगान करते हैं, जरूरी तौर पर महान नहीं होतीं और उन लोगों की रचनाएं जो स्याह का चित्रण करते हैं, जरूरी तौर पर तुच्छ नहीं होतीं।" अगर आप पूंजीपति वर्ग के लेखक या कलाकार हैं, तो आप सर्वहारा वर्ग का नहीं बल्कि पूंजीपति वर्ग का गुणगान करेंगे, और अगर आप सर्वहारा वर्ग के लेखक या कलाकार हैं, तो आप पूंजीपति वर्ग का नहीं बल्कि सर्वहारा वर्ग और मेहनतकश जनता का गुणगान करेंगे : दो में से एक ही चीज हो सकती है। पूंजीपति वर्ग के उजले का गुणगान करने वालों की रचनाएं जरूरी तौर पर महान नहीं होतीं और न उन लोगों की रचनाएं ही जो पूंजीपति वर्ग के स्याह का चित्रण करते हैं, जरूरी तौर पर तुच्छ होती हैं; सर्वहारा वर्ग के उजले का गुणगान करने वालों की रचनाओं का महान न होना जरूरी नहीं, लेकिन सर्वहारा वर्ग के तथाकथित "स्याह" का चित्रण करने वालों की रचनाओं का तुच्छ होना निहायत जरूरी है – क्या ये सब कला-साहित्य के बारे में ऐतिहासिक तथ्य नहीं हैं? आखिर उस जनता का गुणगान क्यों नहीं किया जाना चाहिए, जो मानव जाति के इतिहास की निर्माता है? आखिर सर्वहारा वर्ग, कम्युनिस्ट पार्टी, नव-जनवाद और समाजवाद का गुणगान क्यों नहीं किया जाना चाहिए? एक किस्म के लोग ऐसे भी होते हैं जिन्हें जनता के कार्य के बारे में कोई उत्साह नहीं होता तथा जो सर्वहारा वर्ग और उसके हिरावल दस्ते के संघर्षों और उनकी विजयों को बड़ी उदासीनता के साथ एक कोने में अलग खड़े होकर देखते रहते हैं; जिस चीज में उन्हें दिलचस्पी है और जिसका गुणगान करते वे कभी नहीं अघाते, वह उनका खुद

का व्यक्तित्व, या उनकी अपनी मित्र-मण्डली के दो-चार और लोगों का व्यक्तित्व है। इसमें सन्देह नहीं कि इस प्रकार के निम्न-पूंजीपति वर्ग के व्यक्तिवादी लोग, क्रान्तिकारी जनता के कारनामों और उसकी अच्छाइयों का गुणगान करने अथवा उसके संघर्ष करने के साहस और विजय प्राप्त करने के विश्वास को बढ़ावा देने के इच्छुक नहीं हैं। इस प्रकार के लोग क्रान्तिकारी पांतों में महज दीमक की तरह हैं; निस्सन्देह, क्रान्तिकारी जनता को ऐसे "भाटों" की बिलकुल जरूरत नहीं है।

"यह दृष्टिबिन्दु का सवाल नहीं है; मेरा वर्ग-दृष्टिबिन्दु सही है, मेरी नीयत अच्छी है और मैं बात को तो खूब अच्छी तरह समझता हूं, लेकिन अपनी बात कहने में कुशल नहीं हूं, इसलिए मेरी बात का असर अच्छा नहीं पड़ता।" प्रयोजन और परिणाम के बारे में द्वन्द्वात्मक भौतिकवादी दृष्टिकोण की चर्चा मैं पहले कर चुका हूं। यहां मैं पूछना चाहता हूं, क्या परिणाम का सवाल दृष्टिबिन्दु का सवाल नहीं है? ऐसा व्यक्ति जो केवल प्रयोजन से प्रेरित होकर काम करता जाता है और यह पता नहीं लगाता कि उसके काम का परिणाम क्या हुआ है, एक ऐसे डाक्टर की तरह है जो सिर्फ नुस्खे ही लिखता जाता है और इस बात की कतई परवाह नहीं करता कि इन नुस्खों से कितने मरीज चल बसे। एक ऐसी राजनीतिक पार्टी की ही मिसाल लीजिए जो महज घोषणाएं ही करती जाती है और इस बात की कतई परवाह नहीं करती कि उन घोषणाओं को कार्यान्वित भी किया जाता है या नहीं। पूछा जा सकता है, क्या यह भी एक सही दृष्टिबिन्दु है? और क्या ऐसी नीयत भी एक अच्छी नीयत है? निस्सन्देह, गलतियां तब भी हो सकती हैं जब परिणाम पर पहले

से ही ध्यान दिया गया हो, लेकिन क्या तब भी आपकी नीयत अच्छी कही जाएगी जब तथ्यों द्वारा यह साबित होने के बावजूद कि परिणाम अच्छा नहीं निकला आप अपनी वही पुरानी लीक पीटते चले जाएं? किसी पार्टी अथवा डाक्टर को परखते समय हमें उसके व्यवहार को देखना चाहिए, उसके कार्य के परिणाम को देखना चाहिए। यही बात एक लेखक को परखते समय भी लागू होती है। सचमुच अच्छी नीयत रखने वाले व्यक्ति को चाहिए कि वह परिणाम पर ध्यान दे, अनुभवों का निचोड़ निकाले, तथा कार्य-पद्धतियों का अध्ययन करे अर्थात सृजन-कार्य में अभिव्यक्ति की शैलियों का अध्ययन करे। सचमुच अच्छी नीयत रखने वाले व्यक्ति को चाहिए कि वह अपने काम की कमियों और गलतियों की दिल खोलकर आलोचना करे तथा उन्हें सुधारने का संकल्प करे। कम्युनिस्टों में आत्म-आलोचना का तरीका इसी तरह अपनाया जाता है। केवल यही दृष्टिबिन्दु एक सही दृष्टिबिन्दु है। व्यवहार की इस गम्भीर और उत्तरदायित्वपूर्ण प्रक्रिया के दौरान ही यह सम्भव है कि सही दृष्टिबिन्दु को कदम-ब-कदम समझ लिया जाए और उसे कदम-ब-कदम आत्मसात कर लिया जाए। अगर कोई अपने व्यवहार में इस दिशा का अनुसरण न करे, और सिर्फ इस आत्मसन्तोष की भावना का शिकार बना रहे कि वह "खूब अच्छी तरह समझता है", तो वास्तव में उसने कुछ भी नहीं समझा।

"हमसे मार्क्सवाद के अध्ययन का अनुरोध करना द्वन्द्वात्मक भौतिकवादी सृजन-शैली की गलती को दोहराना होगा, और इससे हमारे सृजनात्मक मूड को हानि पहुंचेगी।" मार्क्सवाद का अध्ययन करने का मतलब यह है कि हम दुनिया को, समाज को और कला-

साहित्य को द्वन्द्वात्मक भौतिकवादी और ऐतिहासिक भौतिकवादी दृष्टिकोण से देखें ; इसका मतलब यह नहीं कि हम अपनी साहित्यिक रचनाओं और कलाकृतियों में दर्शनशास्त्र के लेक्चर झाड़ते फिरें। साहित्यिक व कलात्मक सृजन के कार्य में मार्क्सवाद यथार्थवाद को हटाकर उसकी जगह नहीं ले सकता बल्कि उसे अपने अन्दर समाविष्ट करता है, ठीक उसी तरह जैसे वह भौतिक विज्ञान में परमाणु और विद्युत-अणु सम्बन्धी सिद्धान्तों को हटाकर उनकी जगह नहीं ले सकता बल्कि उन्हें अपने अन्दर समाविष्ट करता है। कोरे, नीरस कठमुल्लावादी फार्मूले सृजनात्मक मूड को नष्ट कर देते हैं ; यही नहीं वे सबसे पहले मार्क्सवाद को ही नष्ट कर देते हैं। कठमुल्लावादी "मार्क्सवाद" मार्क्सवाद नहीं होता, वह मार्क्सवाद-विरोधी होता है। तो क्या मार्क्सवाद सृजनात्मक मूड को नष्ट नहीं कर देता ? हां, कर देता है। वह निश्चित रूप से हर ऐसे सृजनात्मक मूड को जो सामन्ती, पूंजीवादी, निम्न-पूंजीवादी, उदारतावादी, व्यक्तिवादी, शून्यवादी, "कला कला के लिए" के सिद्धान्त को मानने वाला, अभिजातवर्गीय, पतनशील अथवा निराशावादी होता है, और हर ऐसे सृजनात्मक मूड को जो विशाल जन-समुदाय और सर्वहारा वर्ग का नहीं है, नष्ट कर देता है। जहां तक सर्वहारा वर्ग के लेखकों और कलाकारों का सम्बन्ध है, क्या उन्हें इस प्रकार के सृजनात्मक मूडों को नष्ट नहीं कर देना चाहिए ? मैं समझता हूं कि उन्हें जरूर ऐसा करना चाहिए ; इन सबको पूरी तरह नष्ट कर देना चाहिए, और इन्हें नष्ट करने के साथ ही नई चीजों की रचना की जा सकती है।

५

जिन समस्याओं की यहां चर्चा की गई है, वे येनान के हमारे कला-साहित्य जगत में मौजूद हैं। इससे क्या जाहिर होता है ? इससे जाहिर होता है कि हमारे कला-साहित्य जगत में गलत कार्यशैली अब भी एक गम्भीर सीमा तक मौजूद है, तथा हमारे साथियों में अब भी आदर्शवाद पर अमल करने, कठमुल्लावाद पर अमल करने, झूठे भ्रम पालने, कोरी बातें करने, व्यवहार की उपेक्षा करने तथा आम जनता से दूर रहने जैसी बहुत सी त्रुटियां पाई जाती हैं, और इन सबके खिलाफ एक पुरअसर और गम्भीर दोष-निवारण आन्दोलन चलाने की जरूरत है।

हमारे बहुत से साथी ऐसे हैं जो सर्वहारा वर्ग और निम्न-पूंजीपति वर्ग के बीच के फर्क को अभी तक स्पष्ट रूप से नहीं समझ पाए। बहुत से पार्टी-मेम्बर ऐसे हैं जो कम्युनिस्ट पार्टी में संगठनात्मक रूप से तो शामिल हो गए हैं, लेकिन विचारधारात्मक रूप से मुकम्मिल तौर पर शामिल नहीं हुए या बिलकुल ही शामिल नहीं हुए। जो लोग विचारधारात्मक रूप से पार्टी में शामिल नहीं हुए, उनके दिमाग शोषक वर्गों की गन्दगी से अब भी काफी हद तक भरे पड़े हैं तथा उन्हें सर्वहारा वर्ग की विचारधारा, कम्युनिज्म या पार्टी के बारे में कतई कोई ज्ञान नहीं है। वे सोचते हैं, "सर्वहारा वर्ग की विचारधारा ? बस वही घिसीपिटी सामग्री !" लेकिन उन्हें इस बात का रत्तीभर भी भान नहीं कि इस सामग्री को हासिल करना कोई आसान काम नहीं है। इनमें कुछ लोग ऐसे भी हैं जिनसे सारी उम्र जरा भी कम्युनिस्ट गन्ध नहीं आएगी और जो अन्त में पार्टी से

अलग होकर ही रहेंगे। इसलिए, हालांकि हमारी पार्टी तथा हमारी पांतों में ज्यादातर लोग निष्कलंक हैं, फिर भी क्रान्तिकारी आन्दोलन को ज्यादा पुरअसर तरीके से आगे बढ़ाने के लिए तथा उसे जल्दी से जल्दी कामयाब बनाने के लिए हमें विचारधारात्मक और संगठनात्मक रूप से उन्हें गम्भीरता के साथ सुव्यवस्थित कर लेना चाहिए। संगठनात्मक रूप से सुव्यवस्थित करने के लिए पहले विचारधारात्मक रूप से सुव्यवस्थित किया जाना चाहिए तथा सर्वहारा वर्ग की विचारधारा के जरिए गैर-सर्वहारा विचारधारा के खिलाफ संघर्ष चलाया जाना चाहिए। येनान के कला-साहित्य जगत में यह विचारधारात्मक संघर्ष पहले ही शुरू हो चुका है और यह अत्यन्त आवश्यक है। निम्न-पूंजीपति वर्ग में पैदा हुए बुद्धिजीवी लोग हमेशा कला-साहित्य सहित सभी प्रकार के साधनों का इस्तेमाल करके बड़ी हठधर्मी के साथ आत्माभिव्यक्ति करने तथा अपने विचारों का प्रसार करने की कोशिश करते हैं और यह चाहते हैं कि पार्टी और दुनिया उनके अपने ही सांचे में ढल जाए। इन हालात में हमारा फर्ज हो जाता है कि हम उन्हें झकझोर डालें और उन्हें सख्ती से कहें कि "कामरेडो, इस तरह काम नहीं चलेगा! सर्वहारा वर्ग अपने को आपके अनुरूप नहीं ढाल सकता; आपके विचारों को स्वीकार करने का मतलब है बड़े जमींदारों के वर्ग व बड़े पूंजीपतियों के वर्ग के सामने झुक जाना तथा पार्टी और देश को तबाह करने का खतरा मोल लेना।" तो फिर हमें आखिर किनके विचारों को स्वीकार करना चाहिए? पार्टी और दुनिया को हम अपने सर्वहारा हिरावल दस्ते के सांचे में ही ढाल सकते हैं। हम आशा करते हैं कि कला-साहित्य जगत में काम करने वाले हमारे साथी इस महान वाद-

विवाद की गम्भीरता को समझ लेंगे और इस संघर्ष में सक्रियता के साथ भाग लेंगे, ताकि हर एक साथी अपनी जगह पुख्ता बन जाए और हमारी समूची पांतें विचारधारात्मक व संगठनात्मक रूप से सचमुच एकताबद्ध और सुदृढ़ बन जाएं।

चूंकि हमारे बहुत से साथियों के विचार अब भी उलझे हुए हैं, इसलिए वे हमारे क्रान्तिकारी आधार-क्षेत्रों तथा क्वोमिन्ताङ-शासित क्षेत्रों के बीच के फर्क को अच्छी तरह नहीं समझ पाते, जिसके फलस्वरूप उनसे बहुत सी गलतियां हो जाती हैं। हमारे साथियों की एक अच्छी खासी तादाद शांघाई की तंग कोठरियों[१४] से यहां आई है और उन तंग कोठरियों से इन क्रान्तिकारी आधार-क्षेत्रों में आकर वे न सिर्फ एक प्रकार के स्थान से दूसरे प्रकार के स्थान में आ पहुंचे हैं, बल्कि एक ऐतिहासिक युग से दूसरे ऐतिहासिक युग में भी आ पहुंचे हैं। पहला समाज एक अर्ध-सामन्ती, अर्ध-औपनिवेशिक समाज है जहां बड़े जमींदारों के वर्ग और बड़े पूंजीपतियों के वर्ग का शासन है, तथा दूसरा समाज एक क्रान्तिकारी नव-जनवादी समाज है जिसका नेतृत्व सर्वहारा वर्ग करता है। इन क्रान्तिकारी आधार-क्षेत्रों में आना एक ऐसे युग में प्रवेश करने के बराबर है जो चीन के हजारों वर्षों के इतिहास में एक अभूतपूर्व युग है, एक ऐसा युग जिसमें राजसत्ता आम जनता के हाथ में है। यहां हमारे इर्दगिर्द मौजूद लोग और हमारे प्रचार-कार्य के पाठक-दर्शक एक बिलकुल अलग किस्म के लोग हैं। पुराना युग बीत चुका, अब वह कभी वापस नहीं आएगा। इसलिए हमें बिना किसी हिचकिचाहट के नए जन-समुदाय के साथ एकरूप हो जाना चाहिए। जैसा कि मैं पहले बता चुका हूं, अगर नए जन-समुदाय के बीच रहकर भी हमारे कुछ

साथियों में "ज्ञान और समझ की कमी" मौजूद रही तथा वे "अपने शौर्य-प्रदर्शन के लिए कहीं भी जगह न ढूंढ़ सकने वाले वीर" की तरह बने रहे, तो उनके सामने कठिनाइयां पैदा हो जाएंगी, न सिर्फ उस समय जबकि वे देहातों में जाएंगे, बल्कि यहां येनान में भी उनके सामने कठिनाइयां पैदा हो जाएंगी। कुछ साथी यह सोचते होंगे, "मेरे लिए बेहतर यह होगा कि मैं 'बड़े पृष्ठभागीय क्षेत्र'[११] के पाठकों के लिए लिखना जारी रखूं। यह काम मैं अच्छी तरह जानता हूं और इसका 'राष्ट्रीय महत्व' भी है।" इस तरह का विचार सरासर गलत है। "बड़ा पृष्ठभागीय क्षेत्र" भी तो बदल रहा है। वहां के पाठक क्रान्तिकारी आधार-क्षेत्रों में रहने वाले लेखकों से यह उम्मीद करते हैं कि वे नए लोगों के बारे में और नई दुनिया के बारे में लिखें तथा अपनी पुरानी घिसीपिटी कहानियों से उन्हें बोर न करते रहें। इसलिए किसी रचना को जितना ही अधिक क्रान्तिकारी आधार-क्षेत्रों की आम जनता के लिए लिखा जाएगा, उतना ही अधिक उसका राष्ट्रीय महत्व बढ़ जाएगा। "विध्वंस"[१२] नामक उपन्यास में फादेयेव ने सिर्फ एक छोटे से छापामार दस्ते की कहानी लिखी और पुरानी दुनिया के पाठकों का मन बहलाने का उनका कोई विचार नहीं था; फिर भी इस पुस्तक का विश्वव्यापी प्रभाव पड़ा है। कम से कम चीन में तो, जैसा कि आप जानते ही हैं, इस रचना का बहुत गहरा असर पड़ा है। चीन आगे बढ़ रहा है, वह पीछे नहीं जा रहा, और ये चीन के क्रान्तिकारी आधार-क्षेत्र ही हैं जो चीन को आगे ले जा रहे हैं, न कि कोई पिछड़ा हुआ पतनशील इलाका। यह एक बुनियादी बात है, जिसे साथियों को दोष-निवारण आन्दोलन के दौरान सबसे पहले समझ लेना चाहिए।

चूंकि आम जनता के इस नए युग के साथ एकरूपता निहायत जरूरी है, इसलिए व्यक्ति और आम जनता के बीच के सम्बन्धों की समस्या को मुकम्मिल तौर से हल कर लेना आवश्यक है। लू शुन की कविता की इन पंक्तियों को हमें अपनी आदर्शोक्ति बना लेना चाहिए :

> क्रुद्ध भृकुटियां तान, तनिक परवाह न करता मैं
> हजार उंगलियां उठाने वालों की ;
> शीश झुकाकर किन्तु दूसरी ओर
> वृषभ-सा सेवारत रहता अबोध बच्चों की।[१३]

"हजार उंगलियां उठाने वालों" का तात्पर्य हमारे दुश्मनों से है। उनके सामने हम हरगिज नहीं झुकेंगे, चाहे वे कितने ही खूंखार क्यों न हों। जिन "बच्चों" का यहां जिक्र किया गया है वे सर्वहारा वर्ग और आम जनता के प्रतीक हैं। तमाम कम्युनिस्टों को, तमाम क्रान्तिकारियों को तथा तमाम क्रान्तिकारी लेखकों और कलाकारों को लू शुन के आदर्श उदाहरण से सीख लेना चाहिए तथा सर्वहारा वर्ग और आम जनता के लिए "वृषभ" बनकर उन्हीं की तरह अपना कर्तव्य पूरा करते हुए मरते दम तक काम में जुटे रहना चाहिए। जो बुद्धिजीवी आम जनता के साथ एकरूप हो जाना चाहते हैं और उसकी सेवा करना चाहते हैं, उन्हें चाहिए कि वे एक ऐसी प्रक्रिया में से गुजरें जिससे वे तथा आम जनता एक दूसरे से भलीभांति परिचित हो जाएं। यह प्रक्रिया काफी कष्टदायी और काफी टकराव वाली भी हो सकती है और ऐसा होना अनिवार्य भी है, लेकिन यदि आपके अन्दर दृढ़ संकल्प है, तो आप उक्त मांगों को अवश्य पूरा कर सकेंगे।

आज हमारे कला-साहित्य के आन्दोलन की बुनियादी दिशा से सम्बन्धित केवल कुछ ही समस्याओं की चर्चा मैंने की है ; बहुत सी ठोस समस्याएं अभी बाकी रह गई हैं, जिनके बारे में और अध्ययन करने की आवश्यकता है। मुझे विश्वास है कि यहां के सभी साथी ऊपर बताई गई दिशा में आगे बढ़ने के लिए कटिबद्ध हैं। मुझे यकीन है कि दोष-निवारण आन्दोलन के दौरान तथा भविष्य में अपने अध्ययन और अपने काम के लम्बे समय के दौरान, आप जरूर खुद अपना और अपनी रचनाओं का रूपान्तर कर सकेंगे, बहुत सी ऐसी श्रेष्ठ रचनाओं का सृजन कर सकेंगे जिनका आम जनता द्वारा हार्दिक स्वागत किया जाएगा, तथा कला-साहित्य के आन्दोलन को क्रान्तिकारी आधार-क्षेत्रों में और समूचे चीन में एक बिलकुल नई और शानदार मंजिल में पहुंचा सकेंगे।

नोट

१ देखिए : वी० आई० लेनिन की रचना "पार्टी-संगठन और पार्टी-साहित्य", जिसमें उन्होंने सर्वहारा साहित्य की विशेषताओं को इस प्रकार बताया है :

यह एक स्वतंत्र साहित्य होगा, क्योंकि समाजवाद का विचार और मेहनतकश जनता के प्रति सहानुभूति की भावना, न कि लालच और कैरियरवाद, लगातार नई शक्तियों को उसकी पांतों में लाते रहेंगे। यह एक स्वतंत्र साहित्य होगा, क्योंकि यह किसी परितृप्त नायिका की, जिन्दगी से ऊबे हुए "उच्च वर्ग के सिर्फ दसियों हजार व्यक्तियों" की, जो अपनी चर्बी के बोझ से दबे जा रहे हैं, सेवा नहीं बल्कि कोटि-कोटि मेहनतकश लोगों की – देश के इन फूलों की, उसकी शक्ति की और उसके भविष्य की – सेवा करेगा। यह एक स्वतंत्र साहित्य होगा, जो मानव जाति के क्रान्तिकारी विचारों की बेहतरीन

सफलताओं को समाजवादी सर्वहारा वर्ग के अनुभवों और सजीव कार्यों के जरिए अलंकृत करेगा, तथा जो अतीत काल के अनुभवों (वैज्ञानिक समाजवाद, समाजवाद के प्रारम्भिक कल्पनावादी रूपों से विकसित होकर उसके पूर्ण रूप की प्राप्ति) तथा वर्तमान काल के अनुभवों (मजदूर साथियों के वर्तमान संघर्ष) के बीच एक स्थायी पारस्परिक प्रभाव उत्पन्न कर देगा।

२ ल्याङ श-छ्यु प्रतिक्रान्तिकारी नेशनल सोशलिस्ट पार्टी का एक सदस्य था, जिसने काफी लम्बे समय तक कला-साहित्य के बारे में प्रतिक्रियावादी अमरीकी पूंजीपति वर्ग के विचारों का प्रचार-प्रसार किया। उसने बड़ी हठधर्मी के साथ क्रान्ति का विरोध किया और क्रान्तिकारी कला-साहित्य पर गालियों की बौछार की।

३ चओ च्वो-रन और चाङ चि-फिङ ने १९३७ में जापानी आक्रमणकारियों द्वारा पेकिङ और शांघाई पर कब्जा किए जाने के बाद आत्मसमर्पण कर दिया था।

४ "वामपक्षीय लेखक संघ के बारे में मेरे विचार", "दो हृदय" नामक संग्रह, लू शुन की पूर्ण ग्रन्थावली, ग्रन्थ ४।

५ "मृत्यु", "अतिरिक्त सामग्री" नामक रचना में संकलित, "अर्ध-रियायती बस्ती की एक कोठरी में लिखे गए निबन्धों का अन्तिम संग्रह", लू शुन की पूर्ण ग्रन्थावली, ग्रन्थ ६।

६ "नन्हा ग्वाला" एक लोकप्रिय चीनी लोक-नाटिका है जिसमें सिर्फ दो ही पात्र अभिनय करते हैं। एक ग्वाला और एक गांव की लड़की गाकर आपस में सवाल-जवाब करते हैं। जापानी-आक्रमण-विरोधी युद्ध के आरम्भिक दिनों में जापान-विरोधी प्रचार-कार्य के लिए नए संवाद तैयार करके इस नाट्यशैली का इस्तेमाल किया गया और कुछ समय तक यह बहुत लोकप्रिय रही।

७ इन छै शब्दों के लिए लिखे जाने वाले चीनी रेखाक्षर बड़े आसान हैं जिनमें केवल कुछ ही रेखाएं होती हैं। ये आम तौर पर अक्षर-ज्ञान की पुरानी किताबों के प्रारम्भिक पाठ में शामिल किए जाते हैं।

८ "बसन्त में हिमछटा" और "कंगालों का गीत" ईसापूर्व तीसरी शताब्दी में छु राज्य में गाए जाने वाले गीत थे। इनमें से पहले गीत के संगीत का स्तर

दूसरे के मुकाबले ऊंचा था। राजकुमार चाओ मिङ की "गद्य-पद्य संग्रह" नामक रचना में "छू राज्य के राजा को सुङ य्वी का उत्तर" प्रसंग के अन्तर्गत जो कहानी आती है उसमें बताया गया है कि छू राज्य की राजधानी में जब किसी ने "वसन्त में हिमछटा" गाया तो "उसमें सिर्फ कुछ ही दर्जन लोग शामिल हुए", लेकिन जब "कंगालों का गीत" गाया तो "उसमें हजारों लोग शामिल हो गए।"

[9] देखिए : वी० आई० लेनिन की रचना "पार्टी-संगठन और पार्टी-साहित्य", जिसमें उन्होंने कहा है : "साहित्य को सर्वहारा वर्ग के आम कार्य का एक अंग बन जाना चाहिए, एक अखण्ड और महान सामाजिक-जनवादी मशीनरी के 'दांते और पेंच' के समान बन जाना चाहिए, जिसका संचालन समूचे मजदूर वर्ग का राजनीतिक दृष्टि से जागरूक समूचा हिरावल दस्ता करता है।"

[10] शांघाई की इमारतों में एक तरह का छोटा सा कमरा इमारत के पिछले भाग में सीढ़ी के बगल में होता था। तंग और अंधेरा होने के कारण उसका किराया अपेक्षाकृत सस्ता होता था। इसलिए गरीब लेखकों व कलाकारों, बुद्धिजीवियों व दफ्तर के कर्मचारियों की एक काफी बड़ी तादाद इसी तरह के कमरों में किराये पर रहती थी।

[11] "बड़ा पृष्ठभागीय क्षेत्र" यह नाम जापानी-आक्रमण-विरोधी युद्ध के काल में उन विशाल क्षेत्रों को दिया गया था जो चीन के दक्षिण-पश्चिम और उत्तर-पश्चिम में क्वोमिन्ताङ के शासन के अधीन थे और जापानी हमलावरों के कब्जे में नहीं थे। जापान-विरोधी आधार-क्षेत्र, जो दुश्मन के पृष्ठभाग में कम्युनिस्ट पार्टी के नेतृत्व में कायम किए गए थे, "छोटे पृष्ठभागीय क्षेत्र" कहलाते थे।

[12] प्रसिद्ध सोवियत लेखक एलेक्जेण्डर फादेयेव का "विध्वंस" नामक उपन्यास १९२७ में प्रकाशित हुआ था। उपन्यास में मजदूरों, किसानों और क्रान्तिकारी बुद्धिजीवियों के एक छापामार दस्ते द्वारा सोवियत गृहयुद्ध के दौरान साइबेरिया में प्रतिक्रान्तिकारी डाकुओं के खिलाफ किए गए संघर्षों का चित्रण किया गया है। इस उपन्यास का चीनी अनुवाद लू शुन ने किया था।

[13] यह पद्यांश लू शुन की "आत्म-विडम्बना" शीर्षक कविता में से लिया गया है, "संग्रह के बाहर संग्रह", लू शुन की पूर्ण ग्रन्थावली, ग्रन्थ ७।

एक अत्यन्त महत्वपूर्ण नीति*

७ सितम्बर १९४२

जब से चीनी कम्युनिस्ट पार्टी की केन्द्रीय कमेटी ने "बेहतर फौज और सरल प्रशासन" की नीति पेश की है, तब से बहुत से जापान-विरोधी आधार-क्षेत्रों के पार्टी-संगठन केन्द्रीय कमेटी के निर्देशों के अनुरूप उसे लागू कर रहे हैं, अथवा लागू करने की योजनाएं बना रहे हैं। शानशी-हपे-शानतुङ-हनान सीमान्त क्षेत्र के नेतृत्वकारी साथियों ने यह कार्य मजबूती से अपने हाथ में ले लिया है, तथा "बेहतर फौज और सरल प्रशासन" की मिसाल कायम कर दी है। लेकिन कुछ आधार-क्षेत्रों में साथियों ने इसे उतनी संजीदगी से लागू करने की ज्यादा कोशिश नहीं की है, कारण वे इस नीति को पूरी तरह नहीं समझ पाए हैं। वे लोग अब भी यह नहीं समझ पाए हैं कि वर्तमान परिस्थिति और पार्टी की अन्य नीतियों से इसका क्या सम्बन्ध है, अथवा इसे एक अत्यन्त महत्वपूर्ण नीति समझने में असफल रहे हैं। इस मामले की पहले भी कई बार "मुक्ति दैनिक" में चर्चा की जा चुकी है और आज हम इसकी और अधिक व्याख्या करना चाहते हैं।

* यह सम्पादकीय कामरेड माओ त्सेतुङ ने येनान के "मुक्ति दैनिक" के लिए लिखा था।

पार्टी की सभी नीतियों का मकसद है जापानी हमलावरों को परास्त करना। पांचवें वर्ष से, प्रतिरोध-युद्ध वास्तव में अपनी विजय के लिए संघर्ष करने वाली आखिरी मंजिल में दाखिल हो चुका है। इस मंजिल में, परिस्थिति युद्ध के पहले और दूसरे वर्ष के मुकाबले भिन्न है, तथा तीसरे और चौथे वर्ष के मुकाबले भी भिन्न है। युद्ध के पांचवें और छठे वर्ष की एक विशेषता यह है कि जहां एक ओर हम विजय के करीब पहुंचते जा रहे हैं वहां दूसरी ओर हमारे सामने बड़ी-बड़ी कठिनाइयां आती जा रही हैं ; दूसरे शब्दों में, हम "पौ फटने से पहले के अन्धकार" की स्थिति में हैं। यह स्थिति वर्तमान मंजिल में सभी फासिस्ट-विरोधी देशों में और साथ ही समूचे चीन में भी मौजूद है; यह आठवीं राह सेना और नई चौथी सेना के आधार-क्षेत्रों तक ही सीमित नहीं है, हालांकि यहां वह विशेष रूप से उग्र रूप धारण किए हुए है। हम जापानी हमलावरों को दो वर्ष के अन्दर परास्त करने की कोशिश कर रहे हैं। ये दो वर्ष बेहद बड़ी मुश्किलों के वर्ष होंगे तथा युद्ध के शुरू के दो वर्षों और बीच के दो वर्षों से बिलकुल भिन्न होंगे। क्रान्तिकारी पार्टी और क्रान्तिकारी सेना के नेतृत्वकारी कार्यकर्ताओं को यह खास बात पहले से ही समझ लेनी चाहिए। अगर वे ऐसा करने में असमर्थ रहे, तो वे महज घटनाओं के साथ बहते जाएंगे, तथा चाहे वे कितनी ही मेहनत क्यों न करें, विजय प्राप्त नहीं कर पाएंगे, और यहां तक कि वे क्रान्ति के कार्य को हानि भी पहुंचा देंगे। हालांकि दुश्मन के पृष्ठभाग में स्थित जापान-विरोधी आधार-क्षेत्रों की परिस्थिति पहले के मुकाबले कई गुना कठिन है, लेकिन वह अभी अत्यन्त कठिन नहीं है। अगर हमने इस समय सही नीति न अपनाई, तो बेहद बड़ी कठिनाई हम पर हावी

हो जाएगी। लोग आम तौर पर अतीत और वर्तमान काल की परिस्थितियों के आधार पर निर्णय करते हैं तथा इस गलतफहमी के शिकार हो जाते हैं कि भविष्य की परिस्थिति भी लगभग वैसी ही होगी। वे यह अनुमान लगाने में असमर्थ रहते हैं कि जहाज को पानी के नीचे मौजूद चट्टानों का सामना करना पड़ सकता है अथवा ठण्डे दिमाग से इन चट्टानों से बचकर निकलने में असमर्थ रहते हैं। प्रतिरोध-युद्ध के जहाज के रास्ते में पानी के नीचे मौजूद चट्टानें आखिर क्या हैं? वे हैं युद्ध की आखिरी मंजिल की बेहद गम्भीर भौतिक कठिनाइयां। पार्टी की केन्द्रीय कमेटी उनकी ओर इंगित कर चुकी है तथा हमारा आवाहन कर चुकी है कि हम सावधान हो जाएं और उनसे बचकर आगे निकल जाएं। हमारे बहुत से साथी इस बात को समझ चुके हैं, लेकिन कुछ साथी इसे अभी नहीं समझ पाए, और यह पहली बाधा है जिसे हमें पार करना चाहिए। प्रतिरोध-युद्ध में एकता की जरूरत होती है और एकता कायम करने में मुश्किलों का सामना करना पड़ता है। ये मुश्किलें राजनीतिक हैं ; ये अतीत काल में पैदा हो चुकी हैं और भविष्य में फिर पैदा हो सकती हैं। हमारी पार्टी पिछले पांच वर्षों से उन पर कदम-ब-कदम और अत्यन्त प्रयत्नपूर्वक विजय प्राप्त करती चली आई है ; हमारा नारा है एकता को मजबूत बनाना और हमें लगातार ऐसा करते रहना चाहिए। लेकिन दूसरे किस्म की मुश्किलें, भौतिक कठिनाइयां भी मौजूद हैं। वे अधिकाधिक उग्र रूप लेती जाएंगी। कुछ साथी आज भी इस बात की ओर यथोचित ध्यान नहीं देते और वक्त की नजाकत को नहीं समझ पाते, अतएव हमें चाहिए कि उन्हें सतर्क कर दें। समस्त जापान-विरोधी आधार-क्षेत्रों के सभी साथियों को यह बात

समझ लेनी चाहिए कि अब से भौतिक कठिनाइयां अनिवार्य रूप से अधिकाधिक गम्भीर होती जाएंगी, यह कि हमें उन पर विजय प्राप्त करनी चाहिए तथा यह कि ऐसा करने का एक महत्वपूर्ण तरीका है "बेहतर फौज और सरल प्रशासन"।

आखिर बेहतर फौज और सरल प्रशासन की नीति भौतिक कठिनाइयों को दूर करने के लिए क्यों महत्वपूर्ण है ? यह स्पष्ट है कि इस समय और इससे भी ज्यादा, भविष्य में आधार-क्षेत्रों की युद्ध की परिस्थिति हमें इस बात की इजाजत नहीं देगी कि हम अपने पिछले विचारों से चिपके रहें। हमारी विशाल युद्ध-मशीनरी हमारी अतीत की परिस्थिति के अनुकूल थी। उस समय इसकी इजाजत दी जा सकती थी और इसकी आवश्यकता भी थी। लेकिन अब परिस्थिति भिन्न है, आधार-क्षेत्र सिकुड़ गए हैं और कुछ समय तक सिकुड़ना जारी रखेंगे, तथा निस्सन्देह पहले की तरह की विशाल युद्ध-मशीनरी को बनाए रखना अब हमारे लिए मुमकिन नहीं। हमारी युद्ध-मशीनरी और युद्ध की परिस्थिति के बीच अन्तरविरोध मौजूद है, जिसे हमें हल करना चाहिए। दुश्मन का मकसद है इस अन्तरविरोध को बढ़ाना, और इसीलिए वह "तीन तरह का सफाया करने"[1] की नीति अपना रहा है। अगर हमने अपनी विशाल मशीनरी बनाए रखी, तो हम सीधे दुश्मन के जाल में फंस जाएंगे। अगर हमने उसे छोटा कर दिया तथा बेहतर फौज और सरल प्रशासन पर अमल किया, तो हमारी युद्ध-मशीनरी छोटी होने के बावजूद मजबूत बनी रहेगी। इस अन्तरविरोध को हल करके, जो "एक बड़ी मछली और छिछले पानी" के बीच का अन्तरविरोध है, तथा अपनी युद्ध-मशीनरी को युद्ध की परिस्थिति के अनुकूल ढालकर हम और अधिक मजबूत साबित होंगे, और इस प्रकार दुश्मन द्वारा परास्त किए जाने के बदले अन्त में दुश्मन को ही परास्त कर देंगे। यही वजह है कि हम कहते हैं, पार्टी की केन्द्रीय कमेटी द्वारा पेश की गई "बेहतर फौज और सरल प्रशासन" की नीति एक अत्यन्त महत्वपूर्ण नीति है।

लेकिन आदमी का दिमाग परिस्थितियों और आदतों के बन्धन से जकड़ा होता है, जिससे क्रान्तिकारी भी हमेशा बचे नहीं रह सकते। इस विशाल मशीनरी को हमने खुद ही बनाया था, और यह बिलकुल नहीं सोचा था कि हमें खुद ही इसे छोटा करना पड़ेगा ; और आज जबकि ऐसा करने का समय आ गया है, हम संकोच में पड़ गए हैं और मुश्किल महसूस करते हैं। दुश्मन अपनी विशाल युद्ध-मशीनरी के जरिए हम पर दबाव डाल रहा है, ऐसी हालत में भला यह कैसे हो सकता है कि हम अपनी युद्ध-मशीनरी को छोटा कर दें ? अगर हम ऐसा करेंगे, तो हमें यह महसूस होगा कि दुश्मन का मुकाबला करने के लिए हमारी फौजें बहुत थोड़ी हैं। ऐसी आशंकाएं परिस्थितियों और आदतों के बन्धन में जकड़े होने का ही नतीजा होती हैं। जब मौसम बदलता है, तो उसी के मुताबिक कपड़े बदलना हमारे लिए जरूरी हो जाता है। हर वर्ष जब वसन्त के बाद गरमियां आती हैं, गरमियों के बाद शरद ऋतु आती है, शरद ऋतु के बाद सरदियां आती हैं और सरदियों के बाद वसन्त ऋतु आती है, तो हमें कपड़ों में तब्दीली करनी पड़ती है। लेकिन पुरानी आदत से मजबूर होकर लोग यह तब्दीली उचित समय पर नहीं कर पाते, और बीमार पड़ जाते हैं। आधार-क्षेत्रों की मौजूदा परिस्थिति की मांग है कि हम अपने सरदियों के कपड़े उतार दें और गरमियों के कपड़े पहन लें, ताकि हम फुर्ती से दुश्मन के खिलाफ लड़ सकें, लेकिन हम अब भी

भारी कपड़ों से लदे हुए हैं और लड़ने के लिए बिलकुल अनफिट हैं। जहां तक इस बात का ताल्लुक है कि दुश्मन की विशाल मशीनरी से कैसे निपटा जाए, इस सिलसिले में हम इस उदाहरण से सीख सकते हैं कि वानरराज ने राजकुमारी फौलादी-पंखा का मुकाबला कैसे किया था। राजकुमारी एक दुर्दमनीय दैत्य थी, लेकिन वानरराज ने एक छोटे से कीड़े का रूप धारण करके उसके पेट में प्रवेश कर लिया और उसे परास्त कर डाला।[२] ल्यू चुङ-य्वान द्वारा "क्वेइ-चओ का गधा"[३] में जो वर्णन किया गया है उससे भी बड़ा कीमती सबक मिलता है। एक विशालकाय गधा क्वेइचओ ले जाया गया, जिसे देखकर एक छोटा शेर डर गया। लेकिन अन्त में इस विशालकाय गधे को वह छोटा शेर खा गया। हमारी आठवीं राह सेना और नई चौथी सेना भी वानरराज अथवा छोटा शेर हैं, तथा वे जापानी दैत्य अथवा गधे से निपटने की पूरी सामर्थ्य रखती हैं। अब यह आवश्यक हो गया है कि हम कुछ रद्दोबदल करें और अपने आपको छोटा किन्तु मजबूत बना लें, और तब हम अपराजेय बन जाएंगे।

नोट

[१] "तीन तरह का सफाया करने" की नीति जापानी साम्राज्यवादियों द्वारा चीन के मुक्त क्षेत्रों में चलाई गई "सब कुछ जला डालने, सबको मार डालने और सब कुछ लूट लेने" की नीति थी।

[२] वानरराज सुन ऊ-खुङ ने एक छोटे कीड़े का रूप धारण करके राजकुमारी फौलादी-पंखा को जिसका दूसरा नाम लो छा था, कैसे परास्त किया, इसकी

कहानी के लिए देखिए चीनी उपन्यास "शी यओ ची" (पश्चिम की तीर्थयात्रा), अध्याय ५६।

[३] ल्यू चुङ-य्वान (७७३-८१६ ई०) थाङ वंश का एक महान लेखक था। "तीन नीतिकथाएं" नामक उसकी रचना में "क्वेइचओ का गधा" भी शामिल है, जिसमें यह बताया गया है कि क्वेइचओ के एक शेर ने जब पहली बार एक गधे को देखा तो वह घबरा गया। लेकिन जब उसे यह मालूम हुआ कि गधा महज रेंकने और दुलत्ती झाड़ने के सिवा और कुछ नहीं कर सकता, तो शेर उस पर टूट पड़ा और उसे खा गया।

दूसरे विश्वयुद्ध का मोड़*

१२ अक्तूबर १९४२

बरतानवी और अमरीकी अखबारों ने स्तालिनग्राद की मुहिम की तुलना वेरदुन की मुहिम से की है, और "लाल वेरदुन" अब सारी दुनिया में मशहूर हो गया है। असल में यह तुलना उचित नहीं है। स्तालिनग्राद की मुहिम का स्वरूप प्रथम विश्वयुद्ध की वेरदुन की मुहिम की तुलना में भिन्न है। लेकिन उनमें एक बात समान है जो इस प्रकार है : तब की तरह अब भी बहुत से लोग जर्मनी की आक्रमणात्मक कार्यवाही को देखकर इस मुगालते में पड़ गए हैं कि जर्मनी अब भी युद्ध जीत सकता है। १९१८ के जाड़ों में प्रथम विश्वयुद्ध की समाप्ति के दो वर्ष पहले, १९१६ में जर्मन सेनाओं ने फ्रांस के किले वेरदुन पर कई धावे बोले थे। वेरदुन की मुहिम में जर्मन सेनाओं का कमाण्डर-इन-चीफ जर्मन युवराज खुद था और मुहिम में झोंकी गई सेनाएं जर्मन सेनाओं का बेहतरीन हिस्सा थीं। यह मुहिम निर्णायक महत्व रखती थी। जर्मन सेनाओं की भीषण चढ़ाइयों के विफल हो जाने के बाद पूरे जर्मन-आस्ट्रियन-तुर्की-बलगेरियन गठजोड़ का कोई भविष्य नहीं रह गया और तभी

---

* यह सम्पादकीय कामरेड माओ त्सेतुङ ने येनान के "मुक्ति दैनिक" के लिए लिखा था।

से उसकी कठिनाइयां लगातार बढ़ती चली गई ; उसके अनुगामी उसे छोड़कर भाग गए, वह विघटित हो गया और पूर्ण विनाश के गर्त में पहुंच गया। लेकिन उस समय बरतानवी-अमरीकी-फ्रांसीसी गठजोड़ इस स्थिति को भांप नहीं पाया तथा वह तब भी यह समझता रहा कि जर्मन सेना अब भी बहुत शक्तिशाली है, और इस तरह वह अपनी शीघ्र ही आने वाली विजय से बेखबर रहा। इतिहास में, तमाम प्रतिक्रियावादी शक्तियां अपने सर्वनाश से पहले अनिवार्य रूप से क्रान्तिकारी शक्तियों के खिलाफ अन्तिम जीतोड़ संघर्ष करती हैं, तथा कुछ क्रान्तिकारी लोग उनकी बाहरी शक्तिशालिता और अन्दरूनी शक्तिहीनता से कुछ समय के लिए धोखा खा जाते हैं और इस सारभूत तथ्य को नहीं समझ पाते कि दुश्मन अपने विनाश के निकट पहुंचता जा रहा है जबकि वे खुद विजय के निकट पहुंचते जा रहे हैं। फासिस्टवादी शक्तियों का उत्थान और पिछले कुछ वर्षों से उनके द्वारा छेड़े गए आक्रमणकारी युद्ध, ये दोनों ही चीजें ठीक ऐसे ही अन्तिम जीतोड़ संघर्ष की अभिव्यक्ति हैं; और इस मौजूदा युद्ध में स्तालिनग्राद पर की गई चढ़ाई खुद फासिस्टवाद के अन्तिम जीतोड़ संघर्ष की ही अभिव्यक्ति है। इतिहास के इस मोड़ पर भी दुनिया के फासिस्ट-विरोधी मोर्चे के बहुत से लोग फासिस्टवाद की बाहरी खूंखार सूरत देखकर धोखे में आ गए हैं और उसकी अन्तर्वस्तु को समझ पाने में असमर्थ हैं। २३ अगस्त को पूरी जर्मन सेना ने दोन नदी की बांक पार की और स्तालिनग्राद पर चौतरफा रूप से चढ़ाई करना शुरू कर दिया। १५ सितम्बर को कुछ जर्मन टुकड़ियों ने नगर के उत्तर-पश्चिमी भाग के औद्योगिक क्षेत्र में प्रवेश कर लिया। ६ अक्तूबर को सोवियत सूचना ब्यूरो

ने ऐलान किया कि लाल सेना ने इस क्षेत्र में जर्मन घेरे को तोड़ दिया है। अड़तालीस दिन की इस अवधि में अतुलनीय रूप से कठोर लड़ाई जारी रही जिसकी मिसाल मानव-इतिहास में नहीं मिलती। आखिरकार यह मुहिम सोवियत सेना ने जीत ली। अड़तालीस दिन के इस काल के दौरान उस नगर से आने वाली हार अथवा जीत की हर खबर करोड़ों लोगों के चित्त को कभी चिन्ता से उद्विग्न कर देती थी तो कभी उल्लास से भर देती थी। यह मुहिम केवल सोवियत-जर्मन युद्ध का, यहां तक कि मौजूदा फासिस्ट-विरोधी विश्वयुद्ध का ही मोड़ नहीं, बल्कि पूरी मानव जाति के इतिहास का एक मोड़ है। इन अड़तालीस दिनों के पूरे दौर में दुनिया की जनता की निगाहें जितनी स्तालिनग्राद पर टिकी हुई थीं, उतनी पिछले अक्तूबर के दिनों में मास्को पर भी नहीं टिकी हुई थीं।

लगता है कि पश्चिमी मोर्चे पर अपनी जीत होने तक हिटलर शायद सावधानी बरतता रहा। पोलैण्ड पर चढ़ाई करते समय, नार्वे पर चढ़ाई करते समय, नीदरलैण्ड, बेलजियम और फ्रांस पर चढ़ाई करते समय तथा बलकान देशों पर चढ़ाई करते समय हिटलर ने एक समय में एक ही लक्ष्य पर अपनी सारी शक्ति केन्द्रित कर दी, अपने ध्यान को इधर-उधर बिखेरने का उसे साहस न हुआ। पश्चिमी मोर्चे पर जीत हासिल कर लेने के बाद, अपनी कामयाबी पर उसका दिमाग चढ़ गया और वह सोवियत संघ को तीन महीने के अन्दर ही परास्त कर डालने की कोशिश में जुट गया। इस विशाल और शक्तिशाली समाजवादी देश के उत्तर में मरमान्स्क से लेकर दक्षिण में क्रीमिया तक के पूरे मोर्चे पर उसने चढ़ाई कर दी और इस तरह अपनी सैन्य-शक्ति को इधर-उधर बिखेर दिया। पिछले

अक्तूबर में मास्को पर उसकी चढ़ाई की विफलता सोवियत-जर्मन युद्ध की पहली मंजिल की समाप्ति का द्योतक थी, और हिटलर की पहली रणनीतिक योजना धूल में मिल गई। पिछले साल लाल सेना ने जर्मन आक्रमण को रोक दिया और जाड़ों में समूचे मोर्चों पर प्रत्याक्रमण शुरू कर दिया; यह सोवियत-जर्मन युद्ध की दूसरी मंजिल थी, जिसके दौरान हिटलर अपने दांवपेंच बदलकर पीछे हटने और रक्षा करने की स्थिति में पहुंच गया। इस दौर में उसने अपने फील्ड कमाण्डर-इन-चीफ ब्राचित्श को बर्खास्त करने और कमान खुद ही सम्भाल लेने के बाद चौतरफा आक्रमण करने की अपनी योजना त्याग दी, पूरे योरप का कोना-कोना छानकर जितनी भी सैन्य-शक्ति जुटाई जा सकती थी सबको इकट्ठा कर लिया और फिर उस अन्तिम चढ़ाई की तैयारी की जो दक्षिणी मोर्चे तक ही सीमित होने के बावजूद, उसके खयाल से सोवियत संघ पर मार्मिक चोट करने वाली चढ़ाई थी। चूंकि यह चढ़ाई अपने स्वरूप में एक आखिरी चढ़ाई थी जिसमें फासिस्टवाद की किस्मत का फैसला होने वाला था, इसलिए हिटलर ने यथासम्भव बड़ी से बड़ी सेना केन्द्रित की, यहां तक कि उत्तरी अफरीका के युद्ध-मोर्चे से भी कुछ हवाईजहाज और टैंक बटोरकर इस ओर झोंक दिए। इस वर्ष मई में कर्च और सेवियास्तोपोल पर जर्मन चढ़ाई के साथ युद्ध ने अपनी तीसरी मंजिल में प्रवेश किया। १५,००,००० से भी अधिक सेना इकट्ठी करके हिटलर ने अपनी वायु-सेना और टैंक-सेना की मुख्य शक्ति की मदद से स्तालिनग्राद और काकेशिया पर अभूतपूर्व प्रचण्डता के साथ चढ़ाई कर दी। इन दोनों स्थानों को शीघ्रता से अपने कब्जे में कर लेने का प्रयास उसने इस दुहरे

इरादे से किया कि वह वोल्गा को काट दे और बाकू पर अधिकार कर ले, ताकि उसके बाद उत्तर में मास्को पर चढ़ाई कर सके और दक्षिण में फारस की खाड़ी तक बेरोकटोक बढ़ता जाए; साथ ही उसने जापानी फासिस्टों को भी यह निर्देश दिया कि वे मंचूरिया में अपनी सेनाओं का इस तैयारी के साथ जमाव कर रखें कि स्तालिनग्राद के पतन के बाद उधर से साइबेरिया पर चढ़ाई कर दी जाए। हिटलर ने ऐसे नामुमकिन मनसूबे बांध रखे थे कि सोवियत संघ को इस हद तक कमजोर बना दिया जाएगा कि जर्मन सेना की मुख्य शक्ति सोवियत रणभूमि से फारिग हो जाएगी और वह पश्चिमी मोर्चे पर बरतानवी-अमरीकी चढ़ाई से निबटने, निकट-पूर्व के साधन-स्रोत हथिया लेने और जापानियों के साथ मिलने में समर्थ हो जाएगी, और साथ ही उधर जापानी सेना की मुख्य शक्ति भी उत्तर से फारिग होकर अपने पृष्ठभाग की सुरक्षा से निश्चिन्त रहते हुए पश्चिम में चीन के विरुद्ध और दक्षिण में बरतानिया और अमरीका के विरुद्ध बढ़ेगी। फासिस्ट गठजोड़ को जिताने के लिए यही अन्दाज हिटलर ने लगा रखा था। लेकिन इस दौर में ऊंट किस करवट बैठा? हिटलर को पाला पड़ा सोवियत कार्यनीति से, जिसने उसका नसीब ही फोड़ दिया। सोवियत संघ ने पहले तो दुश्मन को भुलावा देकर अपने देश में दूर तक प्रवेश करने देने और फिर उसका जमकर प्रतिरोध करने की नीति अपनाई। पांच महीने की लड़ाई में जर्मन सेना न तो काकेशिया के तेल-क्षेत्रों में पैठ सकी और न ही स्तालिनग्राद पर अधिकार कर पाई। नतीजा यह हुआ है कि हिटलर को अपनी फौजें ऊंचे-ऊंचे पहाड़ों के सामने और एक अभेद्य नगर के बाहर रोके रखनी पड़ी हैं, जहां से वे न तो आगे बढ़ सकती हैं और

न पीछे ही हट सकती हैं; उन्हें जबरदस्त नुकसान उठाना पड़ा है और वे अन्धी गली में जा फंसी हैं। अक्तूबर आ पहुंचा है और जाड़े का मौसम आने में अब देर नहीं; जल्द ही युद्ध की तीसरी मंजिल समाप्त हो जाएगी और चौथी शुरू होगी। सोवियत संघ के विरुद्ध चढ़ाई करने की हिटलर की एक भी रणनीतिक योजना कामयाब नहीं हो पाई है। पिछले साल गरमियों में अपनी सेनाओं को कई मोर्चों पर बिखेरने के कारण हिटलर को जो विफलता प्राप्त हुई उसे ध्यान में रखते हुए उसने इस दौर में बस दक्षिणी मोर्चे पर ही अपनी ताकत समेटकर लगा दी है। लेकिन चूंकि उसने तब भी एक ही चोट में दो निशाने मार लेने चाहे थे, यानी पूर्व में वोल्गा को काट देना चाहा और दक्षिण में काकेशिया पर कब्जा कर लेना चाहा, इसलिए उसने फिर से अपनी फौजों को बिखेर डाला। वह इस बात को देख नहीं सका कि उसकी शक्ति उसकी आकांक्षा से मेल नहीं खाती, और अब उसका सर्वनाश अवश्यम्भावी है—"बहंगी के दोनों छोरों पर अगर गांठ न हो तो भार खिसककर गिर जाता है"। जहां तक सोवियत संघ का ताल्लुक है, वह जितना अधिक लड़ता है उतना ही अधिक उसका बल बढ़ता जाता है। स्तालिन की विवेकपूर्ण रणनीतिक कमान ने पहलकदमी पूरी तरह अपने हाथ में ले ली है और इस कारण हिटलर को हर कहीं विनाश का सामना करना पड़ रहा है। इस वर्ष जाड़ों में युद्ध की जो चौथी मंजिल शुरू होने वाली है, वह हिटलर के सर्वनाश की ओर जाने की मंजिल होगी।

युद्ध की पहली और तीसरी मंजिल के दौरान हिटलर की स्थिति की तुलना करने पर हम यह देख सकते हैं कि वह अपनी अन्तिम

हार के निकट पहुंच गया है। स्तालिनग्राद और काकेशिया, दोनों ही जगह लाल सेना ने जर्मन हमले को सचमुच रोक दिया है; स्तालिनग्राद और काकेशिया पर अपनी चढ़ाइयों में नाकाम रहने के बाद हिटलर अब थककर चूर होने को है। पिछले साल दिसम्बर से इस साल मई तक जाड़ोंभर जो सेना वह जैसे-तैसे बटोर पाया है, वह सारी की सारी झोंकी जा चुकी है। एक महीने से भी कम समय के भीतर सोवियत-जर्मन मोर्चे पर जाड़े का मौसम शुरू हो जाएगा और हिटलर को हड़बड़ाकर रक्षात्मक कार्यवाही की सोचनी पड़ेगी। दोन नदी के पश्चिम और दक्षिण की पूरी पट्टी उसका सबसे नाजुक क्षेत्र है और लाल सेना अपना प्रत्याक्रमण ठीक वहीं करेगी। आने वाले सर्वनाश से भयभीत होकर हिटलर इस वर्ष जाड़ों में एक बार फिर से अपनी सेना को पुनर्गठित करेगा। पूर्वी और पश्चिमी दोनों मोर्चों के खतरों से निबटने के लिए वह अपनी सेनाओं के बचेखुचे अंशों को बटोरकर, उन्हें लैस करके और उन्हें पुनर्गठित करके कुछ नई डिवीजनें कायम कर लेने में शायद कामयाब भी हो जाएगा, और इसके साथ ही वह अपने तीनों फासिस्ट शरीककारों—इटली, रूमानिया और हंगरी—के सामने भी सहायता के लिए हाथ पसारेगा और उनसे कुछ और जंगी ईंधन ऐंठेगा। जो भी हो, पूर्व में जाड़ों की लड़ाई का जबरदस्त नुकसान तो उसे उठाना ही पड़ेगा, और साथ ही पश्चिम में दूसरे मोर्चे के खड़े होने पर उससे भी निबटने के लिए तैयार रहना पड़ेगा, और उधर इटली, रूमानिया और हंगरी हिटलर का खेल खत्म होता देख निराशावाद के शिकार हो जाएंगे और दिन-पर-दिन उससे अलग हटते जाएंगे। थोड़े में यों कहिए कि ९ अक्तूबर के बाद हिटलर

के लिए बस एक ही रास्ता बच रहा है और वह है तबाह हो जाने का रास्ता।

इन अड़तालीस दिनों के दौरान लाल सेना ने जिस तरह स्तालिनग्राद की रक्षा की है, वह पिछले साल की गई मास्को की रक्षा से कुछ मिलती-जुलती है। मतलब यह कि इस वर्ष के लिए हिटलर ने जो योजना बनाई थी, वह भी उसी तरह से नाकाम कर दी गई है जिस तरह पिछले साल वाली उसकी योजना नाकाम कर दी गई थी। फिर भी एक अन्तर है और वह यह कि यद्यपि सोवियत जनता ने मास्को की रक्षा की मुहिम के बाद ही शीतकालीन प्रत्याक्रमण शुरू कर दिया था, तथापि इस वर्ष उसे जर्मन सेना का ग्रीष्मकालीन आक्रमण झेलना ही पड़ा, जिसका कारण कुछ तो यह था कि जर्मनी और उसके योरपीय शरीककारों की युद्ध-क्षमता अभी पूरी तरह खत्म नहीं हुई थी और कुछ यह कि बरतानिया और अमरीका ने दूसरा मोर्चा खड़ा करने में देर कर दी थी। लेकिन अब स्तालिनग्राद की रक्षा की मुहिम के बाद स्थिति पिछले साल की अपेक्षा बिलकुल भिन्न रहेगी। एक ओर तो सोवियत संघ दूसरा शीतकालीन प्रत्याक्रमण बड़े विशाल पैमाने पर कर देगा और दूसरा मोर्चा खड़ा करने के मामले में बरतानिया व अमरीका अब और देर नहीं कर पाएंगे (हालांकि उस मोर्चे के खड़े होने की ठीक-ठीक तारीख की पेशीनगोई अभी नहीं की जा सकती), तथा योरप की जनता इसके समर्थन में विद्रोह कर देने को तैयार रहेगी। दूसरी ओर जर्मनी और उसके योरपीय शरीककारों में अब इतना दम नहीं रह गया कि वे बड़े पैमाने का आक्रमण कर सकें, और हिटलर को झख मारकर अपनी पूरी नीति का रुख मोड़ना पड़ेगा और रणनीतिक रक्षा की राह अपनानी पड़ेगी। एक बार हिटलर रणनीतिक रक्षा की राह अपनाने को मजबूर हो गया, तो फिर फासिस्टवाद का विनाश लगभग निश्चित हो जाएगा। हिटलर के राज्य जैसा हर कोई फासिस्ट राज्य अपने जन्म-काल से ही अपने राजनीतिक और फौजी जीवन का आधार आक्रमणात्मक कार्यवाही को ही बनाता है और उसकी आक्रमणात्मक कार्यवाही का अन्त होते ही उसके जीवन का भी अन्त हो जाता है। स्तालिनग्राद की मुहिम फासिस्टवाद की आक्रमणात्मक कार्यवाही का अन्त कर देगी और इस नाते यह एक निर्णयात्मक मुहिम है। यह मुहिम पूरे विश्वयुद्ध के लिए एक निर्णयात्मक मुहिम है।

हिटलर को तीन शक्तिशाली दुश्मनों का सामना करना पड़ रहा है; वे हैं सोवियत संघ, बरतानिया व अमरीका, और जर्मन-अधिकृत क्षेत्रों की जनता। पूर्वी मोर्चे पर चट्टान की तरह अडिग लाल सेना खड़ी है, जिसका प्रत्याक्रमण दूसरे जाड़ों के मौसम भर लगातार जारी रहेगा और जाड़ों का यह मौसम बीत चुकने के बाद भी जारी रहेगा; यही वह शक्ति है जो पूरे युद्ध के परिणाम का और मानव जाति के भाग्य का फैसला करेगी। पश्चिमी मोर्चे पर हालांकि बरतानिया और अमरीका अभी भी दूर खड़े तमाशा देखते रहने और टालमटोल करने की नीति पर ही चल रहे हैं, फिर भी जब मरे हुए बाघ को पीटने का वक्त आ जाएगा तब तो आखिरकार दूसरा मोर्चा खुल ही जाएगा। और फिर हिटलर-विरोधी अन्दरूनी मोर्चा भी है – जनता के उस महान जन-विद्रोह का मोर्चा, जिसकी आग जर्मनी में, फ्रांस में और योरप के दूसरे भागों में सुलग रही है; ज्योंही सोवियत संघ चौतरफा प्रत्याक्रमण

शुरू कर देगा और दूसरे मोर्चे पर तोपें गरजने लगेंगी, त्योंही यह सारी जनता भी इसके समर्थन में तीसरा मोर्चा खड़ा कर देगी। इस तरह हिटलर पर तीन ओर से किए जाने वाले हमलों के वार एक साथ आ पड़ेंगे ; ऐसी है वह महान ऐतिहासिक प्रक्रिया जो स्तालिनग्राद की मुहिम के बाद शुरू हो जाएगी।

नेपोलियन के राजनीतिक जीवन का अन्त तो वाटरलू में हुआ, लेकिन मास्को में हुई उसकी हार ही वास्तव में उसके राजनीतिक जीवन का निर्णायक मोड़ थी।[१] आज हिटलर भी नेपोलियन की ही लीक पर चल रहा है, और यह स्तालिनग्राद की मुहिम ही है जिसने उसकी मौत की घण्टी बजा दी है।

इस परिस्थिति-विकास का प्रत्यक्ष प्रभाव सुदूरपूर्व पर भी पड़ेगा। अगला वर्ष जापानी फासिस्टवाद के लिए भी कोई शुभ वर्ष न होगा। ज्यों-ज्यों समय बीतता जाएगा, उसका सरदर्द भी बढ़ता जाएगा और अन्त में उसे कब्र में पहुंचकर ही चैन मिलेगा।

विश्व-परिस्थिति के बारे में जिस किसी का भी दृष्टिकोण निराशावादी हो, उसे चाहिए कि वह अपना दृष्टिकोण बदल डाले।

नोट

[१] जून १८१५ में, बेलजियम के दक्षिणी भाग में वाटरलू नामक स्थान पर नेपोलियन तथा बरतानिया-प्रशिया की संश्रयबद्ध सेना के बीच घमासान लड़ाई हुई। नेपोलियन पराजित हुआ और उसको दक्षिणी अटलान्टिक महासागर में स्थित सेन्ट हेलेना द्वीप में जलावतन कर दिया गया और १८२१ में वहीं उसकी मृत्यु हो गई। अपने जीवन-काल में नेपोलियन ने बहुत से योरपीय देशों को गुलाम

बनाया था। लेकिन १८१२ में रूस के विरुद्ध अपने आक्रमणकारी युद्ध में, उसे मास्को में मुंह की खानी पड़ी और उसकी चुनिन्दा फौजों का लगभग पूरी तरह सफाया कर दिया गया। इस चोट से नेपोलियन सदा के लिए पस्त हो गया। नेपोलियन की मास्को पराजय के बारे में देखिए "माम्रो त्सेतुङ की संकलित रचनाएं" ग्रन्थ २ में "दीर्घकालीन युद्ध के बारे में" शीर्षक लेख का नोट २३।

अक्तूबर क्रान्ति की पच्चीसवीं जयन्ती के उपलक्ष में

६ नवम्बर १९४२

इस वर्ष अक्तूबर क्रान्ति की जयन्ती हम लोग अत्यन्त आशावाद के साथ मना रहे हैं। मुझे पक्का यकीन है कि यह जयन्ती न सिर्फ सोवियत-जर्मन युद्ध के एक नए मोड़ की द्योतक है बल्कि फासिस्ट मोर्चे के खिलाफ सारी दुनिया के फासिस्ट-विरोधी मोर्चे की विजय के एक नए मोड़ की भी द्योतक है।

हिटलर इससे पूर्व अपनी आक्रमणात्मक कार्यवाही इसलिए जारी रख सका और वह इसलिए पराजित नहीं हुआ, क्योंकि लाल सेना फासिस्ट जर्मनी और उसके योरपीय सहअपराधियों का प्रतिरोध करने में अकेली थी। अब युद्ध के दौरान सोवियत संघ और अधिक शक्तिशाली बन गया है और हिटलर की दूसरी ग्रीष्मकालीन आक्रमणात्मक कार्यवाही असफल हो गई है। अब से दुनिया के फासिस्ट-विरोधी मोर्चे का कार्य है फासिस्ट मोर्चे के खिलाफ आक्रमणात्मक कार्यवाही करना तथा फासिस्टवाद को अन्तिम रूप से परास्त कर देना।

स्तालिनग्राद में लाल सेना के योद्धाओं ने अदभुत वीरतापूर्ण कारनामे दिखाए हैं, जो मानव जाति के भाग्य पर असर डालेंगे।

वे लोग अक्तूबर क्रान्ति की सन्तान हैं। अक्तूबर क्रान्ति का झण्डा अपराजेय है, तथा तमाम फासिस्टवादी शक्तियों का सर्वनाश निश्चित है।

लाल सेना की विजय की खुशी मनाते समय हम चीन के लोग अपनी खुद की विजय की खुशी भी मना रहे हैं। हमारा जापानी-आक्रमण-विरोधी युद्ध पिछले पांच वर्ष से चल रहा है, तथा हालांकि अभी हमारे सामने बहुत सी कठिनाइयां मौजूद हैं फिर भी विजय का प्रभात सामने नजर आने लगा है। जापानी फासिस्टों पर हमारी विजय न सिर्फ निश्चित है बल्कि ज्यादा दूर भी नहीं।

यह चीनी जनता का काम है कि वह अपनी तमाम कोशिशों को जापानी फासिस्टों को परास्त करने पर केन्द्रित कर दे।

जापानी-आक्रमण-विरोधी युद्ध में आर्थिक और वित्तीय समस्याएं*

दिसम्बर १९४२

हमारे आर्थिक और वित्तीय कार्य का मार्गदर्शन करने वाली आम नीति है अर्थव्यवस्था का विकास करना और रसद-सप्लाई की गारन्टी करना। लेकिन हमारे बहुत से साथी सार्वजनिक वित्त पर एकतरफा जोर देते हैं तथा समूची अर्थव्यवस्था के महत्व को नहीं समझते ; केवल राजस्व और व्यय के मामलों में उलझे रहने के कारण, वे भरपूर कोशिश करने पर भी किसी समस्या का हल नहीं खोज पाते। इसकी वजह यह है कि उनके दिमाग में एक घिसापिटा रूढ़िवादी विचार उत्पात मचा रहा है। वे लोग यह नहीं जानते कि जहां एक तरफ एक अच्छी अथवा बुरी वित्तीय नीति का अर्थ-व्यवस्था पर असर पड़ता है, वहां दूसरी तरफ यह अर्थव्यवस्था ही है जो वित्तीय स्थिति का निर्णय करती है। एक पुख्ता बुनियाद वाली

* यह लेख, जिसका मूल शीर्षक "हमारे पिछले कार्य का बुनियादी निचोड़" था, "आर्थिक और वित्तीय समस्याएं" शीर्षक उस रिपोर्ट का पहला अध्याय था जिसे कामरेड माओ त्सेतुङ ने शेनशी-कानसू-निङश्या सीमान्त क्षेत्र के वरिष्ठ कार्यकर्ताओं के एक सम्मेलन में पेश किया। जापानी-आक्रमण-विरोधी युद्ध में मुक्त क्षेत्रों के लिए १९४१ और १९४२ सबसे ज्यादा कठिन वर्ष थे। जापानी

अर्थव्यवस्था के बिना वित्तीय कठिनाइयों को दूर करना असम्भव है, और एक विकासशील अर्थव्यवस्था के बिना वित्तीय जरूरतें पूरी करना असम्भव है। शेनशी-कानसू-निङश्या सीमान्त क्षेत्र की वित्तीय समस्या है दसियों हजार सैनिकों व असैनिक कर्मचारियों के रहन-सहन और उनकी कार्यवाहियों के लिए धन जुटाना, दूसरे शब्दों में, जापानी-आक्रमण-विरोधी युद्ध करने के लिए धन जुटाना। इस धन का कुछ अंश जनता द्वारा दिए गए टैक्सों से जुटाया जाता है तथा कुछ अंश दसियों हजार सैनिकों व असैनिक कर्मचारियों द्वारा किए गए उत्पादन-कार्य से जुटाया जाता है। अगर हमने अर्थव्यवस्था के निजी क्षेत्र और सार्वजनिक क्षेत्र इन दोनों का विकास न किया, तो हम महज अपने खात्मे के करीब पहुंचते जाएंगे। वित्तीय कठिनाइयों पर काबू पाने का सिर्फ यही उपाय है कि वास्तविक हालात के मुताबिक और कारगर रूप से आर्थिक विकास किया

आक्रमणकारियों के वहशियाना हमलों और क्वोमिन्ताङ की घेरेबन्दी व नाकेबन्दी के कारण मुक्त क्षेत्रों को भारी वित्तीय कठिनाइयों का सामना करना पड़ा। कामरेड माओ त्सेतुङ ने बताया कि वित्तीय और आर्थिक कठिनाइयों पर विजय पाने के उद्देश्य से पार्टी के लिए यह जरूरी है कि वह कृषि-उत्पादन व उत्पादन की अन्य शाखाओं का विकास करने में जनता का नेतृत्व करने की भरपूर कोशिश करे, तथा उन्होंने मुक्त क्षेत्रों की सरकार व अन्य संगठनों, विद्यालयों और फौजी यूनिटों का आवाहन किया कि वे अपनी जरूरतें पूरी करने के लिए ज्यादा से ज्यादा उत्पादन करें। कामरेड माओ त्सेतुङ की "आर्थिक और वित्तीय समस्याएं" शीर्षक पुस्तिका तथा उनके "आधार-क्षेत्रों में लगान कम करने, उत्पादन बढ़ाने तथा 'सरकार का समर्थन करने और जनता के साथ आत्मीयता बढ़ाने' के आन्दोलन फैलाओ" और "संगठित हो जाओ !" शीर्षक लेख मुक्त क्षेत्रों में उत्पादन आन्दोलन का नेतृत्व करने के लिए पार्टी का बुनियादी प्रोग्राम बन गए। कामरेड

जाए। आर्थिक विकास को और वित्तीय स्रोतों को खोलने के काम को नजरअन्दाज करना तथा इसके बदले आवश्यक खर्च में कटौती करके वित्तीय कठिनाइयों को दूर करने की उम्मीद करना एक रूढ़िवादी विचार है जिससे कोई भी समस्या हल नहीं होती।

पिछले पांच वर्षों में हम कई मंजिलों से गुजर चुके हैं। हमारे सामने सबसे ज्यादा गम्भीर कठिनाइयां १६४० और १६४१ में आ खड़ी हुईं जब क्वोमिन्ताङ ने अपनी दो कम्युनिस्ट-विरोधी मुहिमों के जरिए टकराव पैदा कर दिया। कुछ समय तक हमारे यहां कपड़े-लत्ते, खाद्य-तेल, कागज व साग-भाजी, सैनिकों के जूतों व मोजों और असैनिक कर्मचारियों के जाड़ों के बिस्तर की भारी कमी बनी रही। हमें प्राप्त होने वाले धन को काटकर और हमारे खिलाफ आर्थिक नाकेबन्दी करके क्वोमिन्ताङ ने हमारा गला घोंटने की कोशिश की ; हम लोग सचमुच भारी मुश्किल में फंस गए।

माओ त्सेतुङ ने यहां उस गलत विचार की, जिसके अनुसार आर्थिक विकास की उपेक्षा करके सार्वजनिक राजस्व और व्यय पर ध्यान केन्द्रित किया जाता है, तथा उस गलत कार्यशैली की, जिसके अनुसार उत्पादन बढ़ाने और कठिनाइयों पर विजय प्राप्त करने के लिए जनता को गोलबन्द किए बिना और उसकी मदद किए बिना उससे मांग ही मांग की जाती है, अत्यन्त कड़ी आलोचना की है, तथा "अर्थव्यवस्था का विकास करने और रसद-सप्लाई की गारन्टी करने" की पार्टी की सही नीति पेश की है। इस नीति के जरिए उत्पादन आन्दोलन में भारी कामयाबियां हासिल की गईं, जिसका विकास शेनशी-कानसू-निङश्या सीमान्त क्षेत्र में और दुश्मन के पृष्ठभाग में स्थित मुक्त क्षेत्रों में किया गया। इससे न सिर्फ मुक्त क्षेत्रों की सेना और जनता युद्ध के सबसे कठिन काल का सामना करने में समर्थ बन गईं, बल्कि बाद के वर्षों में भी आर्थिक निर्माण का नेतृत्व करने के लिए पार्टी को समृद्ध अनुभव प्राप्त हो सका।

लेकिन हमने कठिनाइयों पर काबू पा लिया। हमें न सिर्फ सीमान्त क्षेत्र की जनता से अनाज प्राप्त हुआ बल्कि खास तौर पर हमने दृढ़ता के साथ खुद अपने ही हाथों से अपनी अर्थव्यवस्था के सार्वजनिक क्षेत्र का निर्माण किया। सीमान्त क्षेत्र की सरकार ने अपनी जरूरतें पूरी करने के लिए अनेक उद्योग-धन्धे कायम किए ; फौजी यूनिटों ने व्यापक उत्पादन आन्दोलन चलाया और अपनी खुद की जरूरतें पूरी करने के लिए कृषि, उद्योग व वाणिज्य का विस्तार किया ; तथा विभिन्न संगठनों व विद्यालयों के दसियों हजार लोगों ने भी अपनी जरूरतें पूरी करने के लिए इसी प्रकार की आर्थिक गतिविधि का विकास किया। यह आत्मनिर्भरता वाली अर्थव्यवस्था, जिसका विकास फौजी यूनिटों और विभिन्न संगठनों व विद्यालयों ने किया है, आज की विशेष परिस्थिति की विशेष उपज है। अन्य ऐतिहासिक परिस्थितियों में यह अनुपयुक्त और कल्पना से परे है, लेकिन इस समय यह बिलकुल उपयुक्त और आवश्यक है। ऐसे ही उपायों से हम अपनी कठिनाइयां दूर करते रहे हैं। क्या ये निर्विवाद ऐतिहासिक तथ्य इस सच्चाई को साबित नहीं करते कि रसद-सप्लाई की गारन्टी केवल आर्थिक विकास के जरिए ही की जा सकती है ? हालांकि हमारे सामने अब भी बहुत सी कठिनाइयां मौजूद हैं, फिर भी हमारी अर्थव्यवस्था के सार्वजनिक क्षेत्र की बुनियाद कायम की जा चुकी है। एक और वर्ष बीतने के बाद, १९४३ के अन्त तक, यह बुनियाद और अधिक मजबूत हो जाएगी।

अर्थव्यवस्था का विकास करना एक सही कार्यदिशा है, लेकिन विकास करने का मतलब यह नहीं कि अन्धाधुन्ध अथवा बेतुके ढंग से विस्तार कर लिया जाए। कुछ साथी, जो यहां की मौजूदा

ठोस परिस्थिति को नजरअन्दाज करते हैं, विकास के बारे में व्यर्थ की चीख-पुकार मचा रहे हैं ; मिसाल के लिए, वे लोग भारी उद्योग की स्थापना की मांग कर रहे हैं तथा नमक और हथियार बनाने वाले विशाल उद्योगों की स्थापना की योजनाएं पेश कर रहे हैं, जो सभी अमल में लाने लायक और मंजूर करने लायक नहीं हैं। विकास के बारे में जो कार्यदिशा पार्टी ने पेश की है वही सही कार्यदिशा है ; उसमें जहां एक तरफ घिसेपिटे रूढ़िवादी विचारों का विरोध किया गया है वहां दूसरी तरफ भारी-भरकम, खोखली और अव्यावहारिक योजनाओं का भी विरोध किया गया है। यही वित्तीय व आर्थिक कार्य के क्षेत्र में दो मोर्चों पर पार्टी का संघर्ष है।

जहां एक ओर हमें अपनी अर्थव्यवस्था के सार्वजनिक क्षेत्र का विकास करना चाहिए, वहां दूसरी ओर हमें जनता द्वारा की जाने वाली सहायता के महत्व को भी नहीं भूलना चाहिए। उसने हमें १९४० में ९०,००० तान, १९४१ में २,००,००० तान और १९४२ में १,६०,००० तान अनाज दिया,[1] तथा इस प्रकार हमारे सैनिकों व असैनिक कर्मचारियों का खुराक का मसला हल करने की गारन्टी कर दी। १९४१ के अन्त तक, हमारी कृषि के सार्वजनिक क्षेत्र में अनाज का उत्पादन बहुत कम था तथा हम लोग अनाज के लिए जनता पर निर्भर रहते थे। हमें सेना को इस बात के लिए प्रेरित करना चाहिए कि वह अनाज का उत्पादन बढ़ाए, लेकिन कुछ समय तक हमें इसके लिए मुख्य रूप से जनता पर ही निर्भर रहना होगा। हालांकि शेनशी-कानसू-निङश्या सीमान्त क्षेत्र पृष्ठभाग में है और उसे प्रत्यक्ष युद्ध का नुकसान नहीं उठाना पड़ा है, लेकिन उसकी कुल आबादी सिर्फ १५,००,००० है, जो इतने बड़े इलाके के लिए बहुत थोड़ी आबादी है,

तथा इतने ज्यादा अनाज को मुहय्या करना उसके लिए आसान नहीं है। इसके अलावा जनता हमारे लिए नमक की ढुलाई करती है अथवा नमक-ढुलाई लेवी देती है, तथा १९४१ में उसने ५० लाख य्वान के सरकारी बौण्ड भी खरीदे ; यह सब कोई कम बोझ नहीं है। प्रतिरोध-युद्ध और राष्ट्रीय पुनर्निर्माण की जरूरतें पूरी करने के लिए, जनता को इस तरह का बोझ अपने कन्धे पर उठाना होगा, जिसकी आवश्यकता को वह बखूबी समझती है। जब सरकार बहुत भारी कठिनाइयों का सामना कर रही हो, तो यह जरूरी हो जाता है कि जनता से और अधिक भार उठाने को कहा जाए, तथा जनता भी इस बात को समझती है। लेकिन जनता से वसूल करने के साथ-साथ हमें उसका घाटा पूरा करने और अर्थव्यवस्था का विस्तार करने में उसकी मदद भी करनी चाहिए। तात्पर्य यह कि जनता को कृषि, पशुपालन, दस्तकारी, नमक उद्योग और वाणिज्य का विकास करने में मदद देने के लिए समुचित कदम और तरीके अपनाए जाने चाहिए, ताकि वह हमें देने के साथ-साथ खुद भी हासिल करती जाए, जितना हमें दे उससे ज्यादा हासिल कर ले ; केवल इसी तरह हम जापान के खिलाफ एक दीर्घकालीन युद्ध का बोझ सहन कर सकेंगे।

युद्ध की आवश्यकताओं की उपेक्षा करके कुछ साथी केवल इस बात पर जोर देते हैं कि सरकार को "दयालुता" की नीति अपनानी चाहिए। यह एक गलत धारणा है। क्योंकि जब तक हम जापानी-आक्रमण-विरोधी युद्ध में विजय प्राप्त नहीं करते, तब तक इस प्रकार की "दयालुता" से जनता को कोई फायदा नहीं होगा और सिर्फ जापानी साम्राज्यवादियों को ही फायदा होगा। इसके विपरीत, हालांकि जनता को फिलहाल भारी बोझ उठाना पड़ रहा है, लेकिन

जैसे-जैसे सरकार और फौजों के सामने मौजूद कठिनाइयां दूर होती जाएंगी, प्रतिरोध-युद्ध में अविचल रहा जाएगा और दुश्मन को परास्त किया जाएगा, वैसे-वैसे जनता के लिए हालत सुधरती जाएगी ; और इसी में क्रान्तिकारी सरकार की सच्ची दयालुता निहित है।

दूसरी गलत धारणा है "मछली पकड़ने के लिए सारे तालाब को खाली कर देना", यानी जनता से बेअन्त मांग करना, उसकी कठिनाइयों की उपेक्षा करना और केवल सरकार व सेना की ही जरूरतों पर ध्यान देना। यह क्वोमिन्ताङ का सोचने का तरीका है, जिसे हमें हरगिज नहीं अपनाना चाहिए। हालांकि हमने अस्थाई रूप से जनता का बोझ बढ़ा दिया है, लेकिन हमने अपनी अर्थव्यवस्था के सार्वजनिक क्षेत्र का निर्माण करना फौरन शुरू कर दिया है। १९४१ और १९४२ में सेना, सरकार व अन्य संगठनों और विद्यालयों ने अपनी ज्यादातर जरूरतों को खुद अपने ही प्रयत्नों से पूरा कर लिया। यह एक शानदार उपलब्धि है, जो चीन के इतिहास में बेमिसाल है, तथा यह हमारी अपराजेयता के लिए भौतिक आधार बनाती है। हमें आत्मनिर्भर बनाने वाली आर्थिक गतिविधि जितनी ज्यादा बढ़ती जाएगी, उतना ही ज्यादा हम जनता का टैक्स का बोझ हल्का कर सकेंगे। पहली मंजिल में, १९३७ से १९३९ तक, हमने जनता से बहुत कम लिया ; इस मंजिल में जनता काफी शक्ति का निर्माण कर सकी। दूसरी मंजिल में, १९४० से १९४२ तक, जनता पर बोझ बढ़ गया। तीसरी मंजिल १९४३ में शुरू होगी। आने वाले दो वर्षों में, १९४३ और १९४४ में, अगर हमारी अर्थव्यवस्था का सार्वजनिक क्षेत्र बढ़ता रहा तथा अगर शेनशी-कानसू-निङश्या सीमान्त क्षेत्र में हमारी समूची अथवा अधिकांश फौजें कृषि-उत्पादन

में जुटने की स्थिति में रहीं, तो १९४४ के अन्त से जनता का बोझ फिर एक बार हल्का हो जाएगा तथा वह फिर अपनी शक्ति का निर्माण कर सकेगी। यह एक सम्भावना है, जिसे हमें असलियत में बदल देना चाहिए।

हमें सभी एकतरफा विचारों का खण्डन करना चाहिए तथा हमारी पार्टी का यह सही नारा पेश करना चाहिए, "अर्थव्यवस्था का विकास करो और रसद-सप्लाई की गारन्टी करो"। सार्वजनिक हित और निजी हित के बीच के सम्बन्धों के बारे में हमारे नारे ये हैं, "सार्वजनिक हित और निजी हित दोनों का खयाल रखो" अथवा "सैनिकों और असैनिक लोगों दोनों का खयाल रखो"। हम केवल इसी प्रकार के नारों को सही मानते हैं। हम अपनी अर्थव्यवस्था के सार्वजनिक और निजी क्षेत्रों का यथार्थ और व्यावहारिक ढंग से विस्तार करके ही अपनी वित्तीय जरूरतों को पूरा करने की गारन्टी कर सकते हैं। कठिन समय आने पर भी हमें इस बात पर ध्यान देना चाहिए कि टैक्स की एक सीमा निर्धारित कर दें, ताकि उसका बोझ भारी होने पर भी जनता को न सताए। और ज्योंही सम्भव हो, हमें यह बोझ हल्का कर देना चाहिए, ताकि जनता अपनी शक्ति का निर्माण कर सके।

क्वोमिन्ताङ के कट्टरपंथी यह समझते हैं कि सीमान्त क्षेत्र में निर्माण-कार्य करना बिलकुल व्यर्थ है तथा यहां की कठिनाइयों पर विजय पाना नामुमकिन है ; वे यह आस लगाए बैठे हैं कि सीमान्त क्षेत्र किसी भी दिन खत्म हो जाएगा। इस तरह के लोगों से बहस करना बेकार है ; हमारे "खत्म होने" का दिन देखने की उनकी अभिलाषा कभी पूरी नहीं होगी तथा हम लोग निश्चित रूप से अधिकाधिक खुशहाल होते जाएंगे। वे लोग यह नहीं समझते कि कम्युनिस्ट पार्टी और सीमान्त क्षेत्र की क्रान्तिकारी सरकार के नेतृत्व में जन-समुदाय हमेशा पार्टी और सरकार को अपना समर्थन प्रदान करता रहता है। तथा पार्टी और सरकार आर्थिक व वित्तीय कठिनाइयों पर, चाहे वे कितनी ही गम्भीर क्यों न हों, विजय पाने का कोई न कोई उपाय हमेशा खोज निकालती है। वास्तव में हम अपनी कुछ पिछली कठिनाइयों पर काबू पा चुके हैं और जल्दी ही बाकी कठिनाइयों पर भी काबू पा लेंगे। अतीत काल में हम इससे कई गुनी ज्यादा बड़ी कठिनाइयों का सामना कर चुके हैं और उन सब पर काबू पा चुके हैं। रोजमर्रा होने वाली भीषण लड़ाई के कारण, उत्तरी और मध्य चीन में स्थित हमारे आधार-क्षेत्र अब शेनशी-कानसू-निङश्या सीमान्त क्षेत्र के मुकाबले कहीं अधिक बड़ी कठिनाइयों का सामना कर रहे हैं, लेकिन फिर भी हम इन क्षेत्रों में साढ़े पांच साल से जमे हुए हैं तथा विजय प्राप्त होने तक लगातार जमे रह सकते हैं। हमारे लिए निराश होने का कोई आधार नहीं है ; हम हर किस्म की कठिनाई पर विजय पा सकते हैं।

शेनशी-कानसू-निङश्या सीमान्त क्षेत्र के वरिष्ठ कार्यकर्ताओं के वर्तमान सम्मेलन के बाद, हम "बेहतर फौज और सरल प्रशासन"[१] की नीति पर अमल करेंगे। इस नीति पर सख्ती से, गहराई से और व्यापक रूप से अमल किया जाना चाहिए, न कि बेमन से, सतही रूप से अथवा आंशिक रूप से। इस पर अमल करते समय, हमें सरलीकरण, एकीकरण, कार्य-कुशलता, किफायत और नौकरशाही-विरोध इन पांच उद्देश्यों को पूरा करना चाहिए। इन पांच उद्देश्यों का हमारे आर्थिक व वित्तीय कार्य पर अत्यन्त महत्वपूर्ण प्रभाव पड़ेगा।

सरलीकरण से गैर-उत्पादक खर्चे कम हो जाएंगे और उत्पादन-कार्य से होने वाली आमदनी बढ़ जाएगी ; इसका न सिर्फ हमारी वित्तीय स्थिति पर प्रत्यक्ष रूप से अच्छा प्रभाव पड़ेगा, बल्कि आर्थिक दृष्टि से भी जनता का बोझ हल्का होगा और उसे फायदा होगा। अपने आर्थिक व वित्तीय ढांचे में, हमें एकीकरण की कमी, स्वतंत्रता पर अत्यधिक जोर देने और तालमेल की कमी जैसी बुराइयों पर काबू पा लेना चाहिए तथा एक ऐसी कार्य-व्यवस्था कायम करनी चाहिए जो एकीकृत और सुनिर्देशित हो तथा जो हमारी नीतियों व विनियमों पर पूरी तरह अमल करने की इजाजत देती हो। इस प्रकार की एकीकृत व्यवस्था कायम करने से कार्य-कुशलता बढ़ जाएगी। हमारे सभी संगठनों को, और खास तौर पर उन संगठनों को जो आर्थिक व वित्तीय कार्य में लगे हुए हैं, किफायत पर ध्यान देना चाहिए। किफायत पर अमल करके हम बहुत से गैरजरूरी व फालतू खर्च खत्म कर सकते हैं, जो शायद करोड़ों य्वान में हैं। आर्थिक व वित्तीय कार्य में लगे हुए लोगों को अब तक बचे हुए नौकरशाहाना तौर-तरीकों पर काबू पा लेना चाहिए, जिनमें से कुछ तौर-तरीके, जैसे भ्रष्टाचार व घूसखोरी, भारी-भरकम संगठन, निरर्थक "प्रतिमानीकरण" और लाल फीताशाही, अत्यन्त गम्भीर हैं। अगर हमने इन पांच उद्देश्यों को पार्टी, सरकार और सेना के अन्दर प्राप्त कर लिया, तो "बेहतर फौज और सरल प्रशासन" की हमारी नीति का मकसद पूरा हो जाएगा, हमारी कठिनाइयां अवश्य दूर हो जाएंगी तथा हम उन लोगों का, जो यह बकवास करते हैं कि हमारे "खत्म होने" के दिन करीब आ रहे हैं, मुंह बन्द कर सकेंगे।

नोट

१ ये आंकड़े उस कृषि-टैक्स (सार्वजनिक अनाज) के हैं जिसे शेनशी-कानसू-निङश्या सीमान्त क्षेत्र के किसानों ने १९४० से १९४२ तक अदा किया था।

२ "बेहतर फौज और सरल प्रशासन" के लिए देखिए इसी ग्रन्थ में "एक अत्यन्त महत्वपूर्ण नीति" शीर्षक लेख।

नेतृत्व के तरीकों से सम्बन्धित कुछ सवाल*

१ जून १९४३

१. हम कम्युनिस्टों को अपने किसी भी कार्य को करने के लिए दो प्रकार के तरीके अपनाने चाहिए। पहला है सामान्य को विशेष से मिलाने का तरीका; दूसरा है नेतृत्व को जन-समुदाय से मिलाने का तरीका।

२. यदि किसी कार्य को करने का सामान्य और व्यापक आवाहन नहीं किया जाता, तो व्यापक जनता को कार्यवाही करने के लिए गोलबन्द नहीं किया जा सकता। लेकिन यदि नेतृत्वकारी पदों पर काम करने वाले लोग अपनी गतिविधियों को केवल सामान्य आवाहन तक ही सीमित रखते हैं – यदि वे कुछ संगठनों में जाकर उस कार्य में, जिसका आवाहन किया गया है, गहराई से और ठोस रूप से स्वयं भाग नहीं लेते, किसी एक जगह पर उस आवाहन को व्यावहारिक रूप नहीं देते, अनुभव प्राप्त नहीं करते और अन्य इकाइयों का मार्ग-दर्शन करने के लिए उन अनुभवों का उपयोग नहीं करते – तो अपने सामान्य आवाहन के अचूकपन को परखने या उसकी अन्तर्वस्तु को

* नेतृत्व के तरीकों के बारे में यह निर्णय कामरेड माओ त्सेतुङ ने चीनी कम्युनिस्ट पार्टी की केन्द्रीय कमेटी के लिए लिखा था।

समृद्ध बनाने का कोई जरिया उनके पास नहीं रह जाएगा तथा यह खतरा भी बना रहेगा कि उस आवाहन का कोई नतीजा ही न निकले। मिसाल के तौर पर १९४२ में चलाए गए दोष-निवारण आन्दोलन के दौरान जहां कहीं सामान्य आवाहन को विशेष और ठोस मार्ग-दर्शन से मिलाने का तरीका अपनाया गया वहां उसके ठोस नतीजे निकले, और जहां कहीं इस तरीके को नहीं अपनाया गया वहां कोई भी नतीजा हासिल नहीं किया जा सका। १९४३ में चलाए जाने वाले दोष-निवारण आन्दोलन के दौरान, केन्द्रीय कमेटी के प्रत्येक ब्यूरो और उप-ब्यूरो को तथा पार्टी की प्रत्येक क्षेत्रीय कमेटी और प्रिफेक्चर-कमेटी को सामान्य आवाहन करने (समूचे वर्ष के लिए दोष-निवारण कार्य की योजना प्रस्तुत करने) के साथ-साथ निम्नांकित कार्य भी करने चाहिए तथा उनको करते हुए व्यावहारिक अनुभव प्राप्त करना चाहिए। अपने संगठन की तथा अन्य निकटवर्ती संगठनों, विद्यालयों या फौजी यूनिटों की दो या तीन इकाइयों को (किन्तु बहुत अधिक इकाइयों को नहीं) चुन लो। इन इकाइयों की स्थिति का पूर्ण अध्ययन कर लो, इनमें दोष-निवारण आन्दोलन के विकास की विस्तृत जानकारी प्राप्त कर लो तथा उनके स्टाफ के (यहां भी बहुत अधिक नहीं) कुछ प्रतिनिधि सदस्यों की राजनीतिक पृष्ठ-भूमि, विचारधारात्मक विशेषताओं, अध्ययन के प्रति उनकी लगन और उनके कार्य की खूबियों व कमियों की विस्तृत जानकारी हासिल कर लो। इसके साथ-साथ, इन इकाइयों के कार्य की जिम्मेदारी सम्भालने वाले लोगों का व्यक्तिगत रूप से मार्गदर्शन भी करो, ताकि वे उन इकाइयों के सामने मौजूद अनेक व्यावहारिक समस्याओं का ठोस हल निकाल सकें। चूंकि प्रत्येक संगठन, विद्यालय या फौजी

यूनिट के अधीन अनेक इकाइयां होती हैं, इसलिए उनके नेताओं को भी ऐसा ही करना चाहिए। इसके अलावा, यह एक ऐसा तरीका है जिसके द्वारा नेता नेतृत्व करने के कार्य और सीखने के कार्य का संयोजन कर सकते हैं। कोई भी नेतृत्वकारी साथी जब तक अपने अधीन विशेष इकाइयों के विशेष व्यक्तियों व विशेष घटनाक्रमों से ठोस अनुभव प्राप्त नहीं करता, तब तक वह सभी इकाइयों का सामान्य मार्गदर्शन करने में समर्थ नहीं हो सकता। इस तरीके को प्रत्येक स्थान पर बढ़ावा दिया जाना चाहिए, ताकि हमारे सभी स्तरों के नेतृत्वकारी कार्यकर्ता इसको लागू करना सीख जाएं।

३. १९४२ के दोष-निवारण आन्दोलन के अनुभव से यह भी साबित होता है कि दोष-निवारण कार्य की सफलता के लिए यह जरूरी है कि प्रत्येक इकाई में आन्दोलन के दौरान कुछ सक्रिय तत्वों का एक नेतृत्वकारी ग्रुप बनाया जाए, जिसके संचालन-केन्द्र के रूप में सम्बन्धित इकाई के प्रधान कार्य करें, तथा यह नेतृत्वकारी ग्रुप आन्दोलन में भाग लेने वाले जन-समुदाय के साथ घनिष्ठ सम्पर्क कायम करे। नेतृत्वकारी ग्रुप चाहे कितना ही सक्रिय क्यों न हो, जब तक वह अपनी सक्रियता को जन-समुदाय की सक्रियता के साथ नहीं मिलाता, तब तक उसकी कार्यवाही केवल चन्द लोगों द्वारा की गई एक नाकाम कोशिश ही साबित होगी। दूसरी तरफ, अगर केवल जन-समुदाय ही सक्रिय है और उसकी सक्रियता को समुचित ढंग से संगठित करने के लिए कोई शक्तिशाली नेतृत्वकारी ग्रुप मौजूद नहीं है, तो ऐसी सक्रियता लम्बे अरसे तक कायम नहीं रह सकती या सही दिशा की ओर नहीं बढ़ सकती और उसका स्तर उन्नत नहीं हो सकता। हर स्थान के जन-समुदाय में आम तौर पर

तीन तरह के लोग होते हैं – अपेक्षाकृत सक्रिय लोग, दरमियाने लोग तथा अपेक्षाकृत पिछड़े हुए लोग। इसलिए नेताओं को चाहिए कि वे थोड़ी संख्या वाले सक्रिय तत्वों को नेतृत्व के चारों ओर एकताबद्ध करने में निपुण हो जाएं तथा दरमियाने तत्वों के स्तर को ऊंचा उठाने के लिए और पिछड़े हुए तत्वों को अपने पक्ष में मिलाने के लिए सक्रिय तत्वों पर निर्भर रहें। सच्ची एकता के सूत्र में बंधे हुए और जनता के साथ सच्चा सम्पर्क रखने वाले नेतृत्वकारी ग्रुप का निर्माण केवल जन-संघर्ष के दौरान ही कदम-ब-कदम किया जा सकता है और उससे अलग रहकर नहीं किया जा सकता। किसी महान संघर्ष की प्रारम्भिक, बीच की और अन्तिम मंजिलों में, अधिकांशतः, नेतृत्वकारी ग्रुप को शुरू से अन्त तक पूर्णतया अपरिवर्तित नहीं बना रहना चाहिए और वह पूर्णतया अपरिवर्तित बना भी नहीं रह सकता है। संघर्ष के दौरान आगे आने वाले सक्रिय तत्वों को नेतृत्वकारी ग्रुप के उन पुराने सदस्यों का स्थान ग्रहण करने के लिए लगातार तरक्की दी जानी चाहिए, जो उनकी अपेक्षा निम्न स्तर के साबित हुए हैं या जिनका पतन हो चुका है। अनेक स्थानों व अनेक संगठनों के कार्य को आगे न बढ़ाए जा सकने का एक बुनियादी कारण किसी ऐसे नेतृत्वकारी ग्रुप का न होना है जो एकताबद्ध हो, जिसका जन-समुदाय के साथ सम्पर्क हो और जो स्वस्थ तत्वों से सदैव परिपूर्ण हो। सौ व्यक्तियों के किसी विद्यालय में यदि अनेक लोगों का अथवा एक दर्जन या उससे भी ज्यादा लोगों का कोई ऐसा नेतृत्वकारी ग्रुप नहीं है जिसकी स्थापना वहां की ठोस परिस्थितियों को ध्यान में रखकर की गई हो (लोगों को अस्वाभाविक रूप से शामिल करके नहीं), तथा जिसमें अत्यन्त सक्रिय, अत्यन्त ईमानदार और

अत्यन्त जागरूक शिक्षकों, कर्मचारियों और विद्यार्थियों को शामिल किया गया हो, तो यह निश्चित है कि उसका संचालन सुचारु रूप से नहीं किया जा सकता। पार्टी का बोलशेविकीकरण करने के लिए स्तालिन द्वारा बताई गई बारह शर्तों में से नवीं शर्त को, जो नेतृत्व के संचालन-केन्द्र की स्थापना करने के बारे में है,[१] हमें छोटे या बड़े प्रत्येक संगठन में, प्रत्येक विद्यालय में, प्रत्येक फौजी यूनिट में, प्रत्येक कारखाने तथा प्रत्येक गांव में लागू करना चाहिए। कार्यकर्ता सम्बन्धी नीति पर अपनी बहस के दौरान दिमित्रोव द्वारा पेश की गई इन चार शर्तों[२] को इस प्रकार के नेतृत्वकारी ग्रुप को परखने की कसौटी होना चाहिए – कार्य के प्रति पूर्ण लगाव, जन-समुदाय के साथ अटूट सम्पर्क, स्वतंत्र रूप से कार्य कर सकने की क्षमता और अनुशासन का पालन। चाहे युद्ध, उत्पादन या शिक्षा (जिसमें दोष-निवारण कार्य भी शामिल है) से सम्बन्धित प्रधान कार्य हों या पिछले कार्य की जांच करने का काम हो, या कार्यकर्ताओं के अतीत की जांच-पड़ताल करने का काम हो या अन्य कोई काम हो, इन सभी कार्यों को करते समय सामान्य आवाहन को विशेष मार्गदर्शन से मिलाने के तरीके को अपनाने के साथ-साथ नेतृत्वकारी ग्रुप को जन-समुदाय से मिलाने के तरीके को अपनाना भी जरूरी है।

४. हमारी पार्टी के समूचे अमली काम में, सही नेतृत्व के लिए "जन-समुदाय से लेकर जन-समुदाय को ही लौटा देने" का तरीका अपनाना जरूरी है। इसका मतलब यह है : जन-समुदाय के विचारों को (बिखरे हुए और अव्यवस्थित विचारों को) एकत्र करके उनका निचोड़ निकालो (अध्ययन के जरिए उन्हें केन्द्रित और सुव्यवस्थित विचारों में बदल डालो), इसके बाद जन-समुदाय के बीच जाओ,

इन विचारों का प्रचार करो और जन-समुदाय को समझाओ जिससे वह उन्हें अपने विचारों के रूप में अपना ले, उन पर दृढ़ता से कायम रहे और उन्हें कार्य रूप में परिणत करे, तथा इस प्रकार की कार्यवाही के दौरान इन विचारों के अचूकपन की परख कर लो। इसके बाद फिर एक बार जन-समुदाय के विचारों को एकत्र करके उनका निचोड़ निकालो और फिर एक बार जन-समुदाय के बीच जाओ, ताकि उन विचारों पर अविचल रहा जा सके और उन्हें कार्यान्वित किया जा सके। इस प्रकार की प्रक्रिया को एक अन्तहीन चक्र के रूप में बार-बार दोहराते रहने से वे विचार हर बार पहले से ज्यादा सही, पहले से ज्यादा सजीव और पहले से ज्यादा समृद्ध बनते जाएंगे। यही है मार्क्सवाद का ज्ञान-सिद्धान्त।

५. किसी संगठन या किसी संघर्ष में नेतृत्वकारी ग्रुप और जन-समुदाय के बीच सही सम्बन्ध कायम करने की धारणा, यह धारणा कि "जन-समुदाय से लेकर जन-समुदाय को ही लौटा देने" के तरीके को अपनाकर नेतृत्व द्वारा सही विचारों को अपनाया जा सकता है, तथा यह धारणा कि नेतृत्व के विचारों को लागू करते समय सामान्य आवाहन को ठोस मार्गदर्शन के साथ मिलाना चाहिए – इन सभी धारणाओं का व्यापक प्रचार वर्तमान दोष-निवारण आन्दोलन के दौरान किया जाना चाहिए ताकि इन प्रश्नों के बारे में हमारे कार्यकर्ताओं के बीच मौजूद गलत विचारों को ठीक किया जा सके। हमारे अनेक साथी सक्रिय तत्वों को इकट्ठा करके नेतृत्व के संचालन-केन्द्र का निर्माण करने के कार्य के महत्व को नहीं समझते या उसमें निपुण नहीं होते तथा वे उस संचालन-केन्द्र का जन-समुदाय के साथ अटूट सम्पर्क कायम करने के महत्व को नहीं समझते या उसमें निपुण

नहीं होते, और इसलिए उनका नेतृत्व एक नौकरशाहाना नेतृत्व बन जाता है और जनता से उसका सम्बन्ध विच्छेद हो जाता है। हमारे अनेक साथी जन-संघर्षों के अनुभव का निचोड़ निकालने के महत्व को नहीं समझते या उसमें निपुण नहीं होते, बल्कि अपने को चतुर समझकर अपने मनोगतवादी विचारों को व्यक्त करने के इच्छुक रहते हैं, और इसलिए उनके विचार सारहीन व अव्यावहारिक हो जाते हैं। हमारे अनेक साथी किसी कार्य को पूरा करने के लिए केवल सामान्य आवाहन करके ही सन्तुष्ट हो जाते हैं तथा उसके फौरन बाद किसी विशेष और ठोस मार्गदर्शन करने के महत्व को नहीं समझते या उसमें निपुण नहीं होते, और इसलिए उनके द्वारा किया गया आवाहन एक जबानी या कागजी आवाहन मात्र ही रह जाता है या वह केवल सभा-भवन तक ही सीमित रहता है, तथा उनका नेतृत्व एक नौकरशाहाना नेतृत्व बन जाता है। मौजूदा दोष-निवारण आन्दोलन के दौरान हमें इन कमियों को दूर कर लेना चाहिए और अपने अध्ययन में, अपने पिछले कार्य की जांच करने में तथा कार्यकर्ताओं के अतीत की जांच-पड़ताल करने में, नेतृत्व को जन-समुदाय से मिलाने व सामान्य को विशेष से मिलाने के तरीकों का इस्तेमाल करना सीख लेना चाहिए ; तथा भविष्य के अपने समूचे कार्य में भी हमें इन तरीकों को लागू करना चाहिए।

६. जन-समुदाय के विचारों को एकत्र करके उनका निचोड़ निकालना, उसके बाद जन-समुदाय के बीच जाना, उन विचारों पर डटे रहना और उनको कार्यान्वित करना, ताकि नेतृत्व के सही विचारों का निर्माण किया जा सके – यह नेतृत्व का बुनियादी तरीका है। विचारों का निचोड़ निकालने और उन पर अविचल रूप से डटे

रहने की प्रक्रिया में सामान्य आवाहन को ठोस मार्गदर्शन से मिलाने के तरीके को इस्तेमाल करना आवश्यक है और ऐसा करना उस बुनियादी तरीके का एक अभिन्न अंग है। अनेक मामलों में किए गए विशेष मार्गदर्शन के आधार पर सामान्य विचारों (सामान्य आवाहनों) को सूत्रबद्ध कर लो और विभिन्न इकाइयों में उन्हें व्यवहार की कसौटी पर परख लो (ऐसा केवल खुद ही न कर लो बल्कि दूसरों को भी करने को कहो); उसके बाद नए अनुभव को एकत्र करो (उसका निचोड़ निकालो) और जन-समुदाय का सामान्य मार्गदर्शन करने के लिए नई हिदायतें तैयार कर लो। हमारे कामरेडों को चाहिए कि वे मौजूदा दोष-निवारण आन्दोलन के दौरान और अन्य प्रकार के अपने प्रत्येक कार्य में ऐसा ही करें। जितनी ज्यादा निपुणता के साथ इसको किया जाएगा, हमारा नेतृत्व उतना ही बेहतर बनता जाएगा।

७. अपने अधीन इकाइयों को कोई कार्य सौंपते समय (चाहे वह क्रान्तिकारी युद्ध, उत्पादन या शिक्षा से सम्बन्धित कार्य हो, दोष-निवारण आन्दोलन, पिछले कार्य की जांच या कार्यकर्ताओं के अतीत की जांच-पड़ताल से सम्बन्धित कार्य हो, प्रचार-कार्य, संगठनात्मक कार्य या जासूसी-विरोधी कार्य अथवा अन्य कोई कार्य हो) ऊपर के किसी संगठन और उसके विभागों को चाहिए कि वे नीचे के सम्बन्धित संगठन के नेता के साथ तमाम बातों पर गौर करें, ताकि वह जिम्मेदारी को सम्भाल सके; इस प्रकार कार्य-विभाजन और एकीकृत केन्द्रीकृत-नेतृत्व दोनों ही अमल में लाए जा सकते हैं। ऊपर के किसी विभाग को नीचे के संगठन की समूचे तौर पर जिम्मेदारी सम्भालने वाले व्यक्ति

(जैसे सचिव, अध्यक्ष, निर्देशक या विद्यालय के प्रधानाचार्य) को अनभिज्ञता या गैरजिम्मेदारी की स्थिति में छोड़कर केवल अपने ही जैसे किसी विभाग के साथ बिलकुल पृथक सम्पर्क कायम नहीं करना चाहिए (मिसाल के तौर पर, संगठनात्मक कार्य, प्रचार-कार्य या जासूसी-विरोधी कार्य से सम्बन्धित ऊपर के किसी विभाग को केवल नीचे के इन्हीं विभागों के साथ अपना पृथक सम्पर्क कायम नहीं करना चाहिए)। किसी संगठन की समूचे तौर पर जिम्मेदारी सम्भालने वाले व किसी विशेष जिम्मेदारी को सम्भालने वाले इन दोनों व्यक्तियों को गतिविधियों की जानकारी होनी चाहिए तथा दोनों ही को जिम्मेदारी दी जानी चाहिए। यह केन्द्रीकृत तरीका, जो कार्य-विभाजन को एकीकृत नेतृत्व के साथ मिलाता है, समूचे तौर पर जिम्मेदारी सम्भालने वाले व्यक्ति के जरिए, किसी विशेष कार्य को पूरा करने के लिए बड़ी संख्या में कार्यकर्ताओं को – कभी-कभी किसी संगठन के समस्त कार्यकर्ताओं तक को – गोलबन्द करने के कार्य को सम्भव बना देता है, और इस प्रकार अलग-अलग विभागों में कार्यकर्ताओं के अभाव को दूर करने में तथा सामने मौजूद कार्य को करने के लिए अनेक लोगों को क्रियाशील कार्यकर्ताओं में बदल देने में मदद करता है। यह भी नेतृत्व को जन-समुदाय से मिलाने का एक तरीका है। मिसाल के तौर पर हमारे कार्यकर्ताओं के अतीत की जांच-पड़ताल करने के कार्य को ही लीजिए। अगर इस कार्य को अलग-थलग करके किया जाए, या केवल संगठन-विभाग के चन्द लोगों द्वारा ही किया जाए, तो निश्चित है कि उसे सुचारु रूप से नहीं किया जा सकता। लेकिन अगर इसे किसी विशेष संगठन या विद्यालय के मुख्य प्रशासनिक

अधिकारी के जरिए कराया जाए, जो उस कार्य में भाग लेने के लिए अपने स्टाफ के अनेक या सभी कार्यकर्ताओं को अथवा अपने अनेक या सभी विद्यार्थियों को गोलबन्द कर लेता है, और इसके साथ-साथ ऊपर के संगठन-विभाग के नेतृत्वकारी सदस्यों द्वारा उसका सही ढंग से मार्गदर्शन किया जाए तथा नेतृत्व को जन-समुदाय से मिलाने के उसूल पर अमल किया जाए, तो कार्यकर्ताओं के अतीत की जांच-पड़ताल का कार्य निस्सन्देह सन्तोषजनक रूप से पूरा किया जा सकेगा।

८. किसी विशेष स्थान पर एक ही समय में अनेक प्रधान कार्य नहीं चलाए जा सकते। एक समय में केवल एक ही प्रधान कार्य चलाया जा सकता है, तथा दूसरे और तीसरे दर्जे के महत्व वाले अन्य कार्य केवल उसके पूरक हो सकते हैं। इसलिए, जिस व्यक्ति पर किसी क्षेत्र के कार्य की समूची जिम्मेदारी हो, उसे वहां के संघर्ष के इतिहास और ठोस परिस्थितियों को ध्यान में रखना चाहिए तथा विभिन्न कार्यों के महत्व के अनुसार उनकी प्रमुखता का क्रम निर्धारित कर लेना चाहिए; उसे अपनी कोई योजना बनाए बगैर ऊपर के संगठन से आने वाली प्रत्येक हिदायत को उसी रूप में लागू करके "प्रधान कार्यों" की बहुलता तथा गड़बड़ी व अव्यवस्था पैदा नहीं करनी चाहिए। और न ऊपर के किसी संगठन द्वारा एक ही समय में अनेक कार्य, उनके तुलनात्मक महत्व और आवश्यकता को स्पष्ट किए बिना या प्रधान कार्य को स्पष्ट किए बिना नीचे के किसी संगठन को सौंपे जाने चाहिए, क्योंकि इससे नीचे के संगठनों में अपने कार्य को पूरा करने के लिए उठाए जाने वाले कदमों के बारे में उलझन पैदा हो जाएगी और इस प्रकार उनके कार्य के कोई ठोस

नतीजे नहीं निकल सकेंगे। किसी क्षेत्र की ऐतिहासिक परिस्थितियों और तत्कालीन हालात के अनुसार वहां की सम्पूर्ण स्थिति को ध्यान में रखते हुए अपने कार्य की योजना बनाना, प्रत्येक अवधि के प्रधान कार्य के बारे में तथा अन्य कार्यों की प्रमुखता के क्रम के बारे में सही निर्णय लेना, उस निर्णय को दृढ़ता के साथ लागू करना और ठोस नतीजों की गारन्टी कर देना नेतृत्व-कला का एक अंग है। यह नेतृत्व के तरीके से सम्बन्धित समस्या भी है, तथा नेतृत्व को जन-समुदाय से मिलाने और सामान्य को विशेष से मिलाने के उसूलों को लागू करते समय इसे हल करने की ओर ध्यान दिया जाना चाहिए।

९. यहां नेतृत्व के तरीकों के बारे में विस्तृत विवरण पेश नहीं किया गया है; आशा है कि सभी क्षेत्रों के साथी यहां पेश किए गए उसूलों के आधार पर स्वयं इस मसले पर गम्भीरतापूर्वक विचार करेंगे और अपनी सृजनात्मकता को पूर्ण रूप से विकसित करेंगे। संघर्ष जितना ज्यादा कठिन हो, कम्युनिस्टों के लिए उतना ही ज्यादा जरूरी हो जाता है कि वे विशाल जन-समुदाय की मांगों के साथ अपने नेतृत्व का घनिष्ठ सम्पर्क कायम करें तथा सामान्य आवाहनों को विशेष मार्गदर्शन के साथ घनिष्ठ रूप से मिलाएं, ताकि नेतृत्व के मनोगतवादी व नौकरशाहाना तरीकों को पूरी तरह से नेस्तनाबूद किया जा सके। हमारी पार्टी के सभी नेतृत्वकारी कामरेडों को चाहिए कि वे नेतृत्व के मनोगतवादी, नौकरशाहाना तरीकों के मुकाबले नेतृत्व के वैज्ञानिक, मार्क्सवादी तरीकों को सदैव बढ़ावा दें और पहले प्रकार के तरीकों को खत्म करने के लिए दूसरे प्रकार के तरीकों को इस्तेमाल करें। नेतृत्व को जन-समुदाय से मिलाने व सामान्य को विशेष से मिलाने के उसूल मनोगतवादियों

और नौकरशाहों की समझ में नहीं आते ; वे पार्टी के कार्य के विकास में अत्यधिक बाधा डालते हैं। नेतृत्व के मनोगतवादी व नौकरशाहाना तरीकों का मुकाबला करने के लिए हमें नेतृत्व के वैज्ञानिक, मार्क्स-वादी तरीकों को व्यापक रूप से और गहराई के साथ बढ़ावा देना चाहिए।

नोट

१ देखिए : जे० वी० स्तालिन, "जर्मन कम्युनिस्ट पार्टी का भविष्य और बोलशेविकीकरण का सवाल"।

२ देखिए : कम्युनिस्ट इन्टरनेशनल की सातवीं कांग्रेस में जार्जी दिमित्रोव द्वारा पेश किए गए निष्कर्ष "फासिज्म के विरुद्ध मजदूर वर्ग की एकता" का सातवां भाग "कार्यकर्ता-समस्या"।

क्वोमिन्ताङ से कुछ खरी-खरी बातें*

१२ जुलाई १९४३

पिछले महीने चीन के जापान-विरोधी खेमे में एक असाधारण और विक्षोभकारी घटना हुई है, यानी क्वोमिन्ताङ के नेतृत्व में काम करने वाले पार्टी, सरकार व सेना के अनेक संगठनों ने एकता भंग करने और प्रतिरोध-युद्ध को तहस-नहस करने की मुहिम छेड़ दी है। इसने कम्युनिस्ट पार्टी पर हमला करने की शकल अख्तियार की है, लेकिन वास्तव में इसने अपने प्रहार का निशाना समूचे चीनी राष्ट्र और समस्त चीनी जनता को बनाया है।

पहले क्वोमिन्ताङ फौजों पर ही विचार कीजिए। समूचे देश में क्वोमिन्ताङ के नेतृत्व में चलने वाली फौजों में से मुख्य सैन्य-शक्ति की तीन ग्रुप-सेनाएं – ३४वीं, ३७वीं और ३८वीं ग्रुप-सेनाएं – उत्तर-पश्चिम में तैनात हैं, और ये सभी ८वें युद्ध-क्षेत्र के डिप्टी कमाण्डर-इन-चीफ हू चुङ-नान के अधीन हैं। इनमें से दो को शेनशी-कानसू-निङश्या सीमान्त क्षेत्र की घेरेबन्दी के लिए इस्तेमाल किया गया है, और सिर्फ एक को पीली नदी के किनारे-किनारे, ईछ्वान से थुङक्वान तक, जापानी हमलावरों के खिलाफ प्रतिरक्षा-कार्य

* कामरेड माओ त्सेतुङ ने यह सम्पादकीय येनान के "मुक्ति दैनिक" के लिए लिखा था।

के लिए तैनात किया गया है। चार वर्ष से ज्यादा समय से ऐसी ही स्थिति चली आई है, और जब तक कोई फौजी मुठभेड़ नहीं हुई, तब तक लोग इस स्थिति के आदी हो चुके थे। लेकिन पिछले कुछ दिनों में एक अप्रत्याशित परिवर्तन हो गया है। नदी के किनारे-किनारे प्रतिरक्षा-कार्य के लिए तैनात तीन फौजी कोरों – पहली, १६वीं और ६०वीं फौजी कोरों – में से दो को हटा लिया गया है, पहली फौजी कोर को पिनचुआो और छुनह्वा क्षेत्र में तथा ६०वीं फौजी कोर को लोछ्वान क्षेत्र में तैनात कर दिया गया है और ये दोनों ही सीमान्त क्षेत्र पर हमला करने की सक्रियता से तैयारी कर रही हैं, जबकि नदी के तट पर जापानी हमलावरों के खिलाफ कायम की गई प्रतिरक्षा-पंक्ति के ज्यादातर हिस्से पर कोई सैनिक तैनात नहीं है।

ऐसी हालत में लोग अनिवार्य रूप से यह सवाल पूछते हैं : क्वोमिन्ताङ के लोगों और जापानियों के बीच आखिर कैसे सम्बन्ध हैं?

क्वोमिन्ताङ के बहुत से लोग दिन-रात बड़ी बेहयाई के साथ यह प्रचार कर रहे हैं कि कम्युनिस्ट पार्टी "प्रतिरोध-युद्ध में तोड़फोड़" कर रही है तथा "एकता को तहस-नहस" कर रही है। क्या नदी की प्रतिरक्षा के लिए तैनात मुख्य सैन्य-शक्तियों को हटा लेना प्रतिरोध-युद्ध को सुदृढ़ बनाना कहला सकता है? क्या सीमान्त क्षेत्र पर हमले करना एकता को मजबूत बनाना कहला सकता है?

हम क्वोमिन्ताङ के उन लोगों से, जो यह सब कर रहे हैं, पूछना चाहते हैं : आप लोग जापानियों की तरफ पीठ किए हुए हैं, जबकि वे अब भी आपके सामने मौजूद हैं। अगर जापानियों ने आपके पीछे-पीछे आगे बढ़ना शुरू कर दिया तो क्या होगा?

आपके द्वारा नदी-तट की प्रतिरक्षा-पंक्ति के बहुत बड़े हिस्सों को छोड़ दिए जाने का आखिर क्या मतलब है, जबकि जापानी हमलावर नदी के दूसरे किनारे से चुपचाप देख रहे हैं और सिवाय इसके कि वे खुश होकर अपनी दूरबीनों के जरिए आपकी कदम-ब-कदम ओझल होने वाली पीठ को देखें, अन्य कोई कार्यवाही नहीं कर रहे? आखिर जापानियों को आपकी पीठ देखना इतना ज्यादा पसन्द क्यों है? और आखिर आप लोग नदी के तट पर बनाई गई प्रतिरक्षा-पंक्ति को छोड़कर तथा उसके विशाल भाग को सेना-रहित करके इतने ज्यादा इतमीनान की सांस क्यों ले रहे हैं?

एक ऐसे समाज में जो निजी सम्पत्ति पर आधारित होता है, लोग आम तौर पर रात को सोने से पहले अपने दरवाजे बन्द कर लेते हैं। यह बात सभी जानते हैं कि यह व्यर्थ परेशानी की निशानी नहीं बल्कि चोर-उचक्कों से सावधानी बरतना है। आज अपना सामने का दरवाजा बिलकुल खुला छोड़कर क्या आपको चोर-उचक्कों के भीतर घुसने की आशंका नहीं रही? तथा अगर दरवाजा खुला रहे और चोर-उचक्के न आएं, तो इसका क्या कारण है?

आप लोग कहते हैं कि चीन में यह कम्युनिस्ट ही हैं जो "प्रतिरोध-युद्ध में तोड़फोड़" कर रहे हैं, जबकि आप खुद "राष्ट्र को सर्वोपरि रखने" के बारे में सबसे ज्यादा निष्ठावान हैं। और आज, जबकि आप लोग दुश्मन को पीठ दिखा रहे हैं, भला वह कौन सी चीज है जिसे आप "सर्वोपरि" रखते हैं?

आप लोग कहते हैं कि यह कम्युनिस्ट ही हैं जो "एकता को तहस-नहस" कर रहे हैं, जबकि आप खुद "शुद्धहृदयता से एकता कायम करने" के बारे में सबसे ज्यादा निष्ठावान हैं। लेकिन आपने तीन

ग्रुप-सेनाओं (एक फौजी कोर को छोड़कर) की विशाल सैन्य-शक्ति को संगीनों और भारी तोपखाने से लैस करके सीमान्त क्षेत्र की जनता पर धावा बोल देने के लिए भेज दिया है, क्या यह "शुद्ध-हृदयता से एकता कायम करना" कहला सकता है ?

अथवा आपकी एक अन्य बात को ही लें – यह कि आप लोग "एकता" के बारे में उतनी दिलचस्पी नहीं रखते जितनी "एकीकरण" के बारे में – तथा इसलिए आप यह चाहते हैं कि सीमान्त क्षेत्र को नेस्तनाबूद कर दिया जाए, "सामन्ती पृथकतावाद" को खत्म कर दिया जाए तथा हर कम्युनिस्ट को मार डाला जाए। क्या खूब है ! आखिर क्या वजह है कि आपको इस बात का डर ही नहीं कि जापानी हमलावर चीनी राष्ट्र को, जिसमें आप भी शामिल हैं, हड़प करके उसका "एकीकरण" कर देंगे ?

मान लीजिए आप लोग जिस समय सिर्फ एक ही झटके से सीमान्त क्षेत्र का विजयपूर्वक "एकीकरण" कर रहे हों और कम्युनिस्टों का सफाया कर रहे हों, उस समय जापानियों को किसी "नींद की गोली" अथवा अपने किसी "जादू-टोने" के जरिए मदहोश करने में आपको कामयाबी भी मिल जाए, ताकि राष्ट्र और आप लोग दोनों ही उनके द्वारा किए जाने वाले "एकीकरण" से बच सकें। ऐसी सूरत में, क्वोमिन्ताङ के प्रिय साहेबान, क्या आप अपनी नींद की गोली अथवा अपने जादू-टोने के रहस्य का संकेतमात्र भी हमें नहीं देंगे ?

लेकिन अगर आपके पास जापानियों से निपटने के लिए कोई नींद की गोली अथवा जादू-टोना न हो, और अगर आप उनके साथ कोई गुप्त समझौता न कर चुके हों, तो हम आपको बाकायदा तौर

पर साफ-साफ बता देना चाहते हैं : आपको सीमान्त क्षेत्र पर हमला नहीं करना चाहिए, हरगिज नहीं करना चाहिए। "जब चाहे और घोंघे की लड़ाई होती है तो उसका फायदा मछुवा उठाता है", "झींगुर टिड्डे पर हमला करता है, लेकिन पीछे से कांचन पक्षी घात लगाए रहता है" – इन दो नीतिकथाओं में सच्चाई है। आपके लिए उचित यह होगा कि आप हमारे साथ मिलकर जापानियों द्वारा अपने कब्जे में किए हुए इलाके का "एकीकरण" करें तथा उन दैत्यों को बाहर खदेड़ दें। क्या वजह है कि आप लोग सीमान्त क्षेत्र की बालिश्त भर जमीन का "एकीकरण" करने के लिए इतनी उतावली और जल्दबाजी दिखा रहे हैं ? हालांकि हमारे सुन्दर देश का विशाल क्षेत्र दुश्मन के कब्जे में चला गया है, फिर भी आप उसके बारे में कोई उतावली अथवा जल्दबाजी नहीं दिखा रहे, उल्टे सीमान्त क्षेत्र पर हमला करने की उतावली दिखा रहे हैं और कम्युनिस्ट पार्टी को कुचल देने की जल्दबाजी दिखा रहे हैं। कितनी दर्दनाक बात है ! कितनी शर्मनाक बात है !

इसके बाद, जरा क्वोमिन्ताङ पार्टी की सरगरमियों पर गौर कीजिए। कम्युनिस्ट पार्टी का विरोध करने के लिए क्वोमिन्ताङ ने खुफिया एजेन्टों की कई सौ टुकड़ियां संगठित कर रखी हैं, जिनमें उसने सभी तरह के शोहदे भरती कर रखे हैं। मिसाल के लिए ६ जुलाई १९४३ को, चीनी गणराज्य के ३२वें वर्ष, प्रतिरोध-युद्ध की छठी वर्षगांठ की पूर्ववेला में, क्वोमिन्ताङ की केन्द्रीय समाचार-एजेन्सी ने एक समाचार प्रसारित किया जिसमें यह कहा गया कि शेनशी प्रान्त के शीआन में किन्हीं "सांस्कृतिक संघों" ने एक सभा बुलाई और यह फैसला किया कि माओ त्सेतुङ को तार भेजकर यह

मांग की जाए कि तीसरी इन्टरनेशनल के भंग होने के मौके का फायदा उठाकर चीनी कम्युनिस्ट पार्टी को "भंग कर दिया जाए" तथा इसके अतिरिक्त "सीमान्त क्षेत्र के पृथकतावादी शासन को समाप्त कर दिया जाए"। पाठक भले ही इसे एक "समाचार" समझें, लेकिन वास्तव में यह एक पुरानी दास्तान है।

पता चला है कि यह सब खुफिया एजेन्टों की कई सौ टुकड़ियों में से ही किसी एक की कारस्तानी है। अपने सदर-मुकाम (यानी "राष्ट्रीय सरकार की फौजी परिषद का जांच-पड़ताल व आंकड़ा ब्यूरो" तथा "क्वोमिन्ताङ की केन्द्रीय कार्यकारिणी कमेटी का जांच-पड़ताल व आंकड़ा ब्यूरो") के आदेश के मुताबिक इस टुकड़ी ने त्रात्सकीवादी और चीनी गद्दार चाङ ती-फ़ेइ को, जो आजकल शीआन के नजरबन्दी कैम्प में अनुशासन निर्देशक है और क्वोमिन्ताङ के पैसे पर चलने वाली "प्रतिरोध और संस्कृति" नामक एक देशद्रोही पत्रिका में अपने कम्युनिस्ट-विरोधी लेखों के लिए बदनाम है, आदेश दिया; १२ जून को, यानी केन्द्रीय समाचार-एजेन्सी द्वारा अपना समाचार प्रसारित किए जाने से पच्चीस दिन पहले, उसने नौ आदमियों को इकट्ठा करके दस मिनट की मीटिंग की, जिसमें तथाकथित तार के मजमून की "पुष्टि" कर दी गई।

यह तार आज दिन तक येनान नहीं पहुंचा, लेकिन इसकी विषय-वस्तु स्पष्ट है। जैसा कि हमें बताया गया है, इस तार में कहा गया है कि चूंकि तीसरी इन्टरनेशनल को भंग कर दिया गया है, इसलिए चीनी कम्युनिस्ट पार्टी को भी इसी तरह "भंग कर दिया जाना" चाहिए, यह कि "मार्क्सवाद-लेनिनवाद बदनाम हो चुका है", वगैरह-वगैरह।

देखा आपने। ऐसी हैं वे बातें जिन्हें क्वोमिन्ताङ उड़ा रही है! हमारा सदैव यह विश्वास रहा है कि क्वोमिन्ताङ के ऐसे अजीब प्राणियों (चोर चोर मौसेरे भाई) के मुंह से कुछ भी निकल सकता है, तथा जैसी कि हमें उम्मीद थी, अब उन्होंने गन्दी हवा का यह झोंका छोड़ ही दिया है!

इस समय चीन में बहुत सी राजनीतिक पार्टियां मौजूद हैं – यहां तक कि क्वोमिन्ताङ भी दो हैं। एक वाङ चिङ-वेइ मार्का क्वोमिन्ताङ है, जिसे नानकिङ में और अन्य स्थानों में कायम किया गया है तथा जिसके झण्डे पर भी नीले आसमान की पृष्ठभूमि पर सफेद सूरज बना हुआ है और जिसकी अपनी तथाकथित केन्द्रीय कार्यकारिणी कमेटी और खुफिया पुलिस की चन्द टुकड़ियां भी मौजूद हैं। इसके अलावा, जापान-अधिकृत क्षेत्रों के सभी स्थानों में जापान-समर्थित फासिस्ट पार्टियां मौजूद हैं।

क्वोमिन्ताङ के प्रिय साहेबान! क्या वजह है कि तीसरी इन्टरनेशनल के भंग होने के बाद से आप लोग कम्युनिस्ट पार्टी को "भंग करने" की तो इतनी ज्यादा ताबड़तोड़ कोशिश करने लगे, लेकिन चन्द देशद्रोही और जापान-समर्थित पार्टियों को भंग करने के बारे में उंगली तक नहीं उठाते? जब आपने चाङ ती-फ़ेइ को हिदायत दी कि वह तार का मसौदा तैयार करे, तो क्या वजह थी कि कम्युनिस्ट पार्टी को भंग करने की मांग के अलावा आपने यह कहने की मेहरबानी नहीं की कि देशद्रोही और जापान-समर्थित पार्टियों को भी भंग कर दिया जाना चाहिए?

क्या यह मुमकिन है कि आप लोग यह सोचें कि एक से ज्यादा कम्युनिस्ट पार्टियां मौजूद हैं? समूचे चीन में सिर्फ एक ही कम्युनिस्ट

पार्टी मौजूद है, जबकि क्वोमिन्ताङ दो हैं। आखिर कौन सी पार्टी एक से ज्यादा है?

क्वोमिन्ताङ के साहेबान! क्या आप लोगों ने निम्नलिखित बातों पर विचार किया है? क्या वजह है कि आपके अलावा जापानी और वाङ चिङ-वेइ भी कम्युनिस्ट पार्टी का तख्ता उलटने की हरचन्द कोशिश कर रहे हैं, तथा इस बात पर जोर दे रहे हैं कि केवल कम्युनिस्ट पार्टी ही एक से ज्यादा है और इसलिए उसे कुचल दिया जाना चाहिए? और क्या वजह है कि वे लोग यह समझते हैं कि क्वोमिन्ताङ बहुत कम हैं और उनकी तादाद हरगिज ज्यादा नहीं होती तथा वे हर जगह वाङ चिङ-वेइ मार्का क्वोमिन्ताङ का पालन-पोषण कर रहे हैं।

क्वोमिन्ताङ के साहेबान! हमें आपको यह बताने में जरा भी संकोच नहीं होता कि जापानियों और वाङ चिङ-वेइ को क्वोमिन्ताङ और तीन जन-सिद्धान्तों से खास लगाव है, क्योंकि वे इन दोनों में कोई ऐसी चीज देखते हैं जिसका वे फायदा उठा सकते हैं। प्रथम विश्वयुद्ध के बाद सिर्फ एक मौका ऐसा था जबकि साम्राज्यवादियों और चीनी गद्दारों के दिल में क्वोमिन्ताङ के प्रति कोई लगाव नहीं था, बल्कि उससे सख्त नफरत थी, और वे उसका उन्मूलन करने की हरचन्द कोशिश कर रहे थे; वह था १९२४-२७ का काल जब डा० सुन यात-सेन ने उसका पुनर्गठन किया था, उसकी पांतों में कम्युनिस्टों को भरती किया था और उसने एक राष्ट्रीय संश्रय का रूप ले लिया था जिसमें क्वोमिन्ताङ और कम्युनिस्ट पार्टी एक दूसरे से सहयोग करती थी। उसी काल में सिर्फ एक मौका ऐसा था जबकि साम्राज्यवादियों और चीनी गद्दारों को तीन जन-सिद्धान्तों के प्रति

कोई लगाव नहीं था, बल्कि उनसे सख्त नफरत थी और वे इन सिद्धान्तों को मिटाने की हरचन्द कोशिश कर रहे थे, और यही वह काल था जबकि इन सिद्धान्तों का रूपान्तर डा० सुन यात-सेन ने क्रान्तिकारी तीन जन-सिद्धान्तों के रूप में कर दिया, जिन्हें क्वोमिन्ताङ की पहली राष्ट्रीय कांग्रेस के घोषणापत्र में प्रस्तुत किया गया था। इस काल को छोड़कर, क्वोमिन्ताङ द्वारा कम्युनिस्टों को अपनी पार्टी से बाहर निकाल दिया गया है तथा तीन जन-सिद्धान्तों को डा० सुन यात-सेन की क्रान्तिकारी भावना से वंचित कर दिया गया है, तथा इसलिए इन दोनों से सभी साम्राज्यवादियों और चीनी गद्दारों का लगाव हो गया है और यही वजह है कि इनसे जापानी फासिस्टों और चीनी गद्दार वाङ चिङ-वेइ का भी लगाव हो गया है, जो किसी मूल्यवान वस्तु के समान उनका पालन-पोषण कर रहे हैं। वाङ चिङ-वेइ मार्का क्वोमिन्ताङ के झण्डे के ऊपर बाईं तरफ एक पीला फीता लगा रहता था, ताकि उसके और दूसरी क्वोमिन्ताङ के बीच फर्क किया जा सके, लेकिन अब उसे भी हटा दिया गया है और हर चीज को एक जैसी शकल दे दी गई है, ताकि आंखों को बुरा न लगे। कितना जबरदस्त लगाव है!

वाङ चिङ-वेइ मार्का क्वोमिन्ताङ के अनेक नमूने जापान-अधिकृत इलाकों में और बड़े पृष्ठभागीय क्षेत्र में भी मिलते हैं। इनमें से कुछ छिपे तौर पर काम करते हैं, जो दुश्मन का पांचवां कालम हैं। बाकी खुले रूप में काम करते हैं, जो अपनी रोजी-रोटी क्वोमिन्ताङ पर निर्भर रहकर अथवा पुलिस-एजेन्ट के रूप में काम करके चलाते हैं, तथा जापान का प्रतिरोध करने के लिए कुछ भी नहीं करते और कम्युनिज्म का विरोध करने में माहिर हैं। हालांकि

उन्होंने वाङ चिङ-वेइ के लेबिल नहीं लगाए हैं, फिर भी ये लोग वास्तव में उसी के आदमी हैं। ये लोग भी दुश्मन का पांचवां कालम हैं, फर्क सिर्फ इतना है कि उन्होंने कुछ भिन्न रूप धारण कर रखा है ताकि वे अपनी असलियत को छिपा सकें और लोगों को बेवकूफ बना सकें।

अब सारी बात बिलकुल स्पष्ट हो गई है। जब आपने चाङ ती-फ़ेइ को उस तार का मसौदा तैयार करने की हिदायत दी जिसमें कम्युनिस्ट पार्टी को "भंग करने" की मांग की गई थी, उस समय आपने साथ ही यह मांग करने की तकलीफ इसलिए गवारा नहीं की कि जापान-समर्थित पार्टियों और देशद्रोही पार्टियों को भी भंग कर दिया जाना चाहिए, क्योंकि विचारधारा, नीति और संगठन की दृष्टि से उनके और आपके बीच बहुत कुछ समानता मौजूद है, तथा आपकी समान विचारधारा की बुनियादी विशेषता कम्युनिज्म का और जनता का विरोध करना है।

क्वोमिन्ताङ के लोगो, आपसे हम एक और सवाल पूछना चाहते हैं। क्या यह सच है कि सारी दुनिया में और चीन में एकमात्र "बदनाम" वाद मार्क्सवाद-लेनिनवाद ही है और बाकी सब वाद अत्यन्त महान हैं? वाङ चिङ-वेइ मार्का तीन जन-सिद्धान्तों के अलावा, जिनका हमने अभी ऊपर जिक्र किया है, हिटलर, मुसोलिनी और हिदेकी तोजो के फासिस्टवाद के बारे में आपका क्या कहना है? चाङ ती-फ़ेइ के त्रासकीवाद के बारे में आपका क्या कहना है? चीन के विभिन्न प्रकार के प्रतिक्रान्तिकारी खुफिया विभागों के प्रतिक्रान्तिकारी सिद्धान्तों के बारे में आपका क्या कहना है?

क्वोमिन्ताङ के प्रिय साहेबान! क्या वजह है कि जब आपने

चाङ ती-फ़ेइ को तार का मसौदा तैयार करने की हिदायत दी, उस समय आपने इन तमाम तथाकथित वादों के बारे में, जो प्लेग अथवा खटमल या कुत्ते के मल-मूत्र से ज्यादा अच्छे नहीं हैं, एक भी वाक्य अथवा वाक्यांश नहीं जोड़ा? क्या यह मुमकिन है कि आपकी नजरों में यह तमाम प्रतिक्रियावादी कूड़ा-कचरा तो निर्दोष और पूर्ण है, जबकि एकमात्र मार्क्सवाद-लेनिनवाद ही सौ फीसदी बदनाम करने लायक है?

दोटूक बात यह है कि हमें पक्का सन्देह है, आप लोग जापान-समर्थित और देशद्रोही पार्टियों के साथ सांठगांठ करके काम कर रहे हैं, तथा यही वजह है कि आप लोग और वे लोग "एक ही नथुने से सांस लेते हैं", यही वजह है कि आप लोगों और दुश्मन व चीनी गद्दारों की कथनी व करनी दोनों में इतनी ज्यादा समानता, वास्तव में एकता और एकरूपता है। जापानी और चीनी गद्दार यह चाहते थे कि नई चौथी सेना को भंग कर दिया जाए, और आपने उसे भंग करने का आदेश जारी कर दिया; वे चाहते हैं कि कम्युनिस्ट पार्टी को भंग कर दिया जाए, और आप भी ऐसा ही चाहते हैं; वे चाहते हैं कि सीमान्त क्षेत्र को तोड़ दिया जाए, और आप भी ऐसा ही चाहते हैं; वे यह नहीं चाहते कि आप पीली नदी की रक्षा करें, और इसलिए आपने भी उसके रक्षा-कार्य को तिलांजलि दे दी है; वे सीमान्त क्षेत्र पर हमला करते हैं (पिछले छै वर्षों में दुश्मन की फौजों ने स्वेइते, मीचि, च्याश्येन, ऊपाओ और छिङच्येन काउन्टियों के सामने के नदी-तट पर आठवीं राह सेना की नदी-तट प्रतिरक्षा-व्यवस्था पर गोलाबारी कभी बन्द नहीं की), और आप भी उस पर हमला करना चाहते हैं; वे कम्युनिस्ट-विरोधी हैं, और आप भी

ऐसे ही हैं ; वे कम्युनिज्म और उदारवादी विचारों की कड़ी भर्त्सना करते हैं, और आप भी ऐसा ही करते हैं ;[१] जब कभी वे किसी कम्युनिस्ट को पकड़ते हैं तो उसे समाचारपत्रों में अपने विचारों को तिलांजलि देने की सार्वजनिक घोषणा करने के लिए मजबूर करते हैं, और आप भी ऐसा ही करते हैं। वे कम्युनिस्ट पार्टी, आठवीं राह सेना और नई चौथी सेना के भीतर चुपचाप घुसकर तोड़फोड़ करने के लिए प्रतिक्रान्तिकारी एजेन्ट भेजते हैं, और आप भी ऐसा ही करते हैं। क्या वजह है कि आपके और उनके बीच इतनी ज्यादा समानता, एकता और एकरूपता है ? चूंकि आपकी और दुश्मनों व चीनी गद्दारों की बहुत सी कथनी व करनी के बीच पूर्ण समानता, एकता और एकरूपता है, ऐसी हालत में भला यह कैसे हो सकता है कि लोग आप पर यह शक न करें कि आपने उनसे मिलीभगत कायम कर ली है अथवा कोई गुप्त समझौता कर लिया है ?

अतएव हम क्वोमिन्ताङ की केन्द्रीय कार्यकारिणी कमेटी के प्रति इन शब्दों में औपचारिक रूप से विरोध प्रकट करते हैं : नदी-तट की रक्षा के लिए तैनात मुख्य सैन्य-शक्ति को पीछे हटाकर सीमान्त क्षेत्र पर हमला करने और गृहयुद्ध शुरू करने की तैयारी करने की आपकी कार्यवाही सरासर गलत है और उसकी हरगिज इजाजत नहीं दी जा सकती। आपकी केन्द्रीय समाचार-एजेन्सी द्वारा ६ जुलाई को प्रसारित खबर भी, जो एकता को तहस-नहस करती है और कम्युनिस्ट पार्टी के लिए अपमानजनक है, सरासर गलत है और उसकी हरगिज इजाजत नहीं दी जा सकती। ये दोनों गलतियां जघन्य अपराध हैं, जो दुश्मन और चीनी गद्दारों द्वारा किए जाने वाले अपराधों से भिन्न नहीं हैं। आपको चाहिए कि उन्हें सुधार लें।

हम क्वोमिन्ताङ के महानिर्देशक च्याङ काई-शेक से औपचारिक रूप से मांग करते हैं : कृपया हू चुङ-नान की फौजों को नदी-तट की रक्षा के लिए वापस लौटने का आदेश दें, कृपया केन्द्रीय समाचार-एजेन्सी पर अनुशासन का अंकुश लगाएं तथा चीनी गद्दार चाङ ती-फ़ङ को सजा दें।

हम क्वोमिन्ताङ के उन तमाम सच्चे देशभक्त सदस्यों से अपील करते हैं जो नदी-तट की रक्षा के लिए तैनात सैन्य-शक्ति को पीछे हटाकर सीमान्त क्षेत्र पर हमला करने का समर्थन नहीं करते, तथा कम्युनिस्ट पार्टी को भंग करने की मांग का समर्थन नहीं करते : गृहयुद्ध का संकट टालने के लिए कृपया फौरन कार्यवाही कीजिए। राष्ट्र को बचाने के लिए हम अन्त तक आपके साथ सहयोग करने को तैयार हैं।

हमारा विश्वास है कि ये मांगें बिलकुल न्यायोचित हैं।

नोट

[१] यहां तात्पर्य च्याङ काई-शेक द्वारा प्रकाशित की गई "चीन का भाग्य" नामक किताब से है। इस किताब में च्याङ काई-शेक ने खुल्लमखुल्ला कम्युनिज्म और उदारवादी विचारों का विरोध करने का उद्दण्डतापूर्ण मत व्यक्त किया है।

आधार-क्षेत्रों में लगान कम करने, उत्पादन बढ़ाने तथा "सरकार का समर्थन करने और जनता के साथ आत्मीयता बढ़ाने" के आन्दोलन फैलाओ*

१ अक्तूबर १९४३

१. चूंकि शरद की फसल काटने का समय आ गया है, इसलिए आधार-क्षेत्रों के नेतृत्वकारी संगठनों को चाहिए कि वे सभी स्तरों पर पार्टी व सरकार के संगठनों से कहें कि वे लगान कम करने की हमारी नीति को लागू करने के बारे में जांच-पड़ताल करें। जहां कहीं इस नीति को ईमानदारी से लागू नहीं किया गया है, वहां इस वर्ष हर सूरत में लगान कम कर दिया जाना चाहिए। जहां कहीं यह कार्य मुकम्मिल तौर पर नहीं किया गया है, वहां इस वर्ष इसे मुकम्मिल तौर पर किया जाना चाहिए। पार्टी कमेटियों को चाहिए कि वे केन्द्रीय कमेटी की भूमि-नीति पर आधारित और स्थानीय परिस्थितियों के अनुरूप निर्देश तुरन्त जारी करें, तथा उन्हें चाहिए कि वे स्वयं ही कुछ गांवों का निरीक्षण करें,

* यह अन्तःपार्टी निर्देश कामरेड माओ त्सेतुङ ने चीनी कम्युनिस्ट पार्टी की केन्द्रीय कमेटी के लिए लिखा था।

अच्छी मिसालें चुन लें और इस प्रकार अन्य स्थानों के कार्य को आगे बढ़ाएं। साथ ही, समाचारपत्रों में लगान कम करने के बारे में सम्पादकीय लिखे जाने चाहिए तथा अच्छी मिसालों के बारे में समाचार प्रकाशित किए जाने चाहिए। चूंकि लगान कम करना किसानों का जन-संघर्ष है, इसलिए पार्टी-निर्देशों और सरकारी फरमानों में उसका मार्गदर्शन किया जाना चाहिए और उसकी मदद की जानी चाहिए, न कि उसे जन-समुदाय पर अनुग्रह के रूप में थोपने की कोशिश करनी चाहिए। लगान कम करके उसे जन-समुदाय पर अनुग्रह के रूप में थोपना और जन-समुदाय को खुद अपने ही प्रयत्नों से उसे प्राप्त करने के लिए जागृत न करना गलत होगा, तथा इसके ठोस नतीजे नहीं निकलेंगे। लगान कम करने के संघर्ष में किसान संगठनों की स्थापना अथवा पुनर्स्थापना की जानी चाहिए। सरकार को चाहिए कि वह लगान कम करने के बारे में फरमान लागू करे तथा इस सिलसिले में जमींदारों और काश्तकारों के अपेक्षित हितों को समायोजित करे। आज जबकि आधार-क्षेत्रों का आकार घट गया है, ऐसी स्थिति में इस बात का पिछले छै वर्षों के दौरान किसी भी अन्य समय के मुकाबले ज्यादा फौरी महत्व है कि पार्टी अपने धैर्यपूर्ण, ईमानदाराना और मुकम्मिल कार्य के जरिए इन्हीं आधार-क्षेत्रों में जन-समुदाय को अपने पक्ष में कर ले तथा उसके दुख-सुख में साथ दे। अगर हम इस शरद के मौसम में इस बात की जांच-पड़ताल करेंगे कि इस नीति को किस हद तक लागू किया गया है तथा लगान कम करने के कार्य को मुकम्मिल तौर पर पूरा करेंगे, तो हम किसान जन-समुदाय की पहलकदमी को जागृत करने में कामयाब हो जाएंगे, तथा आने वाले वर्ष में दुश्मन के खिलाफ अपने संघर्ष को तेज कर सकेंगे और उत्पादन आन्दोलन को बढ़ावा दे सकेंगे।

२. दुश्मन के पृष्ठभाग में स्थित आधार-क्षेत्रों में, अधिकांश कार्यकर्ता अभी यह नहीं सीख पाए कि पार्टी व सरकार के संगठनों के कर्मचारियों, सैनिकों और जन-समुदाय (जिसमें हर आदमी शामिल है, चाहे पुरुष हो या स्त्री, बुजुर्ग हो या जवान, सैनिक हो या असैनिक तथा सार्वजनिक क्षेत्र में कार्य करता हो या निजी क्षेत्र में) को व्यापक उत्पादन-कार्य में कैसे लगाया जाए। इस शरद और जाड़ों के मौसम में, हर आधार-क्षेत्र की पार्टी-कमेटी, सरकार और सेना को इस बात की तैयारी करनी चाहिए कि वे अगले वर्ष समूचे क्षेत्र में एक विशाल उत्पादन आन्दोलन चलाएं, जिसके अन्तर्गत सार्वजनिक व निजी दोनों क्षेत्रों की खेतीबाड़ी, उद्योग, दस्तकारी, परिवहन, पशुपालन और वाणिज्य शामिल हों और खेतीबाड़ी पर मुख्य जोर दिया गया हो – एक ऐसा आन्दोलन जिसके जरिए हम खुद अपने प्रयासों से कठिनाइयों को दूर कर सकें ("काफी खुराक व कपड़ा-लत्ता" का नारा फिलहाल शेनशी-कानसू-निङश्या सीमान्त क्षेत्र को छोड़कर और कहीं नहीं लगाया जाना चाहिए)। एक-एक परिवार के मुताबिक योजना बनाई जानी चाहिए और श्रम में आपसी सहायता पर अमल किया जाना चाहिए (जिन्हें उत्तरी शेनशी में श्रम-विनिमय दल[१] का नाम दिया गया है तथा जो च्याङशी के भूतपूर्व लाल क्षेत्रों में किसी समय जोतने वाले दल अथवा आपसी सहायता कार्यदल कहलाते थे), श्रमवीरों को पुरस्कार दिया जाना चाहिए, उत्पादन में आपसी होड़ पर अमल किया जाना चाहिए, तथा जन-समुदाय की सेवा करने वाली सहकारी समितियों को बढ़ावा देना चाहिए। वित्तीय और आर्थिक क्षेत्र में, काउन्टी और

जिला स्तर के पार्टी व सरकार के कार्यकर्ताओं को चाहिए कि वे अपनी शक्ति के दस में से नौ हिस्से किसानों को कृषि-उत्पादन बढ़ाने में सहायता देने में खर्च करें तथा दस में से सिर्फ एक हिस्सा उनसे टैक्स वसूल करने में लगाएं। अगर पहले कार्य में मेहनत की गई तो दूसरा कार्य आसान हो जाएगा। वर्तमान युद्धकालीन परिस्थिति में सभी संगठनों, विद्यालयों और फौजी यूनिटों को चाहिए कि वे साग-भाजी उगाने, सुअर पालने, ईंधन की लकड़ी चुनने, लकड़ी का कोयला बनाने, दस्तकारियों का विकास करने तथा खुद अपने लिए आवश्यक अनाज का एक अंश उगाने की भरपूर कोशिश करें। सभी इकाइयों में, चाहे वे बड़ी हों अथवा छोटी, सामूहिक उत्पादन का विकास करने के अलावा, हर व्यक्ति को (केवल सेना में काम करने वालों को छोड़कर) प्रोत्साहन दिया जाना चाहिए कि वह अवकाश के समय किसी न किसी किस्म के कृषि अथवा दस्तकारी उत्पादन में (लेकिन व्यापार में नहीं) हिस्सा ले, जिसकी आमदनी वह खुद अपने लिए रख सकता है। साग-भाजी उगाने और सुअर पालने तथा रसोइयों को अच्छा खाना बनाने की शिक्षा देने के बारे में सात से दस दिन तक के ट्रेनिंग-कोर्स शुरू किए जाने चाहिए। पार्टी, सरकार और सेना के सभी संगठनों में किफायत पर जोर दिया जाना चाहिए, फिजूलखर्ची का विरोध किया जाना चाहिए तथा भ्रष्टाचार की रोकथाम की जानी चाहिए। पार्टी, सरकार और सेना के संगठनों और विद्यालयों में सभी स्तरों के नेतृत्वकारी कार्यकर्ताओं को चाहिए कि वे उत्पादन-कार्य में जन-समुदाय का नेतृत्व करने की सभी विधियों में माहिर बन जाएं। जो कोई उत्पादन-कार्य का अच्छी तरह अध्ययन करने में असमर्थ रहेगा, उसे एक अच्छा नेता

नहीं समझा जा सकता। जो कोई सैनिक अथवा असैनिक व्यक्ति उत्पादन-कार्य के प्रति गम्भीर रुख नहीं अपनाता तथा जो खाने में आगे और काम में पीछे रहता है, उसे एक अच्छा सैनिक अथवा एक अच्छा नागरिक नहीं समझा जा सकता। देहात के पार्टी-सदस्यों को, जो उत्पादन-कार्य से अलग नहीं हैं, यह समझ लेना चाहिए कि जन-समुदाय के बीच आदर्श कायम करने के लिए उनके अन्दर एक खूबी यह होनी चाहिए कि उत्पादन बढ़ाने में अच्छी तरह जुट जाएं। उत्पादन आन्दोलन के दौरान, एक रूढ़िवादी और विशुद्ध वित्तीय दृष्टिकोण अपनाना, जो आर्थिक विकास की उपेक्षा करके केवल राजस्व और व्यय पर ध्यान केन्द्रित करे, गलत होगा। यह गलत होगा कि पार्टी, सरकार व सेना की बुनियादी पांतों और जनता की बृहत श्रमशक्ति को उत्पादन के जन-आन्दोलन के लिए संगठित करने के काम की उपेक्षा करके, थोड़े से सरकारी कर्मचारी केवल अनाज और टैक्स, धन और खाद्य-सामग्री जमा करने के काम में व्यस्त रहें। यह गलत होगा कि जन-समुदाय से केवल अनाज और धन की मांग की जाए (जैसा कि क्वोमिन्ताङ करती है) तथा उत्पादन बढ़ाने में उसकी मदद करने की हरचन्द कोशिश न की जाए। यह गलत होगा कि चन्द आर्थिक विभाग थोड़े से लोगों को उत्पादन के लिए संगठित करें तथा उत्पादन के व्यापक जन-आन्दोलन छेड़ने के काम की उपेक्षा की जाए। यह गलत होगा कि देहातों के अन्दर कम्युनिस्टों द्वारा अपने परिवारों को पालने-पोसने के लिए किए जाने वाले घरेलू उत्पादन को, अथवा सरकारी संगठनों व विद्यालयों के अन्दर कम्युनिस्टों द्वारा अपने रहन-सहन की स्थिति सुधारने के लिए अवकाश के समय किए जाने वाले निजी उत्पादन को अशोभ-

नीय और स्वार्थपूर्ण समझा जाए, क्योंकि इस प्रकार की समूची गतिविधि क्रान्तिकारी कार्य के हित में है। यह गलत होगा कि किसी आधार-क्षेत्र की जनता को तीव्र संघर्ष के दौरान महज कठिनाइयां सहने के लिए प्रेरित किया जाए तथा उसे उत्पादन बढ़ाने और इस प्रकार अपनी भौतिक स्थिति सुधारने के लिए प्रोत्साहन न दिया जाए। यह गलत होगा कि सहकारी समितियों को पैसा कमाने वाले ऐसे कारोबार समझा जाए जिन्हें थोड़े से कर्मचारियों के फायदे के लिए चलाया जाता है अथवा ऐसे स्टोर समझा जाए जिन्हें सरकार चलाती है, तथा ऐसे आर्थिक संगठन न समझा जाए जिन्हें जन-समुदाय द्वारा अपने लिए चलाया जाता है। यह गलत होगा कि शेनशी-कानसू-निङश्या सीमान्त क्षेत्र के कुछ कृषि श्रमवीरों द्वारा इस्तेमाल की गई आदर्श कार्यविधियों को (यानी श्रम में आपसी सहायता पर अमल करना, बार-बार जुताई करना, बार-बार गोड़ाई-निराई करना और काफी खाद डालना) यह बहाना बनाकर न अपनाया जाए कि ये कार्यविधियां कुछ आधार-क्षेत्रों में लागू नहीं हो सकतीं। यह गलत होगा कि उत्पादन आन्दोलन के दौरान, उत्पादन का कार्य आर्थिक विकास के इनचार्ज स्थानीय विभागों के प्रमुखों, फौजी सप्लाई विभागों के प्रमुखों अथवा सरकारी व अन्य संगठनों के प्रशासनिक प्रमुखों को सौंप दिया जाए, बजाय इसके कि नेतृत्वकारी कार्यकर्ता यह जिम्मेदारी खुद अपने कन्धों पर लें और खुद उत्पादन-कार्य में शामिल हों, बजाय इसके कि नेतृत्वकारी ग्रुप जन-समुदाय के साथ घनिष्ठ सम्बन्ध कायम करें और सामान्य आवाहनों को विशेष व ठोस मार्गदर्शन के साथ मिलाया जाए, बजाय इसके कि जांच-पड़ताल और अध्ययन किया जाए और जो फौरी

व महत्वपूर्ण काम हो उसे प्राथमिकता दी जाए, बजाय इसके कि हर आदमी को – चाहे वह मर्द हो या औरत, जवान हो या बूढ़ा, यहां तक कि आवारागर्दों को भी – उत्पादन-कार्य में शामिल करने की कोशिश की जाए, और बजाय इसके कि कार्यकर्ताओं को प्रशिक्षण प्रदान किया जाए और जन-समुदाय को शिक्षित किया जाए। वर्तमान परिस्थिति में श्रमशक्ति को संगठित करना उत्पादन बढ़ाने की कुंजी है। हर आधार-क्षेत्र में, वर्तमान युद्धकालीन स्थिति में भी, पार्टी, सरकारी दफ्तरों और सेना के दसियों हजार स्त्री-पुरुषों तथा लाखों जनता की श्रमशक्ति को उत्पादन-कार्य के लिए संगठित करना सम्भव है और बिलकुल आवश्यक है (यानी स्वेच्छा के सिद्धान्त के आधार पर उन तमाम लोगों को संगठित करना जो अर्ध-श्रमशक्ति अथवा पूर्ण श्रमशक्ति के रूप में श्रम में भाग ले सकते हैं और घर-घर के मुताबिक योजना बनाने का तरीका अपनाना, श्रम-विनिमय दलों को संगठित करना, परिवहन दलों को संगठित करना, आपसी सहायता कार्यदलों अथवा सहकारी समितियों को संगठित करना, तथा समान मूल्य के आधार पर विनिमय करने के उसूल पर अमल करना)। कम्युनिस्ट पार्टी के सदस्यों को चाहिए कि वे श्रमशक्ति को संगठित करने के सभी उसूलों और तरीकों को पूरी तरह ग्रहण कर लें। इस वर्ष सभी आधार-क्षेत्रों में व्यापक रूप से और मुकम्मिल तौर पर लगान में जो कमी की गई है, उससे अगले वर्ष बड़े पैमाने पर उत्पादन वृद्धि को प्रोत्साहन मिलेगा। और पार्टी व सरकार, सैनिक व असैनिक लोग, स्त्री और पुरुष, नौजवान और बुजुर्ग, अगले वर्ष अनाज और अन्य आवश्यक चीजों की सप्लाई बढ़ाने के लिए और प्राकृतिक विपत्तियों का मुकाबला करने की

तैयारी करने के लिए जो महान उत्पादन आन्दोलन चलाएंगे, उससे जापान-विरोधी आधार-क्षेत्रों का अस्तित्व लगातार कायम रखने के लिए भौतिक बुनियाद तैयार हो जाएगी। अन्यथा हमारे सामने गम्भीर कठिनाइयां आ खड़ी होंगी।

३. पार्टी, सरकार और सेना अगले वर्ष के जापान-विरोधी संघर्ष और उत्पादन आन्दोलन को विकसित करने के लिए जनता के साथ एकरूप हो जाएं, इसके लिए प्रत्येक आधार-क्षेत्र की पार्टी-कमेटी और सेना व सरकार के नेतृत्वकारी संगठनों को चाहिए कि वे अगले चान्द्र-वर्ष के पहले महीने में "सरकार का समर्थन करने और जनता के साथ आत्मीयता बढ़ाने" तथा "सेना का समर्थन करने और जापान के खिलाफ लड़ने वाले सैनिकों के परिवारों को तरजीह देने" का एक बड़े पैमाने का जन-आन्दोलन छेड़ने की तैयारी करें। सैनिकों को सार्वजनिक रूप से फिर एक बार "सरकार का समर्थन करने और जनता के साथ आत्मीयता बढ़ाने" की प्रतिज्ञा करनी चाहिए, आत्म-आलोचना करने के लिए मीटिंगें बुलानी चाहिए, स्थानीय लोगों के साथ मिलन-समारोहों का आयोजन करना चाहिए (जिनमें पार्टी व सरकार के स्थानीय संगठनों के प्रतिनिधि भी निमंत्रित किए जाने चाहिए), तथा अतीत काल में यदि जन-समुदाय के हितों का उल्लंघन किया गया हो तो उसके लिए माफी मांगनी चाहिए और मुआवजा देना चाहिए। स्थानीय पार्टी, सरकार और जन-संगठनों के नेतृत्व में, जन-समुदाय को चाहिए कि वह अपनी तरफ से फिर एक बार सार्वजनिक रूप से "सेना का समर्थन करने और जापान के खिलाफ लड़ने वाले सैनिकों के परिवारों को तरजीह देने" की प्रतिज्ञा करे, तथा फौजी यूनिटों का अभिनन्दन करने और

उन्हें तोहफे भेजने का जोरदार आन्दोलन चलाए। इन आन्दोलनों के दौरान, सेना को अपनी तरफ से और पार्टी व सरकार को अपनी तरफ से, १९४३ की कमियों और गलतियों की मुकम्मिल जांच-पड़ताल करनी चाहिए और उन्हें १९४४ में दृढ़ता के साथ सुधार लेना चाहिए। अब से हर चान्द्र-वर्ष के पहले महीने में इस प्रकार के आन्दोलन व्यापक रूप से चलाए जाने चाहिए, तथा उनके दौरान "सरकार का समर्थन करने और जनता के साथ आत्मीयता बढ़ाने" तथा "सेना का समर्थन करने और जापान के खिलाफ लड़ने वाले सैनिकों के परिवारों को तरजीह देने" की प्रतिज्ञाएं बार-बार दोहराई जानी चाहिए, तथा आधार-क्षेत्रों में अगर सैनिकों ने पार्टी-कार्यकर्ताओं या सरकारी कर्मचारियों अथवा असैनिक व्यक्तियों के साथ किसी भी किस्म का उद्दण्डतापूर्ण बरताव किया हो, अथवा अगर पार्टी-कार्यकर्ताओं या सरकारी कर्मचारियों अथवा असैनिक व्यक्तियों ने सैनिकों का खयाल रखने में किसी भी किस्म की कमी दिखाई हो, तो वे खुले तौर पर और जनव्यापी पैमाने पर बार-बार आत्म-आलोचना करें (हर पक्ष अपनी खुद की आलोचना करे, दूसरे पक्ष की नहीं) ताकि उन कमियों और गलतियों को मुकम्मिल तौर पर सुधारा जा सके।

नोट

[१] देखिए इसी ग्रन्थ के "संगठित हो जाओ!" नामक लेख का नोट ५।

क्वोमिन्ताङ की केन्द्रीय कार्यकारिणी कमेटी के ग्यारहवें पूर्ण अधिवेशन और तीसरी जन राजनीतिक परिषद के दूसरे अधिवेशन के बारे में टिप्पणी*

५ अक्तूबर १९४३

क्वोमिन्ताङ ने अपनी केन्द्रीय कार्यकारिणी कमेटी का ग्यारहवां पूर्ण अधिवेशन ६ से १३ सितम्बर तक आयोजित किया और क्वोमिन्ताङ सरकार ने तीसरी जन राजनीतिक परिषद का दूसरा अधिवेशन १८ से २७ सितम्बर तक आयोजित किया। चूंकि इन दोनों अधिवेशनों के सब दस्तावेज हमें उपलब्ध हो चुके हैं, इसलिए अब हम उनके बारे में आम टिप्पणी कर सकते हैं।

अन्तरराष्ट्रीय परिस्थिति एक ऐसे महान परिवर्तन की पूर्व-वेला में है जिसके शीघ्र ही होने का एहसास सब तरफ होने लगा है। योरप की धुरी ताकतों को इसका एहसास हो गया है, और हिटलर अपनी आखिरी दमतोड़ नीति अपना रहा है। मुख्यतः यह सोवियत संघ ही है जो इस प्रकार का परिवर्तन ला रहा है। सोवियत संघ

---

* यह सम्पादकीय कामरेड माओ त्सेतुङ ने येनान के "मुक्ति दैनिक" के लिए लिखा था।

अब इसका फायदा उठा रहा है, और अपने सामने की तमाम रुकावटों को बुहारते हुए लाल सेना लड़ती-लड़ती द्नीपर पहुंच चुकी है, तथा जाड़ों की एक अन्य आक्रमणात्मक कार्यवाही के बाद वह यदि नई सोवियत सीमा पर नहीं तो पुरानी सोवियत सीमा पर अवश्य पहुंच जाएगी। बरतानिया और अमरीका भी इस परिवर्तन का फायदा उठा रहे हैं ; रूजवैल्ट और चर्चिल हिटलर के पतन के प्रथम संकेत की प्रतीक्षा कर रहे हैं, ताकि वे फ्रांस में जा घुसें। संक्षेप में, जर्मन फासिस्टों का युद्ध-यंत्र शीघ्र ही छिन्न-भिन्न हो जाएगा, योरप में फासिस्ट-विरोधी युद्ध की समस्या अपने पूर्ण हल की पूर्ववेला में पहुंच गई है, तथा फासिज्म को नेस्तनाबूद करने वाली मुख्य शक्ति सोवियत संघ है। चूंकि विश्व के फासिस्ट-विरोधी युद्ध का केन्द्र योरप में है, इसलिए जहां एक बार यह समस्या योरप में हल हो गई तो दुनिया के दो बड़े खेमों, फासिस्ट खेमे और फासिस्ट-विरोधी खेमे, के भाग्य का निर्णय हो जाएगा। जापानी साम्राज्यवादी भी यह महसूस कर रहे हैं कि वे अंधी गली में फंस गए हैं और उनकी नीति भी केवल यही हो सकती है कि वे अन्तिम दमतोड़ संघर्ष के लिए तमाम सम्भव शक्तियों को बटोरें। चीन में वे लोग इस बात की कोशिश करेंगे कि कम्युनिस्टों का "सफाया" कर दिया जाए और क्वोमिन्ताङ को आत्मसमर्पण करने के लिए प्रलोभन दिया जाए।

क्वोमिन्ताङ को भी इस परिवर्तन का एहसास हो गया है। ऐसी परिस्थिति का सामना होने पर वह हर्ष और भय दोनों अनुभव करती है। हर्ष इसलिए क्योंकि वह सोचती है कि योरप में युद्ध समाप्त हो जाने के बाद, बरतानिया और अमरीका उसकी तरफ से जापान का मुकाबला करने के लिए खाली हो जाएंगे, तथा वह

बिना कोई कोशिश किए नानकिङ लौट सकेगी। भय इसलिए क्योंकि तीनों फासिस्ट शक्तियों के पतन के बाद, दुनिया एक महान और अभूतपूर्व मुक्ति-युग में प्रवेश करेगी, तथा क्वोमिन्ताङ की दलाल-पूंजीवादी-सामन्तवादी फासिस्ट तानाशाही स्वतंत्रता और जनवाद के विशाल समुद्र में एक छोटे से टापू की तरह रह जाएगी ; उसे डर है कि इसकी लहरों में उसका अपनी किस्म का फासिज्म, जिसमें "एक पार्टी, एक वाद और एक नेता" होता है, डूब जाएगा।

शुरू में, क्वोमिन्ताङ को यह उम्मीद थी कि सोवियत संघ हिटलर से अकेला ही लड़ेगा तथा जापानियों को सोवियत संघ पर हमला करने के लिए उकसाया जा सकेगा, ताकि एक समाजवादी देश को नष्ट किया जा सके अथवा बुरी तरह तहस-नहस किया जा सके ; उसे यह उम्मीद भी थी कि बरतानिया और अमरीका योरप में दूसरा अथवा तीसरा मोर्चा खोलने की बात सोचने से पहले अपनी तमाम सैन्य-शक्तियों को पूर्व में भेजकर जापान को धराशायी करेंगे और तब चीनी कम्युनिस्ट पार्टी का सफाया कर देंगे। ठीक इसी बुरी नीयत से क्वोमिन्ताङ ने पहले "योरप से पहले एशिया" की रणनीति की तथा बाद में "योरप और एशिया की तरफ बराबर ध्यान देने" की चीख-पुकार मचाई। इस वर्ष अगस्त में, क्वेबैक सम्मेलन के अन्तिम दिनों में, जब रूजवैल्ट और चर्चिल ने क्वोमिन्ताङ सरकार के विदेश मंत्री टी० वी० सुङ को क्वेबैक बुलाया और उससे चन्द बातें कीं, तो क्वोमिन्ताङ ने यह शोरगुल मचाना शुरू कर दिया कि "रूजवैल्ट और चर्चिल पूरब की तरफ मुड़ रहे हैं", तथा "'एशिया से पहले योरप' की योजना बदल गई है", और "क्वेबैक सम्मेलन तीन बड़ी शक्तियों, यानी बरतानिया, अमरीका

और चीन, का सम्मेलन है", वगैरह-वगैरह, तथा खुशी से फूलकर अपने मुंह मियां मिट्ठू बनने की कोशिश की। लेकिन यह क्वोमिन्ताङ के लिए खुशी मनाने का आखिरी मौका था। तब से उसका मूड कुछ बदल गया है; "योरप से पहले एशिया" तथा "योरप और एशिया की तरफ बराबर ध्यान देने" की बातें इतिहास के अजायबघर में पहुंच गई हैं, और अब क्वोमिन्ताङ शायद कोई नई स्कीमें बना रही है। क्वोमिन्ताङ की केन्द्रीय कार्यकारिणी कमेटी का ग्यारहवां पूर्ण अधिवेशन तथा क्वोमिन्ताङ नियंत्रित जन राजनीतिक परिषद का दूसरा अधिवेशन सम्भवतः इन स्कीमों की शुरुआत का संकेत करते हैं।

क्वोमिन्ताङ की केन्द्रीय कार्यकारिणी कमेटी के ग्यारहवें पूर्ण अधिवेशन ने लांछनभरे शब्दों में कम्युनिस्ट पार्टी पर यह आरोप लगाया है कि वह "प्रतिरोध-युद्ध में तोड़फोड़ कर रही है और राज्य के लिए खतरा पैदा कर रही है", और साथ ही यह ऐलान किया है कि क्वोमिन्ताङ "राजनीतिक हल" और "वैधानिक सरकार की तैयारी" का पक्षपोषण करती है। तीसरी जन राजनीतिक परिषद के दूसरे अधिवेशन ने भी अपने क्वोमिन्ताङ बहुमत के नियंत्रण में और उसकी तिकड़म से कम्युनिस्ट पार्टी के विरुद्ध लगभग इसी तरह के प्रस्ताव पास किए। इसके अलावा, क्वोमिन्ताङ की केन्द्रीय कार्यकारिणी कमेटी के ग्यारहवें पूर्ण अधिवेशन ने च्याङ काई-शेक को क्वोमिन्ताङ सरकार का प्रेसिडेन्ट "चुन लिया", ताकि उसकी तानाशाही मशीनरी को मजबूत बनाया जा सके।

ग्यारहवें पूर्ण अधिवेशन के बाद, अब क्वोमिन्ताङ क्या योजना बना सकती है? केवल तीन सम्भावनाएं मौजूद हैं:

(१) जापानी साम्राज्यवाद के सामने आत्मसमर्पण कर देना;
(२) पुराने रास्ते पर ही अड़े रहना; तथा
(३) अपनी राजनीतिक कार्यदिशा को बदल देना।

क्वोमिन्ताङ के भीतर मौजूद पराजयवादियों और आत्मसमर्पणवादियों ने, जापानी साम्राज्यवादियों के "कम्युनिस्टों पर प्रहार करने और क्वोमिन्ताङ को लुभाने" के उद्देश्य की सेवा करते हुए हमेशा ही आत्मसमर्पण की पैरवी की है। उन्होंने लगातार इस बात की कोशिश की है कि कम्युनिस्ट-विरोधी गृहयुद्ध छेड़ दिया जाए, और जहां एक बार यह छिड़ गया तो यह स्वाभाविक है कि जापान का प्रतिरोध करना असम्भव हो जाएगा तथा आत्मसमर्पण करने के सिवाय और कोई चारा नहीं रह जाएगा। क्वोमिन्ताङ ने उत्तर-पश्चिमी चीन में ४,००,००० से ५,००,००० तक फौजें केन्द्रित कर रखी हैं तथा वह अब भी चोरी-छिपे दूसरे मोर्चों से और ज्यादा फौजें वहां भेज रही है। कहा जाता है कि उसके जनरल बड़े साहसी दिखाई दे रहे हैं तथा यह ऐलान कर रहे हैं कि "येनान पर कब्जा करना कोई मुश्किल नहीं है"। ऐसी हैं उनकी बातें, जिन्हें वे ग्यारहवें पूर्ण अधिवेशन में मिस्टर च्याङ काई-शेक के उस भाषण के बाद से जिसमें उसने कम्युनिस्ट समस्या को यह बताया कि वह "एक राजनीतिक समस्या है और उसे राजनीतिक ढंग से ही हल किया जाना चाहिए", तथा उक्त अधिवेशन में लगभग इसी प्रकार के प्रस्ताव पास होने के बाद से कर रहे हैं। इसी प्रकार के प्रस्ताव पिछले वर्ष क्वोमिन्ताङ की केन्द्रीय कार्यकारिणी कमेटी के दसवें पूर्ण अधिवेशन में भी पास किए गए थे, और अभी उनकी स्याही सूखने भी न पाई थी कि जनरलों को आदेश दे दिया गया कि वे

सीमान्त क्षेत्र को नष्ट करने के लिए फौजी योजनाएं बना लें ; इस वर्ष जून और जुलाई में सीमान्त क्षेत्र के खिलाफ एक प्रचण्ड आक्रमण की तैयारी में सैन्य-शक्तियों का विनियोजन किया गया, और यह स्कीम अस्थाई रूप से केवल इसलिए स्थगित करनी पड़ी क्योंकि देश और विदेश में लोकमत इसके खिलाफ था। अब फिर एक बार, ज्योंही ग्यारहवें पूर्ण अधिवेशन के प्रस्तावों को लिपिबद्ध किया गया है, जनरलों के शेखी बघारने और फौजों के स्थानान्तरण की खबरें आने लगी हैं। "येनान पर कब्जा करना कोई मुश्किल नहीं है" – इससे क्या जाहिर होता है? इससे यह जाहिर होता है कि जापानी साम्राज्यवाद के सामने आत्मसमर्पण करने का फैसला किया जा चुका है। क्वोमिन्ताङ के वे सभी सदस्य जो "येनान पर कब्जा करने" का पक्षपोषण करते हैं, अनिवार्य रूप से जागरूक और संकल्पबद्ध आत्मसमर्पणवादी नहीं हैं। उनमें से कुछ लोग यह सोच सकते हैं, "कम्युनिस्टों के खिलाफ लड़ने के साथ ही साथ हम जापान का भी प्रतिरोध कर सकते हैं"। ऐसा ही शायद ह्वाङफू गुट[1] के अनेक अफसर सोचते हैं। इन महानुभावों से हम कम्युनिस्ट ये सवाल करना चाहते हैं। क्या आप लोग गृहयुद्ध के दस वर्षों के सबक भूल चुके हैं? जहां एक बार गृहयुद्ध शुरू हो गया, तो क्या संकल्पबद्ध आत्मसमर्पणवादी आप लोगों को जापान के खिलाफ युद्ध जारी रखने देंगे? क्या जापानी और वाङ चिङ-वेइ आप लोगों को जापान के खिलाफ लड़ाई जारी रखने देंगे? क्या आप लोग सचमुच इतने शक्तिशाली हैं कि गृहयुद्ध और विदेशी दुश्मन के खिलाफ युद्ध, इन दोनों को एक साथ लड़ सकते हैं? आप लोग दावा करते हैं कि आपके पास ३० लाख सैनिक हैं, लेकिन आपकी फौजों का

हौसला इतना पस्त हो चुका है कि लोग उनकी तुलना वहंगी के दोनों ओर लटकी हुई अण्डों की टोकरियों से करते हैं – एक मुठभेड़ हुई कि उनका खात्मा हो जाएगा। चुङत्याओ पहाड़ों, थाएहाङ पहाड़ों, चच्याङ और च्याङशी, पश्चिमी हुपे और ताप्ये पहाड़ों की सभी मुहिमों में ऐसा ही हुआ है। इसकी वजह महज यह है कि आप लोग "कम्युनिस्टों का विरोध करने में सक्रिय" होने और "जापानियों का विरोध करने में निष्क्रिय" होने की घातक नीति अपनाते हैं। एक राष्ट्रीय दुश्मन ने हमारे देश में दूर तक घुसपैठ कर ली है, तथा आप लोग जितनी सक्रियता से कम्युनिस्टों से लड़ेंगे और जितनी निष्क्रियता से जापानियों का प्रतिरोध करेंगे, उतना ही ज्यादा आपकी फौजों का हौसला भी पस्त होता जाएगा। अगर आप लोग विदेशी आक्रमणकारियों से लड़ने में इतने निकम्मे साबित होंगे, तो यह कैसे हो सकता है कि आप अचानक अपनी फौजों से यह उम्मीद करने लगें कि वे कम्युनिस्टों और जनता के खिलाफ लड़ने में मुस्तैद बन जाएं? इसका सवाल ही पैदा नहीं होता। जहां एक बार आप लोगों ने गृहयुद्ध छेड़ा, तो आपको उसकी तरफ भरपूर ध्यान देना होगा तथा "साथ ही साथ प्रतिरोध करने" के सभी विचारों को अनिवार्य रूप से तिलांजलि देनी होगी ; अन्त में आपको अनिवार्य रूप से जापानी साम्राज्यवाद के सामने विनाशर्त आत्मसमर्पण करने की सन्धि पर हस्ताक्षर करने की स्थिति का सामना करना पड़ेगा, तथा आत्मसमर्पण की नीति अपनाने के सिवाय आपके सामने और कोई चारा ही नहीं रह जाएगा। यदि आप लोगों ने गृहयुद्ध उकसाने अथवा चलाने में सक्रियता से हिस्सा लिया, तो क्वोमिन्ताङ के भीतर आपमें से जो लोग सचमुच आत्मसमर्पण नहीं करना चाहते,

वे भी अनिवार्य रूप से अन्त में आत्मसमर्पणवादी बन जाएंगे। अगर आप लोग आत्मसमर्पणवादी गुट के दांवपेंचों में आ गए तथा आपने ग्यारहवें पूर्ण अधिवेशन और जन राजनीतिक परिषद के प्रस्तावों को लोकमत जागृत करने और कम्युनिस्ट-विरोधी गृहयुद्ध की तैयारी करने के साधन के रूप में इस्तेमाल किया, तो ऐसा अवश्य होगा। अगर आप उनके दांवपेंचों में आ गए और आपने गलत कदम उठाया, तो शुरू में आप लोग चाहे आत्मसमर्पण न भी करना चाहें, अन्त में आपको आत्मसमर्पणवादी गुट के साथ ही साथ दुश्मन के सामने जरूर हथियार डालने पड़ेंगे। क्वोमिन्ताङ द्वारा ग्यारहवें पूर्ण अधिवेशन के बाद अपनाई जाने वाली दिशा के सम्बन्ध में यह पहली सम्भावना है, और इस बात का बेहद भारी खतरा मौजूद है कि यह सम्भावना पूरी हो जाए। आत्मसमर्पणवादी गुट की दृष्टि से, "राजनीतिक हल" और "वैधानिक सरकार की तैयारी" की बातें करना गृहयुद्ध यानी आत्मसमर्पण के लिए की जाने वाली अपनी तैयारियों पर पर्दा डालने का बेहतरीन उपाय है ; सभी कम्युनिस्टों को, क्वोमिन्ताङ के सभी देशभक्त सदस्यों को, सभी जापान-विरोधी पार्टियों को, तथा जापान के विरुद्ध हमारे तमाम देशबन्धुओं को इस बेहद गम्भीर खतरे से अत्यन्त सतर्क रहना चाहिए तथा इस धुएं के पर्दे के धोखे में नहीं आना चाहिए। यह बात समझ लेनी चाहिए कि गृहयुद्ध का खतरा पहले कभी इतना ज्यादा नहीं रहा जितना कि आज क्वोमिन्ताङ के ग्यारहवें पूर्ण अधिवेशन के बाद पैदा हो गया है।

ये प्रस्ताव एक अन्य दिशा की ओर भी ले जा सकते हैं, यानी "कुछ समय के लिए मसले को लटकाए रखना और बाद में गृहयुद्ध छेड़ देना"। यह दिशा, जो आत्मसमर्पणवादियों द्वारा अपनाई जाने वाली दिशा से कुछ भिन्न है, वे लोग अपना सकते हैं जो अब भी जापान का प्रतिरोध करने का लबादा ओढ़े रखना चाहते हैं और अपने कम्युनिज्म-विरोध और तानाशाही शासन को छोड़ने से बिलकुल इनकार करते हैं। ऐसे लोग यह दिशा इसलिए अपना सकते हैं क्योंकि वे यह देखते हैं कि अन्तरराष्ट्रीय परिस्थिति में भारी परिवर्तन होना अनिवार्य है और जापानी साम्राज्यवाद का सर्वनाश निश्चित है ; यह कि गृहयुद्ध का मतलब होगा आत्मसमर्पण कर देना तथा समूचे देश की जनता प्रतिरोध का पक्षपोषण करती है और गृहयुद्ध का विरोध करती है ; यह कि क्वोमिन्ताङ एक गम्भीर संकट की स्थिति में पड़ी हुई है, उसने जन-समुदाय से नाता तोड़ लिया है, जन-समर्थन खो दिया है और वह पहले से कहीं ज्यादा अलगाव की स्थिति में पड़ गई है ; तथा यह कि अमरीका, बरतानिया और सोवियत संघ, ये सभी चीन सरकार द्वारा गृहयुद्ध छेड़े जाने का विरोध कर रहे हैं। इन सब बातों से मजबूर होकर वे लोग अपनी गृहयुद्ध की स्कीमों को स्थगित कर सकते हैं तथा "राजनीतिक हल" और "वैधानिक सरकार की तैयारी" की खोखली बातें करके मामले को लटकाए रखते हैं। ये लोग धोखाधड़ी और मामले को लटकाए रखने के दांवपेंचों में माहिर हैं। वे अपनी इस ख्वाहिश को सपने में भी नहीं भूलते कि उन्हें "येनान पर कब्जा करना" है और "कम्युनिस्ट पार्टी को तहस-नहस करना" है। इस सिलसिले में वे लोग आत्मसमर्पणवादी गुट से पूरी तरह सहमत हैं। तो भी वे लोग जापान का प्रतिरोध करने का दिखावा अवश्य करते रहना चाहते हैं, यह नहीं चाहते कि क्वोमिन्ताङ अपनी अन्तरराष्ट्रीय प्रतिष्ठा

लेकिन एक लम्बे अरसे तक हमने उनके जवाब में एक भी शब्द नहीं कहा। क्वोमिन्ताङ ने बिना किसी औचित्य के ही नई चौथी सेना को, जो जापान के खिलाफ बहादुरी से लड़ रही थी, भंग कर दिया, दक्षिणी आनह्वेइ में स्थित उसकी टुकड़ियों के नौ हजार से ज्यादा सैनिकों का सफाया कर दिया, ये थिङ को गिरफ्तार कर लिया, श्याङ इङ की हत्या कर दी और उसके सैकड़ों कार्यकर्ताओं को जेल में ठूंस दिया; हालांकि यह जनता और राष्ट्र के प्रति भयंकर विश्वासघात था, फिर भी हमने देश के हित में बड़े संयम से काम लिया तथा महज विरोध प्रकट किया और इस घटना का समुचित समाधान करने की मांग पेश की। जब मिस्टर च्याङ काई-शेक जून और जुलाई १९३७ में कम्युनिस्ट पार्टी के प्रतिनिधि कामरेड चओ ऐन-लाइ से लूशान में मिला, तो उसने वायदा किया कि शेनशी-कानसू-निङश्या सीमान्त क्षेत्र को एक फरमान के जरिए एक ऐसे प्रशासनिक डिवीजन का नाम दे दिया जाएगा जो राष्ट्रीय सरकार की कार्यकारिणी य्वान की सीधी अधीनता में रहेगा तथा उसके अफसरों को औपचारिक रूप से नियुक्त किया जाएगा। अब मिस्टर च्याङ काई-शेक न सिर्फ अपनी जबान से मुकर गया है, बल्कि इससे भी आगे बढ़कर उसने सीमान्त क्षेत्र की फौजी व आर्थिक नाकेबन्दी करने के लिए उसे ४,००,००० से ५,००,००० तक सैनिकों से घेर लिया है; सीमान्त क्षेत्र की जनता और आठवीं राह सेना के पृष्ठभागीय सदर-मुकाम का विनाश किए बिना उसे चैन नहीं मिलेगा। यह खास तौर से कुख्यात है कि आठवीं राह सेना की रसद-सप्लाई करने का वायदा तोड़ दिया गया है तथा ये आरोप लगाए गए हैं कि कम्युनिस्ट पार्टी एक "गद्दार पार्टी" है, नई चौथी सेना एक "विद्रोही सेना" है

और आठवीं राह सेना एक "गद्दार सेना" है, वगैरह-वगैरह। संक्षेप में, क्वोमिन्ताङ के वे तमाम लोग जो इस प्रकार का व्यवहार करते आ रहे हैं, कम्युनिस्ट पार्टी को अपना दुश्मन समझते हैं। क्वोमिन्ताङ की नजर में कम्युनिस्ट पार्टी जापानियों के मुकाबले दस गुना, यहां तक कि सौ गुना घृणित है। क्वोमिन्ताङ अपनी सारी की सारी घृणा कम्युनिस्ट पार्टी पर केन्द्रित कर देती है, तथा जापानियों के लिए उसकी घृणा का शायद ही कोई अंश बचा रह जाता हो। यह व्यवहार जापानी फासिस्टों के बरताव से मेल खाता है, जो क्वोमिन्ताङ और कम्युनिस्ट पार्टी के प्रति अलग-अलग किस्म का बरताव करते हैं। जापानी फासिस्टों ने अपनी घृणा चीनी कम्युनिस्ट पार्टी पर केन्द्रित करके क्वोमिन्ताङ के प्रति अधिकाधिक नरमी का रुख अपना लिया है; उनके दो नारों – "कम्युनिस्टों का विरोध करो" और "क्वोमिन्ताङ को नेस्तनाबूद कर दो" – में से अब सिर्फ पहला नारा ही बाकी रह गया है। जापानियों और वाङ चिङ-वेइ के नियंत्रण में मौजूद अखबारों और पत्रिकाओं में अब "क्वोमिन्ताङ का नाश हो" और "च्याङ काई-शेक का तख्ता उलट दो" जैसे नारे प्रकाशित नहीं किए जाते। जापान ने कम्युनिस्ट पार्टी का मुकाबला करने के लिए चीन स्थित अपनी फौजों का ५८ प्रतिशत हिस्सा लगा दिया है और बाकी ४२ प्रतिशत हिस्से को क्वोमिन्ताङ पर नजर रखने के लिए तैनात कर दिया है; हाल ही में उसने क्वोमिन्ताङ पर नजर रखने के काम को कुछ ढीला कर दिया है तथा अपनी बहुत सी फौजों को चच्याङ और हुपे से हटा लिया है, ताकि क्वोमिन्ताङ को आत्मसमर्पण के लिए फुसलाना आसान हो जाए। जापानी साम्राज्यवादियों ने कम्युनिस्ट पार्टी को आत्मसमर्पण के लिए

फुसलाने की कोशिश में एक भी शब्द कहने की जुर्रत कभी नहीं की, लेकिन क्वोमिन्ताङ को आत्मसमर्पण के लिए फुसलाने की कोशिश में उन्होंने बेअन्त बातें करने में भी संकोच अनुभव नहीं किया। क्वोमिन्ताङ केवल कम्युनिस्ट पार्टी और जनता के प्रति ही खूंखार रुख अपनाती है, लेकिन जापानियों के सामने वह अपने तमाम खूंखारपन को ताक पर रख देती है। जहां तक लड़ाई का ताल्लुक है, क्वोमिन्ताङ न सिर्फ लड़ाई में शरीक होने वाले के बदले महज एक दर्शक बन गई है, बल्कि अपनी कथनी में भी जापानी साम्राज्यवाद द्वारा किए जाने वाले अपमान और उसके प्रलोभन का एक बार भी डटकर विरोध करने का साहस नहीं करती। जापानी यह कहते हैं, "च्याङ काई-शेक की 'चीन का भाग्य' नामक रचना में दलील की दिशा गलत नहीं है"। क्या मिस्टर च्याङ अथवा उसकी पार्टी के किसी अन्य सदस्य ने इस बात का कभी खण्डन किया है? नहीं, उन्होंने ऐसा नहीं किया और उनमें ऐसा करने की हिम्मत भी नहीं है। जापानी भला क्वोमिन्ताङ को नाचीज क्यों न समझें जबकि वे यह देखते हैं कि मिस्टर च्याङ काई-शेक और क्वोमिन्ताङ "फौजी आदेशों और सरकारी फरमानों" तथा "अनुशासन" का इस्तेमाल सिर्फ कम्युनिस्टों के खिलाफ करते हैं, और क्वोमिन्ताङ की केन्द्रीय कार्यकारिणी कमेटी के उन बीस सदस्यों और उन अट्ठावन क्वोमिन्ताङ जनरलों, जो दुश्मन से जा मिले हैं, के खिलाफ उन्हें इस्तेमाल करने की न तो उनकी इच्छा है और न उनमें ऐसा करने की हिम्मत है? समूचे देश की जनता और समूची दुनिया के मैत्रीपूर्ण राष्ट्र यह देख चुके हैं कि मिस्टर च्याङ काई-शेक और क्वोमिन्ताङ ने नई चौथी सेना को भंग कर दिया है और आठवीं राह सेना पर हमला

किया है, सीमान्त क्षेत्र की घेरेबन्दी की है, उन पर "गद्दार पार्टी", "गद्दार सेना", "एक नई किस्म के युद्ध-सरदार", "एक नई किस्म का पृथकतावादी शासन", "प्रतिरोध-युद्ध में तोड़फोड़ करने वाले" और "राज्य के लिए खतरा पैदा करने वाले" इत्यादि आरोप लगाए हैं, तथा लगातार "फौजी आदेशों और सरकारी फरमानों" और "अनुशासन" का सहारा लिया है; उन्होंने यह कभी नहीं देखा कि मिस्टर च्याङ और क्वोमिन्ताङ ने केन्द्रीय कार्यकारिणी कमेटी के उन बीस सदस्यों और उन अट्ठावन क्वोमिन्ताङ जनरलों, जो दुश्मन से जा मिले हैं, के खिलाफ कोई फौजी आदेश, सरकारी फरमान अथवा अनुशासनात्मक कार्यवाही लागू की हो। इसी तरह, क्वोमिन्ताङ की केन्द्रीय कार्यकारिणी कमेटी के ग्यारहवें पूर्ण अधिवेशन में तथा जन राजनीतिक परिषद की मीटिंग में हाल ही में जो प्रस्ताव पास किए गए हैं, वे सभी कम्युनिस्ट पार्टी के खिलाफ हैं, तथा उनमें से एक भी ऐसा नहीं जो क्वोमिन्ताङ की केन्द्रीय कार्यकारिणी कमेटी के उन बहुत से सदस्यों के खिलाफ और उन बहुत से फौजी जनरलों के खिलाफ हो जो गद्दार बनकर दुश्मन से जा मिले हैं। समूचे देश की जनता और समूची दुनिया के मैत्रीपूर्ण राष्ट्र आखिर क्वोमिन्ताङ के बारे में क्या सोचते होंगे? जैसी कि उम्मीद थी, ग्यारहवें पूर्ण अधिवेशन में फिर एक बार "राजनीतिक हल" और "वैधानिक सरकार की तैयारी" की चर्चा हुई; यह अच्छा हुआ, हम ऐसी चर्चा का स्वागत करते हैं। लेकिन क्वोमिन्ताङ ने पिछले अनेक वर्षों में जो राजनीतिक कार्यदिशा अपनाई है उसे देखते हुए हम यह समझते हैं कि यह चर्चा जनता की आंखों में धूल झोंकने के लिए की गई खोखली बातों के अलावा और कुछ

नहीं है, जिनका असली मकसद है गृहयुद्ध की तैयारी के लिए वक्त हासिल करना ताकि वह जनता पर अपना तानाशाही शासन हमेशा बनाए रखे।

क्या कोई तीसरी दिशा भी है जिसकी तरफ वर्तमान परिस्थिति का विकास हो सकता है? हां, है। क्वोमिन्ताङ के अनेक सदस्य, समूची जनता और हम कम्युनिस्ट यही उम्मीद करते हैं। यह तीसरी दिशा आखिर है क्या? क्वोमिन्ताङ और कम्युनिस्ट पार्टी के बीच के सम्बन्धों का एक न्यायोचित और समुचित राजनीतिक हल निकालना, एक सच्ची जनवादी और स्वतंत्र वैधानिक सरकार कायम करना, "एक पार्टी, एक वाद और एक नेता" वाली फासिस्ट तानाशाही को भंग करना तथा प्रतिरोध-युद्ध के दौरान जनता द्वारा सच्चे अर्थों में निर्वाचित एक राष्ट्रीय एसेम्बली का अधिवेशन बुलाना। हम कम्युनिस्टों ने इस दिशा की शुरू से ही पैरवी की है। इससे क्वोमिन्ताङ के अनेक सदस्य भी सहमत होंगे। काफी लम्बे अरसे तक हम यह उम्मीद करते रहे कि मिस्टर च्याङ काई-शेक और क्वोमिन्ताङ में उसके अपने गुट के लोग भी यही दिशा अपनाएंगे। लेकिन जो कुछ पिछले कुछ वर्षों में हुआ है और आज भी हो रहा है, उससे यह बिलकुल जाहिर नहीं होता कि मिस्टर च्याङ काई-शेक और क्वोमिन्ताङ के सत्तारूढ़ व्यक्तियों की बहुसंख्या ऐसा करने को तैयार है।

यह दिशा अपनाने से पहले अनेक अन्तरराष्ट्रीय और घरेलू परिस्थितियों का होना जरूरी है। इस समय (जबकि योरप में फासिस्टवाद अपने पूर्ण पतन की पूर्ववेला में है) अन्तरराष्ट्रीय परिस्थिति चीन के प्रतिरोध-युद्ध के लिए अनुकूल है, लेकिन ठीक

इसी मौके पर आत्मसमर्पणवादी भी गृहयुद्ध उकसाने के लिए खास तौर पर उत्सुक हैं, ताकि वे आत्मसमर्पण कर सकें, तथा जापानी और वाङ चिङ-वेइ भी खास तौर पर गृहयुद्ध के लिए उत्सुक हैं, ताकि वे उन्हें आत्मसमर्पण के लिए फुसला सकें। वाङ चिङ-वेइ ने कहा है (दोमेइ समाचार-एजेन्सी के १ अक्तूबर के समाचार के अनुसार): "वफादार भाई हमेशा भाई-भाई रहते हैं, और छुङकिङ अवश्य हमारा रास्ता अपना लेगा, हमें उम्मीद है कि वह जितनी जल्दी ऐसा करेगा उतना ही अच्छा होगा।" कितना प्यार है, कितना विश्वास है और कितनी उत्सुकता है! इस प्रकार वर्तमान परिस्थिति में क्वोमिन्ताङ से जिस चीज की सबसे ज्यादा आशा की जा सकती है वह है मसले को लटकाए रखना, जबकि अचानक स्थिति बिगड़ने का खतरा सचमुच बहुत गम्भीर हो गया है। तीसरी दिशा के लिए आवश्यक सभी परिस्थितियां अभी मौजूद नहीं हैं, तथा समूचे चीन की सभी पार्टियों के देशभक्तों और समूची जनता को चाहिए कि वे उन्हें पैदा करने के लिए चौतरफा कोशिशें करें।

मिस्टर च्याङ काई-शेक ने ग्यारहवें पूर्ण अधिवेशन में ऐलान किया है:

> यह साफ तौर से बता दिया जाए कि केन्द्रीय अधिकारी कम्युनिस्ट पार्टी से सिवाय इसके और कोई मांग नहीं करते कि वह अपने सशस्त्र पृथकतावादी शासन को छोड़ दे तथा राष्ट्रीय सेना पर अपने उन आकस्मिक हमलों को, जो प्रतिरोध-युद्ध में तोड़फोड़ करते हैं, तिलांजलि दे दे; उम्मीद की जाती है कि कम्युनिस्ट पार्टी गणराज्य के २६वें वर्ष [१९३७], राष्ट्र

को बचाने के लिए संयुक्त रूप से प्रयत्न करने के अपने ऐलान को अमल में उतारेगी तथा उक्त ऐलान में किए गए चार वायदों को पूरा करेगी।

मिस्टर च्याङ ने "राष्ट्रीय सेना पर अपने उन आकस्मिक हमलों, जो प्रतिरोध-युद्ध में तोड़फोड़ करते हैं" की जो चर्चा की है वह खुद क्वोमिन्ताङ पर ही लागू होती है, तथा यह बड़े दुर्भाग्य की बात है कि वह इतना ज्यादा पूर्वाग्रहपूर्ण और द्वेषपूर्ण हो गया कि उसने कम्युनिस्ट पार्टी पर इस प्रकार के लांछन लगाए। ऊहान के पतन के बाद से क्वोमिन्ताङ ने तीन कम्युनिस्ट-विरोधी हमले किए हैं, जिनमें से हर हमले में, जैसा कि तथ्यों से जाहिर होता है, क्वोमिन्ताङ फौजों ने कम्युनिस्ट फौजों पर आकस्मिक प्रहार किए। पहली मुहिम में, जो १६३६ के जाड़ों से १६४० के वसन्त तक चली, क्वोमिन्ताङ फौजों ने अपने आकस्मिक हमलों में, शेनशी-कानसू-निङश्या सीमान्त क्षेत्र के छुनह्वा, श्युनई, चङनिङ, निङश्येन और चनय्वान नामक उन पांच काउन्टी-केन्द्रों पर जहां आठवीं राह सेना तैनात थी, कब्जा कर लिया, तथा इन फौजी कार्यवाहियों में हवाई-जहाजों तक का इस्तेमाल किया। उत्तरी चीन में, चू ह्वाए-पिङ की फौजों को थाएहाङ पहाड़ों के इलाके में आठवीं राह सेना पर आकस्मिक हमला करने के लिए भेजा गया ; वहां आठवीं राह सेना ने सिर्फ आत्मरक्षा के लिए लड़ाई की। दूसरी मुहिम जनवरी १६४१ में छेड़ी गई। पहले, १६ अक्तूबर १६४० को हो इङ-छिन और पाए छुङ-शी ने चू तेह, फङ त-ह्वाए, ये थिङ और श्याङ इङ को तार द्वारा यह कड़ा आदेश दिया कि वे पीली नदी के दक्षिण में स्थित आठवीं

राह सेना और नई चौथी सेना की सभी यूनिटों को एक महीने के भीतर पीली नदी के उत्तर में हटा ले जाएं। हमने वायदा किया कि दक्षिणी आनह्वेइ स्थित हमारी फौजें उत्तर की तरफ चली जाएंगी ; जहां तक बाकी फौजों का सवाल है, इन हालात में चूंकि उनको उत्तर में भेजना नामुमकिन था इसलिए हमने वायदा किया कि जापानी-आक्रमण-विरोधी युद्ध में विजय प्राप्त करने के बाद वे निर्दिष्ट स्थानों पर पहुंच जाएंगी। फिर भी इससे पहले कि हमारे ६,००० सैनिक उक्त आदेश के मुताबिक ५ जनवरी को दक्षिणी आनह्वेइ से उत्तर की तरफ हटना शुरू करते, मिस्टर च्याङ काई-शेक ने "उन तमाम लोगों को एक जाल में फंसा लेने" का एक अन्य आदेश जारी कर दिया। ६ से १४ जनवरी के बीच, दक्षिणी आनह्वेइ स्थित क्वोमिन्ताङ फौजों ने नई चौथी सेना की इन यूनिटों को सचमुच एक जाल में फंसा लिया। यही नहीं, १७ जनवरी को मिस्टर च्याङ काई-शेक ने आदेश दिया कि समूची नई चौथी सेना को भंग कर दिया जाए और ये थिङ का कोर्ट-मार्शल किया जाए। और तब से मध्य चीन और उत्तरी चीन के जापान-विरोधी आधार-क्षेत्रों में जहां भी क्वोमिन्ताङ फौजें मौजूद हैं वहां आठवीं राह सेना और नई चौथी सेना पर हमले किए गए हैं, तथा इन दोनों सेनाओं ने सिर्फ आत्मरक्षा के लिए लड़ाई की है। तीसरी मुहिम इस वर्ष मार्च में शुरू हुई और अब भी जारी है। मध्य चीन और उत्तरी चीन में आठवीं राह सेना और नई चौथी सेना पर क्वोमिन्ताङ फौजों के हमले जारी हैं। इसके अलावा मिस्टर च्याङ काई-शेक ने अपनी "चीन का भाग्य" नामक रचना प्रकाशित कराई है, जो कम्युनिज्म के खिलाफ और जनता के खिलाफ गाली-गलौज से भरी

है। उसने पीली नदी पर तैनात अपनी बहुत सी प्रतिरक्षा-सेनाओं को सीमान्त क्षेत्र पर आकस्मिक हमला करने के लिए भेज दिया है। उसने समूचे देश के तथाकथित जन-संगठनों को इस बात के लिए उकसाया है कि वे कम्युनिस्ट पार्टी को भंग करने की मांग करें। उसने जन राजनीतिक परिषद में क्वोमिन्ताङ बहुमत को इस बात के लिए गोलबन्द किया है कि वे हो इङ-छिन की उस फौजी रिपोर्ट की पुष्टि करें जिसमें आठवीं राह सेना पर कीचड़ उछाला गया है, तथा कम्युनिस्ट-विरोधी प्रस्ताव पास करें। इस प्रकार उसने उक्त परिषद को, जिसे जापान-विरोधी एकता का प्रतीक होना चाहिए था, क्वोमिन्ताङ की एक ऐसी प्राइवेट एजेन्सी में बदल दिया जिसका काम गृहयुद्ध के लिए कम्युनिस्ट-विरोधी लोकमत तैयार करना है ; नतीजे के तौर पर परिषद के कम्युनिस्ट सदस्य कामरेड तुङ पी-ऊ को इसके प्रति विरोध प्रकट करने के लिए वाक-आउट करना पड़ा। उक्त तीनों कम्युनिस्ट-विरोधी हमलों की योजना क्वोमिन्ताङ द्वारा जानबूझकर बनाई गई थी और उन्हें जानबूझकर छेड़ा गया। हम पूछना चाहते हैं, अगर ये "प्रतिरोध-युद्ध में तोड़फोड़ करने" वाली कार्यवाहियां नहीं तो और क्या हैं?

गणराज्य के २६वें वर्ष (१९३७) में २२ सितम्बर को, चीनी कम्युनिस्ट पार्टी की केन्द्रीय कमेटी ने एक घोषणापत्र जारी किया जिसमें राष्ट्र को बचाने के लिए संयुक्त रूप से प्रयत्न करने का आवाहन किया गया। घोषणापत्र में हमने कहा :

> दुश्मन को अपनी साजिशें रचने के हेतु कोई भी बहाना गढ़ने न देने के लिए तथा शक-शुबहा रखने वाले तमाम नेकदिल

> व्यक्तियों की गलतफहमियों को दूर करने के लिए, चीनी कम्युनिस्ट पार्टी की केन्द्रीय कमेटी यह जरूरी समझती है कि वह राष्ट्रीय मुक्ति के कार्य के प्रति अपनी सच्ची वफादारी का ऐलान करे। इसलिए वह फिर एक बार समूचे राष्ट्र के सामने गम्भीरतापूर्वक यह ऐलान करती है कि (१) डा० सुन यात-सेन के जिन तीन जन-सिद्धान्तों की आज चीन को जरूरत है, उन्हें पूर्ण रूप से कार्यान्वित करने के लिए संघर्ष करने को हमारी पार्टी तैयार है ; (२) हम क्वोमिन्ताङ शासन को उखाड़ फेंकने के लिए बगावत करने तथा जमींदारों की जमीन को जबरन जब्त करने की अपनी नीतियों को छोड़ देंगे ; (३) हम वर्तमान लाल सरकार को पुनर्गठित करके उसे एक विशेष क्षेत्र की जनवादी सरकार का रूप दे देंगे, इस आशा से कि राजसत्ता का समूचे देश में एकीकरण किया जाएगा ; तथा (४) लाल सेना अपना नाम और फौजी ओहदा बदल देगी, राष्ट्रीय क्रान्तिकारी सेना के एक भाग के रूप में पुनर्गठित हो जाएगी और राष्ट्रीय सरकार की फौजी परिषद की अधीनता में काम करेगी तथा जापान-विरोधी मोर्चे की तरफ कूच करने और अपना फर्ज निभाने के लिए कूच करने का आदेश मानने को तैयार रहेगी।

हमने ये चार वायदे मुकम्मिल तौर पर पूरे कर लिए हैं ; न तो मिस्टर च्याङ काई-शेक और न क्वोमिन्ताङ का कोई अन्य व्यक्ति हम पर यह आरोप लगा सकता है कि हमने इनमें से एक भी वायदा तोड़ा है। पहले, शेनशी-कानसू-निङश्या सीमान्त क्षेत्र

में तथा दुश्मन के पृष्ठभाग में स्थित जापान-विरोधी आधार-क्षेत्रों में, कम्युनिस्ट पार्टी द्वारा अपनाई जाने वाली नीतियां डा० सुन यात-सेन के तीन जन-सिद्धान्तों के अनुरूप हैं और उनमें से एक भी नीति ऐसी नहीं है जो उनके विपरीत हो। दूसरे, जब तक क्वोमिन्ताङ राष्ट्रीय शत्रु के सामने आत्मसमर्पण नहीं करती, क्वोमिन्ताङ-कम्युनिस्ट सहयोग को तहस-नहस नहीं करती अथवा कम्युनिस्टों के खिलाफ गृहयुद्ध नहीं छेड़ती, तब तक हम अपने इस वायदे पर हमेशा कायम रहेंगे कि हम क्वोमिन्ताङ शासन का तख्ता उलटने अथवा जमींदारों की जमीन जब्त करने के लिए बल-प्रयोग नहीं करेंगे। हम अतीत काल में इस वचन पर कायम रहे हैं, वर्तमान काल में भी इस पर कायम हैं और भविष्य में भी इस पर कायम रहेंगे। इसका तात्पर्य यह है कि हमें अपना वचन भंग करने के लिए सिर्फ तभी मजबूर होना पड़ेगा जब क्वोमिन्ताङ दुश्मन के सामने आत्मसमर्पण कर देगी, सहयोग को तहस-नहस कर देगी और गृहयुद्ध छेड़ देगी, क्योंकि ऐसी परिस्थिति में हमारे लिए अपने वचन पर कायम रहना असम्भव हो जाएगा। तीसरे, मूल लाल सरकार का पुनर्गठन प्रतिरोध-युद्ध के पहले ही वर्ष में कर दिया गया था, तथा जनवादी सरकार की "तीन-तिहाई व्यवस्था" काफी समय से चली आ रही है, लेकिन आज दिन तक क्वोमिन्ताङ ने शेनशी-कानसू-निङश्या सीमान्त क्षेत्र को मान्यता देने का अपना वायदा पूरा नहीं किया, तथा इससे भी आगे बढ़कर उसने हम पर "सामन्ती पृथकतावाद" का आरोप लगाया है। मिस्टर च्याङ काई-शेक और क्वोमिन्ताङ के बाकी सदस्यो, सुन लो! आपको यह मालूम होना चाहिए कि जिसे आप लोग "पृथकतावाद" कहते

हैं – यानी वह स्थिति जिसमें शेनशी-कानसू-निङश्या सीमान्त क्षेत्र और अन्य जापान-विरोधी आधार-क्षेत्रों को क्वोमिन्ताङ सरकार द्वारा मान्यता नहीं दी जाती – उसे हमने खुद कभी नहीं चाहा, बल्कि आपके ही द्वारा हम पर जबरदस्ती लादा गया है। जब आप खुद अपनी जबान से मुकर जाते हैं, सीमान्त क्षेत्र को मान्यता देने के अपने वायदे को तोड़ देते हैं तथा वहां की जनवादी सरकार को स्वीकृति देने से इनकार करते हैं, तो फिर क्या कारण है कि आप हम पर "पृथकतावाद" का आरोप लगाते हैं? आए दिन हम आपसे मान्यता देने का अनुरोध करते हैं और आप इनकार करते हैं – ऐसी हालत में इसका जिम्मेदार भला कौन है? क्या वजह है कि मिस्टर च्याङ काई-शेक ने "चीन का भाग्य" नामक अपनी किताब में "पृथकतावाद" की भर्त्सना की है और इस बात को कतई जाहिर नहीं होने दिया कि इस मामले के बारे में वह खुद जिम्मेदार है, हालांकि वह खुद क्वोमिन्ताङ का महानिर्देशक और उसकी सरकार का शासनाध्यक्ष है? ग्यारहवें पूर्ण अधिवेशन के मौके का फायदा उठाकर, जिसमें मिस्टर च्याङ काई-शेक ने फिर एक बार मांग की है कि हम अपना वायदा पूरा करें, हम भी मांग करते हैं कि वह शेनशी-कानसू-निङश्या सीमान्त क्षेत्र को, जहां जनवाद के सिद्धान्त पर काफी समय से अमल किया जा रहा है, तथा साथ ही दुश्मन के पृष्ठ-भाग में स्थित जापान-विरोधी जनवादी आधार-क्षेत्रों को कानूनी मान्यता देने का अपना वायदा पूरा करे। अगर आप मान्यता न देने की अपनी नीति पर अड़े रहे, तो इसका मतलब यह होगा कि आप हमसे भी यह चाहते हैं कि हम "पृथकतावाद" जारी रखें, और यह कि अतीत काल की ही तरह इसका दोषी पूरी तरह

आपको ही ठहराया जाएगा, हमें नहीं। चौथे, लाल सेना को अपना "नाम और फौजी ओहदा" बदले, "राष्ट्रीय क्रान्तिकारी सेना के एक भाग के रूप में पुनर्गठित" हुए तथा "राष्ट्रीय सरकार की फौजी परिषद की अधीनता" में गए एक लम्बा अरसा हो चुका है ; यह वायदा काफी समय पहले ही पूरा किया जा चुका है। जो सैन्य-शक्ति अभी कम्युनिस्ट पार्टी की केन्द्रीय कमेटी की प्रत्यक्ष अधीनता में है और राष्ट्रीय सरकार की फौजी परिषद की अधीनता में नहीं है, वह राष्ट्रीय क्रान्तिकारी सेना की नई चौथी सेना है ; इसकी वजह यह है कि १७ जनवरी १९४१ को फौजी परिषद द्वारा एक ऐसे प्रतिक्रान्तिकारी आदेश के जरिए जिसने प्रतिरोध-युद्ध में तोड़फोड़ की और राज्य को खतरे में डाल दिया, नई चौथी सेना को "विद्रोही सेना" कहकर "भंग कर दिया गया", और सिर्फ यही नहीं, बल्कि उसे आए दिन क्वोमिन्ताङ फौजों के हमलों का सामना करना पड़ा। फिर भी इस सेना ने मध्य चीन में जापानियों का लगातार मुकाबला किया है और चार वायदों में से पहले तीन वायदे पूरे किए हैं ; यही नहीं, वह फिर एक बार "राष्ट्रीय सरकार की फौजी परिषद की अधीनता में" आने को तैयार है, तथा मिस्टर च्याङ काई-शेक से अनुरोध करती है कि वह इस सेना को भंग करने के आदेश को रद्द कर दे और उसके फौजी ओहदे की पुनर्स्थापना कर दे, ताकि वह चौथे वायदे को भी पूरा कर सके।

ग्यारहवें पूर्ण अधिवेशन में कम्युनिस्ट पार्टी के बारे में स्वीकृत दस्तावेज में यह भी कहा गया है :

> जहां तक दूसरी समस्याओं का ताल्लुक है, उन सब पर बहस

> करने और उन्हें हल करने के लिए राष्ट्रीय एसेम्बली में पेश किया जा सकता है, क्योंकि वर्तमान अधिवेशन में यह फैसला किया गया है कि युद्ध खत्म होने के बाद एक वर्ष के अन्दर राष्ट्रीय एसेम्बली बुलाई जाए तथा संविधान बनाया जाए और उसे जारी किया जाए।

यहां जिन "दूसरी समस्याओं" का जिक्र किया गया है वे हैं क्वोमिन्ताङ की तानाशाही को खत्म करना, फासिस्ट खुफिया विभाग को भंग करना, समूचे देश में जनवादी शासन की स्थापना करना, आर्थिक नियंत्रणों, भारी टैक्सों और विविध प्रकार की लेवियों को, जो जनता के लिए नुकसानदेह हैं, खत्म करना, लगान और सूद कम करने की भूमि-नीति को तथा छोटे व मझोले उद्योगों की मदद करने और मजदूरों का रहन-सहन सुधारने की आर्थिक नीति को राष्ट्रव्यापी पैमाने पर लागू करना। २२ सितम्बर १९३७ के अपने घोषणापत्र में राष्ट्र को बचाने के लिए संयुक्त रूप से प्रयत्न करने का आवाहन करते हुए हमारी पार्टी ने कहा था :

> जनवाद को अमल में लाया जाना चाहिए तथा एक संविधान बनाने और उसे स्वीकार करने और राष्ट्रीय पुनरुद्धार की नीति निर्धारित करने के लिए एक राष्ट्रीय एसेम्बली बुलाई जानी चाहिए। चीनी जनता को सुख-समृद्धि का जीवन व्यतीत करने योग्य बनाने के लिए, सबसे पहले अकाल पीड़ितों की सहायता करने, स्थिर जीविका की गारन्टी करने, प्रतिरक्षा-उद्योगों का विकास करने, जनता के कष्ट दूर करने और उसकी

रहन-सहन की स्थिति में सुधार करने के लिए कारगर कदम उठाए जाने चाहिए।

चूंकि इस घोषणापत्र को मिस्टर च्याङ काई-शेक ने अगले ही दिन (२३ सितम्बर को) अपने एक वक्तव्य में मुकम्मिल तौर पर स्वीकार कर लिया था, इसलिए उसे सिर्फ कम्युनिस्ट पार्टी से ही यह मांग नहीं करनी चाहिए कि वह अपने चार वायदों को पूरा करे, बल्कि खुद अपने से, क्वोमिन्ताङ और क्वोमिन्ताङ सरकार से भी यह मांग करनी चाहिए कि वे हमारे द्वारा ऊपर कही गई शर्तों को पूरा करें। मिस्टर च्याङ काई-शेक न सिर्फ क्वोमिन्ताङ का महानिर्देशक है, बल्कि वह क्वोमिन्ताङ सरकार (नाममात्र की राष्ट्रीय सरकार) का प्रेसिडेन्ट भी बन गया है; इसलिए उसे चाहिए कि वह जनवाद और जन-जीविका के बारे में इन शर्तों को, और उन अनगिनत वायदों को संजीदगी के साथ पूरा करे जिन्हें उसने हम कम्युनिस्टों से और समूचे देश की जनता से किया है, तथा अपने वायदे तोड़ना और जालिमाना हरकतें करना बन्द कर दे, तथा कथनी कुछ और करनी कुछ वाली हालत खत्म कर दे। समूची जनता के साथ मिलकर हम कम्युनिस्ट जिस चीज की मांग करते हैं वह है करनी, न कि ज्यादा खोखली, छल-प्रपंचपूर्ण कथनी। अगर कथनी को करनी में उतारा गया, तो हमें खुशी होगी; करनी के बिना महज खोखली बातों से जनता को ज्यादा समय तक धोखा नहीं दिया जा सकता। हम मिस्टर च्याङ काई-शेक और क्वोमिन्ताङ से जिस चीज की मांग करते हैं वह इस प्रकार है: प्रतिरोध-युद्ध को अन्त तक चलाओ, आत्मसमर्पण के खतरे से बचो; सहयोग जारी रखो, गृहयुद्ध के संकट को टालो;

सीमान्त क्षेत्र और दुश्मन के पृष्ठभाग में स्थित जापान-विरोधी आधार-क्षेत्रों की जनवादी सरकार को मान्यता दो, नई चौथी सेना को बहाल करो, कम्युनिस्ट-विरोधी मुहिम खत्म करो, जो ४,००,००० से ५,००,००० तक सैनिक इस समय शेनशी-कानसू-निङश्या सीमान्त क्षेत्र को घेरे हुए हैं, उन्हें हटा लो; जन राजनीतिक परिषद को कम्युनिस्ट-विरोधी लोकमत तैयार करने वाली क्वोमिन्ताङ प्राइवेट एजेन्सी के तौर पर इस्तेमाल करना बन्द करो, भाषण देने, सभा बुलाने और संगठन बनाने की आजादी पर से पाबन्दी हटा लो, क्वोमिन्ताङ की एकदलीय तानाशाही खत्म करो; लगान व सूद कम करो, मजदूरों की रहन-सहन और काम की हालतों को सुधारो, छोटे और मझोले उद्योगों की मदद करो; खुफिया विभाग को भंग करो, फासिस्ट शिक्षा को खत्म करो और जनवादी शिक्षा की शुरुआत करो। इनमें से ज्यादातर काम करने का वायदा आप खुद ही कर चुके हैं। अगर आप इन मांगों और वायदों को पूरा कर देंगे, तो हम आपको यकीन दिलाते हैं कि हम अपने वायदे पूरे करते रहेंगे। अगर मिस्टर च्याङ काई-शेक और क्वोमिन्ताङ तैयार हों, तो दोनों पक्षों के बीच बातचीत फिर शुरू करने को हम हर समय तैयार हैं।

संक्षेप में, जो तीन दिशाएं क्वोमिन्ताङ द्वारा अपनाई जाने की सम्भावना मौजूद है, उनमें से पहली दिशा, यानी आत्मसमर्पण व गृहयुद्ध की दिशा, मिस्टर च्याङ काई-शेक और क्वोमिन्ताङ के लिए विनाश का रास्ता है। दूसरी दिशा, यानी वक्त हासिल करने के लिए लफ्फाजीभरी धोखाधड़ी का सहारा लेना और फासिस्ट तानाशाही से चिपके रहना तथा चुपचाप बड़ी सक्रियता से गृहयुद्ध की

तैयारी करते रहना, भी इसी तरह मिस्टर च्याङ और क्वोमिन्ताङ के लिए उद्धार का रास्ता नहीं है। सिर्फ तीसरी दिशा, यानी फासिस्ट तानाशाही व गृहयुद्ध के गलत रास्ते को छोड़ देना और जनवाद व सहयोग के सही रास्ते को अपना लेना, ही मिस्टर च्याङ काई-शेक और क्वोमिन्ताङ के उद्धार का रास्ता है। लेकिन मिस्टर च्याङ और क्वोमिन्ताङ ने अभी तक लोगों को इस बात का यकीन दिलाने के लिए कुछ नहीं किया कि वे इस तीसरी दिशा में बढ़ने का इरादा रखते हैं; इसलिए समूचे देश की जनता को चाहिए कि वह आत्म-समर्पण और गृहयुद्ध के अत्यन्त गम्भीर खतरे से सावधान रहे।

क्वोमिन्ताङ के सभी देशभक्त सदस्य एकताबद्ध हो जाएं, और क्वोमिन्ताङ अधिकारियों को पहली दिशा की ओर बढ़ने से रोक दें, दूसरी दिशा की ओर पेशकदमी से बाज रखें, तथा यह मांग करें कि वे तीसरी दिशा में बढ़ें!

सभी देशभक्त जापान-विरोधी पार्टियां और लोग एकताबद्ध हो जाएं, और क्वोमिन्ताङ अधिकारियों को पहली दिशा की ओर बढ़ने से रोक दें, दूसरी दिशा की ओर पेशकदमी से बाज रखें, तथा यह मांग करें कि वे तीसरी दिशा में बढ़ें!

दुनिया में एक अभूतपूर्व परिवर्तन होना अनिवार्य है। हमें उम्मीद है कि मिस्टर च्याङ काई-शेक और क्वोमिन्ताङ के सदस्य हमारे युग के इस अहम मोड़ में समुचित भूमिका अदा करेंगे। हमें उम्मीद है कि सभी देशभक्त पार्टियां और देशभक्त लोग हमारे युग के इस अहम मोड़ में समुचित भूमिका अदा करेंगे।

नोट

[1] ह्वाङफू गुट का तात्पर्य उन क्वोमिन्ताङ जनरलों व अफसरों से है जो किसी समय ह्वाङफू फौजी अकादमी में शिक्षक अथवा शिक्षार्थी थे। क्वोमिन्ताङ सेना में वे लोग च्याङ काई-शेक के घनिष्ठतम अनुयायी थे।

संगठित हो जाओ !

२६ नवम्बर १६४३

कम्युनिस्ट पार्टी की केन्द्रीय कमेटी की तरफ से, मैं, उसके द्वारा आयोजित इस सत्कार-समारोह के अवसर पर, उन श्रमवीरों व श्रम-वीरांगनाओं तथा उत्पादन-कार्य में जुटे अन्य आदर्श कार्यकर्ताओं के लिए कुछ शब्द कहना चाहूंगा, जो शेनशी-कानसू-निङश्या सीमान्त क्षेत्र के गांवों, कारखानों, सशस्त्र सेनाओं, सरकारी व अन्य संगठनों और विद्यालयों से चुनकर यहां आए हुए हैं। जो कुछ मैं कहना चाहता हूं उसका निचोड़ है – "संगठित हो जाओ !" इस साल सीमान्त क्षेत्र के आम किसान लोग तथा सेना, सरकारी व अन्य संगठनों, विद्यालयों व कारखानों में काम करने वाले लोग, केन्द्रीय कमेटी के उत्तर-पश्चिमी ब्यूरो द्वारा पिछली सर्दियों में आयोजित वरिष्ठ कार्यकर्ताओं के सम्मेलन के प्रस्तावों के अनुसार उत्पादन आन्दोलन चलाते रहे हैं। इस वर्ष, उत्पादन के हर क्षेत्र में शानदार उपलब्धियां प्राप्त की गई हैं और भारी तरक्की हासिल की गई है तथा सीमान्त क्षेत्र की शकल बिलकुल ही बदल गई है। तथ्यों ने साबित कर दिया है कि वरिष्ठ कार्यकर्ताओं के सम्मेलन में जो

* यह भाषण कामरेड माओ त्सेतुङ ने शेनशी-कानसू-निङश्या सीमान्त क्षेत्र के श्रमवीरों के सम्मान में आयोजित एक सत्कार-समारोह में दिया था।

नीति अपनाई गई थी वह बिलकुल ठीक थी। इस नीति का निचोड़ यह है : आम जनता को संगठित करना, बिना किसी अपवाद के तमाम उपलब्ध शक्तियों को – आम लोगों को, फौज को, सरकारी व अन्य संगठनों को और विद्यालयों को – उन सभी पुरुषों व स्त्रियों, जवानों व बूढ़ों को जो अर्ध-श्रमशक्ति के रूप में या पूर्ण श्रमशक्ति के रूप में श्रम कर सकते हैं, श्रम करने वालों की एक विशाल फौज के रूप में गोलबन्द व संगठित करना। हमारे पास लड़ने के लिए एक फौज है, साथ ही श्रम करने के लिए भी एक फौज है। लड़ने के लिए हमारे पास आठवीं राह सेना तथा नई चौथी सेना हैं; लेकिन ये भी दोहरा काम करती हैं, लड़ती भी हैं और उत्पादन भी करती हैं। इन दो तरह की फौजों के होते हुए, और लड़ने वाली फौज के इन दोनों कार्यों तथा जन-कार्य में कुशल होते हुए, हम अपनी कठिनाइयां दूर कर सकते हैं और जापानी साम्राज्यवादियों को शिकस्त दे सकते हैं। यदि पिछले कुछ वर्षों में सीमान्त क्षेत्र के उत्पादन आन्दोलन की उपलब्धियां इतनी भारी अथवा उल्लेखनीय नहीं थीं कि इस बात को स्पष्ट रूप से साबित किया जा सकता, तो इस साल की हमारी उपलब्धियों ने सचमुच इस बात को साबित कर दिखाया है, जैसा कि हम सबने खुद अपनी आंखों देख लिया है।

सीमान्त क्षेत्र की तमाम ऐसी सशस्त्र टुकड़ियों में, जिन्हें इस साल जमीन दी गई थी, सैनिकों ने प्रति व्यक्ति पीछे औसतन अठारह मू[1] जमीन पर खेतीबारी की है; और वे लोग लगभग हर चीज पैदा कर सकते हैं या बना सकते हैं – खुराक (सब्जियां, गोश्त व खाद्य-तेल), कपड़े (रूईदार कपड़े, ऊनी कपड़े, मोजे व जूते), रहने की जगह (गुफाएं, मकान व सभा-भवन), रोजमर्रा की जरूरत की चीजें (मेज, कुर्सी, बेंच व लेखन-सामग्री) तथा ईंधन (जलाने की लकड़ी, लकड़ी का कोयला व पत्थर का कोयला)। खुद अपने ही हाथों का इस्तेमाल करके हमने "काफी खुराक व कपड़े-लत्ते" पैदा करने का लक्ष्य प्राप्त कर लिया है। हर सैनिक को केवल साल के तीन महीने उत्पादन-कार्य में लगाने की आवश्यकता होती है और बाकी नौ महीने वह ट्रेनिंग तथा लड़ाई में लगा सकता है। हमारी फौजें अपनी तनख्वाह के लिए न तो क्वोमिन्ताङ सरकार पर निर्भर रहती हैं और न सीमान्त क्षेत्र की सरकार अथवा जनता पर; वे पूरे तौर पर अपना प्रबन्ध खुद ही कर लेती हैं। हमारे राष्ट्रीय मुक्ति-कार्य के लिए यह कितना जबरदस्त महत्व रखने वाली नई कार्यविधि है! जापानी-आक्रमण-विरोधी युद्ध के पिछले साढ़े छै वर्षों के दौरान हमारे जापान-विरोधी आधार-क्षेत्र दुश्मन की सब कुछ जला डालने, सबको मार डालने और सब कुछ लूट लेने की "तीन तरह का सफाया करने" की नीति के शिकार रहे हैं, क्वोमिन्ताङ ने शेनशी-कानसू-निङश्या सीमान्त क्षेत्र की बड़ी जबरदस्त नाकेबन्दी कर रखी है और वित्तीय व आर्थिक दृष्टि से हम लोग बेहद कठिन स्थिति में फंस गए थे; अगर हमारी फौज लड़ने के सिवा और कुछ न करती, तो फिर हम अपनी समस्याएं हरगिज नहीं सुलझा सकते थे। अब सीमान्त क्षेत्र की हमारी फौजों ने उत्पादन-कार्य सीख लिया है, और इसी तरह मोर्चे पर तैनात कुछ फौजों ने भी यह चीज सीख ली है तथा बाकी इसे सीख रही हैं। अगर हमारी वीरतापूर्ण व युद्ध-कुशल आठवीं राह सेना व नई चौथी सेना का हर सैनिक लड़ने व जन-कार्य करने के अलावा उत्पादन-कार्य भी कर सके, तो फिर हमें किसी भी कठिनाई से डरने की

जरूरत नहीं है और हम मेनशियस के शब्दों में "आकाश के नीचे अजेय"[२] हो जाएंगे। हमारे संगठनों व विद्यालयों ने भी इस वर्ष इस दिशा में एक भारी कदम उठाया है। उनके खर्च का केवल एक छोटा सा भाग ही उन्हें सरकार से मिला है, अधिकांश भाग वे खुद अपने उत्पादन-कार्य से कमा लेते हैं ; सब्जी की जितनी खपत उनके यहां होती है उसका शत-प्रतिशत उन्होंने खुद उगा लिया है जबकि पिछले साल वे केवल ५० प्रतिशत सब्जी ही उगा पाए थे ; उन्होंने सुअर और भेड़ें पाल ली हैं जिसके कारण उनके यहां गोश्त की खपत बहुत अधिक बढ़ गई है, और रोजमर्रा की साधारण चीजें बनाने के लिए उन्होंने कई वर्कशापें खोल रखी हैं। चूंकि फौजें, विभिन्न संगठन और विद्यालय अब अपनी भौतिक आवश्यकताएं पूर्ण या अधिकांश रूप में खुद ही पूरी कर लेते हैं, इसलिए जनता से कम टैक्स लिया जाता है और इस तरह वह अपने श्रम के फलों का ज्यादा उपभोग कर सकती है। चूंकि सैनिक और नागरिक दोनों ही उत्पादन बढ़ा रहे हैं, इसलिए सभी लोगों के पास खाना व कपड़ा काफी मात्रा में है और वे खुश नजर आते हैं। हमारे कारखानों में भी उत्पादन बढ़ गया है, उनमें छिपे हुए जासूस पकड़ लिए गए हैं तथा उत्पादन-क्षमता बहुत अधिक बढ़ गई है। पूरे सीमान्त क्षेत्र के कृषि और औद्योगिक उत्पादन में, संगठनों व विद्यालयों में तथा फौज में भी बहुत बड़ी संख्या में श्रमवीर सामने आए हैं ; हम ऐसा कह सकते हैं कि सीमान्त क्षेत्र में उत्पादन सही रास्ते पर चल निकला है। यह सब आम जनता की शक्ति को संगठित करने का ही नतीजा है।

आम जनता की शक्ति को संगठित करना, यह एक नीति है। क्या कोई इसके प्रतिकूल नीति भी है ? हां, है। वह एक ऐसी नीति

है जिसमें जन-दृष्टिकोण का अभाव रहता है, जिसमें आम जनता पर न तो भरोसा किया जाता है और न उसे संगठित किया जाता है, और जिसमें महज वित्तीय संगठनों, सप्लाई संगठनों या व्यापारी संगठनों में काम करने वाले कुछ थोड़े से लोगों को संगठित करने पर ही ध्यान दिया जाता है तथा गांवों में, फौज में, सरकारी व अन्य संगठनों में, विद्यालयों में और कारखानों में काम करने वाले व्यापक जन-समुदाय को संगठित करने की तरफ ध्यान नहीं दिया जाता ; उसमें आर्थिक कार्य को एक व्यापक आन्दोलन या एक विस्तृत मोर्चे की तरह नहीं चलाया जाता, बल्कि वित्तीय घाटे की पूर्ति के लिए उसे महज एक कार्य-साधक उपाय समझा जाता है। यही वह दूसरी नीति है, एक गलत नीति है। शेनशी-कानसू-निङश्या सीमान्त क्षेत्र में पहले इसी तरह की नीति बरती जाती थी, लेकिन पिछले कुछ वर्षों में सही मार्गदर्शन मिलने से और खास तौर से पिछले वर्ष के वरिष्ठ कार्यकर्ताओं के सम्मेलन तथा इस वर्ष के जन-आन्दोलन के बाद, इस तरह के लोगों की संख्या जो अब भी ऐसा सोचते हैं शायद कम हो गई है। उत्तरी व मध्य चीन के आधार-क्षेत्रों में, जहां लड़ाई जोरों पर चल रही है और जहां की नेतृत्वकारी संस्थाओं ने इस ओर काफी ध्यान नहीं दिया, आम जनता द्वारा चलाया गया उत्पादन आन्दोलन अभी भी व्यापक नहीं हो सका है। फिर भी इस साल १ अक्तूबर को केन्द्रीय कमेटी द्वारा जारी किए गए निर्देश[३] के बाद से अगले साल के उत्पादन आन्दोलन के लिए हर जगह तैयारियां की जा रही हैं। शेनशी-कानसू-निङश्या सीमान्त क्षेत्र के मुकाबले मोर्चे की स्थिति ज्यादा मुश्किल है ; वहां न सिर्फ जोरों से लड़ाई हो रही है, बल्कि कुछ जगहों में भारी

प्राकृतिक आपदाएं भी आ खड़ी हुई हैं। फिर भी हमें दुश्मन के साथ लड़ने और उत्पादन में जुटने दोनों कामों के लिए समस्त पार्टी, सरकार व फौज तथा जनता को गोलबन्द करना चाहिए, ताकि युद्ध का समर्थन किया जा सके, "तीन तरह का सफाया करने" की दुश्मन की नीति का सामना किया जा सके और विपत्तिग्रस्त स्थानों को सहायता पहुंचाई जा सके। पिछले कुछ वर्षों में मोर्चे पर हुए उत्पादन सम्बन्धी तजरबों और इस वर्ष सर्दियों में हुई विचार-धारात्मक, संगठनात्मक व भौतिक तैयारियों के परिणामस्वरूप अगले वर्ष एक व्यापक आन्दोलन चलाया जा सकता है और अवश्य चलाया जाना चाहिए। अग्रिम मोर्चे वाले क्षेत्रों में जहां लड़ाई जारी है, अभी यह सम्भव नहीं कि "काफी खुराक व कपड़ा-लत्ता" मुहय्या किया जा सके, लेकिन यह कतई मुमकिन है और वास्तव में निहायत जरूरी है कि हम "खुद अपने हाथों को इस्तेमाल करके कठिनाइयां दूर करें"।

आर्थिक क्षेत्र में आजकल सहकारी समितियां सामूहिक संगठन का सबसे महत्वपूर्ण रूप हैं। हालांकि हमारी फौज में, हमारे सरकारी व अन्य संगठनों में तथा हमारे विद्यालयों में, जनता की जो उत्पादन सम्बन्धी गतिविधियां चल रही हैं उन्हें सहकारी समितियों का नाम देने का आग्रह करने की जरूरत नहीं है, फिर भी इन गतिविधियों का स्वरूप सहकारी समितियों जैसा ही है क्योंकि ये गतिविधियां विभिन्न विभागों, इकाइयों तथा व्यक्तियों की भौतिक जरूरतों को पूरा करने के जिए आपसी सहायता व मिलजुलकर श्रम करने के आधार पर एक केन्द्रीकृत नेतृत्व के अन्तर्गत चलाई जाती हैं। ये भी एक किस्म की सहकारी समितियां ही हैं।

आम किसानों में हजारों वर्ष से व्यक्तिगत अर्थव्यवस्था की प्रथा चली आ रही है जिसमें हर परिवार या घर एक उत्पादक इकाई बन जाता है। उत्पादन का यह बिखरा हुआ, व्यक्तिगत रूप सामन्ती शासन की आर्थिक बुनियाद होता है, जो किसानों को स्थाई रूप से कंगाल बनाए रखता है। इस हालत को बदलने का एकमात्र उपाय है कदम-ब-कदम समूहीकरण करना; तथा समूहीकरण लाने का एकमात्र उपाय है, जैसा कि लेनिन ने कहा है, सहकारी समितियां बनाना [४]। हम सीमान्त क्षेत्र में किसानों की बहुत सी सहकारी समितियां बना चुके हैं, लेकिन फिलहाल वे महज प्रारम्भिक किस्म की ही हैं और सोवियत किस्म की सहकारी समिति, जिसे सामूहिक फार्म कहते हैं, बनने के पहले उन्हें विकास की अनेक अवस्थाओं से गुजरना पड़ेगा। हमारी अर्थव्यवस्था नव-जनवादी है, और हमारी सहकारी समितियां अभी भी एक प्रकार के सामूहिक श्रम-संगठन हैं जो व्यक्तिगत अर्थव्यवस्था (निजी मिलकियत) पर आधारित हैं। इसके अलावा उनकी किस्में भी अनेक हैं। एक किस्म है, आपसी सहायता के लिए कृषक श्रम-संगठन, जैसे "श्रम-विनिमय दल" तथा "श्रम-विनिमय और मजदूरी पर काम करने वाले दल" [५]; इस तरह के संगठन च्याङशी के लाल क्षेत्रों में "आपसी सहायता कार्यदल" या "जोतने वाले दल" [६] कहलाते थे और अब मोर्चे के कुछ स्थानों में ये "आपसी सहायता दल" कहलाते हैं। जब तक वे ऐसे सामूहिक आपसी सहायता संगठन बने रहते हैं जिनमें लोग स्वतः ही (जबरदस्ती हरगिज नहीं की जानी चाहिए) शामिल होते हैं, तब तक वे सभी अच्छे रहते हैं, चाहे उनका नाम कुछ भी हो, चाहे उनमें से हर एक में थोड़े से, कुछ दर्जन या सैकड़ों

लोग हों या चाहे उनमें सबके सब ऐसे हों जो पूर्ण श्रमशक्ति के रूप में श्रम कर सकते हों अथवा कुछ लोग ऐसे भी हों जो अर्ध-श्रमशक्ति के रूप में श्रम कर सकते हों ; चाहे उनके सदस्य जन-शक्ति, पशु-शक्ति या औजारों से एक दूसरे की सहायता करें अथवा खेती के व्यस्त मौसम के दौरान साथ-साथ रहें और साथ-साथ खाएं ; और चाहे वे संगठन अस्थाई हों या स्थाई। सामूहिक आपसी सहायता के ये तरीके जनता ने खुद-ब-खुद ईजाद किए हैं। अतीत काल में च्याङशी की जनता के बीच हम इस किस्म के अनुभवों का निचोड़ निकाला करते थे, और अब हम उत्तरी शेनशी में भी इस किस्म के अनुभवों का निचोड़ निकाल रहे हैं। पिछले साल वरिष्ठ कार्य-कर्ताओं के सम्मेलन के दौरान श्रम में आपसी सहायता को बढ़ावा दिए जाने के बाद, तथा इस साल पूरे वर्ष उस पर अमल किए जाने के बाद, सीमान्त क्षेत्र में यह कार्य पहले से कहीं अधिक व्यवस्थित व विकसित हो गया है। सीमान्त क्षेत्र के बहुत से श्रम-विनिमय दलों ने अपनी जुताई, रोपनी, निराई तथा फसल-कटाई सामूहिक रूप से की है, और इस साल प्राप्त हुई फसल पिछले साल के मुकाबले दुगुनी है। अब चूंकि जनता ने ये ठोस नतीजे देख लिए हैं, इसलिए निस्सन्देह अगले वर्ष ज्यादा से ज्यादा लोग यह तरीका अपनाएंगे। हम ऐसी आशा नहीं करते कि सीमान्त क्षेत्र के लाखों लोग, जो पूर्ण श्रमशक्ति के रूप में या अर्ध-श्रमशक्ति के रूप में श्रम कर सकते हैं, सालभर के अन्दर ही सबके सब सहकारी समितियों में संगठित हो जाएंगे, लेकिन कुछ वर्षों की अवधि में यह लक्ष्य अवश्य प्राप्त किया जा सकता है। सब महिलाओं को भी कुछ न कुछ उत्पादन-कार्य करने के लिए गोलबन्द किया जाना चाहिए। तमाम आवारा-

गर्दों को उत्पादन-कार्य में शामिल किया जाना चाहिए ताकि वे सुधरकर अच्छे नागरिक बन सकें। उत्तरी चीन और मध्य चीन के सभी जापान-विरोधी आधार-क्षेत्रों में इस तरह की सामूहिक आपसी-सहायता उत्पादक सहकारी समितियां व्यापक रूप से तथा स्वेच्छा के आधार पर संगठित की जानी चाहिए।

कृषि उत्पादन के लिए सामूहिक आपसी-सहायता सहकारी समितियों के अलावा तीन अन्य किस्मों के संगठन भी हैं : येनान की दक्षिण क्षेत्रीय सहकारी समिति जैसी बहुधन्धी सहकारी समिति, जो उत्पादन, उपभोक्ता, परिवहन (नमक परिवहन) तथा ऋण देने के कार्यों को एक में मिला देती है ; परिवहन सहकारी समितियां (नमक परिवहन दल) ; और दस्तकारी सहकारी समितियां।

जनता के बीच इन चार किस्मों की सहकारी समितियों की और फौज में, सरकारी व अन्य संगठनों में तथा विद्यालयों में सामूहिक-श्रम सहकारी समितियों की स्थापना करके, हम जनता की तमाम शक्तियों को श्रम की एक विशाल फौज के रूप में संगठित कर सकते हैं। जनता के लिए मुक्ति का एकमात्र रास्ता यही है, गरीबी से खुशहाली की ओर बढ़ने का एकमात्र रास्ता यही है और जापानी-आक्रमण-विरोधी युद्ध में विजय प्राप्त करने का एकमात्र रास्ता यही है। हर कम्युनिस्ट को आम जनता के श्रम को संगठित करने का कार्य अवश्य सीख लेना चाहिए। बुद्धिजीवी कम्युनिस्टों को भी यह काम अवश्य सीख लेना चाहिए ; जहां एक बार उन्होंने इसमें मन लगा दिया तो फिर छै महीने या सालभर में ही वे यह काम सीख जाएंगे। उत्पादन का संगठन करने और अनुभवों का निचोड़ निकालने में वे आम जनता की मदद कर सकते हैं। अन्य कामों में

कुशलता प्राप्त करने के अलावा जब हमारे साथी ग्राम जनता के श्रम को संगठित करना सीख लेंगे – अर्थात जब वे घरेलू उत्पादन योजनाएं बनाने में किसानों की मदद करना सीख लेंगे, श्रम-विनिमय दल, नमक परिवहन दल तथा बहुधन्धी सहकारी समितियां कायम करना सीख लेंगे, फौज में, सरकारी व अन्य संगठनों में तथा विद्यालयों में उत्पादन का संगठन करना सीख लेंगे, कारखानों में उत्पादन का संगठन करना, उत्पादन में होड़ आन्दोलन चलाना, श्रमवीरों को प्रोत्साहन व पुरस्कार देना, और उत्पादन प्रदर्शनियों का आयोजन करना सीख लेंगे – जब हमारे साथी ग्राम जनता की सृजनात्मक शक्ति तथा पहलकदमी का विकास करना सीख लेंगे, तब हम निश्चित रूप से जापानी साम्राज्यवादियों को निकाल बाहर कर सकेंगे और समस्त जनता के साथ मिलकर नए चीन का निर्माण कर सकेंगे।

हम कम्युनिस्टों में यह क्षमता अवश्य होनी चाहिए कि हम सभी बातों में अपने को ग्राम जनता के साथ एकरूप कर सकें। अगर हमारे पार्टी-मेम्बर बन्द कमरे में बैठे रहकर सारी जिन्दगी गुजार दें और दुनिया का सामना करने व तूफान का मुकाबला करने के लिए कभी बाहर ही न निकलें, तो चीनी जनता को उनसे क्या फायदा होगा ? रत्तीभर भी नहीं, और इस तरह के पार्टी-मेम्बर हमें नहीं चाहिए। हम कम्युनिस्टों को दुनिया का सामना करना चाहिए और तूफान का मुकाबला करना चाहिए, जन-संघर्षों की विशाल दुनिया का तथा जन-संघर्षों के जबरदस्त तूफान का। "तीन मोची अगर एक साथ मिलकर अपनी अक्ल का इस्तेमाल करें, तो वे चूके ल्याङ* की तरह कमाल दिखा सकते हैं।" दूसरे शब्दों में कहें, तो ग्राम जनता के अन्दर बड़ी महान सृजनात्मक शक्ति होती है।

वास्तव में चीनी जनता के बीच हजारों-लाखों चूके ल्याङ मौजूद हैं ; हर गांव, हर कस्बे का अपना खुद का चूके ल्याङ होता है। हमें ग्राम जनता के पास जाकर उससे सीखना चाहिए, उसके अनुभवों को इकट्ठा करके उन अनुभवों को बेहतर, सुसम्बद्ध सिद्धान्तों व तरीकों का रूप देना चाहिए, फिर ग्राम लोगों के बीच प्रचार-कार्य शुरू करना चाहिए और उनका आवाहन करना चाहिए कि वे इन सिद्धान्तों व तरीकों को अमल में लाएं ताकि उनकी समस्याएं हल की जा सकें और मुक्ति व सुखमय जीवन प्राप्त करने में उनकी मदद की जा सके। अगर स्थानीय काम करने वाले हमारे साथी ग्राम जनता से अलग-थलग हो जाते हैं, उसकी भावनाओं को समझने में और उत्पादन का संगठन करने तथा रहन-सहन को सुधारने के लिए उसकी मदद करने में नाकामयाब रहते हैं और अगर वे "राष्ट्रीय पुनरुद्धार के लिए सार्वजनिक अनाज" इकट्ठा करने तक ही अपने काम को सीमित रखते हैं, बिना इस बात का एहसास किए कि इस काम को करने के लिए उनकी महज १० फीसदी शक्ति काफी है बशर्ते कि वे पहले "जनता के खुद के पुनरुद्धार के लिए उसके निजी अनाज" की समस्या का समाधान करने में सहायता देने के लिए अपनी ९० फीसदी शक्ति लगा दें, तो ऐसा कहा जाएगा कि इन साथियों को क्वोमिन्ताङ की कार्यशैली की छूत लग गई है और इन पर नौकरशाही की गर्द जम गई है। क्वोमिन्ताङ जनता से सिर्फ मांग ही मांग करती है, बदले में उसे कुछ नहीं देती। अगर हमारी पार्टी का कोई सदस्य इस तरह से काम करता है तो उसकी कार्यशैली क्वोमिन्ताङ जैसी है, और उसके चेहरे को, जिस पर नौकर-शाही की गर्द की गहरी तह चढ़ी हुई है, गरम पानी से खूब अच्छी

तरह धोने की जरूरत है। मेरे खयाल से, हमारे सभी जापान-विरोधी आधार-क्षेत्रों के स्थानीय कार्य में यह नौकरशाही शैली पाई जाती है, और हमारे यहां कुछ ऐसे साथी मौजूद हैं जो जनता से अलग-थलग हुए पड़े हैं क्योंकि उनमें जन-दृष्टिकोण का अभाव है। हमें इस कार्यशैली को निश्चित रूप से त्याग देना चाहिए ; सिर्फ तभी हम जनता के साथ घनिष्ठ सम्बन्ध स्थापित कर सकते हैं।

इसके अलावा फौज से सम्बन्धित हमारे काम में एक किस्म की युद्धपतियों जैसी शैली पाई जाती है। यह भी क्वोमिन्ताङ की विशिष्ट कार्यशैली है, जिसकी फौज आम जनता से बिलकुल अलग-थलग रहती है। हमारी सेना को फौज और जनता के बीच, फौज और सरकार के बीच, फौज और पार्टी के बीच, अफसरों और साधारण सिपाहियों के बीच, और फौजी कार्य व राजनीतिक कार्य के बीच के सम्बन्धों तथा कार्यकर्ताओं के बीच के सम्बन्धों का संचालन करने वाले सही उसूलों का पालन करना चाहिए, और उसे युद्धपतिवाद की गलतियां हरगिज नहीं करनी चाहिए। अफसरों को चाहिए कि वे साधारण सिपाहियों से आत्मीयता बरतें तथा उनकी सुख-सुविधाओं के प्रति उदासीन न रहें और उन्हें शारीरिक सजा न दें ; फौज को जनता के साथ आत्मीयता बरतनी चाहिए और उसके हितों को हरगिज नुकसान नहीं पहुंचाना चाहिए ; फौज को सरकार व पार्टी की इज्जत करनी चाहिए और कभी भी "स्वतंत्र होने का दावा" नहीं करना चाहिए। हमारी आठवीं राह सेना व नई चौथी सेना जनता की सेनाएं हैं ; वे हमेशा बहुत अच्छी सेनाएं रही हैं, और सचमुच देशभर में सबसे अच्छी हैं। लेकिन यह सही है कि हाल के वर्षों में एक किस्म के युद्धपतिवाद की गलतियां पैदा हो गई

हैं, और फौज में काम करने वाले कुछ साथी लोग सिपाहियों, जनता, सरकार तथा पार्टी के प्रति अपने व्यवहार में उद्दण्ड व स्वेच्छाचारी बन गए हैं ; वे स्थानीय कार्य करने वाले साथियों को ही हमेशा दोष देते रहते हैं, अपने को कभी नहीं, अपनी उपलब्धियों के बारे में ही हमेशा सोचते रहते हैं अपनी कमियों के बारे में कभी नहीं, और चापलूसी को ही हमेशा पसन्द करते हैं, आलोचना को कभी नहीं। मिसाल के लिए, शेनशी-कानसू-निङश्या सीमान्त क्षेत्र में इस तरह की घटनाएं मिल जाएंगी। पिछले वर्ष वरिष्ठ कार्यकर्ताओं के सम्मेलन तथा फौजी व राजनीतिक कार्यकर्ताओं की मीटिंग के परिणामस्वरूप, और इस साल वसन्तोत्सव के दौरान "सरकार का समर्थन करने और जनता के साथ आत्मीयता बढ़ाने" तथा "सेना का समर्थन करने" के आन्दोलनों के परिणामस्वरूप, यह प्रवृत्ति आम तौर पर दूर हो गई है, लेकिन अभी भी इसके अवशेष बाकी हैं जिन्हें मिटाने के लिए हमें और अधिक प्रयत्न करना चाहिए। उत्तरी चीन व मध्य चीन के आधार-क्षेत्रों में भी इस किस्म के दोष पाए जाते हैं और वहां के पार्टी-संगठनों तथा फौज को चाहिए कि वे इन दोषों को मिटाने के लिए प्रयत्न करते रहें।

चाहे स्थानीय काम में नौकरशाही की तरफ ले जाने वाली प्रवृत्ति हो या फौजी कार्य में युद्धपतिवाद की तरफ, यह दोष वास्तव में एक ही स्वरूप का है, अर्थात जनता से अलग-थलग हो जाना। हमारे साथियों में से अधिकांश लोग अच्छे साथी हैं। जिन लोगों में यह दोष मौजूद है वे उसे अवश्य सुधार सकते हैं, बशर्ते कि एक बार उनकी आलोचना कर दी जाए और उनकी गलती उन्हें बता दी जाए। लेकिन आत्म-आलोचना एक निहायत जरूरी चीज है और गलत

प्रवृत्तियों का बाकायदा मुकाबला किया जाना चाहिए तथा ईमानदारी के साथ उनका सुधार किया जाना चाहिए। अगर स्थानीय काम में नौकरशाही की तरफ या फौजी काम में युद्धपतिवाद की तरफ ले जाने वाली प्रवृत्तियों की आलोचना करने में कोई चूकता है, तो इसका मतलब यह है कि वह क्वोमिन्ताङ कार्यशैली को बरकरार रखना चाहता है और अन्य दृष्टियों से साफ अपने चेहरे पर नौकरशाही या युद्धपतिवाद की गर्द चढ़ाए रखना चाहता है, और ऐसा आदमी एक अच्छा कम्युनिस्ट नहीं है। अगर ये दोनों प्रवृत्तियां खत्म कर दी जाती हैं तो हमारा सब काम, जिसमें निस्सन्देह उत्पादन आन्दोलन भी शामिल है, सुचारु रूप से चलने लगेगा।

हमारे सीमान्त क्षेत्र की शकल एकदम बदल गई है क्योंकि चाहे किसान जनता को लें, और चाहे सरकारी व अन्य संगठनों, विद्यालयों, फौज या कारखानों को, उत्पादन में सभी जगह मार्के के नतीजे हासिल किए गए हैं, और फौज तथा जनता के आपसी सम्बन्ध बहुत अच्छे हो गए। इन सब बातों से यह जाहिर हो जाता है कि हमारे साथियों में अपेक्षाकृत मजबूत जन-दृष्टिकोण मौजूद है और आम जनता के साथ एकरूप हो जाने के बारे में उन्होंने बड़ी तरक्की की है। फिर भी हमारे अन्दर आत्मसन्तोष की भावना नहीं पैदा होनी चाहिए, बल्कि हमें आत्म-आलोचना जारी रखनी चाहिए तथा और अधिक प्रगति के लिए प्रयत्नशील रहना चाहिए। उत्पादन के क्षेत्र में भी हमें और अधिक तरक्की करनी चाहिए। चूंकि हमारे चेहरे के गन्दे हो जाने की गुंजाइश रहती है, इसलिए हमें उसे हर दिन धोना चाहिए, ठीक उसी तरह जिस तरह कि फर्श के गन्दे हो जाने पर हम उसे हर रोज साफ करते हैं। हालांकि स्थानीय

काम में नौकरशाही की तरफ तथा फौजी काम में युद्धपतिवाद की तरफ ले जाने वाली प्रवृत्तियों को आम तौर से दूर कर दिया गया है, फिर भी ये बुरी प्रवृत्तियां फिर से सिर उठा सकती हैं। हम जापानी साम्राज्यवाद और चीनी प्रतिक्रियावाद की संघटित शक्तियों से घिरे हुए हैं और अनुशासनहीन निम्न-पूंजीपति वर्ग के बीच में रहते हैं, इसलिए नौकरशाही व युद्धपतिवाद के गन्दगीभरे भीषण झोंके हर दिन हमारे चेहरों पर थपेड़े मारते रहते हैं। इसलिए कामयाबी मिलने पर हमें आत्मसन्तोष की भावना को कतई पैदा नहीं होने देना चाहिए। हमें आत्मसन्तोष की भावना की बराबर रोकथाम करते रहना चाहिए और अपनी कमियों की लगातार आलोचना करते रहना चाहिए, ठीक उसी तरह जिस तरह कि गन्दगी दूर करने और सफाई रखने के लिए हम हर रोज अपने चेहरे को धोते हैं अथवा फर्श पर झाड़ू लगाते हैं।

उत्पादन में जुटे हुए श्रमवीरो तथा आदर्श कार्यकर्ताओ! आप तो जनता के नेता हैं, आप अपने काम में बहुत कामयाब रहे हैं, और मैं आशा करता हूं कि आप लोग भी आत्मसन्तोष की भावना के शिकार नहीं होंगे। मुझे उम्मीद है कि जब आप क्वानचुङ, लुङतुङ, सानप्येन, स्वेइते और येनान इन उपक्षेत्रों की काउन्टियों में वापस लौटेंगे, जब आप अपने संगठनों, विद्यालयों, फौजी यूनिटों या कारखानों में वापस लौटेंगे, तो आप जनता का नेतृत्व करेंगे, आम लोगों का नेतृत्व करेंगे तथा पहले से ज्यादा अच्छी तरह काम करेंगे, और सबसे पहले लोगों को स्वेच्छा के आधार पर सहकारी समितियों में संगठित करेंगे, उनको पहले से ज्यादा अच्छी तरह तथा पहले से भी अधिक संख्या में संगठित करेंगे। मैं आशा करता हूं कि आप

वापस लौटकर यह कार्य करेंगे और इसका प्रचार करेंगे, ताकि अगले साल होने वाले श्रमवीरों के सम्मेलन तक हम और बड़ी-बड़ी सफलताएं प्राप्त कर सकें।

नोट

¹ मू जमीन नापने का एक पैमाना है। एक मू में १० फ़न होते हैं और १५ मू एक हैक्टर के बराबर होते हैं।

² "मेनशियस", ग्रन्थ ३, "कुङसुन छग्रो", भाग १, अध्याय ५।

³ केन्द्रीय कमेटी का १ अक्तूबर का निर्देश था "आधार-क्षेत्रों में लगान कम करने, उत्पादन बढ़ाने तथा 'सरकार का समर्थन करने और जनता के साथ आत्मीयता बढ़ाने' के आन्दोलन फैलाओ", जो इसी ग्रन्थ में संकलित है।

⁴ देखिए: वी० आई० लेनिन, "सहकारिता"।

⁵ "श्रम-विनिमय दल" और "श्रम-विनिमय और मजदूरी पर काम करने वाले दल", ये दोनों ही ऐसे श्रम-संगठन थे जो शेनशी-कानसू-निङश्या सीमान्त क्षेत्र की कृषि में सामूहिक आपसी सहायता के लिए बनाए गए थे। श्रम-विनिमय एक साधन था जिसके जरिए किसान लोग आपस में श्रमशक्ति को व्यवस्थित कर लेते थे। मनुष्य के श्रमदिनों का विनिमय मनुष्य के श्रमदिनों से किया जाता था, बैल के श्रमदिनों का विनिमय बैल के श्रमदिनों से किया जाता था, मनुष्य के श्रमदिनों का विनिमय बैल के श्रमदिनों से किया जाता था, इत्यादि। जो किसान श्रम-विनिमय दलों में शामिल होते थे, वे हर सदस्य-परिवार की भूमि को सामूहिक रूप से और एक-एक करके जोतने के लिए अपनी श्रमशक्ति या पशु-शक्ति लगा देते थे। हिसाब करते वक्त श्रमदिन को विनिमय की इकाई मान लिया जाता था; जो लोग अधिक संख्या में मनुष्य के श्रमदिन या पशु के श्रमदिन लगाते थे, उन्हें कम संख्या में श्रमदिन लगाने वाले लोग इस अन्तर के बराबर पारिश्रमिक दे देते थे। "श्रम-विनिमय व मजदूरी पर काम करने वाले दल" आम तौर से उन किसानों द्वारा बनाए जाते थे जिनके पास काफी जमीन नहीं होती थी। पारस्परिक सहायता के लिए आपस में श्रम-विनिमय करने के अलावा उनके सदस्य सामूहिक तौर पर उन परिवारों के लिए भी मजदूरी पर काम कर दिया करते थे जिनके पास श्रमशक्ति की कमी थी।

⁶ देखिए: "हमारी आर्थिक नीति", नोट २ ("माओ त्सेतुङ की संकलित रचनाएं", ग्रन्थ १)।

⁷ चूके ल्याङ (१८१-२३४ ई०) चीनी सामन्ती समाज का एक राजनीतिज्ञ व रणनीतिज्ञ था, जिसे चीनी ऐतिहासिक उपन्यास "सान क्वो येन ई" (तीन राज्यों की कहानी) में एक सुयोग्य और बुद्धिमान आदमी के रूप में चित्रित किया गया है।

हमारा अध्ययन और वर्तमान परिस्थिति

१२ अप्रैल १९४४

१

पिछली सर्दियों से हमारी पार्टी के वरिष्ठ कार्यकर्ता हमारी पार्टी के इतिहास में मौजूद दो कार्यदिशाओं की समस्या का अध्ययन कर रहे हैं। इससे इन अनेक वरिष्ठ कार्यकर्ताओं का राजनीतिक स्तर बहुत ऊंचा उठ गया है। इस अध्ययन के दौरान कामरेडों ने बहुत से सवाल उठाए। केन्द्रीय कमेटी के राजनीतिक ब्यूरो ने इनमें से कुछ महत्वपूर्ण सवालों के बारे में निष्कर्ष निकाले हैं। वे निम्नांकित हैं :

१. इस सवाल पर कि अपने ऐतिहासिक अनुभव का अध्ययन करते समय क्या रवैया अपनाया जाए। केन्द्रीय कमेटी की राय है कि पार्टी के इतिहास में जो सवाल उठें हम उनके बारे में कार्यकर्ताओं

* चीनी कम्युनिस्ट पार्टी के केन्द्रीय नेतृत्वकारी संगठन और वरिष्ठ कार्यकर्ताओं ने १९४२ से १९४४ तक पार्टी के इतिहास पर, विशेषकर १९३१ के शुरू से १९३४ के अन्त तक के काल पर, बहस की। इस बहस से मार्क्सवाद-लेनिनवाद के आधार पर पार्टी में विचारधारात्मक एकता लाने में बड़ी सहायता मिली। केन्द्रीय कमेटी के राजनीतिक ब्यूरो की विस्तृत मीटिंग ने, जो जनवरी १९३५ में क्वेइचओ प्रान्त के चुनई में हुई, १९३१ के शुरू से १९३४ के अन्त तक चली

को विचारधारात्मक रूप से अपनी समझ स्पष्ट करने के योग्य बनाएं, साथ ही जिन कामरेडों ने पहले गलतियां कीं उनके बारे में निर्णय करते समय हमें नरम नीति अपनानी चाहिए ताकि एक तो कार्यकर्ता हमारी पार्टी के ऐतिहासिक अनुभव को पूर्ण रूप से समझ लें और वे अतीत की गलतियां न दोहराएं, और दूसरे, तमाम कामरेडों को हमारे सम्मिलित प्रयास के लिए एकजुट किया जा सके। हमारी पार्टी के इतिहास में छन तू-श्यू की और ली ली-सान की गलत कार्य-दिशाओं के खिलाफ महान संघर्ष हुए और वे नितान्त आवश्यक थे। पर जो ढंग अपनाए गए उनमें त्रुटियां थीं। एक तो कार्यकर्ताओं को उन गलतियों के कारणों के बारे में, उन परिस्थितियों के बारे में जिनमें वे गलतियां हुईं और उन्हें सुधारने के विस्तृत उपायों और तरीकों के बारे में पूरी विचारधारात्मक जानकारी नहीं दी गई ; अतएव वैसी ही गलतियां फिर हुईं। और दूसरे, व्यक्तियों की जिम्मेदारी पर बहुत अधिक बल दिया गया। परिणाम यह निकला कि अपने सम्मिलित प्रयास के लिए हम उतने लोगों को एकजुट करने में असमर्थ रहे, जितने हम कर सकते थे। इन दो त्रुटियों से हमें सबक सीखना चाहिए। इस बार पार्टी इतिहास के सवालों पर विचार

आई गलत "वामपंथी" कार्यदिशा को दुरुस्त किया, केन्द्रीय नेतृत्वकारी संगठन की बनावट को बदल डाला, कामरेड माओ त्सेतुङ की रहनुमाई वाला नेतृत्व कायम किया और पार्टी कार्यदिशा को मार्क्सवाद-लेनिनवाद के सही रास्ते पर डाल दिया। तो भी बहुत से पार्टी कार्यकर्ताओं ने अतीत की गलत कार्यदिशाओं के स्वरूप को भलीभांति नहीं समझा। पार्टी कार्यकर्ताओं के मार्क्सवादी-लेनिनवादी विचारधारात्मक स्तर को और अधिक ऊंचा उठाने के लिए राजनीतिक ब्यूरो ने १६४२-४३ में पार्टी के इतिहास पर कई बहसें कीं और फिर १६४३-४४

करते समय हमें कुछ कामरेडों की व्यक्तिगत जिम्मेदारी पर नहीं, बल्कि उन परिस्थितियों के विश्लेषण पर जिनमें वे गलतियां हुईं, उनकी विषय-वस्तु और उनकी सामाजिक, ऐतिहासिक और विचार-धारात्मक जड़ों पर बल देना है, और यह भी "भावी गलतियों से बचने के लिए पिछली गलतियों से सबक सीखने" और "मरीज को बचाने के लिए उसकी बीमारी का इलाज करने" की भावना से करना चाहिए, ताकि विचारधारा में स्पष्टता लाने और कामरेडों में एकता स्थापित करने के दोहरे उद्देश्य को प्राप्त किया जा सके। अलग-अलग कामरेडों के मामलों पर विचार करते समय सावधानी का यह रवैया अपनाना कि न तो कोई बात छूटने पाए और न कामरेडों को हानि पहुंचे, हमारी पार्टी के प्रबल होने और फूलने-फलने की एक निशानी है।

२. तमाम सवालों के प्रति विश्लेषणात्मक ढंग अपनाओ, हर एक चीज का निषेध मत करो। उदाहरण के लिए, चौथे पूर्ण अधि-वेशन [1] से चुनई मीटिंग तक केन्द्रीय नेतृत्वकारी संगठन की मार्गदर्शक कार्यदिशा के सवाल का दो पहलुओं से विश्लेषण किया जाना चाहिए। यह बात स्पष्ट कर दी जाए कि एक ओर तो राजनीतिक कार्यनीति,

के दरम्यान समूची पार्टी के वरिष्ठ कार्यकर्ताओं की वैसी ही बहसें संगठित करने में रहनुमाई की। ये बहसें १६४५ में पार्टी की सातवीं राष्ट्रीय कांग्रेस के लिए महत्वपूर्ण तैयारी के रूप में थीं, जिन्होंने इसे चीनी कम्युनिस्ट पार्टी के इतिहास में अभूतपूर्व विचारधारात्मक तथा राजनीतिक एकता स्थापित करने के योग्य बनाया। "हमारा अध्ययन और वर्तमान परिस्थिति" इन बहसों के बारे में कामरेड माओ त्सेतुङ का भाषण है जो उन्होंने येनान में वरिष्ठ कार्यकर्ताओं के सम्मेलन में दिया।

सैनिक कार्यनीति और कार्यकर्ता-नीति, जो केन्द्रीय नेतृत्वकारी संगठन ने इस दौरान अपनाई, मुख्य रूप से गलत थीं, लेकिन दूसरी ओर च्याङ काई-शेक का विरोध करने और भूमि-क्रान्ति तथा लाल सेना के सशस्त्र संघर्ष को चलाने की बुनियादी बातों पर हममें और उन कामरेडों में जिन्होंने गलतियां कीं, कोई मतभेद नहीं था। और कार्यनीति सम्बन्धी पहलू के विश्लेषण की भी जरूरत है। उदाहरण के लिए, भूमि-समस्या पर उनकी अति-वामपंथी नीति की गलती यह थी कि उन्होंने जमींदारों को भूमि नहीं दी और धनी किसानों को घटिया भूमि दी। लेकिन वे कामरेड इस बात में हमारे साथ सहमत थे कि जमींदारों की भूमि जब्त करके उन किसानों में बांट दी जाए जिनके पास भूमि थोड़ी है या बिलकुल नहीं है। ठोस स्थिति का ठोस रूप में विश्लेषण करना लेनिन के कथनानुसार "मार्क्सवाद की अत्यन्त मूलभूत वस्तु है, मार्क्सवाद की जीती-जागती आत्मा है"[३]। विश्लेषणात्मक रुख की कमी होने के कारण, हमारे बहुत से साथी जटिल समस्याओं का बार-बार गहराई से विश्लेषण और अध्ययन नहीं करना चाहते, बल्कि सीधे निष्कर्ष निकालना पसन्द करते हैं, जो या तो मुकम्मिल तौर पर सकारात्मक होते हैं अथवा मुकम्मिल तौर पर नकारात्मक। हमारे अखबारों में विश्लेषणात्मक लेखों का अभाव होता है और हमारी पार्टी ने विश्लेषण की आदत अभी पूर्ण रूप से नहीं अपनाई। इसी से पता चलता है कि ऐसी त्रुटियां मौजूद हैं। अब से हमें ऐसी हालत को सुधार लेना चाहिए।

३. पार्टी की छठी कांग्रेस के दस्तावेजों पर बहस के बारे में। यह बता देना जरूरी है कि छठी राष्ट्रीय कांग्रेस की कार्यदिशा बुनियादी तौर पर सही थी क्योंकि इस कांग्रेस ने वर्तमान क्रान्ति के स्वरूप

की व्याख्या करते हुए इसे पूंजीवादी-जनवादी क्रान्ति कहा था और तत्कालीन स्थिति को दो क्रान्तिकारी उभारों के दरम्यान की मध्यावधि बतलाया था, अवसरवाद तथा मुहिमबाजी का खण्डन किया था और दससूत्री कार्यक्रम[४] घोषित किया था। यह सब सही था। इस कांग्रेस की भी अपनी त्रुटियां थीं। उदाहरण के लिए, यह चीनी क्रान्ति के अत्यन्त दीर्घकालीन स्वरूप और क्रान्ति में देहाती आधार-क्षेत्रों के अत्यन्त भारी महत्व की ओर इंगित करने में असमर्थ रही ; इसके अलावा उसकी दूसरी त्रुटियां अथवा गलतियां भी थीं। फिर भी छठी राष्ट्रीय कांग्रेस ने हमारी पार्टी के इतिहास में प्रगतिशील भूमिका अदा की।

४. इस सवाल पर कि १९३१ में शांघाई में जो अस्थाई केन्द्रीय नेतृत्वकारी संगठन कायम किया गया और उसने बाद में जो पांचवां पूर्ण अधिवेशन[५] बुलाया, वे वैध थे या नहीं। केन्द्रीय कमेटी की राय है कि वे दोनों वैध थे, लेकिन यह बता देना होगा कि चुनाव के लिए अपनाई गई कार्यविधि नाकाफी थी और इस घटना को एक ऐतिहासिक सबक समझना चाहिए।

५. पार्टी के इतिहास में गुटों के सवाल पर। यह बता देना होगा कि हमारी पार्टी के इतिहास में पहले जो गुट थे और जिन्होंने एक अस्वस्थ भूमिका अदा की, चुनई मीटिंग के बाद से होने वाले परिवर्तनों के परिणामस्वरूप वे अब नहीं रहे। पार्टी के भीतर दो कार्यदिशाओं के हमारे वर्तमान अध्ययन में यह बता देना अत्यन्त आवश्यक है कि वे गुट मौजूद थे और उन्होंने अस्वस्थ भूमिका अदा की। लेकिन यह सोच लेना गलत होगा कि उसी प्रकार के गलत राजनीतिक कार्यक्रमों और संगठनात्मक रूपों के साथ पार्टी में गुट

अब भी मौजूद हैं, जबकि पार्टी के भीतर इतने अधिक अन्दरूनी संघर्षों—जनवरी १६३५ की चुनई मीटिंग, अक्तूबर १६३८ में छठी केन्द्रीय कमेटी का छठा पूर्ण अधिवेशन, सितम्बर १६४१ में राजनीतिक ब्यूरो का विस्तृत अधिवेशन[५], १६४२ में पार्टी-व्यापी दोष-निवारण आन्दोलन और १६४३ की सर्दियों में पार्टी के भीतर दो कार्यदिशाओं के दरम्यान अतीत के संघर्षों के अध्ययन के लिए शुरू किया गया आन्दोलन—के जरिए परिवर्तन लाए गए हैं। पुराने गुट खत्म हो गए हैं। सिर्फ कठमुल्लावादी और अनुभववादी विचारधारा के अवशेष रह गए हैं। इन्हें दोष-निवारण आन्दोलन को जारी रखकर और तेज करके दूर किया जा सकता है। लेकिन हमारी पार्टी के भीतर और लगभग हर जगह जो चीज खतरनाक हद तक पाई जाती है, वह है एक अंधी "पहाड़ी दुर्ग"[६] प्रवृत्ति। उदाहरण के लिए, विभिन्न शाखाओं के कामरेडों के दरम्यान आपसी समझ, आपसी सम्मान और एकता का अभाव है, जो संघर्ष की उनकी पृष्ठभूमि की भिन्नताओं से, जिन इलाकों में वे काम करते हैं उनकी भिन्नताओं से (जैसे एक आधार-क्षेत्र और दूसरे आधार-क्षेत्र के दरम्यान तथा जापान-अधिकृत क्षेत्रों, क्वोमिन्ताङ-शासित क्षेत्रों और क्रान्तिकारी आधार-क्षेत्रों के दरम्यान) और उनके काम के विभागों की भिन्नताओं से (जैसे एक फौजी यूनिट और दूसरी फौजी यूनिट के दरम्यान और एक प्रकार के काम और दूसरे प्रकार के काम के दरम्यान) उत्पन्न होता है। यह एक मामूली सी बात मालूम होती है, लेकिन यह पार्टी की एकता और संघर्ष-क्षमता के विकास में बहुत बड़ी बाधा है। पहाड़ी दुर्ग प्रवृत्ति की सामाजिक तथा ऐतिहासिक जड़ इस तथ्य में मिलेगी कि चीन में निम्न-पूंजीपति

वर्ग के लोगों की संख्या विशेष रूप से अधिक है और हमारे देहाती आधार-क्षेत्र एक लम्बे अरसे तक शत्रु द्वारा एक दूसरे से अलग-थलग करके रखे गए हैं, जबकि इसका मनोगत कारण पार्टी की भीतरी शिक्षा की कमी है। हमारे सामने अब महत्वपूर्ण काम यह है कि हम इन कारणों को बताएं और कामरेडों को अपने अंधेपन से छुटकारा पाने, अपनी राजनीतिक समझ का स्तर ऊंचा करने, कामरेडों में अलगाव लाने वाले विचारधारात्मक कटघरों को तोड़ने और आपसी समझ व आपसी सम्मान की भावना को बढ़ाने की प्रेरणा दें, ताकि तमाम पार्टी में एकता स्थापित हो सके।

समूची पार्टी में इन प्रश्नों की स्पष्ट समझ न सिर्फ पार्टी के भीतर वर्तमान अध्ययन-आन्दोलन को सफल बनाने की गारन्टी कर देगी बल्कि इससे चीनी क्रान्ति की विजय भी निश्चित हो जाएगी।

२

वर्तमान परिस्थिति की दो विशेषताएं हैं: एक यह कि फासिस्ट-विरोधी मोर्चा दृढ़ होता जा रहा है और फासिस्ट मोर्चा कमजोर पड़ता जा रहा है। दूसरी यह कि फासिस्ट मोर्चे के अन्दर जन-शक्तियां सुदृढ़ होती जा रही हैं और जन-विरोधी शक्तियां कमजोर पड़ती जा रही हैं। पहली विशेषता एकदम स्पष्ट है और तुरन्त देखी जा सकती है। हिटलर बहुत जल्द परास्त हो जाएगा और जापानी आक्रमणकारी भी पराजय की ओर बढ़ रहे हैं। दूसरी विशेषता इतनी स्पष्ट नहीं है, इसलिए उसे सहज में समझा नहीं जा सकता। लेकिन योरप में, बरतानिया व अमरीका में और चीन में वह दिन-

ब-दिन अधिकाधिक स्पष्ट होती जा रही है।

चीन में जन-शक्तियों के विकास की व्याख्या हमारी पार्टी को तस्वीर का केन्द्र-बिन्दु बनाकर करने की जरूरत है।

जापानी-आक्रमण-विरोधी युद्ध के दौरान हमारी पार्टी के विकास को तीन मंजिलों में बांटा जा सकता है। पहली मंजिल १९३७ से १९४० तक की थी। इस मंजिल के पहले दो वर्षों में, १९३७ और १९३८ में, जापानी युद्ध-सरदारों ने क्वोमिन्ताङ को प्रमुख और कम्युनिस्ट पार्टी को गौण समझा। इसलिए उन्होंने अपनी मुख्य शक्ति क्वोमिन्ताङ मोर्चे के खिलाफ लगा दी और क्वोमिन्ताङ के प्रति अपनी नीति में सैनिक आक्रमण को प्रधानता और आत्मसमर्पण कराने के लिए राजनीतिक प्रलोभन देने को पूरक स्थान दिया। कम्युनिस्ट पार्टी के नेतृत्व में जो जापान-विरोधी आधार-क्षेत्र थे, उन्हें जापानियों ने कोई महत्व नहीं दिया। उनका खयाल था कि वहां मुट्ठीभर कम्युनिस्ट हैं जो छापामार लड़ाई लड़ रहे हैं। लेकिन अक्तूबर १९३८ में ऊहान पर अधिकार जमाने के बाद, जापानी साम्राज्यवादियों ने अपनी नीति को बदलना और कम्युनिस्ट पार्टी को प्रमुख और क्वोमिन्ताङ को गौण समझना शुरू कर दिया। क्वोमिन्ताङ के प्रति उनकी नीति में आत्मसमर्पण कराने के लिए राजनीतिक प्रलोभन देना प्रमुख हो गया और सैनिक आक्रमण उसका पूरक बन गया। इसके साथ ही उन्होंने अपनी मुख्य शक्ति क्रमशः कम्युनिस्टों के विरुद्ध झोंक दी, क्योंकि जापानी साम्राज्य-वादियों ने अब यह महसूस कर लिया कि जिससे उन्हें खतरा है वह क्वोमिन्ताङ नहीं बल्कि कम्युनिस्ट पार्टी है। १९३७ और १९३८ में क्वोमिन्ताङ ने प्रतिरोध-युद्ध के लिए अपेक्षाकृत ज्यादा प्रयास

किया, हमारी पार्टी के साथ उसके सम्बन्ध अपेक्षाकृत अच्छे थे और उसने जनता को, जापान-विरोधी जन-आन्दोलन पर बहुत से प्रतिबन्ध लगाने के बावजूद, अपेक्षाकृत अधिक आजादी दे रखी थी। मगर ऊहान के पतन के बाद, युद्ध में अपनी पराजयों के कारण और कम्युनिस्ट पार्टी के प्रति अपनी बढ़ती हुई शत्रुता के कारण, क्वोमिन्ताङ कदम-ब-कदम अधिक प्रतिक्रियावादी होती चली गई, कम्युनिस्ट पार्टी के खिलाफ अधिक सक्रिय और प्रतिरोध-युद्ध में अधिक निष्क्रिय होती चली गई। १९३७ में, गृहयुद्ध काल की पस्पाइयों के कारण, कम्युनिस्ट पार्टी के पास सिर्फ ४० हजार संगठित सदस्य और ३० हजार सैनिक थे। अतएव जापानी युद्ध-सरदारों ने इसे हेय समझा। लेकिन १९४० में पार्टी सदस्यता ८ लाख तक पहुंच गई, सेना बढ़कर लगभग ५ लाख हो गई और आधार-क्षेत्रों की कुल जनसंख्या, जिसमें सिर्फ हमें अनाज टैक्स देने वाले तथा हमें और जापानियों व कठपुतलियों दोनों को अनाज टैक्स देने वाले* लोग शामिल थे, लगभग १० करोड़ थी। हमारी पार्टी ने चन्द साल के दौरान ही युद्ध का इतना बड़ा इलाका अर्थात मुक्त क्षेत्र कायम कर लिया कि लगभग साढ़े पांच साल तक हमने क्वोमिन्ताङ मोर्चे के खिलाफ जापानी हमलावरों की मुख्य शक्ति के रणनीतिक आक्रमणों को रोके रखा, शत्रु की इन सेनाओं को अपनी ओर आकर्षित किया, क्वोमिन्ताङ को उसके मोर्चे पर संकट से बचाया और दीर्घकालीन प्रतिरोध-युद्ध जारी रखा। लेकिन इस मंजिल पर हमारी पार्टी में कुछ कामरेडों ने एक गलती की। उन्होंने जापानी साम्राज्यवाद की शक्ति को कम करके आंका (इसलिए वे युद्ध के दीर्घकालीन और क्रूर स्वरूप को नहीं देख पाए तथा उन्होंने बड़ी-बड़ी फारमेशनों

के साथ चलायमान लड़ाई को प्रमुख बनाने का पक्षपोषण किया और छापामार युद्ध को कम महत्व दिया), क्वोमिन्ताङ पर भरोसा किया और वे ठंडे दिमाग से एक स्वतंत्र नीति अपनाने में असफल रहे (अतएव क्वोमिन्ताङ के प्रति उनका आत्मसमर्पण और साहस के साथ व स्वतंत्र रूप से जन-समुदाय को गोलबन्द करके शत्रु के पृष्ठभाग में जापान-विरोधी जनवादी आधार-क्षेत्र कायम करने और पार्टी के नेतृत्व में लड़ने वाली सेना को बहुत अधिक बढ़ाने की नीति पर अमल करने में उनका ढुलमुलपन उत्पन्न हुआ)। इसी बीच हमारी पार्टी ने बहुत से नए सदस्य भरती कर लिए, जो अभी अनुभवहीन थे, और शत्रु के पृष्ठभाग में तमाम नए-नए आधार-क्षेत्र स्थापित किए गए, जो अभी सुदृढ़ नहीं बने थे। इस मंजिल के दौरान, आम स्थिति अनुकूल हो जाने के कारण और हमारी पार्टी और सेना के बढ़ जाने के कारण पार्टी के भीतर एक प्रकार की दम्भ की भावना उत्पन्न हो गई और बहुत से सदस्यों का दिमाग चढ़ गया। लेकिन इस मंजिल के दौरान हमने पार्टी के भीतर दक्षिणपंथी भटकाव को दूर किया और एक स्वतंत्र नीति अपनाई। हमने न सिर्फ जापानी साम्राज्यवाद को करारी मात दी, आधार-क्षेत्र बनाए और आठवीं राह सेना व नई चौथी सेना को बढ़ाया, बल्कि क्वोमिन्ताङ के पहले कम्युनिस्ट-विरोधी हमले को भी परास्त किया।

१९४१ और १९४२ के दौरान दूसरी मंजिल थी। बरतानिया और अमरीका के खिलाफ युद्ध की तैयारी करने और उसे चलाने के लिए जापानी साम्राज्यवादियों ने अपनी उस नीति को जो उन्होंने ऊहान के पतन के बाद अपनाई थी और जो क्वोमिन्ताङ के

बजाय कम्युनिस्ट पार्टी के खिलाफ अधिक शक्ति लगाने की नीति थी, अधिक जोरशोर से चलाया। उन्होंने हमारी पार्टी को अपने हमलों का निशाना बनाकर अपनी मुख्य शक्तियों के और भी अधिक भाग को कम्युनिस्ट रहनुमाई वाले तमाम आधार-क्षेत्रों के इर्दगिर्द जमा किया और एक के बाद एक "सफाया करो" अभियान चलाए और "सब कुछ जला डालने, सबको मार डालने और सब कुछ लूट लेने" की बर्बर नीति पर अमल किया। इसके परिणामस्वरूप १९४१-४२ के दो वर्षों में हमारी पार्टी घोर विपत्ति की स्थिति में पड़ गई। इस मंजिल में पार्टी के आधार-क्षेत्र सिकुड़ गए, आबादी पांच करोड़ से कम तक पहुंच गई, आठवीं राह सेना घटकर तीन लाख रह गई, हमें कार्यकर्ताओं की भारी क्षति उठानी पड़ी और हमारी वित्तीय व आर्थिक हालत बहुत नाजुक हो गई। इसी बीच क्वोमिन्ताङ ने अपने को दबाव से मुक्त पाकर हमारी पार्टी के खिलाफ अनेक हथकण्डे इस्तेमाल किए, अपना दूसरा बड़ा कम्युनिस्ट-विरोधी हमला शुरू कर दिया और जापानी साम्राज्यवादियों के साथ सांठगांठ करके हम पर धावा बोल दिया। लेकिन इस कठिन स्थिति ने हम कम्युनिस्टों को शिक्षित किया और हमने बहुत सी बातें सीखीं। हमने शत्रु के "सफाया करो" अभियान का, उसके द्वारा हमारे क्षेत्र को "कुतरने" की नीति [८] का, उसके "सार्वजनिक सुरक्षा को सुदृढ़ बनाओ" आन्दोलन [९] का, उसकी "सब कुछ जला डालने, सबको मार डालने और सब कुछ लूट लेने" की नीति का और उसकी राजनीतिक पश्चात्ताप कराने की नीति का मुकाबला करना सीख लिया। हमने संयुक्त मोर्चे के राजनीतिक सत्ता के संगठनों में "तीन-तिहाई व्यवस्था" को लागू करना, भूमि-नीति को अमल में

लाना, अपनी अध्ययन-शैली, पार्टी-सम्बन्धों को निभाने की शैली और लेखन-शैली को सुधारने के लिए दोष-निवारण आन्दोलन चलाना, बेहतर फौज और सरल प्रशासन की नीति को अमल में लाना, एकीकृत नेतृत्व की नीति को अमल में लाना, सरकार का समर्थन करने और जनता के साथ आत्मीयता बढ़ाने का आन्दोलन चलाना और उत्पादन का विकास करना सीख लिया अथवा सीखना शुरू कर दिया। हमने बहुत से लोगों की उस दम्भ की भावना समेत जो पहली मंजिल में उत्पन्न हो गई थी, अपनी बहुत सी त्रुटियों को दूर किया। चाहे इस दूसरी मंजिल में हमें भारी क्षति उठानी पड़ी, फिर भी हम अपने पांव पर खड़े रहे। हमने एक ओर जापानी आक्रमणकारियों के हमले को परास्त किया और दूसरी ओर क्वोमिन्ताङ के दूसरे बड़े पैमाने के कम्युनिस्ट-विरोधी हमले को। कम्युनिस्ट पार्टी पर क्वोमिन्ताङ के हमलों के कारण और उन संघर्षों के कारण जो हमें अपने बचाव के लिए करने पड़े, पार्टी के भीतर एक प्रकार का अति-वामपंथी भटकाव पैदा हो गया, जिसका एक उदाहरण था यह विश्वास पैदा होना कि क्वोमिन्ताङ-कम्युनिस्ट सहयोग जल्द टूट जाएगा। नतीजा यह निकला कि जमींदारों पर अत्यधिक प्रहार किए गए और पार्टी के बाहर जाने-माने व्यक्तियों के साथ एकता की उपेक्षा की गई। लेकिन हमने इस भटकाव को भी दूर किया। क्वोमिन्ताङ द्वारा पैदा किए गए टकराव के विरुद्ध संघर्ष में हमने "न्यायोचित आधार पर, अपना फायदा देखते हुए और संयत रूप से" संघर्ष चलाने के सिद्धान्त का समर्थन किया और संयुक्त मोर्चे के काम में "एकता, संघर्ष, संघर्ष के जरिए एकता" की आवश्यकता पर बल दिया। यों हमने जापान-विरोधी राष्ट्रीय

संयुक्त मोर्चा समूचे देश में और अपने आधार-क्षेत्रों में अक्षुण्ण बनाए रखा।

तीसरी मंजिल १९४३ से अब तक की है। हमारी विभिन्न नीतियां अधिक कारगर सिद्ध हुई हैं, विशेषकर दोष-निवारण आन्दोलन और उत्पादन के विकास के जो परिणाम हुए हैं वे बुनियादी स्वरूप वाले हैं, उनसे हमारी पार्टी विचारधारात्मक और भौतिक दोनों दृष्टियों से अजेय बन गई है। इसके अलावा पिछले साल हमने यह सीखा अथवा सीखना शुरू कर दिया कि कार्यकर्ताओं के अतीत की जांच-पड़ताल सम्बन्धी अपनी नीति को और गुप्त जासूसों का पर्दाफाश करने की अपनी नीति को कैसे चलाया जाए। इन परिस्थितियों में हमारे आधार-क्षेत्र फिर बढ़ गए हैं, उनकी जनसंख्या ८ करोड़ से अधिक तक पहुंच गई है जिसमें सिर्फ हमें अनाज टैक्स देने वाले और जापानियों व कठपुतलियों को तथा हमें दोनों को अनाज टैक्स देने वाले शामिल हैं। हमारी सेना की संख्या ४,७०,००० और हमारी मिलिशिया की संख्या २२,७०,००० और हमारी पार्टी सदस्यता ९ लाख से भी अधिक तक पहुंच गई है।

१९४३ में जापानी युद्ध-सरदारों ने चीन के प्रति अपनी नीति में कोई खास परिवर्तन नहीं किया और अपने मुख्य हमले कम्युनिस्ट पार्टी के खिलाफ जारी रखे। तीन साल से अधिक समय से, १९४१ से अब तक, चीन में मौजूद जापानी सेना के ६० प्रतिशत से अधिक सैनिक हमारी पार्टी की रहनुमाई वाले जापान-विरोधी आधार-क्षेत्रों पर भारी दबाव डालते रहे। इन वर्षों के दौरान कई लाख क्वोमिन्ताङ सैनिक, जो शत्रु के पृष्ठभाग में रह गए थे, जापानी साम्राज्यवादियों के प्रहारों का सामना करने में असफल रहे, लगभग

आधे सैनिकों ने आत्मसमर्पण कर दिया, लगभग आधे खेत रहे और सिर्फ मुट्ठीभर सैनिक ही बच रहे या पीछे हटकर वापस आ सके। क्वोमिन्ताङ के जिन सैनिकों ने आत्मसमर्पण किया था, वे जापानियों से मिल गए और उन्होंने हमारी पार्टी पर आक्रमण कर दिया। इस प्रकार पार्टी को ६० प्रतिशत से भी अधिक कठपुतली सैनिकों से लड़ना पड़ा। क्वोमिन्ताङ को सिर्फ ४० प्रतिशत से कम जापानी सेना का और १० प्रतिशत से कम कठपुतली सेना का मुकाबला करना पड़ा। अक्तूबर १६३८ में ऊहान के पतन से पूरे साढ़े पांच साल तक जापानी युद्ध-सरदारों ने क्वोमिन्ताङ मोर्चे के खिलाफ एक भी रणनीतिक आक्रमण नहीं किया, सिर्फ चन्द अपेक्षाकृत बड़ी मुहिमें (चच्याङ-च्याङशी, छाङशा, पश्चिमी हुपे, दक्षिणी हनान और छाङते में) चलाई और ये मुहिमें भी मामूली धावे मात्र थीं, जबकि उन्होंने अपना मुख्य ध्यान हमारी पार्टी की रहनुमाई वाले जापान-विरोधी आधार-क्षेत्रों पर ही केन्द्रित रखा। इस परिस्थिति में क्वोमिन्ताङ ने "पहाड़ों की ओर पीछे हटने" और "दूसरों को लड़ते देखने" की नीति अपनाई। वह सिर्फ उस समय प्रहार रोकती थी जब शत्रु बढ़ता था, और जब शत्रु पीछे हट जाता था तो हाथ पर हाथ धरे देखती रहती थी। १६४३ में क्वोमिन्ताङ अपनी घरेलू नीति में और ज्यादा प्रतिक्रियावादी बन गई और उसने अपना कम्युनिस्ट-विरोधी तीसरा बड़ा हमला किया जिसे हमने फिर से पीछे ढकेल दिया।

१६४३ से इस वर्ष के वसन्त-काल तक, प्रशान्त महासागर के मोर्चे पर जापानी हमलावरों के बराबर पांव उखड़ते जा रहे हैं और अमरीका ने अपने प्रत्याक्रमण को तेज कर दिया है, और अब

पश्चिम में सोवियत संघ की लाल सेना के जबरदस्त प्रहारों से हिटलर लड़खड़ा रहा है। अपनी पराजय से बचने के लिए जापानी साम्राज्यवादियों ने पेफिङ-हानखओ और हानखओ-क्वाङचओ रेलवे को यातायात के लिए खोल देने की बात सोची है और चूंकि वे छुङकिङ में क्वोमिन्ताङ को आत्मसमर्पण के लिए फुसलाने की नीति में असफल रहे हैं, इसलिए उन्होंने उस पर एक और प्रहार करना आवश्यक समझा है; अतएव उन्होंने इस साल क्वोमिन्ताङ पर बड़ा हमला करने की योजना बनाई है। हनान मुहिम[10] एक महीने से ज्यादा समय से चल रही है। शत्रु सेना की वहां सिर्फ चन्द डिवीजनें हैं, फिर भी कई लाख क्वोमिन्ताङ सैनिकों ने बगैर लड़े ही मैदान छोड़ दिया है, सिर्फ विविध नामधारी सेनाओं ने थोड़ा सा मुकाबला किया है। थाङ अन-पो की कमान में एकदम अराजकता फैली हुई है। अफसर अपने सैनिकों से और सैनिक जनता से कटे हुए हैं और उसकी दो तिहाई से अधिक सैन्य-शक्ति खत्म हो चुकी है। इसी तरह हू चुङ-नान ने जो डिवीजनें हनान भेजी हैं, वे शत्रु के साथ पहली ही मुठभेड़ में पराजित हो गई हैं। यह उन प्रतिक्रियावादी नीतियों का परिणाम है जिन्हें क्वोमिन्ताङ ने पिछले चन्द वर्षों में बड़ी तत्परता से लागू किया है। ऊहान के पतन के बाद से साढ़े पांच साल के दौरान कम्युनिस्ट पार्टी की रहनुमाई वाले मुक्त क्षेत्रों के युद्ध-मोर्चे ने जापानी और कठपुतली सेनाओं की मुख्य शक्ति का मुकाबला किया है। भविष्य में कुछ परिवर्तन हो सकता है, लेकिन वह सिर्फ अस्थाई ही हो सकता है क्योंकि क्वोमिन्ताङ ने जापान का निष्क्रिय प्रतिरोध करने और कम्युनिस्टों का सक्रिय विरोध करने की जो प्रतिक्रियावादी नीति अपना रखी है इससे उसका घोर पतन हुआ है और

उसका बुरी तरह हारना निश्चित है। जब ऐसा होगा तो हमारी पार्टी का जापानियों और कठपुतलियों से लड़ने का कार्य और भी बढ़ जाएगा। साढ़े पांच साल तक हाथ पर हाथ धरे देखते रहने से क्वोमिन्ताङ ने जो कुछ पाया है वह यह है कि उसकी लड़ने की क्षमता घट गई है। साढ़े पांच साल तक कठोर लड़ाई और संघर्ष के जरिए कम्युनिस्ट पार्टी ने जो कुछ पाया है वह यह है कि उसकी लड़ने की क्षमता बढ़ गई है। इसी से चीन के भाग्य का फैसला होगा।

कामरेड खुद देख सकते हैं कि जुलाई १९३७ के बाद सात साल में हमारी पार्टी के नेतृत्व में जनता की जनवादी शक्तियां तीन हालतों में से गुजरी हैं – उत्थान, पतन और नया उत्थान। हमने जापानी हमलावरों के क्रूर आक्रमणों को परास्त किया, व्यापक क्रान्तिकारी आधार-क्षेत्र स्थापित किए, पार्टी और सेना दोनों में बहुत अधिक वृद्धि की, क्वोमिन्ताङ के कम्युनिस्ट-विरोधी तीन बड़े हमलों को विफल बनाया और पार्टी के भीतर दक्षिणपंथी और "वामपंथी" गलत विचारों पर विजय पाई तथा समूची पार्टी ने काफी मूल्यवान अनुभव प्राप्त किया। पिछले सात सालों के दौरान किए गए हमारे काम का यह निचोड़ है।

हमारा मौजूदा काम है अपने आपको इससे भी बड़ी जिम्मेदारी के लिए तैयार करना। हमें जापानी हमलावरों को हर हालत में चीन से खदेड़ देने की तैयारी करनी है। पार्टी को इस जिम्मेदारी के योग्य बनाने के लिए हमें अपनी पार्टी को, अपनी सेना को और अपने आधार-क्षेत्रों को और बढ़ाना तथा सुदृढ़ बनाना चाहिए। हमें बड़े शहरों के और यातायात की मुख्य लाइनों के काम पर अधिक ध्यान

देना चाहिए और शहरों के काम को आधार-क्षेत्रों के काम के बराबर महत्व की स्थिति तक पहुंचा देना चाहिए।

जहां तक आधार-क्षेत्रों में हमारे काम का सम्बन्ध है, पहली मंजिल के दौरान इन क्षेत्रों को बढ़ाया तो बहुत गया, लेकिन सुदृढ़ नहीं किया गया। इसलिए दूसरी मंजिल में ज्योंही उन पर शत्रु के भारी प्रहार हुए, तो वे सिकुड़ गए। दूसरी मंजिल में हमारी पार्टी के नेतृत्व में जितने भी जापान-विरोधी आधार-क्षेत्र थे, वे सब अग्नि-दीक्षा में से गुजरे और पहली मंजिल के मुकाबले बहुत मजबूत हो गए। कार्यकर्ताओं और पार्टी-सदस्यों का विचारधारात्मक और राजनीतिक स्तर काफी ऊंचा हो गया और उन्होंने बहुत सी ऐसी बातें सीख लीं जो वे पहले नहीं जानते थे। लेकिन विचारात्मक बातों को स्पष्ट करने और नीति का अध्ययन करने में समय लगता है, और हमें अभी बहुत कुछ सीखना है। हमारी पार्टी अभी काफी मजबूत नहीं है, उसमें एकता अथवा दृढ़ता भी काफी नहीं है, और इसलिए जितनी जिम्मेदारी हमने अब ले रखी है इससे अधिक नहीं ले सकते। अब से हमारी समस्या प्रतिरोध-युद्ध को जारी रखते हुए अपनी पार्टी, अपनी सेना और आधार-क्षेत्रों को बढ़ाना और सुदृढ़ बनाना है। भविष्य के महान कार्य सम्बन्धी हमारी विचारधारात्मक और भौतिक तैयारी के सिलसिले में यह पहली आवश्यक मद है। इस तैयारी के बगैर हम जापानी हमलावरों को मार भगाने और समूचे चीन को मुक्त कराने में सफल नहीं हो पाएंगे।

बड़े शहरों में और यातायात की मुख्य लाइनों पर हमारा काम हमेशा नाकाफी रहा है। अगर अब हम बड़े-बड़े शहरों में और यातायात की मुख्य लाइनों पर जापानी साम्राज्यवाद से उत्पीड़ित लाखों-

करोड़ों मेहनतकश जन-समुदाय और नगरवासियों को पार्टी के इर्दगिर्द जमा करने का प्रयत्न नहीं करेंगे और सशस्त्र जन-विद्रोहों की तैयारी नहीं करेंगे, तो शहरों से सहायता न मिलने के कारण हमारी सेना और देहाती आधार-क्षेत्रों को सब प्रकार की कठिनाइयों का सामना करना पड़ेगा। दस साल से अधिक समय से हम देहात में हैं, और इसलिए हमने लोगों को देहात को भलीभांति समझने और देहाती आधार-क्षेत्र स्थापित करने के लिए प्रोत्साहित किया है। इस दस साल से अधिक समय के दौरान शहरों में विद्रोहों की तैयारी का काम जैसा कि पार्टी की छठी राष्ट्रीय कांग्रेस ने फैसला किया था, नहीं हो पाया और हो भी नहीं सकता था। लेकिन अब हालत बदल गई है और सातवीं राष्ट्रीय कांग्रेस के बाद छठी राष्ट्रीय कांग्रेस के प्रस्ताव पर अमल किया जाएगा। सातवीं कांग्रेस सम्भवतः जल्दी ही होगी और शहरों में अपने काम को सुदृढ़ बनाने और देशव्यापी विजय प्राप्त करने की समस्याओं पर विचार किया जाएगा।

शेनशी-कानसू-निङश्या सीमान्त क्षेत्र का औद्योगिक सम्मेलन, जो इस समय हो रहा है, बड़े महत्व का है। सीमान्त क्षेत्र में फैक्टरी मजदूरों की संख्या १९३७ में सिर्फ ७०० थी, १९४२ में यह ७,००० हो गई और अब १२,००० है। इन आंकड़ों की उपेक्षा नहीं की जा सकती। अब जबकि हम आधार-क्षेत्रों में हैं, हमें बड़े शहरों के उद्योग, व्यापार और यातायात का प्रशासन-कार्य सीख लेना चाहिए, वरना वक्त आने पर हम देखते रह जाएंगे। अतएव भविष्य के लिए हमारी विचारधारात्मक और भौतिक तैयारी में दूसरी आवश्यक मद है बड़े-बड़े शहरों में और यातायात की मुख्य लाइनों पर हथियारबन्द विद्रोहों का संगठन करना और उद्योग व व्यापार का प्रशासन-कार्य सीख लेना। इस तैयारी के बगैर हम जापानी हमलावरों को मार भगाने और समूचे चीन को मुक्त कराने में सफल नहीं हो पाएंगे।

३

नई जीतें हासिल करने के लिए हमें अपनी पार्टी के कार्यकर्ताओं का आवाहन करना चाहिए कि वे बोझ से छुटकारा पाकर मशीनरी को चालू करें। "बोझ से छुटकारा पाने" का अर्थ है अपने दिमाग को बहुत सी बाधाओं से मुक्त करना। बहुत सी चीजें हमारे दिमाग का बोझ अथवा हमारे रास्ते की बाधाएं बन जाती हैं, यदि हम अपनी आंखें बन्द करके और उनके गुण-दोष का विवेचन किए बिना उनसे चिपके रहते हैं। कुछ उदाहरण ले लीजिए। गलतियां करने के बाद आपके मन में यह खयाल आ सकता है कि चाहे कैसी भी परिस्थिति क्यों न आ जाए, आपका दामन इन गलतियों के साथ हमेशा बंधा रहेगा, तथा इसलिए आप मायूसी का शिकार हो सकते हैं; अगर आपने गलतियां न की हों, तो आपके मन में यह खयाल आ सकता है कि आप गलतियों से परे हैं, और इस तरह आपके अन्दर घमण्ड पैदा हो सकता है। काम में उपलब्धियां प्राप्त न होने से निराशा और पस्तहिम्मती पैदा हो सकती है, जबकि उपलब्धियां प्राप्त होने से घमण्ड होने और शेखी बघारने की स्थिति पैदा हो सकती है। जिन साथियों को ज्यादा लम्बे संघर्ष का अनुभव नहीं, वे इसके कारण जिम्मेदारियां उठाने से कतरा सकते हैं, जबकि पुराना अनुभव रखने वाले साथी अपने संघर्ष के दीर्घकालीन अनुभव के कारण घमण्ड

में चूर हो सकते हैं। मजदूर व किसान साथी अपनी वर्ग-उत्पत्ति के घमण्ड में बुद्धिजीवियों को अपने से नीचा समझ सकते हैं, जबकि बुद्धिजीवी लोग अपने कुछ न कुछ ज्ञान के कारण मजदूर व किसान साथियों को अपने से नीचा समझ सकते हैं। किसी भी विशेष हुनर के कारण अहंकार की प्रवृत्ति और दूसरों को तुच्छ समझने की प्रवृत्ति पैदा हो सकती है। यहां तक कि उम्र भी घमण्ड का कारण बन सकती है। हो सकता है कि नौजवान लोग अपनी स्फूर्ति और क्षमता के कारण बुजुर्गों को तुच्छ समझें ; दूसरी तरफ यह भी हो सकता है कि बुजुर्ग लोग अपने समृद्ध अनुभव के कारण नौजवानों को तुच्छ समझें। अगर गुण-दोष विवेचन न किया जाए, तो इस प्रकार की तमाम चीजें हमारे रास्ते की बाधाएं अथवा हमारे सिर का बोझ बन जाती हैं। ऐसे बोझ को उठाए रहने के कारण ही कुछ कामरेड जनता से अलग रहकर अत्यन्त घमण्डी बने रहते हैं और बार-बार गलतियां करते हैं। अतएव जनता के साथ निकट सम्पर्क बनाए रखने और कम से कम गलतियां करने के लिए एक जरूरी शर्त यह है कि आदमी अपने बोझ की जांच करे, उससे छुटकारा पाए और अपने दिमाग को मुक्त करे। हमारी पार्टी के इतिहास में कई अवसर ऐसे आए हैं जब भारी दम्भ ने सिर उठाया और परिणामस्वरूप हमें क्षति उठानी पड़ी। पहला अवसर १९२७ के पूर्वार्ध में था। उत्तरी अभियान सेना ऊहान पहुंच चुकी थी और कुछ कामरेड इतने घमण्डी और अहंकारी हो गए थे कि वे यह भूल गए कि क्वोमिन्ताङ हम पर हमला करने वाली है। इसके परिणामस्वरूप छन तू-श्यू कार्यदिशा की गलती हुई, जिससे क्रान्ति पराजित हो गई। दूसरा अवसर १९३० में था। फ़ङ य्वी-श्याङ और येन शी-शान के विरुद्ध च्याङ काई-शेक के व्यापक युद्ध[11] से लाभ उठाकर लाल सेना ने कई लड़ाइयां जीतीं, और फिर एक बार कुछ कामरेड घमण्डी और अहंकारी बन गए। परिणामस्वरूप ली ली-सान कार्यदिशा की गलती हुई, जिससे क्रान्तिकारी शक्तियों को फिर एक बार क्षति उठानी पड़ी। तीसरा अवसर १९३१ में था। लाल सेना ने क्वोमिन्ताङ की "घेरा डालने और विनाश करने" की तीसरी मुहिम को विफल बना दिया था और उसके तुरन्त बाद जापानी आक्रमण के खिलाफ पूरे देश की जनता ने एक तूफानी और वीरतापूर्ण जापान-विरोधी आन्दोलन चलाया था ; और फिर एक बार कुछ कामरेड घमण्डी और अहंकारी बन गए। परिणामस्वरूप राजनीतिक कार्यदिशा में पहले के मुकाबले कहीं भारी गलती हुई जिसके कारण हमारी क्रान्तिकारी शक्तियां, जिन्हें हमने इतने परिश्रम से जुटाया था, लगभग ९० प्रतिशत समाप्त हो गईं। चौथा अवसर १९३८ में था। प्रतिरोध-युद्ध छिड़ चुका था और संयुक्त मोर्चा स्थापित हो चुका था कि एक बार फिर कुछ कामरेड घमण्डी और अहंकारी बन गए। इसके परिणामस्वरूप उन्होंने छन तू-श्यू कार्यदिशा से मिलती-जुलती गलती की। इस बार क्रान्तिकारी कार्य को उन जगहों पर जबरदस्त धक्का पहुंचा जहां इन कामरेडों के गलत विचारों का प्रभाव विशेष रूप से अधिक था। घमण्ड और गलतियों के इन उदाहरणों से समूची पार्टी के कामरेडों को शिक्षा ग्रहण कर लेनी चाहिए। हाल ही में हमने ली चि-छङ के बारे में क्वो मो-जो का लेख[12] दोबारा प्रकाशित किया है, ताकि कामरेड इस कहानी से सबक सीखें और सफलता के क्षणों में घमण्ड से फूल जाने की गलती को न दोहराएं।

"मशीनरी चालू करने" का अर्थ है दिमाग का सदुपयोग करना।

यद्यपि कुछ लोग अपने सिर पर बोझ नहीं रखते और उनमें जनता से निकट सम्पर्क बनाए रखने का गुण है, फिर भी वे कोई सफलता पाने में असफल रहते हैं क्योंकि वे ठीक ढंग से सोचना नहीं जानते अथवा अपने दिमाग को अधिक सोचने और गहराई से सोचने के लिए इस्तेमाल करने को तैयार नहीं हैं। दूसरे लोग अपने दिमाग को इस्तेमाल करने से इनकार करते हैं क्योंकि वे ऐसा बोझ लिए रहते हैं जो उनकी बुद्धि को दबा देता है। लेनिन और स्तालिन अक्सर लोगों को सलाह दिया करते थे कि वे अपने दिमाग को इस्तेमाल करें और हमें भी यही सलाह देनी चाहिए। इस यंत्र – दिमाग – का विशेष काम है सोचना। मेनशियस ने कहा था, "मस्तिष्क का काम चिन्तन है।"[११] उसने मस्तिष्क के काम की ठीक व्याख्या की थी। हमें हमेशा अपने दिमाग को इस्तेमाल करना चाहिए और हर चीज पर बड़ी बारीकी से विचार करना चाहिए। कहावत है, "अपने दिमाग पर जोर डालो, तो तुम्हें जरूर कोई न कोई तरकीब सूझ जाएगी।" दूसरे शब्दों में यह कहा जा सकता है कि ज्यादा चिन्तन-मनन करने से बुद्धि का विकास होता है। बिना सोचे-समझे काम करने के तरीके से छुटकारा पाने के लिए, जो हमारी पार्टी में गम्भीर मात्रा में मौजूद है, हमें अपने साथियों को इस बात के लिए प्रोत्साहन देना चाहिए कि वे चिन्तन-मनन करें, विश्लेषण करने का तरीका सीख लें और विश्लेषण करने की आदत डालें। हमारी पार्टी में यह आदत बहुत ही कम है। अगर हम बोझ से छुटकारा पा लें और मशीनरी को चालू कर दें, अगर हम हल्के होकर चलें और गहराई से सोचना सीख लें, तो हमारी जीत निश्चित है।

नोट

[१] चीनी कम्युनिस्ट पार्टी की छठी केन्द्रीय कमेटी का चौथा पूर्ण अधिवेशन जनवरी १९३१ में आयोजित किया गया था।

[२] वी० आई० लेनिन, "कम्युनिज्म"। देखिए: "चीन के क्रान्तिकारी युद्ध की रणनीति विषयक समस्याएं", नोट १० ("माओ त्सेतुङ की संकलित रचनाएं", ग्रन्थ १)।

[३] देखिए: "जापानी-साम्राज्यवाद-विरोधी कार्यनीति के बारे में", नोट ३० ("माओ त्सेतुङ की संकलित रचनाएं", ग्रन्थ १)।

[४] चीनी कम्युनिस्ट पार्टी की छठी केन्द्रीय कमेटी का पांचवां पूर्ण अधिवेशन जनवरी १९३४ में हुआ था।

[५] सितम्बर १९४१ में राजनीतिक ब्यूरो के इस अधिवेशन ने पार्टी के इतिहास में, खासकर द्वितीय क्रान्तिकारी गृहयुद्ध के काल में, अपनाई गई राजनीतिक कार्यदिशा की समस्या का पुनर्विवेचन किया।

[६] "पहाड़ी दुर्ग" प्रवृत्ति गुट बनाने की एक ऐसी प्रवृत्ति थी जो मुख्यत: दीर्घकालीन छापामार युद्ध की परिस्थितियों में, जबकि देहाती क्रान्तिकारी आधार-क्षेत्र बिखरे हुए और एक दूसरे से कटे हुए थे, उत्पन्न हुई। अधिकांश आधार-क्षेत्र पहले-पहल पहाड़ी इलाके में स्थापित किए गए थे। अकेले पहाड़ी दुर्ग की भांति हर एक आधार-क्षेत्र अपने आपको एक अलग इकाई समझने लगा, अतएव इस गलत प्रवृत्ति का नाम "पहाड़ी दुर्ग" प्रवृत्ति पड़ गया।

[७] आधार-क्षेत्रों के अपेक्षाकृत स्थाई भागों में लोग नियमित अनाज टैक्स सिर्फ जापान-विरोधी जनवादी सरकार को देते थे। लेकिन आधार-क्षेत्रों के सरहदी भागों और छापामार इलाकों में, जो शत्रु द्वारा निरन्तर हैरान-परेशान किए जाते थे, लोग शत्रु की कठपुतली सरकार को भी एक दूसरा अनाज टैक्स देने पर मजबूर हो जाते थे।

[८] यह है वह तरीका, जिसे जापानी साम्राज्यवादियों ने जापान-विरोधी आधार-क्षेत्रों पर बड़े पैमाने के हमलों में परास्त होने के बाद अपनाया था, यानी एकदम "हड़पने" के बजाय लम्बे समय तक लगातार "कुतरने" का तरीका।

जापानी साम्राज्यवादियों की कोशिश यह थी कि वे आहिस्ता-आहिस्ता तथा कदम-ब-कदम आगे बढ़ने और जापान-विरोधी आधार-क्षेत्रों को अलग-थलग करने के तरीके अपनाकर उन्हें सिकोड़ते जाएं तथा अपने कब्जे वाले इलाकों को बढ़ाते रहें।

९ मार्च १९४१ में उत्तरी चीन में जापानी हमलावरों और चीनी गद्दारों ने "सार्वजनिक सुरक्षा को सुदृढ़ बनाने" के आन्दोलन का ऐलान कर दिया – इस आन्दोलन में जनता के घरों की जबरदस्ती तलाशी लेना, पाओ-च्या व्यवस्था स्थापित करना, घर-घर जाकर जांच करना और कठपुतली सेना को कायम करना शामिल था। इन सबका मकसद जापान-विरोधी शक्तियों को कुचलना था।

१० मार्च १९४४ में जापानी हमलावरों ने हनान प्रान्त में पचास-साठ हजार सेना के साथ अपनी मुहिम शुरू की। च्याङ तिङ-वन, थाङ अन-पो और हू चुङ-नान के अधीन ४ लाख क्वोमिन्ताङ सेना जापानी हमलावरों के सामने कोहरे की तरह छंट गई। ३८ काउन्टियां, जिनमें चङचओ और लोयाङ शामिल थे, एक-एक करके शत्रु के हाथ में जा पड़ीं। थाङ अन-पो की सेना ने अपने २ लाख आदमी गंवा दिए।

११ युद्ध-सरदारों के दरम्यान यह बड़े पैमाने का युद्ध, जिसमें एक ओर च्याङ काई-शेक और दूसरी ओर फङ य्वी-श्याङ तथा येन शी-शान थे, लुङहाए और थ्येनचिन-फूखओ रेलवे लाइनों के आसपास लड़ा गया। यह युद्ध मई से अक्तूबर १९३० तक छै महीने चलता रहा। इसमें दोनों ओर ३ लाख व्यक्ति हताहत हुए।

१२ क्वो मो-जो ने १९४४ में, मिङ वंश के अन्तिम वर्षों में ली चि-छङ के नेतृत्व में हुए किसान विद्रोह की विजय की ३००वीं वर्षगांठ के उपलक्ष में "१६४४ के विद्रोह की ३००वीं जयन्ती" शीर्षक निबन्ध लिखा। उन्होंने बताया कि यह विद्रोह १६४५ में इसलिए पराजित हुआ क्योंकि १६४४ में किसान सेनाओं के पेकिङ में प्रवेश करने के पश्चात उनके कुछ नेता विलासिता के जीवन से भ्रष्ट हो गए और उन्होंने आपस में लड़ना शुरू कर दिया। यह निबन्ध पहले छुङकिङ के "नव चीन दैनिक" में प्रकाशित हुआ था और बाद में येनान तथा अन्य मुक्त क्षेत्रों में भी पुस्तिका के रूप में प्रकाशित हुआ था।

१३ "मेनशियस", ग्रन्थ ११, "काओ चि", भाग १।

जनता की सेवा करो*

८ सितम्बर १९४४

हमारी कम्युनिस्ट पार्टी तथा हमारी पार्टी के नेतृत्व में काम करने वाली आठवीं राह सेना और नई चौथी सेना क्रान्तिकारी दस्ते हैं। हमारे ये दस्ते पूर्ण रूप से जनता के मुक्ति-कार्य में लगे हुए हैं तथा पूरी तरह जनता के हित में काम करते हैं। कामरेड चाङ स-त[1] हमारे इन्हीं दस्तों के एक साथी थे।

हर आदमी एक न एक दिन जरूर मरता है, लेकिन हर आदमी की मौत की अहमियत अलग-अलग होती है। चीन के प्राचीन लेखक समा छ्येन ने कहा है, "मौत का सामना सब लोगों को समान रूप से करना पड़ता है, परन्तु कुछ लोगों की मौत की अहमियत थाए-शान पर्वत से भी ज्यादा भारी होती है और कुछ लोगों की पंख से भी ज्यादा हल्की।"[2] जनता के हित के लिए जान देना थाए-शान पर्वत से भी ज्यादा भारी अहमियत रखता है, जबकि फासिस्टों के लिए काम करना तथा शोषकों व उत्पीड़कों के लिए जान देना पंख से भी ज्यादा हल्की अहमियत रखता है। कामरेड चाङ स-त

---

* यह भाषण कामरेड माओ त्सेतुङ ने कामरेड चाङ स-त को श्रद्धांजलि अर्पित करने के लिए चीनी कम्युनिस्ट पार्टी की केन्द्रीय कमेटी के प्रत्यक्ष रूप से मातहत विभागों द्वारा आयोजित एक शोकसभा में दिया था।

जनता के हित के लिए मरे हैं, इसलिए उनकी मृत्यु की अहमियत निश्चय ही थाएशान पर्वत से भी ज्यादा भारी है।

अगर हमारे अन्दर कमियां हों, तो हम इस बात से नहीं डरते कि कोई उनको बता दे और उनकी आलोचना करे क्योंकि हम जनता की सेवा करते हैं। हर व्यक्ति, चाहे वह कोई भी क्यों न हो, हमारी कमियों को बता सकता है। अगर उसकी बात ठीक हो, तो हम अपनी कमियों को सुधार लेंगे। अगर उसकी राय से जनता को फायदा होता हो, तो हम उस पर अमल करेंगे। "बेहतर फौज और सरल प्रशासन" की राय गैरपार्टी व्यक्ति श्री ली तिङ-मिङ[२] ने पेश की थी। उन्होंने अच्छी राय दी, जो जनता के लिए लाभदायक है, इसलिए हमने इसे अपना लिया। यदि हम जनता के हित में सही बात पर दृढ़ता से डटे रहे और गलत बात को सुधारते रहे, तो हमारी पांतें अवश्य फलती-फूलती रहेंगी।

हम लोग देश के कोने-कोने से यहां आए हैं और एक मुश्तरका क्रान्तिकारी लक्ष्य के लिए यहां इकट्ठे हुए हैं। हमें जनता की विशाल बहुसंख्या के साथ इस लक्ष्य की ओर ले जाने वाली राह पर चलना होगा। आज हम ९ करोड़ १० लाख आबादी वाले आधार-क्षेत्रों[३] का नेतृत्व कर रहे हैं, लेकिन इतना ही काफी नहीं है ; समूचे राष्ट्र को मुक्त कराने के लिए और अधिक आधार-क्षेत्रों का होना आवश्यक है। कठिनाइयों के वक्त हमारे साथियों को अपनी उपलब्धियों को नजरअन्दाज नहीं करना चाहिए, अपने उज्ज्वल भविष्य को दृष्टि में रखना चाहिए और अपने साहस को बढ़ाना चाहिए। चीनी जनता मुसीबतें झेल रही है ; उसे बचाना हमारा कर्तव्य है और हमें प्रयत्न-पूर्वक संघर्ष करना चाहिए। जहां कहीं भी संघर्ष होता है वहां कुर-

बानी देनी पड़ती है और मौत एक आम घटना बन जाती है। लेकिन हमारे दिलों में जनता का हित और लोगों की भारी बहुसंख्या की तकलीफें मौजूद हैं, तथा जब हम जनता के लिए कुरबान हो जाते हैं तो यह एक गौरवशाली मौत होती है। फिर भी हमें गैरजरूरी कुरबानियों से बचने की भरसक कोशिश करनी चाहिए। हमारे कार्यकर्ताओं को चाहिए कि वे हर सिपाही की देखभाल करें तथा क्रान्तिकारी पांतों के सभी लोगों को चाहिए कि वे एक दूसरे का खयाल रखें, एक दूसरे को प्यार करें और एक दूसरे की मदद करें।

अब से हमारी पांतों में यदि किसी भी ऐसे आदमी की मृत्यु हो जाए, चाहे वह रसोइया हो या सिपाही, जिसने कुछ लाभदायक काम किया हो, तो हमें उसका अन्तिम संस्कार करना चाहिए तथा उसे श्रद्धांजलि अर्पित करने के लिए शोकसभा का आयोजन करना चाहिए। इसे एक नियम ही बना लेना चाहिए। और इसे आम जनता में भी प्रचलित कर देना चाहिए। यदि गांव में कोई मर जाए तो एक शोकसभा का आयोजन किया जाना चाहिए। इस तरह हम मृत व्यक्ति को अपनी श्रद्धांजलि अर्पित कर सकेंगे तथा समूची जनता को एकताबद्ध कर सकेंगे।

नोट

[१] कामरेड चाङ स-त्त चीनी कम्युनिस्ट पार्टी की केन्द्रीय कमेटी की गार्ड रेजिमेन्ट के सैनिक थे। वे १९३३ में क्रान्ति में शामिल हुए थे। उन्होंने लम्बे अभियान में भाग लिया था और अपनी फौजी सेवा के दौरान वे घायल हुए थे। वे जनता के हित के लिए वफादारी से काम करने वाले पार्टी-सदस्य थे। ५ सितम्बर

१९४४ को उत्तरी शेनशी प्रान्त की आनसाए काउन्टी के पहाड़ी क्षेत्र में लकड़ी का कोयला बनाते समय एक भट्ठी के ध्वंस जाने से वे दबकर मर गए।

[२] समा छ्येन ईसापूर्व दूसरी शताब्दी के मशहूर चीनी साहित्यकार और इतिहासकार थे। उन्होंने "स ची" (ऐतिहासिक अभिलेख) नामक किताब लिखी, जिसमें १३० लेख हैं। ये वाक्य उनके "रन शाओ-छिङ के पत्र का उत्तर" शीर्षक लेख से लिए गए हैं।

[३] ली तिङ-मिङ उत्तरी शेनशी प्रान्त के एक जागरूक जमींदार थे। वे एक बार शेनशी-कानसू-निङश्या सीमान्त क्षेत्र की सरकार के उपाध्यक्ष चुने गए थे।

[४] यह उस समय के शेनशी-कानसू-निङश्या सीमान्त क्षेत्र की तथा उत्तरी चीन, मध्य चीन और दक्षिणी चीन के तमाम मुक्त क्षेत्रों की कुल आबादी थी।

१० अक्तूबर के त्यौहार पर हुए च्याङ काई-शेक के भाषण के बारे में*

११ अक्तूबर १९४४

च्याङ काई-शेक द्वारा १० अक्तूबर[१] को दिए गए भाषण की एक खासियत यह है कि उसमें विषय-वस्तु का पूर्ण अभाव है तथा उसमें एक भी ऐसे प्रश्न का उत्तर नहीं दिया गया जिसके बारे में जनता बेहद व्यग्र है। च्याङ काई-शेक ने ऐलान किया है कि दुश्मन से डरना नहीं चाहिए क्योंकि बड़े पृष्ठभागीय क्षेत्र में अब भी विस्तृत इलाके मौजूद हैं। एकतंत्रवादी क्वोमिन्ताङ नेताओं ने अब तक राजनीतिक सुधार करने अथवा दुश्मन को रोकने की न तो इच्छा जाहिर की है और न क्षमता, तथा सिर्फ "इलाका" ही उनकी एकमात्र पूंजी है जिसका वे दुश्मन का प्रतिरोध करने के लिए सहारा ले सकते हैं। लेकिन यह बात सब लोग साफ तौर पर समझते हैं कि केवल इसी पूंजी पर निर्भर रहना काफी नहीं है, क्योंकि एक सही नीति के बिना और लोगों की कोशिश के बिना इन बचेखुचे इलाकों के लिए जापानी साम्राज्यवाद का खतरा रोज ही बना रहता है। इस बात की पूरी सम्भावना है कि च्याङ काई-शेक इस खतरे को

* यह टिप्पणी कामरेड माओ त्सेतुङ ने शिनह्वा समाचार एजेन्सी के लिए लिखी थी।

तीव्रता के साथ महसूस कर रहा है, जैसा कि उसके द्वारा बार-बार लोगों के सामने यह रट लगाने से जाहिर होता है कि ऐसा कोई खतरा मौजूद नहीं है, तथा इससे भी आगे बढ़कर वह कहता है, "मेरे द्वारा ह्वाङफू फौजी अकादमी में सेना की स्थापना के बाद से आज तक, बीस वर्ष की अवधि में क्रान्तिकारी परिस्थिति में इतनी स्थिरता पहले कभी नहीं आई जितनी कि आज मौजूद है।" वह यह रट भी लगाता रहता है कि "हमें अपना आत्मविश्वास नहीं खोना चाहिए", जिससे वास्तव में यह जाहिर होता है कि क्वोमिन्ताङ की पांतों में तथा क्वोमिन्ताङ क्षेत्रों के जाने-माने सार्वजनिक व्यक्तियों में बहुत से लोग अपना आत्मविश्वास खो बैठे हैं। च्याङ काई-शेक इस आत्मविश्वास की पुनर्स्थापना करने के लिए कोई न कोई उपाय खोजने की कोशिश कर रहा है। लेकिन राजनीतिक, फौजी, आर्थिक और सांस्कृतिक क्षेत्रों में अपनी नीति या अपने काम की जांच-पड़ताल करके इस प्रकार के उपायों की खोज करने के बजाय, वह आलोचनाओं को मानने से इनकार करने और अपनी गलतियों पर पर्दा डालने का सहारा लेता है। वह कहता है कि तमाम "विदेशी प्रेक्षक" "मामले की तह से अनभिज्ञ" हैं तथा यह कि "हमारे फौजी और राजनीतिक मामलों की विदेशियों द्वारा की जाने वाली आलोचना का बवण्डर" पूर्ण रूप से "आक्रमणकारियों और चीनी गद्दारों की अफवाहों व चालबाजियों" पर विश्वास करके उन्हें स्वीकार कर लेने के ही फलस्वरूप खड़ा हुआ है। अचरज की बात यह है कि फ्रेंकलिन डी० रूजवैल्ट जैसे विदेशी तथा सुङ छिङ-लिङ जैसे क्वोमिन्ताङ सदस्य, जन राजनीतिक परिषद के अनेक सदस्य और वे तमाम चीनी लोग जिनकी जमीर अभी मरी नहीं है, च्याङ काई-शेक और उसके

विश्वासपात्र अनुयायियों द्वारा प्रस्तुत समुचित प्रतीत होने वाले स्पष्टीकरणों पर विश्वास नहीं करते तथा वे लोग भी "हमारे फौजी और राजनीतिक मामलों की आलोचना का बवण्डर" खड़ा कर रहे हैं। च्याङ काई-शेक इस हालत से बड़ा परेशान है, लेकिन इस वर्ष के १० अक्तूबर के त्यौहार से पहले वह अपने इस तथाकथित जोरदार तर्क की खोज करने में कामयाब नहीं हो सका कि ये लोग "आक्रमणकारियों और चीनी गद्दारों की अफवाहों व चालबाजियों" पर विश्वास करते हैं। इसलिए अपने भाषण में च्याङ काई-शेक ने "आक्रमणकारियों और चीनी गद्दारों की अफवाहों व चालबाजियों" की बड़े विस्तार से तीव्र निन्दा की है। वह इस बात के सपने देख रहा है कि इस प्रकार निन्दा करके वह सभी चीनियों और विदेशियों का मुंह बन्द कर सकता है। और अगर किसी ने उसके फौजी और राजनीतिक मामलों की "आलोचना का बवण्डर" फिर खड़ा किया, तो उसे "आक्रमणकारियों और चीनी गद्दारों की अफवाहों व चालबाजियों" पर विश्वास करने वाला समझा जाएगा! हम लोग च्याङ काई-शेक के आरोपों को अत्यन्त परिहासपूर्ण समझते हैं। कारण, आक्रमणकारियों और चीनी गद्दारों ने क्वोमिन्ताङ के एकतंत्रवाद की, उसके द्वारा नीम-दिली से प्रतिरोध-युद्ध चलाए जाने की, उसके भ्रष्टाचार व अक्षमता की तथा उसकी सरकार के फासिस्टवादी फरमानों और पराजयवादी फौजी आदेशों की आलोचना कभी नहीं की, उल्टे उनकी प्रशंसा ही की है। "चीन का भाग्य" नामक च्याङ काई-शेक की किताब को, जिसे समस्त आम लोगों ने नापसन्द किया है, जापानी साम्राज्यवादियों से बार-बार हार्दिक प्रशंसा प्राप्त हुई है। आक्रमणकारियों और चीनी

गद्दारों ने राष्ट्रीय सरकार और उसकी सर्वोच्च कमान का पुनर्गठन करने के बारे में एक भी शब्द नहीं कहा, क्योंकि उनकी दिली तमन्ना है कि यह सरकार और सर्वोच्च कमान, जो जनता का उत्पीड़न करती रहती हैं और लड़ाई में मात खाती रहती हैं, सुरक्षित रहें। क्या यह सच नहीं कि च्याङ काई-शेक और उसका ग्रुप सदैव ही आत्मसमर्पण के लिए जापानी साम्राज्यवादियों द्वारा दिए जाने वाले प्रलोभन का निशाना रहे हैं? क्या यह भी सच नहीं कि जापानी साम्राज्यवादियों द्वारा प्रारम्भ में प्रस्तुत किए गए दो नारों में से एक को, यानी "क्वोमिन्ताङ को नेस्तनाबूद कर दो!" के नारे को काफी समय पहले ही छोड़ दिया गया है तथा केवल दूसरा नारा, यानी "कम्युनिस्टों का विरोध करो!" का नारा बाकी रह गया है? आज दिन तक भी जापानी साम्राज्यवादियों ने क्वोमिन्ताङ सरकार के खिलाफ युद्ध की घोषणा नहीं की, तथा जैसा कि वे लोग कहते हैं, जापान और क्वोमिन्ताङ सरकार के बीच युद्ध की स्थिति मौजूद नहीं है! आज दिन तक भी आक्रमणकारियों और चीनी गद्दारों द्वारा शांघाई, नानकिङ, निङ्पो इत्यादि स्थानों में क्वोमिन्ताङ के बड़े-बड़े ओहदेदारों की जायदाद की अच्छी तरह देखभाल की जाती है। दुश्मन के सरगना शुनरोकू हाता ने च्याङ काई-शेक के पुरखों की कब्रों पर भेंट चढ़ाने के लिए अपने प्रतिनिधियों को फ़ङ्ह्वा भेजा है। शांघाई में और अन्य स्थानों में, च्याङ काई-शेक के विश्वासपात्र अनुयायियों द्वारा गुप्त रूप से भेजे गए दूत, जापानी आक्रमणकारियों से लगभग निरन्तर सम्पर्क कायम किए हुए हैं तथा उनके साथ चोरी-छिपे समझौता-वार्ता चला रहे हैं। जब कभी जापानी अपने आक्रमण को बढ़ाते हैं, तो इन सम्पर्कों

और समझौता-वार्ताओं में और अधिक बढ़ोतरी हो जाती है। क्या ये सब बातें सच नहीं हैं? क्या वे लोग जो च्याङ काई-शेक और उसके ग्रुप के फौजी व राजनीतिक मामलों की "आलोचना का बवण्डर" खड़ा कर देते हैं, सचमुच "मामले की तह से अनभिज्ञ" हैं, अथवा इसके विपरीत क्या वे इससे अच्छी तरह परिचित हैं? आखिर "मामले की तह" है कहां, "आक्रमणकारियों और चीनी गद्दारों की अफवाहों व चालबाजियों" में अथवा खुद च्याङ काई-शेक और उसके ग्रुप में?

अपने भाषण के दौरान एक अन्य बयान में च्याङ काई-शेक ने इस बात से इनकार किया है कि चीन में गृहयुद्ध छिड़ जाएगा। लेकिन उसने आगे कहा है, "निश्चय ही भविष्य में फिर कभी गणराज्य के साथ गद्दारी करने और प्रतिरोध-युद्ध में तोड़फोड़ करने की जुर्रत और कोई नहीं करेगा, जैसी कि वाङ चिङ-वेइ और उसके जैसे लोगों ने की थी।" यहां च्याङ काई-शेक गृहयुद्ध के लिए कोई बहाना ढूंढ़ रहा है और उसे यह मिल गया है। हर किसी चीनी को, जिसकी याददाश्त ज्यादा कमजोर नहीं है, याद होगा कि १९४१ में, ठीक उस समय जब चीन के वतनफरोश लोग नई चौथी सेना को भंग करने का आदेश दे रहे थे, तथा चीनी जनता उठकर गृहयुद्ध के संकट को रोक रही थी, च्याङ काई-शेक ने एक भाषण दिया जिसमें उसने कहा कि "कम्युनिस्टों का विनाश" करने के लिए कभी कोई युद्ध नहीं किया जाएगा, और अगर युद्ध किया भी गया तो वह केवल बागियों का दमन करने वाला दण्डात्मक युद्ध होगा। जिन लोगों ने "चीन का भाग्य" नामक किताब पढ़ी है, उन्हें भी च्याङ काई-शेक का यह कथन याद होगा कि चीनी

कम्युनिस्ट पार्टी, १९२७ में ऊहान सरकार के जमाने में वाङ चिङ-वेइ के साथ "सांठगांठ कर रही थी"। १९४३ में क्वोमिन्ताङ की केन्द्रीय कार्यकारिणी कमेटी के ग्यारहवें पूर्ण अधिवेशन के प्रस्तावों में चीनी कम्युनिस्ट पार्टी पर आठ चीनी अक्षरों वाला यह लेबिल लगाया गया कि वह "प्रतिरोध-युद्ध में तोड़फोड़ कर रही है और राज्य के लिए खतरा पैदा कर रही है"। उसका वर्तमान भाषण सुनने के बाद हमें यह महसूस होता है कि गृहयुद्ध का खतरा न सिर्फ मौजूद है बल्कि दरअसल बढ़ता जा रहा है। अब से चीनी जनता को अपने मन में पक्के तौर पर यह बात बैठा लेनी चाहिए कि किसी दिन च्याङ काई-शेक तथाकथित बागियों के खिलाफ दण्ड-अभियान चलाने का आदेश दे देगा, तथा उसका आरोप होगा "गणराज्य के साथ गद्दारी करना", "प्रतिरोध-युद्ध में तोड़फोड़ करना" और वही जुर्रत करना जो "वाङ चिङ-वेइ और उसके जैसे लोगों ने की थी"। च्याङ काई-शेक यह खेल खेलने में माहिर है; वह फाङ पिङ-श्युन, सुन ल्याङ-छङ और छन श्याओ-छ्याङ[१] जैसे लोगों को बागी कहकर उनकी भर्त्सना करने अथवा उनके खिलाफ दण्ड-अभियान चलाने में बिलकुल माहिर नहीं है, लेकिन मध्य चीन में स्थित नई चौथी सेना और शानशी में स्थित मौत से न डरने वाली पलटन[२] को "बागी" होने का फतवा देकर उनकी भर्त्सना करने में बहुत माहिर है, तथा उनके खिलाफ दण्ड-अभियान चलाने में तो बेहद ज्यादा माहिर है। चीनी जनता को यह बात नहीं भूलनी चाहिए कि गृहयुद्ध न छेड़ने का ऐलान करने के साथ-साथ च्याङ काई-शेक ने अब तक ७,७५,००० सैनिक भेजे हैं जो इस समय केवल आठवीं राह सेना, नई चौथी सेना और दक्षिणी चीन

में स्थित जन-छापामारों पर ही घेरा डालने अथवा हमला करने में जुटे हुए हैं।

च्याङ काई-शेक के भाषण में कोई भी सकारात्मक बात नहीं कही गई है, तथा उसने जापान-विरोधी मोर्चे की स्थिति को सुधारने की चीनी जनता की तीव्र इच्छा को किसी भी तरह पूरा नहीं किया है। नकारात्मक पक्ष में, उसका भाषण अनेक खतरनाक सम्भावनाओं से भरा हुआ है। उसका रुख अधिकाधिक असंगत बनता जा रहा है; वह जनता द्वारा की जाने वाली राजनीतिक परिवर्तन की मांग का हठपूर्वक विरोध कर रहा है, चीनी कम्युनिस्ट पार्टी से तीव्र घृणा करता है तथा एक ऐसा कम्युनिस्ट-विरोधी गृहयुद्ध छेड़ने के बहाने की ओर इशारा कर रहा है जिसकी वह तैयारी करता है। लेकिन उसे अपने इन सभी षड्यन्त्रों में कोई कामयाबी हासिल नहीं होगी। जब तक वह अपने तौर-तरीके बदलने को तैयार नहीं होता, तब तक वह किसी बड़े पत्थर को उठाकर खुद अपने ही पांव तोड़ बैठेगा। हम सच्चे दिल से उम्मीद करते हैं कि वह अपने तौर-तरीके बदल देगा, क्योंकि जो रास्ता वह इस वक्त अपना रहा है वह उसे कहीं का नहीं छोड़ेगा। चूंकि उसने ऐलान किया है कि "राय देने के बारे में पहले से ज्यादा आजादी दी जाएगी",[४] इसलिए उसे लोगों पर यह आरोप लगाकर उन्हें धमकियां देना और "आलोचना के बवण्डर" को दबाना नहीं चाहिए कि उन्होंने "आक्रमणकारियों और चीनी गद्दारों की अफवाहों व चालबाजियों" पर विश्वास किया है। चूंकि उसने ऐलान किया है कि "राजनीतिक अभिभावकता की अवधि घटा दी जाएगी", इसलिए उसे सरकार और सर्वोच्च कमान का पुनर्गठन करने की मांग को ठुकराना नहीं चाहिए।

चूंकि उसने ऐलान किया है कि "कम्युनिस्टों की समस्या को राजनीतिक ढंग से हल करना चाहिए", इसलिए उसे गृहयुद्ध की तैयारी के लिए फिर से बहाना नहीं खोजना चाहिए।

नोट

[१] यह १९११ में ऊहान में हुए सशस्त्र विद्रोह की जयन्ती का दिन है। इस विद्रोह में छिङ राजवंश के तानाशाही शासन का तख्ता उलट देने वाली क्रान्ति का सूत्रपात हुआ था।

[२] फाङ पिङ-श्युन, सुन ल्याङ-छङ और छन श्याओ-छ्याङ क्वोमिन्ताङ जनरल थे, जो खुलेआम भागकर जापानी आक्रमणकारियों से जा मिले थे।

[३] शानशी स्थित मौत से न डरने वाली पलटन जनता की एक जापान-विरोधी सैन्य-शक्ति थी, जिसका विकास कम्युनिस्ट पार्टी के नेतृत्व और प्रभाव में जापानी-आक्रमण-विरोधी युद्ध के आरम्भिक काल में हुआ था। देखिए: "तमाम जापान-विरोधी शक्तियों को एकताबद्ध करो और कम्युनिस्ट-विरोधी कट्टरतावादियों के खिलाफ संघर्ष करो", नोट ३ ("माओ त्सेतुङ की संकलित रचनाएं", ग्रन्थ २)।

[४] अप्रैल १९४४ में क्वोमिन्ताङ ने यह ऐलान किया कि "राय देने के बारे में पहले से ज्यादा आजादी दी जाएगी"। इसका मकसद था जनता की आंखों में धूल झोंकना, क्योंकि क्वोमिन्ताङ-शासित क्षेत्रों में उस साल के शुरू से ही जनता व्यापक रूप से यह मांग करने लगी थी कि क्वोमिन्ताङ की तानाशाही को खत्म किया जाए, लोकशाही कायम की जाए तथा भाषण देने की आजादी की गारन्टी की जाए। मई में, क्वोमिन्ताङ की केन्द्रीय कार्यकारिणी कमेटी के बारहवें पूर्ण अधिवेशन में एक बार फिर यह ऐलान किया गया कि वह "भाषण देने की आजादी की रक्षा" करेगी। लेकिन क्वोमिन्ताङ ने मजबूर होकर किए गए अपने एक भी वायदे को पूरा नहीं किया, तथा जैसे-जैसे जनता का जनवादी आन्दोलन

आगे बढ़ता गया, वैसे-वैसे वह लोकमत का दमन करने के लिए अधिकाधिक उपाय अपनाती गई।

सांस्कृतिक कार्य में संयुक्त मोर्चा*

३० अक्तूबर १९४४

हमारे समूचे कार्य का उद्देश्य है जापानी साम्राज्यवाद का तख्ता पलट देना। हिटलर की ही तरह, जापानी साम्राज्यवाद भी अपने सर्वनाश के निकट पहुंचता जा रहा है। लेकिन हमें अपने प्रयत्न जारी रखने चाहिए, क्योंकि केवल इसी तरह हम उसका तख्ता अन्तिम रूप से पलट सकते हैं। हमारे काम में युद्धकर्म सबसे पहले आता है, उसके बाद उत्पादन-कार्य आता है और उसके बाद सांस्कृतिक कार्य। एक ऐसी सेना जिसकी अपनी संस्कृति न हो, एक मन्दबुद्धि सेना होती है, तथा एक मन्दबुद्धि सेना अपने दुश्मन को हरगिज परास्त नहीं कर सकती।

मुक्त क्षेत्रों की संस्कृति का अपना प्रगतिशील पक्ष है, लेकिन उसका एक पिछड़ा हुआ पक्ष अब भी मौजूद है। मुक्त क्षेत्रों की अपनी एक नई संस्कृति है, एक जन-संस्कृति है, लेकिन वहां सामन्तवाद के अनेक अवशेष अब भी मौजूद हैं। शेनशी-कानसू-निङश्या सीमान्त क्षेत्र की १५,००,००० आबादी में १०,००,००० से ज्यादा लोग अनपढ़ हैं, २,००० जादू-टोना करने वाले लोग हैं, तथा व्यापक

---

* यह भाषण कामरेड माओ त्सेतुङ ने शेनशी-कानसू-निङश्या सीमान्त क्षेत्र के सांस्कृतिक व शैक्षणिक कार्यकर्ताओं के एक सम्मेलन में दिया था।

जन-समुदाय अब भी अन्धविश्वासों के असर में है। ये सब चीजें आम जनता के दिमाग में मौजूद दुश्मन हैं। आम जनता के दिमाग में मौजूद दुश्मनों का मुकाबला करना अक्सर जापानी साम्राज्यवाद का मुकाबला करने से ज्यादा मुश्किल होता है। हमें जन-समुदाय का आवाहन करना चाहिए कि वह अपनी निरक्षरता, अपने अन्ध-विश्वासों तथा स्वास्थ्य के लिए हानिकर अपनी आदतों के खिलाफ संघर्ष करने के लिए उठ खड़ा हो जाए। इस संघर्ष के लिए एक व्यापक संयुक्त मोर्चा कायम करना लाजमी है। और इस संयुक्त मोर्चे को शेनशी-कानसू-निङश्या सीमान्त क्षेत्र जैसे स्थान में खास तौर पर व्यापक होना चाहिए, जहां आबादी बिखरी हुई है, संचार के साधन बहुत कम हैं और हमें संस्कृति के एक बहुत निचले स्तर को आधार बनाना है, तथा साथ ही एक युद्ध भी चलाया जा रहा है। इसलिए हमारे शैक्षणिक क्षेत्र में न सिर्फ एकीकृत नियमित प्राइमरी और सेकण्डरी स्कूल होने चाहिए बल्कि बिखरे हुए अनियमित देहाती स्कूल, अखबार पढ़ने वाले ग्रुप और साक्षरता कक्षाएं भी होनी चाहिए। हमारे यहां न सिर्फ आधुनिक किस्म के स्कूल होने चाहिए बल्कि हमें पुरानी किस्म की देहाती पाठशालाओं को भी इस्तेमाल करना चाहिए और उनका रूपान्तर करना चाहिए। कला के क्षेत्र में हमारे यहां न सिर्फ आधुनिक नाटक होना चाहिए, बल्कि छिन आपेरा[1] और याङको[2] नृत्य भी होना चाहिए। हमारे यहां न सिर्फ नए-नए छिन आपेरा और नए-नए याङको नृत्य होने चाहिए, बल्कि हमें पुरानी आपेरा कम्पनियों और उन पुरानी याङको मण्डलियों का कदम-ब-कदम रूपान्तर भी करना चाहिए जिनकी संख्या कुल याङको मण्डलियों की ९० प्रतिशत है। यह दृष्टिकोण

चिकित्सा के क्षेत्र में और भी अधिक आवश्यक है। शेनशी-कानसू-निङश्या सीमान्त क्षेत्र में आदमियों और पशुओं दोनों की मृत्यु-दर बहुत ऊंची है, तथा साथ ही बहुत से लोग अब भी जादू-टोने पर विश्वास रखते हैं। ऐसी परिस्थिति में केवल आधुनिक डाक्टरों पर ही निर्भर रहने से समस्या हल नहीं होगी। इसमें सन्देह नहीं कि आधुनिक डाक्टर पुराने किस्म के डाक्टरों के मुकाबले बेहतर साबित होंगे, लेकिन अगर वे जनता की तकलीफों की परवाह नहीं करते, जनता के लिए नए डाक्टरों को प्रशिक्षित नहीं करते, सीमान्त क्षेत्र में पुराने किस्म के एक हजार से अधिक डाक्टरों व डंगर-डाक्टरों के साथ एकता कायम नहीं करते और उनकी प्रगति में मदद नहीं करते, तो वे लोग वास्तव में जादू-टोना करने वालों की मदद करते हैं तथा आदमियों और पशुओं की ऊंची मृत्यु-दर के प्रति उपेक्षा का रवैया अपनाते हैं। संयुक्त मोर्चे के दो उसूल हैं : पहला उसूल है एकता कायम करना, तथा दूसरा उसूल है आलोचना करना, शिक्षित करना और रूपान्तरित करना। संयुक्त मोर्चे में आत्मसमर्पणवाद गलत है, और इसी तरह संकीर्णतावाद भी गलत है जो दूसरों को अलग-थलग रखता है और तुच्छ समझता है। हमारा कार्य है पुराने किस्म के उन तमाम बुद्धिजीवियों, कलाकारों व डाक्टरों के साथ एकता कायम करना जो उपयोगी साबित हो सकते हैं, उनकी सहायता करना, उनमें प्रगतिशील तब्दीली लाना और उनका रूपान्तर करना। उनका रूपान्तर करने के लिए पहले हमें उनके साथ एकता कायम करनी चाहिए। अगर हम यह काम समुचित रूप से करेंगे, तो वे लोग हमारी सहायता का स्वागत करेंगे।

हमारी संस्कृति एक जन-संस्कृति है ; हमारे सांस्कृतिक कार्य-कर्ताओं को चाहिए कि वे भारी उत्साह और लगन के साथ जन-समुदाय की सेवा करें, तथा जन-समुदाय के साथ सम्बन्ध स्थापित करें, न कि जन-समुदाय से अपने आपको अलग कर लें। जन-समुदाय के साथ सम्बन्ध स्थापित करने के लिए, उन्हें जन-समुदाय की आवश्यकताओं और आकांक्षाओं के अनुरूप काम करना चाहिए। जन-समुदाय के लिए किए जाने वाले तमाम कार्यों का आरम्भ उसकी आवश्यकताओं के आधार पर होना चाहिए न कि किसी व्यक्ति की सदिच्छाओं के आधार पर। ऐसा अक्सर देखने में आता है कि वस्तुगत रूप से तो जन-समुदाय के लिए किसी परिवर्तन की आवश्यकता है, लेकिन मनोगत रूप से वह इस आवश्यकता के प्रति अभी जागरूक नहीं हो पाया, इस परिवर्तन को करने के लिए अभी तैयार अथवा संकल्पबद्ध नहीं हो पाया। ऐसी स्थिति में हमें धीरज के साथ इन्तजार करना चाहिए। हमें यह परिवर्तन तब तक नहीं लाना चाहिए जब तक हमारे कार्य के जरिए जन-समुदाय का अधिकांश भाग उक्त आवश्यकता के प्रति जागरूक न हो जाए तथा वह उसे कार्यान्वित करने के लिए तैयार और संकल्पबद्ध न हो जाए। अन्यथा हम जन-समुदाय से अलग हो जाएंगे। जब तक जन-समुदाय जागरूक और तैयार नहीं हो जाता, तब तक कोई भी ऐसा काम जिसमें उसके शामिल होने की जरूरत है, महज एक खानापुरी करने के समान होगा तथा वह असफल हो जाएगा। इस कहावत का कि "जल्दबाजी से काम लेने से कामयाबी हासिल नहीं होती"[3] यह मतलब नहीं है कि हमें जल्दी काम नहीं करना चाहिए बल्कि यह है कि हमें उतावलेपन से काम नहीं लेना चाहिए ; उतावलेपन से

केवल असफलता ही हाथ लगती है। यह बात हर किस्म के काम पर लागू होती है, और खास तौर पर सांस्कृतिक व शैक्षणिक काम पर लागू होती है, जिसका मकसद है जन-समुदाय की विचारधारा का रूपान्तर करना। यहां दो उसूल हैं : पहला उसूल है जन-समुदाय की वास्तविक आवश्यकताएं, न कि हमारे द्वारा उसके लिए कल्पित आवश्यकताएं ; तथा दूसरा उसूल है जन-समुदाय की आकांक्षाएं, उसे अपना संकल्प खुद करना चाहिए न कि हमें उस पर अपना संकल्प लाद देना चाहिए।

नोट

[1] छिन आपेरा शेनशी प्रान्त में प्रचलित एक पुराने किस्म का आपेरा है। चूंकि प्राचीन काल में शेनशी प्रान्त छिन राज्य के अधीन था, इसलिए इसका नाम छिन आपेरा पड़ गया।

[2] याङको एक तरह का लोक-नृत्य है।

[3] "कनफ्यूशियस का सूक्ति-संग्रह" नामक पुस्तक से उद्धृत।

हमें आर्थिक काम करना सीखना चाहिए*

१० जनवरी १९४५

श्रमवीरो और आदर्श कार्यकर्ताओ !

आपने इस सम्मेलन में शिरकत की है और अपने अनुभवों का निचोड़ निकाला है ; हम आपका स्वागत करते हैं और आपके प्रति सम्मान प्रकट करते हैं। आपके अन्दर तीन अच्छे गुण हैं और आप तीन प्रकार की भूमिकाएं अदा करते हैं। पहले, आप एक प्रारम्भकर्ता की भूमिका अदा करते हैं। दूसरे शब्दों में, आपने अपने असाधारण प्रयत्नों और अनगिनत सृजनों के जरिए अपने काम में दूसरों के लिए आदर्श उपस्थित किया है, काम का स्तर उन्नत किया है और अन्य लोगों को प्रेरणा दी है कि वे आपसे सीखें। दूसरे, आप एक मेरुदण्ड की भूमिका अदा करते हैं। आपमें से अधिकांश लोग अभी पदाधिकारी-कार्यकर्ता नहीं बने, लेकिन आप जनता का मेरुदण्ड बन चुके हैं, उसका अन्तःस्थल बन चुके हैं ; आपके होते हमारे काम को आगे बढ़ाना आसान हो गया है। भविष्य में आप भी पदाधिकारी-कार्यकर्ता बन सकते हैं ; इस समय आप भावी पदाधिकारी-कार्यकर्ताओं के रिजर्व दस्ते में हैं। तीसरे, आप एक

---

* यह भाषण कामरेड माओ त्सेतुङ ने शेनशी-कानसू-निङश्या सीमान्त क्षेत्र के श्रमवीरों और आदर्श कार्यकर्ताओं के सम्मेलन में दिया था।

सेतु की भूमिका अदा करते हैं। आप नेतृत्व और व्यापक जनता के बीच एक सेतु का काम करते हैं ; आपके ही जरिए आम जनता की राय नेतृत्व तक और नेतृत्व की राय आम जनता तक पहुंचाई जाती है।

आपके अन्दर बहुत से अच्छे गुण मौजूद हैं और आपने भारी योगदान किया है, लेकिन आपको यह बात हमेशा याद रखनी चाहिए कि आप घमण्डी न बनें। आपका सब लोग सम्मान करते हैं, और यह ठीक भी है। लेकिन इससे आसानी से घमण्ड पैदा हो सकता है। अगर आपके अन्दर घमण्ड पैदा हो गया, अगर आप अपनी नम्रता खो बैठे और आपने पूरी ताकत से काम करना बन्द कर दिया, तथा अगर आपने दूसरों का सम्मान करना छोड़ दिया, कार्यकर्ताओं व आम जनता का सम्मान करना छोड़ दिया, तो आप श्रमवीर और आदर्श कार्यकर्ता नहीं रह जाएंगे। अतीत काल में ऐसे लोग हो चुके हैं, और मुझे उम्मीद है कि आप उनके पदचिन्हों पर नहीं चलेंगे।

इस सम्मेलन में आपके अनुभवों का सारांश निकाला गया है। यह सारांश बहुत अच्छा है तथा इसे अन्य मुक्त क्षेत्रों में भी लागू किया जा सकता है। लेकिन मैं इसकी चर्चा नहीं करना चाहता। मैं केवल हमारे आर्थिक काम के बारे में ही कुछ शब्द कहना चाहता हूं।

पिछले कुछ वर्षों में हमने प्रारम्भिक रूप से यह सीख लिया है कि हमें आर्थिक काम कैसे करना चाहिए तथा हमने इस क्षेत्र में बड़ी-बड़ी सफलताएं प्राप्त की हैं। लेकिन अभी महज शुरुआत ही है। हमें इस बात की कोशिश करनी चाहिए कि दो-तीन वर्ष के

भीतर ही शेनशी-कानसू-निङश्या सीमान्त क्षेत्र और दुश्मन के पृष्ठ-भाग में स्थित मुक्त क्षेत्र अनाज व तैयारशुदा माल की दृष्टि से पूरे तौर पर अथवा मुख्यतया आत्मनिर्भर बन जाएं, यहां तक कि वे इन चीजों को अतिरिक्त मात्रा में भी मुहय्या कर सकें। हमें कृषि, उद्योग और व्यापार के क्षेत्र में और अधिक बड़ी सफलताएं प्राप्त करनी चाहिए। सिर्फ तभी हम अपने बारे में यह कह सकेंगे कि हमने आर्थिक काम की ज्यादा जानकारी हासिल कर ली है और यह काम ज्यादा अच्छी तरह करना सीख लिया है। जिन स्थानों में सेना और जनता के रहन-सहन की स्थितियों में कोई सुधार नहीं हुआ, जहां प्रत्याक्रमण करने की भौतिक स्थितियां अभी अस्थिर हैं तथा कृषि, उद्योग और व्यापार में प्रतिवर्ष वृद्धि के बदले ठहराव अथवा गिरावट आती जा रही है, वहां स्पष्टतया पार्टी, सरकार और सेना के कार्यकर्ता अभी यह नहीं सीख पाए कि आर्थिक काम कैसे किया जाए, तथा वहां निस्सन्देह भारी कठिनाइयों का सामना करना पड़ेगा।

एक बात की ओर मैं फिर एक बार आप सबका ध्यान दिलाना चाहता हूं, यानी हमारे विचार प्रत्यक्ष वातावरण के अनुरूप होने चाहिए। हमारा प्रत्यक्ष वातावरण देहाती है ; जाहिर में तो इस सम्बन्ध में किसी को कोई शक-शुबहा नहीं है, क्योंकि भला यह कौन नहीं जानता कि हम देहातों में रहते हैं ? लेकिन फिर भी ऐसा है नहीं। बहुत से साथी देहात को बिलकुल नहीं समझ पाते या कम से कम गहराई के साथ नहीं समझ पाते, हालांकि वे लोग उसमें रहते हैं और यह सोचते हैं कि वे देहात को समझते हैं। वे इस तथ्य को आधार मानकर नहीं चलते कि हमारा वातावरण एक ऐसा

देहाती क्षेत्र है, जो व्यक्तिगत अर्थव्यवस्था पर आधारित है, दुश्मन द्वारा अलग-अलग टुकड़ों में विभाजित है और छापामार युद्ध में जुटा हुआ है, और नतीजा यह होता है कि राजनीतिक, फौजी, आर्थिक व सांस्कृतिक समस्याओं अथवा पार्टी के मामलों को हल करने में तथा मजदूर, किसान, नौजवान व महिला आन्दोलनों को चलाने में वे अक्सर गलत अथवा केवल आंशिक रूप से सही रुख अपनाते हैं। वे देहाती मामलों को शहरी दृष्टिकोण से देखते हैं और अक्सर एक मोटी दीवाल से अपना सिर टकराते रहते हैं, क्योंकि वे मनोगत रूप से अनेक अनुपयुक्त योजनाएं बना डालते हैं और उन्हें जबरदस्ती लागू कर देते हैं। पिछले कुछ वर्षों में हमारे साथियों ने काफी प्रगति की है, जिसका कारण है दोष-निवारण आन्दोलन और काम के दौरान मिली असफलताएं। लेकिन हमें अब भी यह ध्यान में रखना चाहिए कि हम अपने विचारों को पूर्ण रूप से अपने वातावरण के अनुरूप ढाल लें, सिर्फ तभी हम काम के हर क्षेत्र में उपलब्धियां प्राप्त कर सकेंगे और तेजी से प्राप्त कर सकेंगे। अगर हम सचमुच यह बात समझ लें कि देहाती आधार-क्षेत्र, जो इस समय हमारे पास मौजूद हैं, व्यक्तिगत अर्थव्यवस्था पर आधारित हैं, दुश्मन द्वारा अलग-अलग टुकड़ों में विभाजित हैं और छापामार युद्ध में जुटे हुए हैं, तथा इस बात को अपनी तमाम कार्यवाहियों का आधार बना लें, तो इस सम्बन्ध में यह सवाल पैदा होगा कि हमारी उपलब्धियां, जिनकी रफ्तार धीमी लगती है और जो उल्लेखनीय नहीं जान पड़तीं, कुछ अन्य बातों, जैसे शहरी दृष्टिकोण, को आधार बनाकर प्राप्त की जाने वाली उपलब्धियों की बराबरी कैसे कर सकती हैं? धीमी होनी तो अलग रही, उनकी रफ्तार वास्तव में

काफी तेज है। कारण, अगर हम शहरी दृष्टिकोण को आधार बनाकर चलते और वर्तमानकालीन वास्तविकताओं से मुंह मोड़ लेते, तो यह सवाल ही न उठता कि हम तेज रफ्तार से उपलब्धियां प्राप्त करते हैं अथवा धीमी रफ्तार से, उल्टे हम बेअन्त विघ्न-बाधाओं के जाल में फंस जाते और हमें कोई भी उपलब्धि प्राप्त न होती।

इस बात का स्पष्ट प्रमाण हैं सैनिक व असैनिक उत्पादन आन्दोलन के वर्तमान रूप को आगे बढ़ाने में प्राप्त की गई भारी सफलताएं।

हम जापानी आक्रमणकारियों पर भीषण प्रहार करना चाहते हैं तथा शहरों पर कब्जा करने और अपने खोए हुए इलाकों को फिर से प्राप्त करने की तैयारी करना चाहते हैं। लेकिन हम यह मकसद कैसे पूरा कर सकते हैं, जबकि हम एक ऐसे देहाती इलाके में रहते हैं जो व्यक्तिगत अर्थव्यवस्था पर आधारित है, दुश्मन द्वारा अलग-अलग टुकड़ों में विभाजित है और छापामार युद्ध में जुटा हुआ है? हम क्वोमिन्ताङ की नकल नहीं कर सकते, जो खुद तिनका भी नहीं तोड़ती और सूती कपड़े जैसी आवश्यक चीजों के लिए भी पूरी तरह विदेशियों पर निर्भर रहती है। हम स्वावलम्बन का पक्षपोषण करते हैं। हम विदेशी सहायता प्राप्त करने की उम्मीद करते हैं, लेकिन उस पर निर्भर नहीं रहते; हम अपने खुद के ही प्रयत्नों पर निर्भर रहते हैं, समूची सेना और समूची जनता की सृजन-शक्ति पर निर्भर रहते हैं। लेकिन हम यह सब कैसे करते हैं? इसके लिए हम सेना व जनता में एक साथ बड़े पैमाने का उत्पादन आन्दोलन चलाते हैं।

चूंकि हम देहात में रहते हैं, जहां जनबल और भौतिक साधन

बिखरे-बिखरे हैं, इसलिए हमने उत्पादन और सप्लाई के लिए "एकीकृत नेतृत्व और विकेन्द्रित प्रबन्ध" की नीति अपनाई है।

चूंकि हम देहात में रहते हैं, जहां किसान बिखरी-बिखरी व्यक्तिगत जमीन पर खेतीबाड़ी करते हैं और उत्पादन के पिछड़े हुए साधनों का इस्तेमाल करते हैं तथा जहां ज्यादातर जमीन पर अब भी जमींदारों की मिलकियत मौजूद है और सामन्ती लगान के जरिए किसानों का शोषण किया जाता है, इसलिए हमने लगान और सूद कम करने तथा श्रम में आपसी सहायता पर अमल करने की नीतियां अपनाई हैं, ताकि उत्पादन-कार्य के लिए किसानों के उत्साह को बढ़ाया जा सके तथा कृषि की उत्पादन-क्षमता में वृद्धि की जा सके। लगान कम किए जाने के बाद उत्पादन-कार्य में किसानों का उत्साह बढ़ गया है और श्रम में आपसी सहायता पर अमल किए जाने के बाद कृषि की उत्पादन-क्षमता में वृद्धि हो गई है। मैंने उत्तरी चीन और मध्य चीन के विभिन्न स्थानों से सामग्री इकट्ठी की है, जो मुकम्मिल तौर पर यह बताती है कि लगान में कटौती होने के बाद किसान उत्पादन-कार्य में पहले से कहीं ज्यादा उत्साह दिखाने लगते हैं तथा हमारे श्रम-विनिमय दलों की ही तरह आपसी सहायता दलों को संगठित करने के लिए तैयार हो जाते हैं, जिनमें अब तीन व्यक्तियों की उत्पादन-क्षमता अतीत काल के मुकाबले चार व्यक्तियों के बराबर हो गई है। ऐसी हालत में ९ करोड़ लोग १२ करोड़ लोगों के बराबर काम कर सकते हैं। ऐसी मिसालें भी देखने में आती हैं जबकि दो व्यक्ति उतना काम कर देते हैं जितना पहले तीन व्यक्ति किया करते थे। अगर जोर-जबरदस्ती और

फरमानशाही के बदले, जो तुरत नतीजे हासिल करने की खोज में हमारी असफलता का कारण बन जाते हैं, लोगों के सामने अच्छी मिसालें कायम करके हम उन्हें समझाने-बुझाने की नीति अपनाएं, तो अधिकांश किसानों को आगामी कुछ वर्षों में कृषि-उत्पादन और दस्तकारी-उत्पादन करने वाले आपसी सहायता दलों में संगठित करना सम्भव हो जाएगा। यदि एक बार इस प्रकार के उत्पादक दल आम तौर पर कायम होने लगे, तो न सिर्फ उत्पादन बढ़ेगा और सभी प्रकार के सृजन होने लगेंगे, बल्कि राजनीतिक प्रगति भी होने लगेगी, शिक्षा का स्तर उन्नत होने लगेगा, स्वास्थ्य-रक्षा के कार्य में प्रगति होने लगेगी, गुण्डे-बदमाशों का पुनःसंस्कार किया जा सकेगा और सामाजिक रीति-रिवाजों में परिवर्तन हो सकेगा, तथा उत्पादन के काम आने वाले औजारों को भी जल्दी ही सुधारा जा सकेगा। इन सब बातों के होने पर हमारे देहाती समाज का कदम-ब-कदम एक नए आधार पर पुनर्निर्माण किया जा सकेगा।

अगर हमारे कार्यकर्ता काम के इस क्षेत्र का सावधानी के साथ अध्ययन करते रहें तथा देहाती जनता को उत्पादन आन्दोलन का विकास करने में अत्यन्त सक्रियता के साथ मदद देते रहें, तो कुछ ही वर्षों में देहातों में अनाज व अन्य आवश्यक चीजें पर्याप्त मात्रा में सप्लाई होने लगेंगी, तथा हम न सिर्फ युद्ध जारी रख सकेंगे और फसल खराब होने की स्थिति का सामना कर सकेंगे, बल्कि भविष्य के लिए भी अनाज व अन्य आवश्यक चीजों का काफी बड़ा भण्डार बना सकेंगे।

हमें किसानों के अलावा फौजी यूनिटों और सरकारी व अन्य संगठनों को भी उत्पादन के लिए संगठित करना चाहिए।

चूंकि हम एक ऐसे देहाती इलाके में रहते हैं, जिस पर दुश्मन बार-बार तबाही ढाता रहता है और जो एक दीर्घकालीन युद्ध में जुटा हुआ है, इसलिए फौजी यूनिटों और सरकारी व अन्य संगठनों के लिए यह आवश्यक हो जाता है कि वे उत्पादन-कार्य में जुट जाएं। और उनके लिए ऐसा करना सम्भव भी है क्योंकि छापामार युद्ध एक व्यापक क्षेत्र में बिखरकर लड़ा जा रहा है। इसके अलावा, हमारे शेनशी-कानसू-निङश्या सीमान्त क्षेत्र में सैनिकों व सरकारी कर्मचारियों की तादाद कुल आबादी को देखते हुए बहुत बड़ी है, तथा अगर वे खुद ही उत्पादन-कार्य नहीं करेंगे, तो वे भूखे ही रह जाएंगे, जबकि दूसरी तरफ अगर जनता से बहुत ज्यादा ले लिया गया और उस पर बहुत ज्यादा बोझ डाला गया, तो जनता भूखी रह जाएगी। यही कारण है कि हम एक बड़े पैमाने का उत्पादन आन्दोलन छेड़ने के लिए संकल्पबद्ध हैं। शेनशी-कानसू-निङश्या सीमान्त क्षेत्र की ही मिसाल लीजिए। यहां फौजी यूनिटों और सरकारी व अन्य संगठनों को प्रतिवर्ष कुल २,६०,००० तान (यहां १ तान ३०० चिन के बराबर है) कुटे हुए अनाज (कोदों) की जरूरत होती है, जिसमें से १,६०,००० तान वे जनता से लेते हैं और बाकी खुद उगाते हैं ; अगर वे स्वयं उत्पादन-कार्य में न जुट जाते, तो या तो खुद भूखे रह जाते अथवा जनता भूखी रह जाती। यह हमारे उत्पादन आन्दोलन का ही नतीजा है कि हम भुखमरी से मुक्त हो गए हैं, तथा सैनिकों व जनता को वास्तव में काफी अच्छा खाना मिलता है।

सीमान्त क्षेत्र के सरकारी व अन्य संगठन, अनाज, कपड़े-लत्ते और बिस्तर को छोड़कर, अपनी अधिकांश आवश्यकताओं की दृष्टि

से आत्मनिर्भर हो गए हैं तथा कुछ इकाइयां तो पूरी तरह आत्मनिर्भर हो गई हैं। बहुत सी इकाइयां अनाज, कपड़े-लत्ते और बिस्तर की दृष्टि से भी आंशिक रूप से आत्मनिर्भर हो गई हैं।

सीमान्त क्षेत्र की फौजी यूनिटों ने इससे भी ज्यादा बड़ी उपलब्धियां प्राप्त की हैं। बहुत सी यूनिटें अनाज, कपड़े-लत्ते, बिस्तर और सभी अन्य आवश्यक वस्तुओं की दृष्टि से पूर्ण रूप से आत्मनिर्भर हो गई हैं, अर्थात वे १०० फीसदी आत्मनिर्भर हो गई हैं और सरकार से कोई भी चीज नहीं लेतीं। यह सबसे ऊंचा स्तर है, सर्वोच्च दर्जा है, तथा इसे कदम-ब-कदम अनेक वर्षों में कायम किया गया है।

यह स्तर लड़ाई के मोर्चे पर कायम नहीं किया जा सकता, जहां लड़ाई करना आवश्यक है। वहां दूसरा या तीसरा दर्जा कायम किया जा सकता है। दूसरे दर्जे में, अनाज, कपड़े-लत्ते और बिस्तर को छोड़कर, जिन्हें सरकार सप्लाई करती है, निम्नांकित चीजों में अपने उत्पादन के जरिए आत्मनिर्भरता प्राप्त की जाती है: खाद्य-तेल (०.५ ल्याङ प्रति व्यक्ति प्रतिदिन), नमक (०.५ ल्याङ प्रति व्यक्ति प्रतिदिन), साग-भाजी (१-१.५ चिन प्रति व्यक्ति प्रतिदिन), गोश्त (१-२ चिन प्रति व्यक्ति प्रति मास), ईंधन, दफ्तर के काम आने वाला सामान, विविध मदों का खर्च, शिक्षा व स्वास्थ्य सम्बन्धी अनुदान, हथियारों की सफाई करने का खर्च तथा तम्बाकू, जूते, मोजे, दस्ताने, तौलिए, दांत साफ करने के बुरुश इत्यादि का खर्च ; इन सब चीजों पर कुल व्यय का कोई ५० प्रतिशत खर्च होता है। यह दर्जा कदम-ब-कदम दो-तीन वर्ष में कायम किया जा सकता है। कुछ स्थानों में इसे कायम भी किया

जा चुका है। यह दर्जा स्थिर आधार-क्षेत्रों में कायम किया जा सकता है।

तीसरा दर्जा सरहदी इलाकों में और छापामार इलाकों में कायम किया जा सकता है, जहां ५० प्रतिशत आत्मनिर्भरता सम्भव नहीं और १५-२५ प्रतिशत आत्मनिर्भरता ही सम्भव है। वहां इस दर्जे पर पहुंचना ही काफी समझा जाएगा।

संक्षेप में, ऐसी इकाइयों को छोड़कर जो असाधारण परिस्थितियों में हैं, बाकी सभी फौजी यूनिटों और सरकारी व अन्य संगठनों को चाहिए कि वे लड़ाई, ट्रेनिंग अथवा काम के बीच की अवधि में उत्पादन-कार्य में जुट जाएं। इस प्रकार की बीच की अवधि को सामूहिक उत्पादन के लिए इस्तेमाल करने के अलावा, उन्हें अपने कुछ कर्मचारियों को खास तौर पर उत्पादन-कार्य के लिए संगठित करना चाहिए, तथा उन्हें फार्मों, साग-भाजी के बगीचों, चरागाहों, वर्कशापों, छोटे-छोटे कारखानों, परिवहन-दलों और सहकारी समितियों का संचालन करने अथवा किसानों के साथ साझेदारी करके अनाज व साग-भाजी उगाने का काम सौंपना चाहिए। वर्तमान परिस्थिति में हर संगठन अथवा फौजी यूनिट को अपनी खुद की "घरेलू अर्थव्यवस्था" कायम करनी चाहिए जिससे कठिनाइयों पर विजय प्राप्त की जा सके। ऐसा करने के लिए तैयार न होना आवारागर्दों का लक्षण है और बड़ा शर्मनाक है। उत्पादन बढ़ाने के लिए हमें उन सबको काम की क्वालिटी के अनुसार व्यक्तिगत बोनस देने की व्यवस्था भी कायम करनी चाहिए जो उत्पादन-कार्य में प्रत्यक्ष रूप से भाग लेते हैं। यही नहीं, काम को कारगर रूप से आगे बढ़ाने के लिए प्रत्येक संगठन के प्रधान को चाहिए कि वह खुद भी जिम्मेदारी सम्भाले और काम में व्यक्तिगत रूप से भाग ले, तथा नेतृत्वकारी ग्रुप को जन-समुदाय से मिलाने और सामान्य आवाहन को विशेष और ठोस मार्गदर्शन से मिलाने का तरीका अपनाए।

कुछ लोग कहते हैं कि यदि फौजी यूनिटों ने उत्पादन का काम शुरू कर दिया, तो वे ट्रेनिंग व युद्ध का काम नहीं कर पाएंगी, तथा यदि सरकारी व अन्य संगठनों ने भी ऐसा ही किया, तो वे अपना खुद का काम नहीं कर पाएंगे। यह एक लचर दलील है। पिछले कुछ वर्षों में सीमान्त क्षेत्र में स्थित हमारी फौजी यूनिटों ने अपने लिए काफी खाना-कपड़ा पैदा करने के लिए बड़े पैमाने पर उत्पादन-कार्य किया है, तथा साथ ही अपनी ट्रेनिंग, राजनीतिक शिक्षा और साक्षरता-कोर्स व अन्य कोर्सों को पहले के मुकाबले कहीं अधिक सफलतापूर्वक चलाया है, तथा सेना के बीच और सेना व जनता के बीच पहले के मुकाबले कहीं अधिक घनिष्ठ एकता कायम की है। पिछले वर्ष जहां एक ओर मोर्चे पर बड़े पैमाने का उत्पादन आन्दोलन चलाया गया, वहां दूसरी ओर युद्धभूमि में भी भारी सफलताएं प्राप्त की गईं तथा इसके अलावा एक व्यापक ट्रेनिंग आन्दोलन भी चलाया गया। और उत्पादन-कार्य करने के फलस्वरूप, सरकारी व अन्य संगठनों के कर्मचारियों का रहन-सहन पहले से बेहतर हो गया है और वे पहले से अधिक लगन व कुशलता के साथ काम करने लगे हैं; यह हालत सीमान्त क्षेत्र में और मोर्चे पर दोनों ही जगह मौजूद है।

इस प्रकार यह जाहिर हो जाता है कि देहाती इलाकों में छापामार युद्ध के दौरान, जो फौजी यूनिट और सरकारी व अन्य संगठन

आत्मनिर्भरता के लिए उत्पादन-कार्य में जुट जाते हैं, वे लड़ाई, ट्रेनिंग और कामकाज में पहले से अधिक शक्ति व सक्रियता दिखाते हैं, तथा अपने अनुशासन में सुधार करते हैं और अपनी अन्दरूनी एकता और सिविलियनों के साथ अपनी एकता में बढ़ोतरी करते हैं। आत्मनिर्भरता के लिए उत्पादन हमारे देश के दीर्घकालीन छापामार युद्ध की उपज है और यह हमारा गौरव है। यदि एक बार हम इसमें माहिर बन गए, तो किसी भी किस्म की भौतिक कठिनाई हमें झुका नहीं सकेगी। हमारी स्फूर्ति व सामर्थ्य प्रतिवर्ष बढ़ती जाएगी और हर लड़ाई के बाद हम अधिकाधिक शक्तिशाली बनते जाएंगे ; हम दुश्मन पर हावी हो जाएंगे और हमें इस बात की रत्तीभर भी आशंका नहीं कि दुश्मन हम पर हावी हो जाएगा।

मोर्चे पर काम करने वाले साथियों का ध्यान एक अन्य बात की ओर आकर्षित करना भी जरूरी है। हमारे द्वारा हाल ही में स्थापित कुछ आधार-क्षेत्र भौतिक साधन-स्रोतों की दृष्टि से काफी समृद्ध हैं, तथा इस बात को ध्यान में रखते हुए वहां के कार्यकर्ता किफायत करने अथवा उत्पादन-कार्य में जुटने को तैयार नहीं हैं। यह बड़ी खराब बात है, तथा इसका उन्हें बाद में फल भोगना पड़ेगा। हम चाहे जहां भी हों, हमें अपने जनबल और भौतिक साधन-स्रोतों की कद्र करनी चाहिए, तथा अदूरदर्शिता से काम नहीं लेना चाहिए और फिजूलखर्ची व शाहखर्ची नहीं करनी चाहिए। हम चाहे जहां भी हों, हमें अपने काम के पहले ही वर्ष से आगामी अनेक वर्षों पर ध्यान देना चाहिए, उस दीर्घकालीन युद्ध पर ध्यान देना चाहिए जिसे जारी रखना है, प्रत्याक्रमण पर ध्यान देना चाहिए, तथा दुश्मन को बाहर खदेड़ने के बाद के पुनर्निर्माण-कार्य पर ध्यान देना चाहिए।

एक तरफ तो फिजूलखर्ची और शाहखर्ची हरगिज नहीं करनी चाहिए ; और दूसरी तरफ उत्पादन का सक्रियता से विकास करना चाहिए। पहले कुछ स्थानों में लोगों को काफी मुसीबतें झेलनी पड़ीं, क्योंकि उन्होंने दूरदर्शिता से काम नहीं लिया तथा जनबल व भौतिक साधन-स्रोतों की किफायत करने और उत्पादन का विकास करने की ओर ध्यान नहीं दिया। यह एक सबक है और इसकी ओर हमें ध्यान देना चाहिए।

जहां तक तैयारशुदा माल का सम्बन्ध है, शेनशी-कानसू-निङश्या सीमान्त क्षेत्र ने फैसला किया है कि वह कपास, सूत, सूती कपड़े, लोहे, कागज और बहुत सी अन्य चीजों के क्षेत्र में दो वर्ष के भीतर पूरी तरह आत्मनिर्भर हो जाएगा। जिन चीजों का उत्पादन यहां नहीं होता अथवा बहुत थोड़ी मात्रा में होता है, उनका हमें उत्पादन करना चाहिए, उन्हें तैयार करना चाहिए और उन्हें सप्लाई करना चाहिए, तथा बाहर के स्रोतों पर हरगिज निर्भर नहीं रहना चाहिए। सारा काम सार्वजनिक, निजी और सहकारी कारोबारों द्वारा पूरा किया जाना चाहिए। सभी उत्पादनों के लिए हमारी मांग न सिर्फ मात्रा है बल्कि क्वालिटी भी है, अर्थात उनमें टूट-फूट सहन करने की क्षमता होनी चाहिए। सीमान्त क्षेत्रीय सरकार, आठवीं राह सेना के संयुक्त प्रतिरक्षा हेडक्वार्टर और पार्टी की केन्द्रीय कमेटी के उत्तर-पश्चिमी ब्यूरो ने इन बातों पर भारी ध्यान देकर बिलकुल सही काम किया है। मुझे उम्मीद है कि मोर्चे पर सभी स्थानों में ऐसा ही किया जाएगा। बहुत से स्थानों में ऐसा किया भी जाने लगा है और मैं उनकी सफलता की कामना करता हूं।

हमारे सीमान्त क्षेत्र में और अन्य मुक्त क्षेत्रों में आर्थिक काम की

हर शाखा से सम्बन्धित जानकारी प्राप्त करने में दो-तीन वर्ष ग्रौर लग जाएंगे। वह दिन जबकि हम अपनी जरूरत का समूचा अथवा अधिकांश अनाज खुद उगाने लगेंगे, अपनी जरूरत की समस्त अथवा अधिकांश वस्तुएं खुद तैयार करने लगेंगे और इस प्रकार पूर्ण रूप से या मुख्य रूप से आत्मनिर्भर बन जाएंगे अथवा हमारे पास अतिरिक्त चीजें भी होने लगेंगी, एक ऐसा दिन भी होगा जबकि हम देहातों के आर्थिक काम की हर शाखा में माहिर बन चुके होंगे। जब हम शहरों से दुश्मन का सफाया कर देंगे, तो हम आर्थिक काम की नई शाखाओं को हाथ में ले सकेंगे। हमें भरपूर कोशिश करनी चाहिए और सीखना चाहिए, क्योंकि चीन अपने पुनर्निर्माण के लिए हम पर ही निर्भर है।

उत्पादन-कार्य छापामार इलाकों में भी सम्भव है*

३१ जनवरी १९४५

यह सवाल पहले ही हल किया जा चुका है और इस बारे में अब कोई सन्देह नहीं रह गया कि शत्रु के पृष्ठभाग में स्थित मुक्त इलाकों में कायम किए गए अपेक्षाकृत स्थिर आधार-क्षेत्रों की सेना व जनता में उत्पादन आन्दोलन चलाया जा सकता है और चलाया जाना चाहिए। लेकिन क्या उसे छापामार इलाकों में और शत्रु के पृष्ठभाग के बिलकुल पिछले इलाकों में भी चलाया जा सकता है अथवा नहीं, यह सवाल अभी बहुत से लोगों के दिमाग में हल नहीं हो पाया; इसका कारण है सबूत की कमी।

लेकिन अब हमारे पास सबूत मौजूद है। १९४४ में शानशी-छाहाड़-हपे सीमान्त क्षेत्र के बहुत से छापामार इलाकों में उत्पादन-कार्य काफी बड़े पैमाने पर शुरू किया गया और उसमें शानदार नतीजे हासिल किए गए, जैसा कि शानशी-छाहाड़-हपे सीमान्त क्षेत्र के छापामार दस्तों के उत्पादन आन्दोलन के बारे में कामरेड चाङ फिङ-खाए की उस रिपोर्ट में कहा गया है जो "मुक्ति दैनिक" में

* यह सम्पादकीय कामरेड माओ त्सेतुङ ने येनान के "मुक्ति दैनिक" के लिए लिखा था।

२८ जनवरी को प्रकाशित हुई। इस रिपोर्ट में जिन इलाकों और दस्तों का उल्लेख किया गया है उनके नाम इस प्रकार हैं : मध्य हूपे में, छठा उपक्षेत्र, दूसरे उपक्षेत्र की चौथी इलाकाई टुकड़ी, चौथे उपक्षेत्र की आठवीं इलाकाई टुकड़ी, श्वीश्वेइ-तिङश्येन टुकड़ी, पाओतिङ-मानछङ टुकड़ी और युनप्याओ टुकड़ी ; तथा शानशी में, ताएश्येन और क्वोश्येन काउन्टियों में स्थित फौजी टुकड़ियां। इन क्षेत्रों में परिस्थिति अत्यन्त प्रतिकूल है :

> उस जगह दुश्मन की फौजों और कठपुतली फौजों के अड्डों और उनकी किलेबन्दियों की भरमार है तथा खन्दकों, दीवारों और सड़कों का जाल बिछा हुआ है, और अपनी फौजी बरतरी और संचार-सुविधाओं का फायदा उठाकर, दुश्मन अक्सर हमारे खिलाफ आकस्मिक हमले और घेरा डालने व "सफाया करने" की मुहिमें चलाता है। ऐसी परिस्थिति में, छापामार दस्तों को अक्सर दिन में कई बार स्थानान्तरण करना पड़ता है।

ऐसी हालत में भी छापामार दस्तों ने लड़ाइयों के बीच के अवकाश में उत्पादन-कार्य जारी रखने की व्यवस्था की है। इसका परिणाम यह हुआ है :

> अब हर आदमी को पहले से ज्यादा रसद मिलती है—हर व्यक्ति को रोजाना ०.५ ल्याङ खाद्य-तेल, ०.५ ल्याङ नमक, और एक चिन सब्जी, तथा महीने में १.५ चिन गोश्त सप्लाई किया जाता है। यही नहीं, दांत का बुरुश, मंजन और अक्षर-ज्ञान कराने वाली प्राइमरें भी, जो बरसों से उपलब्ध नहीं होती थीं, अब मिलने लगी हैं।

जरा सोचिए तो ! कौन कहता है कि छापामार इलाकों में उत्पादन-कार्य सम्भव नहीं है ?

बहुत से लोग यह दावा करते हैं कि घनी आबादी वाले इलाकों में फालतू जमीन बिलकुल नहीं है। क्या वहां बिलकुल फालतू जमीन नहीं है ? इसके लिए जरा फिर से शानशी-छाहाङ-हूपे सीमान्त क्षेत्र पर नजर डालिए :

> पहली बात यह है कि यहां कृषि पर मुख्य ध्यान देने की नीति के अनुरूप भूमि-समस्या को हल कर लिया गया है। वे लोग कुल नौ तरीके इस्तेमाल करते हैं : (१) उन दीवारों को तोड़ देना और उन गड्ढों को भर देना जिन्हें दुश्मन द्वारा नाकेबन्दी के लिए इस्तेमाल किया जाता था ; (२) उन मोटर-सड़कों को नष्ट कर देना जिन्हें दुश्मन इस्तेमाल कर सकता है तथा उनके दोनों किनारों पर फसलें उगाना ; (३) बंजर जमीन के छोटे-छोटे टुकड़ों को खेतीबाड़ी के लिए इस्तेमाल करना ; (४) सशस्त्र संरक्षण के जरिए मिलिशिया को मदद देकर, चांदनी रात में दुश्मन की परवाह न करके उसकी किलेबन्दियों के आसपास फसल उगाई जाना ; (५) उन किसानों के साथ सांझे में जुताई करना जिनके पास श्रमशक्ति की कमी है ; (६) दुश्मन के अड्डों अथवा उसकी किलेबन्दियों के आसपास की जमीन की कमोबेश खुले रूप से जुताई करने में सैनिकों को किसानों का लिबास पहनाकर इस्तेमाल करना ; (७) पुश्ते बनाकर, रेत हटाकर और तटवर्ती जमीन को खेतों में बदलकर नदी के दोनों किनारों को प्रयोग में लाना ; (८) सूखी जमीन

पर सिंचाई-व्यवस्था कायम करने में किसानों को मदद देना ; तथा (६) हर ऐसे गांव में जहां वे सक्रिय हों, खेतीबाड़ी के काम में मदद देना।

लेकिन अगर कृषि-उत्पादन सम्भव है, तो शायद दस्तकारी और अन्य प्रकार का उत्पादन असम्भव है ? क्या यह सचमुच असम्भव है ? जरा शानशी-छाहाड़-हपे सीमान्त क्षेत्र पर नजर डालिए :

> दुश्मन की नाकाबन्दी वाली खन्दकों अथवा पंक्तियों के बाहर स्थित हमारी सेनाएं अपने उत्पादन-कार्य को सिर्फ कृषि तक ही सीमित नहीं रखतीं, बल्कि स्थिर क्षेत्रों की ही तरह उन्होंने दस्तकारी और परिवहन का भी विकास कर लिया है। चौथी इलाकाई टुकड़ी ने एक फैल्ट-कैंप वर्कशाप, एक तेल-कोल्हू और एक आटा-चक्की खोल ली है, तथा सात महीने के अन्दर स्थानीय मुद्रा में ५,००,००० य्वान का मुनाफा कमा लिया है। उसने न सिर्फ अपनी खुद की मुश्किलों को हल कर लिया है बल्कि अपने छापामार इलाके के जन-समुदाय की जरूरतें भी पूरी की हैं। सैनिक अब अपने तमाम ऊनी स्वेटर और मोजे खुद मुहय्या कर सकते हैं।

चूंकि छापामार इलाकों में फौजी कार्यवाहियां बार-बार की जाती हैं, इसलिए अगर सेनाएं उत्पादन-कार्य में लग गईं तो शायद युद्धकर्म पर असर पड़े ? क्या सचमुच ऐसी ही बात है ? जरा शानशी-छाहाड़-हपे सीमान्त क्षेत्र पर नजर डालिए :

> श्रमशक्ति और सशस्त्र शक्ति को एक दूसरे से मिलाने के

> उसूल को लागू करते हुए, वे लोग उत्पादन-कार्य और युद्धकर्म को समान महत्व देते हैं।

और

> मिसाल के लिए दूसरे उपक्षेत्र की चौथी इलाकाई टुकड़ी को ही देखिए। जब उन लोगों ने अपनी बसन्त की जुताई शुरू की, तो उन्होंने दुश्मन पर हमला करने के लिए अपना विशेष दस्ता भेज दिया तथा साथ ही एक शक्तिशाली राजनीतिक आक्रमण शुरू कर दिया। ठीक इसी कारण, वहां फौजी कार्यवाहियों में भी पहले से ज्यादा सक्रियता आ गई तथा सेनाओं की युद्ध-क्षमता भी बढ़ गई। फरवरी से लेकर सितम्बर के शुरू तक, इस छोटे से दस्ते ने ७१ लड़ाइयां लड़ीं, चूतुङशे, शाङच्वाङ, येच्वाङ, फ़ङच्याचाए और याथओ नामक अड्डों पर कब्जा कर लिया, शत्रु सेना और कठपुतली सेना के १६५ लोगों को हताहत किया, ६१ कठपुतली सैनिकों को बन्दी बनाया, तथा ३ लाइट-मशीनगनों और १०१ रायफलों व पिस्तौलों को अपने कब्जे में कर लिया।

और

> फौजी कार्यवाहियों और महान उत्पादन आन्दोलन के प्रचार के बीच तालमेल कायम करके, उन्होंने फौरन एक राजनीतिक आक्रमण शुरू कर दिया : "जो कोई महान उत्पादन आन्दोलन में तोड़फोड़ करने की कोशिश करे, उसे धराशायी कर दो !" ताएश्येन और क्वोश्येन नामक काउन्टी-केन्द्रों में दुश्मन ने वहां

के निवासियों से पूछा : "आठवीं राह सेना इन दिनों इतनी ज्यादा सख्त क्यों हो गई है ?" उन्होंने जवाब दिया : "क्योंकि तुम सीमान्त क्षेत्र में महान उत्पादन आन्दोलन को तहस-नहस करने की कोशिश कर रहे हो ।" कठपुतली सैनिकों ने एक दूसरे से कहा : "जब ये लोग महान उत्पादन आन्दोलन में जुटे हुए हों, उस समय बाहर जाना ठीक नहीं है ।"

क्या यह सम्भव है कि छापामार इलाकों का जन-समुदाय भी उत्पादन आन्दोलन चलाए ? क्या ऐसे इलाकों में भी किसान लोग उत्पादन बढ़ाने में दिलचस्पी लेते हैं जहां अभी शायद लगान कम नहीं किया गया अथवा लगान में मुकम्मिल कटौती नहीं की गई ? शानशी-छाहाड़-हृपे सीमान्त क्षेत्र में इस प्रश्न का हां में उत्तर दिया गया है :

यही नहीं, दुश्मन की नाकाबन्दी वाली खन्दकों अथवा पंक्तियों के बाहर स्थित हमारी सेनाएं उत्पादन आन्दोलन को फैलाकर स्थानीय जनता को प्रत्यक्ष सहायता देती हैं। एक तरफ तो वे अपनी सशस्त्र शक्ति के जरिए उत्पादन में जुटे हुए जन-समुदाय की हिफाजत करती हैं, तथा दूसरी तरफ अपने श्रम के जरिए उसकी व्यापक रूप से सहायता करती हैं। कुछ यूनिटों ने यह नियम बना लिया है कि वे खेतीबाड़ी के व्यस्त मौसम में अपनी जनशक्ति का ५० प्रतिशत जन-समुदाय को मुफ्त सहायता देने में लगा देंगी। इस प्रकार उत्पादन के बारे में जन-समुदाय का उत्साह बहुत अधिक बढ़ गया है, सेना और जनता के बीच के सम्बन्ध और अधिक सामंजस्यपूर्ण हो गए हैं तथा जन-समुदाय को पर्याप्त खाद्य-सामग्री मुहय्या हो गई है। अतएव छापामार इलाकों में कम्युनिस्ट पार्टी और आठवीं राह सेना के प्रति जन-समुदाय की सहानुभूति व समर्थन में वृद्धि हो गई है।

इस प्रकार इससे सम्बन्धित सभी प्रश्नों का उत्तर दे दिया गया है कि क्या छापामार इलाकों में सेना और जनता बड़े पैमाने पर उत्पादन आन्दोलन चला सकती है अथवा नहीं और उन्हें ऐसा आन्दोलन चलाना चाहिए अथवा नहीं। हम मुक्त क्षेत्रों में और खास तौर पर छापामार इलाकों में पार्टी, सरकार व सेना में काम करने वाले सभी कार्यकर्ताओं से यह मांग करते हैं कि वे इस बात को पूरी तरह समझ लें, क्योंकि जहां उन्होंने "हो सकता है" और "चाहिए" का मतलब समझ लिया, तो उत्पादन-कार्य हर जगह शुरू हो जाएगा। ठीक इसी बात को ध्यान में रखकर शानशी-छाहाड़-हृपे सीमान्त क्षेत्र में उत्पादन-कार्य की शुरुआत की गई थी :

उत्पादन आन्दोलन में दुश्मन की नाकाबन्दी वाली खन्दकों अथवा पंक्तियों के बाहर स्थित हमारी सेनाएं न सिर्फ पांच महीने के थोड़े से अरसे में अपनी उत्पादन-योजना यथासमय पूरी कर सकीं, बल्कि इससे भी आगे बढ़कर उन्होंने अनेक व्यावहारिक सृजन भी किए। इसका कारण यह था कि कार्यकर्ताओं ने अपने विचारों को बदल दिया, उत्पादन-कार्य पर और श्रमशक्ति को सशस्त्र शक्ति के साथ मिलाने पर गम्भीरता से ध्यान दिया तथा वे जन-समुदाय के बीच से श्रमवीरों और आदर्श कार्यकर्ताओं को आगे लाए (एक प्रारम्भिक सारांश के अनुसार ६६ श्रमवीरों

और आदर्श कार्यकर्ताओं को आगे लाया गया)।

१९४५ में, समूचे मुक्त क्षेत्रों को चाहिए कि वे सभी की मुश्तरका कोशिशों के जरिए पहले के मुकाबले कहीं अधिक बड़े पैमाने पर सैनिक व असैनिक उत्पादन आन्दोलन चलाएं, और आने वाले जाड़ों में हम लोग सभी क्षेत्रों की उपलब्धियों की तुलना करेंगे।

युद्ध न सिर्फ एक फौजी और राजनीतिक प्रतिद्वन्द्विता है बल्कि एक आर्थिक प्रतिद्वन्द्विता भी है। जापानी आक्रमणकारियों को परास्त करने के लिए, अन्य तमाम कार्यों के अलावा हमें आर्थिक काम में भी जुट जाना चाहिए तथा दो या तीन वर्ष के अन्दर उसमें महारत हासिल कर लेनी चाहिए; इस वर्ष, १९४५ में, हमें पहले से कहीं अधिक बड़ी उपलब्धियां हासिल करनी चाहिए। चीनी कम्युनिस्ट पार्टी की केन्द्रीय कमेटी समूचे मुक्त क्षेत्रों के सभी कार्यकर्ताओं और जनता से बड़ी ख्वाहिशमन्दी के साथ ठीक यही उम्मीद करती है, तथा हमें आशा है कि यह लक्ष्य प्राप्त कर लिया जाएगा।

चीन के दो सम्भावित भाग्य*

२३ अप्रैल १९४५

साथियो! चीनी कम्युनिस्ट पार्टी की सातवीं राष्ट्रीय कांग्रेस आज शुरू हो रही है।

हमारी इस कांग्रेस का क्या महत्व है? ऐसा कहा जा सकता है कि यह एक ऐसी कांग्रेस है जो चीन की ४५ करोड़ जनता के भाग्य पर प्रभाव डालेगी। चीन के दो भाग्य हो सकते हैं। किसी ने उनमें से एक के बारे में एक किताब लिखी है;[१] हमारी कांग्रेस चीन के दूसरे भाग्य का प्रतिनिधित्व करती है तथा हम भी इसके बारे में एक किताब लिखेंगे।[२] हमारी कांग्रेस का उद्देश्य है जापानी साम्राज्यवाद का तख्ता उलट देना और चीन की समूची जनता को मुक्त कराना। हमारी कांग्रेस जापानी आक्रमणकारियों को पराजित करने और एक नए चीन का निर्माण करने के लिए आयोजित की गई है, समूची चीनी जनता की एकता और समूची दुनिया की जनता की एकता के जरिए अन्तिम विजय प्राप्त करने के लिए आयोजित की गई है।

वर्तमान समय अत्यन्त अनुकूल है। योरप में हिटलर का तख्ता

* यह कामरेड माओ त्सेतुङ द्वारा चीनी कम्युनिस्ट पार्टी की सातवीं राष्ट्रीय कांग्रेस में दिया गया उद्घाटन भाषण है।

जल्दी ही उलटने वाला है। विश्व के फासिस्ट-विरोधी युद्ध का मुख्य मंच पश्चिम में है, जहां सोवियत लाल सेना के प्रयत्नों के कारण लड़ाई विजयपूर्वक जल्दी ही समाप्त हो जाएगी। इस समय लाल सेना की तोपों का गर्जन बरलिन में भी सुना जा सकता है, जिसका सम्भवतया शीघ्र ही पतन हो जाएगा। पूरब में भी, जापानी साम्राज्यवाद का तख्ता उलट देने के लिए चलाए गए युद्ध की विजय सन्निकट है। हमारी कांग्रेस का आयोजन फासिस्ट-विरोधी युद्ध की अन्तिम विजय की पूर्ववेला में किया जा रहा है।

चीनी जनता के सामने दो रास्ते हैं – प्रकाश का रास्ता और अन्धकार का रास्ता। चीन के दो सम्भावित भाग्य मौजूद हैं – प्रकाश का भाग्य और अन्धकार का भाग्य। जापानी साम्राज्यवाद अभी परास्त नहीं हुआ है। पर उसके परास्त होने के बाद भी हमारे सामने ये दो सम्भावित भविष्य मौजूद रहेंगे। एक ऐसा चीन जो स्वाधीन, स्वतंत्र, जनवादी, एकीकृत, समृद्ध और शक्तिशाली हो, यानी प्रकाश से परिपूर्ण चीन, एक नया चीन जिसकी जनता मुक्त हो चुकी हो; अथवा एक ऐसा चीन जो अर्ध-औपनिवेशिक, अर्ध-सामन्ती, विभाजित, गरीब और शक्तिहीन हो, यानी पुराना चीन। नया चीन अथवा पुराना चीन – ये हैं वे दोनों सम्भावित भविष्य जो चीनी जनता, चीनी कम्युनिस्ट पार्टी और हमारी वर्तमान कांग्रेस के सामने मौजूद हैं।

चूंकि जापान अभी परास्त नहीं हुआ है और चूंकि ये दोनों सम्भावित भविष्य उसकी पराजय के बाद भी हमारे सामने मौजूद रहेंगे, ऐसी हालत में हमें अपना काम कैसे शुरू करना चाहिए? हमारा कार्य क्या है? हमारा एकमात्र कार्य है साहस के साथ जन-

समुदाय को गोलबन्द करना, जनशक्ति का विस्तार करना, तथा देश की उन तमाम शक्तियों को एकताबद्ध करना जिन्हें एकताबद्ध किया जा सकता है, ताकि हमारी पार्टी के नेतृत्व में जापानी आक्रमण-कारियों को पराजित करने और एक प्रकाशमान नए चीन का निर्माण करने के लिए, एक ऐसे चीन का निर्माण करने के लिए जो स्वाधीन, स्वतंत्र, जनवादी, एकीकृत, समृद्ध और शक्तिशाली हो, संघर्ष किया जा सके। हमें एक उज्ज्वल भविष्य के लिए, एक प्रकाश-मान भाग्य के लिए तथा एक अन्धकारमय भविष्य के खिलाफ, एक प्रकाशहीन भाग्य के खिलाफ भरपूर प्रयास करना चाहिए। यही हमारा एकमात्र और केवलमात्र कार्य है! निस्सन्देह, यही हमारी कांग्रेस का कार्य है, हमारी समूची पार्टी का कार्य है तथा चीन की समूची जनता का कार्य है।

क्या हमारी उम्मीदों का पूरा होना मुमकिन है? हमें यकीन है कि ऐसा होना मुमकिन है। ऐसा होना इसलिए मुमकिन है क्योंकि हमारे यहां अब ये हालात मौजूद हैं:

(१) एक शक्तिशाली कम्युनिस्ट पार्टी, जिसके पास समृद्ध अनुभव मौजूद है और जिसकी सदस्य-संख्या १२,१०,००० है।

(२) शक्तिशाली मुक्त क्षेत्र, जिनकी कुल आबादी ९,५५,००,००० है तथा जिनके पास ९,१०,००० सेना और २२,००,००० मिलिशिया है।

(३) समूचे देश की जनता का समर्थन।

(४) दुनिया के सभी देशों की जनता का और खास तौर पर सोवियत संघ का समर्थन।

इन हालात – एक शक्तिशाली कम्युनिस्ट पार्टी, शक्तिशाली मुक्त क्षेत्र तथा समूचे देश की जनता और समूची दुनिया की जनता का समर्थन – की मौजूदगी में क्या हमारी उम्मीदें पूरी हो सकती हैं ? हमें यकीन है कि वे पूरी हो सकती हैं। चीन में ऐसे हालात पहले कभी नहीं रहे। इनमें से कुछ हालात पिछले अनेक वर्षों से मौजूद हैं, लेकिन पहले कभी वे इतनी ज्यादा पूर्णता के साथ नहीं रहे जितने कि आज हैं। चीनी कम्युनिस्ट पार्टी पहले कभी इतनी ज्यादा शक्तिशाली नहीं रही, हमारे क्रान्तिकारी आधार-क्षेत्रों की आबादी पहले कभी इतनी ज्यादा नहीं रही और उनके पास पहले कभी इतनी ज्यादा सेना नहीं रही, जापान-अधिकृत क्षेत्रों में तथा क्वोमिन्ताङ-शासित क्षेत्रों में जनता के बीच कम्युनिस्ट पार्टी की प्रतिष्ठा पहले से कहीं ज्यादा बढ़ गई है, तथा सोवियत संघ की, और सभी देशों की जनता की क्रान्तिकारी शक्तियां पहले से कहीं ज्यादा बढ़ गई हैं। ऐसा कहा जा सकता है कि इन हालात में आक्रमणकारियों को पराजित करना और एक नए चीन का निर्माण करना बिलकुल सम्भव है।

हमारे लिए एक सही नीति अपनाना जरूरी है। हमारी नीति की बुनियादी बात यह है कि साहस के साथ जन-समुदाय को गोलबन्द किया जाए और जनशक्ति का विस्तार किया जाए, जिससे वह हमारी पार्टी के नेतृत्व में आक्रमणकारियों को पराजित करे और एक नए चीन का निर्माण करे।

१९२१ में अपनी स्थापना के बाद चौबीस वर्ष के अपने जीवन-काल में चीनी कम्युनिस्ट पार्टी अपने वीरतापूर्ण संघर्ष के तीन ऐतिहासिक कालों – उत्तरी अभियान, भूमि-क्रान्ति युद्ध और जापानी-

आक्रमण-विरोधी युद्ध – से गुजर चुकी है तथा समृद्ध अनुभव प्राप्त कर चुकी है। अब हमारी पार्टी जापान का प्रतिरोध करने और राष्ट्र का पुनरुद्धार करने के चीनी जनता के संघर्ष का गुरुत्व-केन्द्र बन गई है, मुक्ति प्राप्त करने के उसके संघर्ष का गुरुत्व-केन्द्र बन गई है, तथा आक्रमणकारियों को परास्त करने और एक नए चीन का निर्माण करने के उसके संघर्ष का गुरुत्व-केन्द्र बन गई है। चीन का गुरुत्व-केन्द्र ठीक यहीं है जहां हम लोग हैं, अन्यत्र कहीं नहीं है।

हमें नम्र और विवेकशील होना चाहिए, घमण्ड और उतावलेपन से बचना चाहिए, तथा तन-मन से चीनी जनता की सेवा करनी चाहिए, ताकि उसे वर्तमान काल में जापानी आक्रमणकारियों को पराजित करने के लिए तथा भविष्य में एक नव-जनवादी राज्य का निर्माण करने के लिए एकताबद्ध किया जा सके। यदि हमने ऐसा किया, यदि हमने सही नीति अपनाई और यदि हमने मिलकर प्रयत्न किया, तो हम निश्चित रूप से अपना कार्य पूरा कर सकेंगे।

जापानी साम्राज्यवाद का नाश हो !

चीनी जनता की मुक्ति जिन्दाबाद !

चीनी कम्युनिस्ट पार्टी जिन्दाबाद !

चीनी कम्युनिस्ट पार्टी की सातवीं राष्ट्रीय कांग्रेस जिन्दाबाद !

नोट

१ यहां च्याङ काई-शेक की "चीन का भाग्य" नामक किताब से तात्पर्य है, जो १९४३ में प्रकाशित हुई थी।

२ यहां कामरेड माओ त्सेतुङ द्वारा इसी कांग्रेस में प्रस्तुत "मिलीजुली सरकार के बारे में" शीर्षक रिपोर्ट से तात्पर्य है।

मिलीजुली सरकार के बारे में*

२४ अप्रैल १९४५

१. चीनी जनता की बुनियादी मांगें

हमारी कांग्रेस निम्नांकित परिस्थितियों में हो रही है। चीनी जनता द्वारा जापानी हमलावरों के खिलाफ लगभग आठ वर्षों तक किए गए अविचल, वीरतापूर्ण और अदम्य संघर्ष के बाद, जिसके दौरान उसे अकथनीय मुसीबतें सहनी पड़ीं तथा अनगिनत कुरबानियां देनी पड़ीं, एक नई परिस्थिति पैदा हो गई है ; समूची दुनिया में, फासिस्ट हमलावरों के विरुद्ध किए गए न्यायोचित व पुनीत संग्राम में निर्णायक विजय प्राप्त हो गई है और अब वक्त नजदीक आ गया है जबकि चीनी जनता संश्रयकारी देशों के साथ तालमेल कायम करके जापानी हमलावरों को शिकस्त दे देगी। परन्तु चीन अभी एकताबद्ध नहीं हो पाया है और अब भी एक गम्भीर संकट का सामना कर रहा है। इन हालात में, हमें क्या करना चाहिए? इसमें जरा भी सन्देह नहीं कि इस समय सबसे फौरी जरूरत इस बात की है कि हम सभी राजनीतिक पार्टियों तथा ग्रुपों के प्रतिनिधियों

* यह एक राजनीतिक रिपोर्ट है जिसे कामरेड माओ त्सेतुङ ने चीनी कम्यु-निस्ट पार्टी की सातवीं राष्ट्रीय कांग्रेस में प्रस्तुत किया था।

को और उन लोगों के प्रतिनिधियों को जिनका किसी भी पार्टी से सम्बन्ध न हो, एकताबद्ध करें और एक अस्थाई जनवादी मिलीजुली सरकार की स्थापना करें, ताकि जनवादी सुधार किए जा सकें, वर्तमान संकट को पार किया जा सके, और चीनी जनता को जापानी हमलावरों के चंगुल से मुक्त कराने के उद्देश्य से जापानी हमलावरों को शिकस्त देने के वास्ते संश्रयकारी देशों के साथ कारगर तालमेल कायम करके लड़ाई लड़ने के लिए देश की तमाम जापान-विरोधी शक्तियों को गोलबन्द और एकीकृत किया जा सके। उसके बाद यह आवश्यक हो जाएगा कि हम व्यापक जनवादी आधार पर एक राष्ट्रीय एसेम्बली बुलाएं और औपचारिक रूप से संगठित एक जनवादी सरकार की स्थापना करें, जिसका स्वरूप एक मिलीजुली सरकार का ही होगा और जिसमें पहले से ज्यादा बड़े पैमाने पर तमाम पार्टियों व ग्रुपों का और निर्दलीय लोगों का प्रतिनिधित्व रहेगा, और जो एक स्वाधीन, स्वतंत्र, जनवादी, एकीकृत, समृद्ध तथा शक्तिशाली नए चीन का निर्माण करने में सम्पूर्ण देश की मुक्त जनता का नेतृत्व करेगी। संक्षेप में, हमें एकता और जनवाद की कार्यदिशा अपनानी चाहिए, हमलावरों को शिकस्त देनी चाहिए तथा एक नए चीन का निर्माण करना चाहिए।

हमें विश्वास है कि सिर्फ इसी से चीनी जनता की बुनियादी मांगों की अभिव्यक्ति हो सकती है। इसलिए, मैं अपनी रिपोर्ट में मुख्यत: इन्हीं मांगों की चर्चा करूंगा। एक जनवादी मिलीजुली सरकार की स्थापना की जानी चाहिए अथवा नहीं, यह चीनी जनता तथा संश्रयकारी देशों के जनवादी लोकमत के लिए गहरी चिन्ता का

विषय बन गया है। इसलिए मेरी रिपोर्ट इस प्रश्न की व्याख्या करने पर विशेष जोर देगी।

जापानी-आक्रमण-विरोधी युद्ध के आठ वर्षों में, चीनी कम्युनिस्ट पार्टी ने बहुत सी कठिनाइयों को पार किया है और महान सफलताएं हासिल की हैं, पर जैसी कि आज की परिस्थिति है, हमारी पार्टी और जनता के सामने अब भी गम्भीर कठिनाइयां मौजूद हैं। आज की परिस्थिति की मांग यह है कि हमारी पार्टी और ज्यादा कारगर रूप से तथा तेजी के साथ काम करे और कठिनाइयों को पार करती जाए तथा चीनी जनता की बुनियादी मांगों को पूरा करने के लिए प्रयास करे।

२. अन्तरराष्ट्रीय और घरेलू परिस्थिति

क्या चीनी जनता इन बुनियादी मांगों को वास्तविकता में बदल सकती है? यह बात उसकी राजनीतिक चेतना, उसकी एकता और उसकी कोशिशों के स्तर पर निर्भर करेगी। साथ ही मौजूदा अन्तरराष्ट्रीय और घरेलू परिस्थिति अत्यन्त अनुकूल अवसर प्रदान करती है। यदि चीनी जनता इन अवसरों का भलीभांति लाभ उठा सके तथा सक्रियता से, दृढ़तापूर्वक और अविचल रूप से अपनी लड़ाई जारी रख सके, तो वह निस्सन्देह हमलावरों को शिकस्त दे देगी और नए चीन का निर्माण कर सकेगी। इस पवित्र कार्य को पूरा करने के लिए उसे अपने संघर्ष के दौरान अपनी कोशिशों को दुगुना कर देना चाहिए।

मौजूदा अन्तरराष्ट्रीय परिस्थिति कैसी है?

मौजूदा फौजी परिस्थिति यह है कि सोवियत सेना बरलिन पर हमला कर रही है, और बरतानिया, अमरीका तथा फ्रांस की संयुक्त सेनाएं इस आक्रमणात्मक कार्यवाही के साथ तालमेल कायम करके हिटलर की बचीखुची टुकड़ियों पर हमला कर रही हैं, जबकि इटालवी जनता विद्रोह कर रही है। ये सब कार्यवाहियां हिटलर को हमेशा के लिए खत्म कर देंगी। हिटलर के खत्म होने के बाद, जापानी हमलावरों की हार भी दूर नहीं रह जाएगी। चीनी और विदेशी प्रतिक्रियावादियों की भविष्यवाणी के विपरीत, फासिस्ट आक्रमणकारी शक्तियों को निस्सन्देह उखाड़ फेंका जाएगा और जनता की जनवादी शक्तियां निस्सन्देह विजयी होंगी। दुनिया निश्चय ही प्रगति का मार्ग अपनाएगी, न कि प्रतिक्रियावाद का। अलबत्ता, हमें पूर्णतया सतर्क रहना चाहिए और घटनाक्रम के दौरान कुछ अस्थाई अथवा यहां तक कि गम्भीर उतार-चढ़ावों की सम्भावनाओं की ओर भी ध्यान देना चाहिए; कई देशों में अब भी जबरदस्त प्रतिक्रियावादी शक्तियां मौजूद हैं, जो देश के भीतर और देश के बाहर की जनता की एकता, प्रगति और मुक्ति के प्रति द्वेष रखती हैं। जो कोई भी इन बातों को नजरअन्दाज करेगा वह राजनीतिक गलती कर बैठेगा। फिर भी इतिहास की सामान्य धारा बिलकुल स्पष्ट रूप से निर्धारित हो चुकी है और वह बदलेगी नहीं। यह सिर्फ फासिस्टों और सभी देशों के प्रतिक्रियावादियों, जो वास्तव में फासिस्टों के मददगार हैं, के लिए बुरा है, लेकिन तमाम देशों की जनता और उसकी संगठित जनवादी शक्तियों के लिए यह एक देन है। जनता, और केवल जनता ही, दुनिया के इतिहास का निर्माण करने वाली प्रेरक शक्ति होती है। सोवियत जनता ने अपने अन्दर महान

शक्ति पैदा कर ली है और वह फासिज्म को शिकस्त देने वाली मुख्य शक्ति बन गई है। उसकी स्वयं की कोशिशों, तथा साथ ही दूसरे फासिस्ट-विरोधी संश्रयकारी देशों की जनता की कोशिशों के फलस्वरूप ही फासिज्म का विनाश सम्भव हो सका है। युद्ध ने जनता को शिक्षित किया है, और यह जनता ही है जो युद्ध में जीतेगी, शान्ति हासिल करेगी और प्रगति करेगी।

यह नई परिस्थिति प्रथम विश्वयुद्ध की परिस्थिति से बिलकुल भिन्न है। उस समय सोवियत संघ अभी अस्तित्व में नहीं आया था और जनता राजनीतिक दृष्टि से उतनी जागृत नहीं हुई थी जितनी कि आज दुनिया के अनेक देशों की जनता हो चुकी है। दो विश्वयुद्ध दो बिलकुल भिन्न युगों का प्रतिनिधित्व करते हैं।

इसका मतलब यह नहीं कि फासिस्ट हमलावर देशों की हार होने, दूसरे विश्वयुद्ध की समाप्ति होने और अन्तरराष्ट्रीय शान्ति की स्थापना होने के बाद आगे संघर्ष नहीं होगा। फासिज्म की बचीखुची शक्तियां, जो अब भी काफी फैली हुई हैं, अवश्य ही गड़बड़ी मचाती रहेंगी, जबकि फासिस्ट-आक्रमण के विरुद्ध लड़ रहे खेमे के भीतर ऐसी शक्तियां मौजूद हैं जो जनवाद का विरोध करती हैं और दूसरे राष्ट्रों का उत्पीड़न करती हैं, और वे विभिन्न देशों की जनता तथा उपनिवेशों व अर्ध-उपनिवेशों का उत्पीड़न करती रहेंगी। इसलिए, अन्तरराष्ट्रीय शान्ति स्थापित हो जाने के बाद भी, विश्व के काफी बड़े हिस्से में बहुत से संघर्ष – फासिस्ट-विरोधी जन-समुदाय तथा बचेखुचे फासिस्ट तत्वों के बीच, जनवाद तथा जनवाद-विरोध के बीच, राष्ट्रीय मुक्ति तथा राष्ट्रीय उत्पीड़न के बीच – होते रहेंगे। जनता सिर्फ तभी अत्यन्त व्यापक विजय प्राप्त

कर सकेगी, जब वह अपने दीर्घकालीन और सतत प्रयत्नों के जरिए फासिज्म की बचीखुची शक्तियों, जनवाद-विरोधी शक्तियों तथा तमाम साम्राज्यवादी शक्तियों को परास्त कर देगी। यह निश्चित है कि वह दिन बहुत जल्दी या आसानी से नहीं आएगा, पर आएगा जरूर। फासिस्ट-विरोधी दूसरे विश्वयुद्ध में प्राप्त की गई विजय युद्ध के बाद के संघर्षों में जनता की विजय का मार्ग प्रशस्त कर देगी। टिकाऊ और स्थाई शान्ति तभी कायम की जा सकेगी जब इन संघर्षों में विजय प्राप्त कर ली जाएगी।

मौजूदा घरेलू परिस्थिति कैसी है?

चीन के दीर्घकालीन युद्ध में चीनी जनता को भारी कुरबानियां देनी पड़ी हैं और आगे भी देनी पड़ेंगी, लेकिन साथ ही इसी युद्ध ने चीनी जनता को तपाकर फौलाद बना दिया है। इस युद्ध ने चीनी जनता को गत सौ वर्षों के उसके सभी महान संघर्षों की अपेक्षा ज्यादा जागृत और एकताबद्ध किया है। चीनी जनता न सिर्फ एक जबरदस्त राष्ट्रीय दुश्मन का सामना कर रही है बल्कि उन शक्तिशाली घरेलू प्रतिक्रियावादी ताकतों का भी सामना कर रही है जो दरअसल दुश्मन की मदद कर रही हैं; यह तस्वीर का एक पहलू है। लेकिन दूसरा पहलू यह है कि चीनी जनता की राजनीतिक चेतना इस समय न सिर्फ पहले किसी भी समय के मुकाबले ज्यादा उन्नत हो गई है, बल्कि उसने शक्तिशाली मुक्त क्षेत्रों की भी स्थापना की है और दिनोंदिन आगे बढ़ रहा एक राष्ट्रव्यापी जनवादी आन्दोलन भी चलाया है। ये अनुकूल घरेलू परिस्थितियां हैं। गत सौ वर्षों में चीनी जनता को अपने तमाम संघर्षों में जिन पराजयों और अस्थाई असफलताओं का सामना करना पड़ा उनका कारण अगर कुछ आवश्यक

अन्तरराष्ट्रीय व घरेलू परिस्थितियों का अभाव था, तो आज परिस्थिति भिन्न है – सभी आवश्यक परिस्थितियां आज मौजूद हैं। आज हार से बचने और जीत हासिल करने की हर सम्भावना मौजूद है। अगर हम समूची जनता को अविचल संघर्ष में जुटा सकें और उसका उचित नेतृत्व कर सकें, तो हम अवश्य विजयी होंगे।

चीनी जनता को अब और अधिक पक्का विश्वास हो गया है कि वह एकताबद्ध होकर हमलावर को शिकस्त दे सकती है और एक नए चीन का निर्माण कर सकती है। अब उसके लिए तमाम बाधाओं पर फतह हासिल करने और महान ऐतिहासिक महत्व वाली अपनी बुनियादी मांगों को पूरा करने का वक्त आ गया है। इसके बारे में क्या कोई सन्देह है? मेरा खयाल है, नहीं।

ऐसी है आज की आम अन्तरराष्ट्रीय तथा घरेलू परिस्थिति।

३. जापानी-आक्रमण-विरोधी युद्ध में दो कार्यदिशाएं

चीन की समस्याओं की कुंजी

घरेलू परिस्थिति की चर्चा करते समय, हमें चीन के प्रतिरोध-युद्ध का भी ठोस रूप में विश्लेषण करना होगा।

चीन फासिस्ट-विरोधी युद्ध में भाग लेने वाले पांच सबसे बड़े देशों में एक है और एशिया महाद्वीप में जापानी हमलावरों से लड़ने वाला मुख्य देश है। चीनी जनता ने न सिर्फ जापानी-आक्रमण-विरोधी युद्ध में अत्यन्त महान भूमिका अदा की है, बल्कि युद्ध के बाद दुनिया में शान्ति की रक्षा करने में भी वह एक अत्यन्त महान

भूमिका अदा करेगी और पूरब में शान्ति की हिफाजत करने में तो वह निर्णायक भूमिका अदा करेगी। जापानी-आक्रमण-विरोधी युद्ध के आठ वर्षों में अपने को मुक्त कराने और संश्रयकारी देशों की मदद करने के लिए चीन ने बेहद भारी कोशिशें की हैं। ये कोशिशें मुख्यतया चीनी जनता द्वारा की गई हैं। चीनी सेना के अफसरों और सिपाहियों ने भारी तादाद में मोर्चे पर युद्ध किया है और अपना खून बहाया है; चीन के मजदूरों, किसानों, बुद्धिजीवियों और उद्योगपतियों ने पृष्ठभाग में बड़ी मेहनत से काम किया है; प्रवासी चीनियों ने युद्ध में योगदान करने के लिए चन्दा इकट्ठा किया है; और तमाम जापान-विरोधी राजनीतिक पार्टियों ने, उनके केवल ऐसे सदस्यों को छोड़कर जो जनता के विरोधी हैं, युद्ध में अपनी भूमिका अदा की है। संक्षेप में, चीनी जनता ने अपने खून-पसीने से आठ वर्ष के लम्बे अरसे तक जापानी हमलावरों से वीरतापूर्वक युद्ध किया है। लेकिन चीन के प्रतिक्रियावादी अनेक वर्षों से युद्ध में चीनी जनता द्वारा अदा की गई भूमिका की सच्चाई को दुनिया से छिपाने के लिए अफवाहें फैलाते रहे हैं और लोकमत को गुमराह करते रहे हैं। इसके अलावा, युद्ध के इन आठ वर्षों में चीन द्वारा हासिल किए गए तरह-तरह के अनुभवों का सांगोपांग रूप से कोई निचोड़ नहीं निकाला गया। इसलिए, इस कांग्रेस को चाहिए कि वह इन अनुभवों का उचित निचोड़ निकाले ताकि जनता को इससे शिक्षा मिल सके और पार्टी को अपनी नीति निर्धारित करने का आधार मिल सके।

जब इस प्रकार निचोड़ निकालने का प्रश्न आता है, तो यह सबके सामने स्पष्ट है कि चीन में इस समय दो अलग-अलग मार्गदर्शक

कार्यदिशाएं हैं। एक कार्यदिशा जापानी हमलावरों को परास्त करने की तरफ ले जाती है, जबकि दूसरी न सिर्फ उनकी हार को असम्भव बना देती है बल्कि कुछ मायनों में दरअसल उनकी मदद करती है और हमारे प्रतिरोध-युद्ध को हानि पहुंचाती है।

क्वोमिन्ताङ सरकार द्वारा जापान के प्रति अपनाई गई निष्क्रिय प्रतिरोध की नीति तथा जनता के प्रति अपनाई गई सक्रिय दमन की प्रतिक्रियावादी घरेलू नीति के परिणामस्वरूप फौजी असफलताएं प्राप्त हुई हैं, विशाल प्रदेश गंवा दिया गया है, वित्तीय व आर्थिक संकट पैदा हुआ है, जनता को उत्पीड़न व मुसीबतों का सामना करना पड़ा है तथा राष्ट्रीय एकता तहस-नहस हुई है। इस प्रकार की प्रतिक्रियावादी नीति युद्ध को प्रभावकारी ढंग से चलाने के लिए चीनी जनता की तमाम जापान-विरोधी शक्तियों को गोलबन्द करने और उन्हें एकीकृत करने के रास्ते का रोड़ा साबित हुई है तथा इसने जनता की जागृति और एकता के मार्ग में रुकावट पैदा कर दी है। फिर भी, चीनी जनता की जागृति और एकता विकसित होने से कभी नहीं रुकी, बल्कि जापानी हमलावरों और क्वोमिन्ताङ सरकार के दोहरे दमनचक्र के बीच टेढ़ेमेढ़े रास्ते से गुजरती हुई आगे बढ़ती गई। जाहिर है कि बहुत दिनों से चीन में दो कार्यदिशाएं मौजूद रही हैं – क्वोमिन्ताङ सरकार द्वारा अपनाई गई जनता का उत्पीड़न करने और निष्क्रिय प्रतिरोध करने की कार्यदिशा, तथा चीनी जनता द्वारा अपनाई गई लोकयुद्ध चलाने के लिए अपनी चेतना और एकता का स्तर उन्नत करने की कार्यदिशा। यही चीन की तमाम समस्याओं की कुंजी है।

टेढ़ेमेढ़े रास्ते से गुजरता इतिहास

आखिर इन दो कार्यदिशाओं का सवाल चीन की तमाम समस्याओं की कुंजी क्यों है – इस प्रश्न को समझने में लोगों की मदद करने के लिए यह आवश्यक है कि जापानी-आक्रमण-विरोधी युद्ध के इतिहास पर नजर डाली जाए।

चीनी जनता का प्रतिरोध-युद्ध टेढ़ेमेढ़े रास्ते से गुजरा है। यह काफी पहले १६३१ में शुरू हुआ। उसी साल १८ सितम्बर को, जापानी हमलावरों ने शनयाङ पर कब्जा कर लिया, और कुछ ही महीनों में तीन उत्तर-पूर्वी प्रान्तों पर कब्जा कर लिया। क्वोमिन्ताङ सरकार ने प्रतिरोध न करने की नीति अपनाई। परन्तु इन प्रान्तों की जनता और वहां की फौजों के एक देशभक्त हिस्से ने क्वोमिन्ताङ सरकार की इच्छा के खिलाफ चीनी कम्युनिस्ट पार्टी के नेतृत्व में या उसकी सहायता से जापान-विरोधी स्वयंसेवकों तथा जापान-विरोधी संयुक्त सेना का संगठन किया और वीरतापूर्वक छापामार युद्ध चलाया। किसी समय यह वीरतापूर्ण छापामार युद्ध बड़े पैमाने पर विकसित हो गया और अनेक बाधाओं तथा अस्थाई असफलताओं के बावजूद, दुश्मन द्वारा इसको नष्ट नहीं किया जा सका। जब १६३२ में जापानी हमलावरों ने शांघाई पर आक्रमण किया, तब क्वोमिन्ताङ के भीतर देशभक्तों के एक ग्रुप ने क्वोमिन्ताङ सरकार की इच्छा का फिर एक बार उल्लंघन करके जापानी हमलावरों का प्रतिरोध करने में १६वीं राह सेना का नेतृत्व किया। १६३३ में जापानी हमलावरों ने जेहोल और छाहाड़ प्रान्तों पर आक्रमण किया, और क्वोमिन्ताङ के भीतर देशभक्तों के एक और

ग्रुप ने तीसरी बार क्वोमिन्ताङ सरकार की इच्छा का विरोध किया और दुश्मन का प्रतिरोध करने के लिए जापान-विरोधी संश्रयकारी सेना का गठन करने में कम्युनिस्ट पार्टी का साथ दिया। पर जापानी आक्रमण के खिलाफ किए गए इन सब संघर्षों में सिर्फ चीनी जनता, चीनी कम्युनिस्ट पार्टी, दूसरे जनवादी ग्रुपों और देशभक्त प्रवासी चीनियों की ही तरफ से मदद मिली, जबकि क्वोमिन्ताङ सरकार ने प्रतिरोध न करने की अपनी नीति के कारण कोई सहायता नहीं दी। इसके विपरीत, शांघाई तथा छाहाड़ इन दोनों जगहों की जापान-विरोधी कार्यवाहियों को क्वोमिन्ताङ सरकार ने ही तहस-नहस कर दिया। १६३३ में उसने फ़ूच्येन में १६वीं राह सेना द्वारा स्थापित जन-सरकार को भी तहस-नहस कर दिया।

तत्कालीन क्वोमिन्ताङ सरकार ने आखिर जापानी आक्रमण का प्रतिरोध न करने की नीति क्यों अपनाई? इसका मुख्य कारण यह था कि १६२७ में वह क्वोमिन्ताङ-कम्युनिस्ट सहयोग को और चीनी जनता की एकता को तहस-नहस कर चुकी थी।

१६२४ में चीनी कम्युनिस्ट पार्टी के प्रस्ताव को स्वीकार कर डा० सुन यात-सेन ने क्वोमिन्ताङ की प्रथम राष्ट्रीय कांग्रेस बुलाई जिसमें कम्युनिस्टों ने भी भाग लिया। कांग्रेस में रूस से संश्रय, कम्युनिस्ट पार्टी से सहयोग और किसान-मजदूरों की सहायता की तीन महान नीतियां निर्धारित की गई, ह्वाङफू फौजी अकादमी कायम की गई तथा क्वोमिन्ताङ, कम्युनिस्ट पार्टी और जनता के सभी तबकों का एक राष्ट्रीय संयुक्त मोर्चा कायम किया गया। इसके फलस्वरूप, १६२४-२५ में क्वाङतुङ प्रान्त में प्रतिक्रियावादी शक्तियों को तहस-नहस कर दिया गया, १६२६-२७ में विजयी

उत्तरी अभियान चलाया गया, याङत्सी नदी और पीली नदी के किनारे के अधिकांश इलाकों पर कब्जा कर लिया गया, उत्तरी युद्ध-सरदारों की सरकार को परास्त कर दिया गया, और चीन के इतिहास में एक अभूतपूर्व पैमाने का जन-मुक्ति संघर्ष छेड़ दिया गया। परन्तु उत्तरी अभियान के विकास के एक नाजुक दौर में, १९२७ के बसन्त के अन्त और ग्रीष्म के शुरू में, क्वोमिन्ताङ अधिकारियों द्वारा अपनाई गई "पार्टी-शुद्धि" और कत्लेआम की विश्वासघाती और जन-विरोधी नीतियों ने इस राष्ट्रीय संयुक्त मोर्चे को – क्वोमिन्ताङ, कम्युनिस्ट पार्टी और जनता के सभी तबकों के संयुक्त मोर्चे को, जो चीनी जनता के मुक्ति-कार्य को साकार रूप देने के लिए कायम किया गया था – तथा इस संयुक्त मोर्चे की तमाम क्रान्तिकारी नीतियों को तहस-नहस कर डाला। चीनी कम्युनिस्ट पार्टी और चीनी जनता को, जिन्हें कल तक संश्रयकारी समझा जाता था, अब दुश्मन समझा जाने लगा और साम्राज्यवादियों तथा सामन्तवादियों को, जिन्हें कल तक शत्रु समझा जाता था, अब संश्रयकारी समझा जाने लगा। इस प्रकार छलपूर्वक चीनी कम्युनिस्ट पार्टी और चीनी जनता पर अचानक हमला कर दिया गया और एक महान, जीवन्त तथा जबरदस्त क्रान्ति को कुचल दिया गया। उसके बाद एकता की जगह गृहयुद्ध ने ले ली, लोकशाही की जगह तानाशाही ने ले ली, तथा प्रकाश से आलोकित चीन की जगह अन्धकार से घिरे चीन ने ले ली। लेकिन चीनी कम्युनिस्ट पार्टी और चीनी जनता को न तो डराया जा सका, न जीता जा सका और न खत्म ही किया जा सका। वह उठ खड़ी हुई तथा अपने खून के धब्बों को मिटाकर और अपने शहीद साथियों को दफनाकर फिर लड़ाई

में जुट गई। क्रान्ति का महान झण्डा बुलन्द रखते हुए, उसने सशस्त्र प्रतिरोध शुरू कर दिया तथा चीन के विशाल क्षेत्र में जन-सरकारों की स्थापना की, भूमि-सुधार किया, एक जन-सेना – चीनी लाल सेना – का निर्माण किया, तथा चीनी जनता की क्रान्तिकारी शक्तियों की रक्षा की और उनका विस्तार किया। डा० सुन यात-सेन के क्रान्तिकारी तीन जन-सिद्धान्तों को, जिनका क्वोमिन्ताङ प्रतिक्रियावादियों ने परित्याग कर दिया था, जनता, कम्युनिस्ट पार्टी और दूसरे जनवादी व्यक्तियों ने आगे बढ़ाया।

जापानी हमलावरों द्वारा तीन उत्तर-पूर्वी प्रान्तों में अतिक्रमण किए जाने के बाद, १९३३ में चीनी कम्युनिस्ट पार्टी ने उन तमाम क्वोमिन्ताङ सेनाओं के सामने, जो उस समय क्रान्तिकारी आधार-क्षेत्रों और लाल सेना पर हमला कर रही थीं, युद्ध-विराम सन्धि करने का प्रस्ताव रखा ताकि जापान का संयुक्त रूप से प्रतिरोध किया जा सके; यह प्रस्ताव इन तीन शर्तों के साथ रखा गया – हमला रोक दिया जाए, जनता को आजादी के अधिकार दे दिए जाएं, और जनता को हथियारबन्द कर दिया जाए। लेकिन क्वोमिन्ताङ अधिकारियों ने इसे ठुकरा दिया।

उस समय से क्वोमिन्ताङ सरकार की गृहयुद्ध की नीति और भी अधिक भयंकर हो गई, जबकि चीनी जनता की गृहयुद्ध को खत्म करने और जापान का संयुक्त रूप से प्रतिरोध करने की मांग और भी ज्यादा शक्तिशाली बन गई। शांघाई तथा अनेक दूसरे स्थानों में तमाम किस्म के देशभक्तिपूर्ण जन-संगठन बनने लगे। १९३४ से १९३६ के बीच, पार्टी की केन्द्रीय कमेटी के नेतृत्व में, याङत्सी नदी के उत्तर और दक्षिण में स्थित इलाकों में मौजूद लाल सेना

की मुख्य सैन्य-शक्तियां अकथनीय कठिनाइयों को पार करते हुए उत्तर-पश्चिमी चीन में चली गई और वहां मौजूद लाल सेना की यूनिटों से जा मिलीं। उन्हीं दो वर्षों में चीनी कम्युनिस्ट पार्टी ने नई परिस्थिति को देखते हुए एक नई तथा सर्वांगीण राजनीतिक कार्यदिशा – जापान-विरोधी राष्ट्रीय संयुक्त मोर्चे की कार्यदिशा निर्धारित की और उसे कार्यान्वित किया, जिसका लक्ष्य जापान का संयुक्त रूप से प्रतिरोध करने तथा एक नव-जनवादी गणराज्य की स्थापना करने के लिए संघर्ष करना था। ६ दिसम्बर १६३५ को, पेफिङ के विद्यार्थी समुदाय ने हमारी पार्टी के नेतृत्व में एक वीरतापूर्ण और देशभक्तिपूर्ण आन्दोलन चलाया, उन्होंने चीनी राष्ट्रीय मुक्ति हिरावल दस्ता[1] कायम किया और इस आन्दोलन को चीन के तमाम बड़े-बड़े शहरों में फैला दिया। १२ दिसम्बर १६३६ को, क्वोमिन्ताङ के भीतर जापान का प्रतिरोध करने के पक्षपोषक देशभक्तों के दो ग्रुपों, उत्तर-पूर्वी सेना तथा १७वीं राह सेना ने क्वोमिन्ताङ अधिकारियों द्वारा जापान से सुलह-समझौता करने और देश के भीतर जनता का कत्लेआम करने के रूप में अपनाई गई प्रतिक्रियावादी नीति के विरोध में, साहस के साथ एक साथ मिलकर, विख्यात शीआन घटना का सूत्रपात किया। इसी प्रकार क्वोमिन्ताङ के भीतर दूसरे देशभक्त भी क्वोमिन्ताङ अधिकारियों की तत्कालीन नीतियों से असन्तुष्ट थे। इन परिस्थितियों में क्वोमिन्ताङ अधिकारियों को अपनी गृहयुद्ध की नीति को छोड़ देने और जनता की मांगों को स्वीकार करने के लिए मजबूर होना पड़ा। शीआन घटना का शान्तिपूर्ण हल उस समय एक मोड़ बन गया;

नई परिस्थितियों में आन्तरिक सहयोग स्थापित हुआ और राष्ट्रव्यापी जापानी-आक्रमण-विरोधी युद्ध शुरू हो गया। लूकओच्याओ घटना के कुछ समय पहले, मई १६३७ में, हमारी पार्टी का एक ऐतिहासिक महत्व वाला राष्ट्रीय सम्मेलन बुलाया गया जिसमें पार्टी की केन्द्रीय कमेटी द्वारा १६३५ से अपनाई जा रही नई राजनीतिक कार्यदिशा की पुष्टि की गई।

७ जुलाई १६३७ की लूकओच्याओ घटना से लेकर अक्तूबर १६३८ में ऊहान के पतन के समय तक, क्वोमिन्ताङ सरकार प्रतिरोध-युद्ध में अपेक्षाकृत सक्रिय रही। इस काल में जापानी आक्रमणकारियों द्वारा बड़े पैमाने पर किए गए हमलों ने तथा समस्त जनता में बढ़ते हुए देशभक्तिपूर्ण रोष ने क्वोमिन्ताङ सरकार को इस बात के लिए बाध्य कर दिया कि वह जापानी हमलावरों के प्रतिरोध को अपनी नीति का केन्द्र-बिन्दु बना ले, जिसके फलस्वरूप समूची सेना तथा जनता द्वारा किए जा रहे जापानी-आक्रमण-विरोधी युद्ध में उभार पैदा करना आसान हो गया, और कुछ समय के लिए एक नया और जीवन्त वातावरण पैदा हो गया। समस्त जनता, जिसमें कम्युनिस्ट और जनवादी व्यक्ति भी शामिल थे, पूरी आशा लगाए थी कि क्वोमिन्ताङ सरकार इस अवसर का, जबकि राष्ट्र खतरे में था और जनता उत्साह से भरपूर थी, फायदा उठाकर जनवादी सुधार करेगी और डा० सुन यात-सेन के क्रान्तिकारी तीन जन-सिद्धान्तों पर अमल करेगी। लेकिन उनकी ये आशाएं व्यर्थ साबित हुईं। जापानी हमलावरों का अपेक्षाकृत सक्रिय प्रतिरोध करने के उन दो वर्षों में भी क्वोमिन्ताङ अधिकारी लोकयुद्ध के

लिए व्यापक जन-समुदाय को गोलबन्द करने के कार्य का विरोध करते रहे और जापान-विरोधी तथा जनवादी कार्यवाहियों के लिए एकताबद्ध होने के उसके स्वतःस्फूर्त प्रयासों पर पाबन्दी लगाते रहे। जहां एक तरफ क्वोमिन्ताङ सरकार ने चीनी कम्युनिस्ट पार्टी तथा दूसरी जापान-विरोधी पार्टियों के प्रति अपने पुराने रुख में थोड़ा-बहुत परिवर्तन कर लिया था, वहां दूसरी तरफ वह उनको समान दर्जा देना नामंजूर करती रही और उनकी कार्यवाहियों पर अनेक तरह से पाबन्दियां लगाती रही। देशभक्त राजनीतिक कैदी तब भी भारी तादाद में जेल में पड़े हुए थे। सबसे बढ़कर यह बात थी कि क्वोमिन्ताङ सरकार ने तब भी थैलीशाहों की तानाशाही को, जिसे उसने १९२७ में गृहयुद्ध छेड़ने के बाद स्थापित किया था, कायम रखा और इसलिए पूरे राष्ट्र की सर्वसम्मत आकांक्षाओं का प्रतिनिधित्व करने वाली एक जनवादी मिलीजुली सरकार का निर्माण नहीं किया जा सका।

इस काल के प्रारम्भ में ही हम कम्युनिस्टों ने बता दिया था कि चीन के जापानी-आक्रमण-विरोधी युद्ध के लिए दो वैकल्पिक कार्यदिशाएं हैं—एक है सर्वव्यापी लोकयुद्ध की कार्यदिशा जो हमें विजय की ओर ले जाए, अथवा दूसरी है एक आंशिक युद्ध की कार्यदिशा जिसमें जनता उत्पीड़न की स्थिति में बनी रहे और जो हमें पराजय की ओर ले जाए। हम लोगों ने यह भी बताया था कि युद्ध दीर्घकालीन होगा और इसमें अनिवार्य रूप से बहुत सी बाधाएं और कठिनाइयां आएंगी, परन्तु चीनी जनता अपने प्रयासों से अवश्य ही अन्तिम विजय प्राप्त कर लेगी।

लोकयुद्ध

इसी काल के दौरान, चीनी कम्युनिस्ट पार्टी के नेतृत्व में चलने वाली लाल सेना की मुख्य शक्तियों को, जो उत्तर-पश्चिमी चीन में चली गई थीं, चीन की राष्ट्रीय क्रान्तिकारी सेना की आठवीं राह सेना के नाम से पुनर्गठित कर लिया गया, और चीनी लाल सेना की छापामार यूनिटों को, जो याङत्सी नदी के दोनों तरफ के विभिन्न स्थानों में रह गई थीं, चीन की राष्ट्रीय क्रान्तिकारी सेना की नई चौथी सेना के नाम से पुनर्गठित कर लिया गया। आठवीं राह सेना उत्तरी चीन के मोर्चे पर लड़ने चली गई तथा नई चौथी सेना मध्य चीन के मोर्चे पर। गृहयुद्ध काल में, चीनी लाल सेना, जिसने उत्तरी अभियान काल की ह्वाङफू फौजी अकादमी और राष्ट्रीय क्रान्तिकारी सेना की जनवादी परम्पराओं को सुरक्षित रखा था और विकसित किया था, के सैनिकों की संख्या एक समय कई लाख तक बढ़ गई थी। लेकिन जापानी-आक्रमण-विरोधी युद्ध शुरू होने के समय तक उसके सैनिकों की संख्या घटकर दसियों हजार रह गई, जिसकी वजह थी क्वोमिन्ताङ सरकार द्वारा हमारे दक्षिणी आधार-क्षेत्रों में की गई बर्बरतापूर्ण विध्वंसकारी कार्यवाहियां, लम्बे अभियान के दौरान हमारे द्वारा उठाई गई क्षति और अन्य कारण। परिणामस्वरूप कुछ लोग इस सेना की उपेक्षा करते थे तथा यह सोचते थे कि जापान का प्रतिरोध करने के लिए मुख्य रूप से क्वोमिन्ताङ पर ही निर्भर रहना चाहिए। लेकिन जनता बेहतरीन पारखी होती है। वह जानती थी कि उस समय संख्या कम होने के बावजूद आठवीं राह सेना और नई चौथी सेना

ये दोनों गुणात्मक दृष्टि से एक ऊंचे दर्जे की सेनाएं हैं, केवल ये ही ऐसी सेनाएं हैं जो सच्चे अर्थों में लोकयुद्ध चला सकती हैं, तथा जहां एक बार वे जापान-विरोधी मोर्चे पर पहुंच गईं और वहां के व्यापक जन-समुदाय के साथ जा मिलीं, तो उनके असीम उज्ज्वल भविष्य का मार्ग प्रशस्त हो जाएगा। जनता बिलकुल सही थी। इस समय जब मैं यह रिपोर्ट पेश कर रहा हूं, हमारी सेना की तादाद ९,१०,००० तक पहुंच चुकी है, तथा हमारी देहाती मिलिशिया की तादाद, जो सामान्य उत्पादन-कार्य से अलग नहीं है, बढ़कर २२,००,००० से ज्यादा हो गई है। हालांकि हमारी नियमित सेना अब भी क्वोमिन्ताङ सेना (उसमें केन्द्रीय और स्थानीय दोनों प्रकार के नियंत्रण में कार्यवाही करने वाली क्वोमिन्ताङ यूनिटें शामिल हैं) के मुकाबले संख्या की दृष्टि से कहीं छोटी है, फिर भी वह चीन के जापानी-आक्रमण-विरोधी युद्ध में मुख्य शक्ति बन चुकी है – यह बात प्रमाणित होती है उसके द्वारा लड़ाई में उलझाए गए जापानी व कठपुतली सैनिकों की संख्या और उसके युद्ध-मोर्चों के विस्तार से, उसकी युद्ध-क्षमता से, उसकी फौजी कार्यवाहियों में उसे व्यापक जनता से प्राप्त होने वाले समर्थन से, तथा उसके राजनीतिक गुण, आन्तरिक एकीकरण और एकता से।

यह सेना एक शक्तिशाली सेना है क्योंकि इसके सभी सदस्य जागरूक होकर अनुशासन का पालन करते हैं; वे चन्द व्यक्तियों या किसी संकीर्ण गुट के निजी हितों के लिए नहीं बल्कि व्यापक जन-समुदाय और समूचे राष्ट्र के हितों के लिए एक साथ मिलकर लड़ते हैं। इस सेना का एकमात्र उद्देश्य है चीनी जनता का दृढ़तापूर्वक पक्षपोषण करना और तन-मन से उसकी सेवा करना।

इस उद्देश्य से प्रेरित होकर, यह सेना एक अदम्य भावना रखती है तथा यह अपने सभी दुश्मनों को शिकस्त देने और कभी सिर न झुकाने के लिए संकल्पबद्ध है। चाहे कितनी ही कठिनाइयों और मुसीबतों का सामना क्यों न करना पड़े, जब तक एक भी आदमी बाकी रहेगा, वह लड़ाई जारी रखेगा।

इस उद्देश्य से प्रेरित होकर, इस सेना ने अपनी पांतों में और अपनी पांतों के बाहर के लोगों के साथ उल्लेखनीय ढंग से एकता कायम की है। इसकी पांतों के भीतर अफसरों और सिपाहियों के बीच, ऊंचे रैंकों और निचले रैंकों के बीच, तथा फौजी कार्य, राजनीतिक कार्य और पृष्ठभागीय सेवाकार्य के बीच एकता कायम की गई है; इसकी पांतों के बाहर सेना और जनता के बीच, सेना और सरकारी संगठनों के बीच, तथा हमारी सेना और मित्र-सेनाओं के बीच एकता कायम की गई है। यह निहायत जरूरी है कि इस एकता को नुकसान पहुंचाने वाली हर बाधा को दूर कर दिया जाए।

इस उद्देश्य से प्रेरित होकर, इस सेना ने दुश्मन के अफसरों और सिपाहियों को अपने पक्ष में करने तथा युद्धबन्दियों के साथ बरताव करने के बारे में एक सही नीति अपनाई है। बिना किसी अपवाद के, दुश्मन की सेनाओं के उन तमाम सदस्यों का, जो आत्मसमर्पण कर देते हैं, हमारे पक्ष में आ जाते हैं, अथवा हथियार डालने के बाद मुश्तरका दुश्मन के खिलाफ लड़ने की इच्छा जाहिर करते हैं, स्वागत किया जाता है और उन्हें उचित शिक्षा दी जाती है। किसी भी युद्धबन्दी की जान लेना, उसके साथ बदसलूकी करना अथवा उसका अपमान करना वर्जित है।

इस उद्देश्य से प्रेरित होकर, इस सेना ने रणनीति और कार्य-

नीति की एक ऐसी व्यवस्था कायम की है जो लोकयुद्ध के लिए जरूरी है। यह सेना बदलती हुई ठोस परिस्थितियों के अनुरूप लचीला छापामार युद्ध चलाने में कुशल है, तथा चलायमान लड़ाई करने में भी कुशल है।

इस उद्देश्य से प्रेरित होकर, इस सेना ने राजनीतिक कार्य की एक ऐसी व्यवस्था बनाई है जो लोकयुद्ध के लिए जरूरी है और जिसका मकसद है अपनी पांतों के अन्दर एकता बढ़ाना, मित्र-सेनाओं तथा जनता के साथ एकता बढ़ाना और शत्रु-सेनाओं को छिन्न-भिन्न कर देना तथा लड़ाई में विजय प्राप्त करने की गारन्टी कर देना।

इस उद्देश्य से प्रेरित होकर, यह समूची सेना, छापामार युद्ध की परिस्थिति में, लड़ाइयों के बीच के अवकाश और प्रशिक्षण-काल के बीच के अवकाश का उपयोग करके अनाज और दैनिक आवश्यकता की अन्य चीजों का उत्पादन कर सकती है और वास्तव में वह ऐसा करती भी रही है, तथा इस प्रकार पूर्ण रूप से, आधे रूप से अथवा आंशिक रूप से आत्मनिर्भर बन गई है, जिससे आर्थिक कठिनाइयों पर काबू पाया जा सके, सेना के रहन-सहन की स्थिति में सुधार किया जा सके तथा जनता का बोझ हल्का किया जा सके। विभिन्न फौजी आधार-क्षेत्रों में हर सम्भावना का फायदा उठाकर अनेक लघु युद्ध-उद्योग कायम किए गए हैं।

यही नहीं, यह सेना एक शक्तिशाली सेना है क्योंकि इसके पास जनता की आत्मरक्षा कोर और मिलिशिया – जन-समुदाय के व्यापक सशस्त्र संगठन – मौजूद हैं, जो इसके साथ तालमेल कायम करते हुए लड़ते हैं। चीन के मुक्त क्षेत्रों में सभी नौजवान और

प्रौढ़, चाहे स्त्री हों या पुरुष, स्वेच्छापूर्वक व जनवादी आधार पर तथा अपना उत्पादन-कार्य छोड़े बिना, जनता की जापान-विरोधी आत्मरक्षा कोर में संगठित हो गए हैं। आत्मरक्षा कोर के बेहतरीन सदस्यों को, सिर्फ उन लोगों को छोड़कर जो सेना या छापामार दस्तों में शामिल हो जाते हैं, मिलिशिया में सम्मिलित कर लिया जाता है। जन-समुदाय की इन सशस्त्र शक्तियों के सहयोग के बिना शत्रु को पराजित करना असम्भव है।

अन्त में, यह सेना एक शक्तिशाली सेना है क्योंकि यह दो भागों में विभाजित है – मुख्य फौजी फारमेशनों और प्रादेशिक फौजी फारमेशनों में। मुख्य फौजी फारमेशनें जरूरत पड़ने पर किसी भी प्रदेश में कार्यवाही कर सकती हैं जबकि प्रादेशिक फौजी फारमेशनों का कार्य मिलिशिया और आत्मरक्षा कोर के साथ सहयोग करके अपने प्रदेश की रक्षा करने और वहां के दुश्मन पर हमला करने पर ही केन्द्रित है। इस कार्य-विभाजन को जनता का हार्दिक समर्थन प्राप्त हो चुका है। इस सही कार्य-विभाजन के अभाव में – मिसाल के तौर पर अगर केवल मुख्य फौजी फारमेशन की भूमिका पर ही ध्यान दिया जाए और प्रादेशिक फौजी फारमेशन को नजरअन्दाज कर दिया जाए – चीन के मुक्त क्षेत्रों की परिस्थितियों में दुश्मन को परास्त करना फिर भी असम्भव ही होगा। प्रादेशिक फौजी फारमेशन के अन्तर्गत अनेक सशस्त्र कार्य-दल संगठित किए गए हैं जिन्हें अच्छी तरह प्रशिक्षित किया जा चुका है तथा इसलिए वे फौजी कार्य, राजनीतिक कार्य और जन-कार्य करने की ज्यादा क्षमता रखते हैं; वे शत्रु के पृष्ठभाग के बिलकुल पिछले इलाकों में पैठ जाते हैं, दुश्मन पर प्रहार करते हैं तथा जन-समुदाय को जापान-

विरोधी संघर्ष के लिए जागृत करते हैं, और इस प्रकार वे विभिन्न मुक्त क्षेत्रों के सामने के मोर्चों पर की जाने वाली फौजी कार्यवाहियों के साथ तालमेल स्थापित करके उन्हें सम्बल प्रदान करते हैं। इन सभी कार्यों में उन्होंने भारी सफलता प्राप्त की है।

चीन के मुक्त क्षेत्रों में जनवादी सरकारों के नेतृत्व में समूची जापान-विरोधी जनता का आवाहन किया जाता है कि वह मजदूरों, किसानों, नौजवानों व महिलाओं के संगठनों तथा सांस्कृतिक, व्यावसायिक व अन्य संगठनों में शामिल हो जाए और सशस्त्र सैन्य-शक्तियों की सहायता करने के विभिन्न कार्यों में जोरशोर से जुट जाए। ये कार्य सिर्फ यहीं तक सीमित नहीं हैं कि जनता को फौज में शामिल होने के लिए गोलबन्द किया जाए, फौज को अनाज पहुंचाया जाए, जापान-विरोधी सैनिकों के परिवारों को तरजीह दी जाए तथा फौजों की भौतिक जरूरतें पूरी करने में उनकी मदद की जाए, बल्कि उनमें छापामार दस्तों, मिलिशिया और आत्मरक्षा कोर को गोलबन्द करने का कार्य भी शामिल है, ताकि दुश्मन पर जबरदस्त वार किए जा सकें, उसके खिलाफ विस्फोटक से विध्वंस करने की कार्यवाहियां की जा सकें, उसके बारे में टोह ली जा सके, गद्दारों व जासूसों का सफाया किया जा सके, घायलों को ले जाने और उनकी हिफाजत करने का इन्तजाम किया जा सके तथा फौजी कार्यवाहियों में प्रत्यक्ष रूप से हिस्सा लिया जा सके। साथ ही, सभी मुक्त क्षेत्रों की जनता विभिन्न प्रकार के राजनीतिक, आर्थिक, सांस्कृतिक और स्वास्थ्य सम्बन्धी निर्माण-कार्यों को बड़े उत्साह के साथ अपने हाथ में ले रही है। इस सम्बन्ध में सबसे महत्वपूर्ण बात यह है कि सारी जनता को अनाज और

दैनिक आवश्यकता की चीजों के उत्पादन के लिए गोलबन्द कर लिया जाए तथा इस बात की गारन्टी कर दी जाए कि सभी सरकारी संगठन व विद्यालय, खास हालतों वाले संगठनों व विद्यालयों को छोड़कर, खाली वक्त में अपनी जरूरत के सामान का खुद उत्पादन करने में जुट जाएं, ताकि जनता और सेना द्वारा आत्मनिर्भरता के लिए किए जाने वाले उत्पादन आन्दोलन को मदद मिले तथा इस प्रकार जापानी-आक्रमण-विरोधी दीर्घकालीन युद्ध जारी रखने के लिए उत्पादन में भारी उभार लाया जा सके। चीन के मुक्त क्षेत्रों में दुश्मन ने भारी नुकसान पहुंचाया है तथा बाढ़-सूखे और हानिकारक कीड़े-मकोड़ों का बोलबाला रहा है। लेकिन फिर भी मुक्त क्षेत्रों की जनवादी सरकारों ने समूची जनता का नेतृत्व करते हुए संगठित रूप से इन कठिनाइयों पर विजय पा ली है या वे इन्हें दूर कर रही हैं, तथा टिड्डियों का नाश करने, बाढ़-नियंत्रण और अकाल-निवारण के महान जनव्यापी आन्दोलनों में अभूतपूर्व परिणाम हासिल किए गए हैं, और इस प्रकार जापानी-आक्रमण-विरोधी युद्ध में दीर्घकाल तक जमे रहना सम्भव हो सका है। संक्षेप में, सब कुछ मोर्चे के लिए, सब कुछ जापानी आक्रमणकारियों की शिकस्त और चीनी जनता की मुक्ति के लिए — यह चीन के मुक्त क्षेत्रों की समूची सेना और समूची जनता के लिए एक आम नारा है, एक आम नीति है।

ऐसा होता है एक सच्चा लोकयुद्ध। सिर्फ ऐसा ही लोकयुद्ध चलाकर हम अपने राष्ट्रीय शत्रु को परास्त कर सकते हैं। क्वोमिन्ताङ हार इसलिए खा रही है क्योंकि वह लोकयुद्ध का भरपूर विरोध करती है।

जहां एक बार चीन के मुक्त क्षेत्रों की सेना आधुनिक हथियारों से लैस हो गई, तो वह और अधिक शक्तिशाली बन जाएगी तथा जापानी आक्रमणकारियों को अन्तिम रूप से परास्त कर सकेगी।

दो युद्ध-मोर्चे

चीन के जापानी-आक्रमण-विरोधी युद्ध में शुरू से ही दो मोर्चे रहे हैं – क्वोमिन्ताङ का मोर्चा और मुक्त क्षेत्रों का मोर्चा।

अक्तूबर १६३८ में ऊहान के पतन के बाद, जापानी हमलावरों ने क्वोमिन्ताङ के मोर्चे के खिलाफ अपना रणनीतिक आक्रमण बन्द कर दिया तथा कदम-ब-कदम अपनी मुख्य सैन्य-शक्तियों को मुक्त क्षेत्रों के मोर्चे पर स्थानान्तरित कर दिया; उसी समय, क्वोमिन्ताङ सरकार की पराजयवादी भावना का फायदा उठाकर, उन्होंने यह ऐलान किया कि वे क्वोमिन्ताङ सरकार के साथ सुलह-शान्ति कायम करने को तैयार हैं, तथा चीनी राष्ट्र को धोखा देने वाली नीति अपनाकर उन्होंने वतनफरोश वाङ चिङ-वेइ को छुङ-किङ छोड़ने और नानकिङ में एक कठपुतली सरकार कायम करने का लालच दिया। तब से क्वोमिन्ताङ सरकार ने अपनी नीति बदलनी शुरू कर दी और जापान का प्रतिरोध करने के बदले कदम-ब-कदम कम्युनिस्ट पार्टी और जनता का विरोध करने पर जोर दिया। यह परिवर्तन सबसे पहले फौजी मामलों में दिखाई दिया। अपनी खुद की फौजी शक्ति को सुरक्षित रखने के लिए क्वोमिन्ताङ सरकार ने जापान के प्रति निष्क्रिय प्रतिरोध की नीति अपनाई; जापानी हमलावरों को मुक्त क्षेत्रों पर जोरदार आक्रमण करने की खुली

छूट देकर उसने युद्ध का भारी बोझ मुक्त क्षेत्रों पर डाल दिया और खुद "पहाड़ पर बैठकर बाघों के लड़ने का तमाशा देखती रही"।

१६३६ में क्वोमिन्ताङ सरकार ने "दुश्मन पार्टियों की कार्य-वाहियों की रोकथाम करने के उपाय" नामक प्रतिक्रियावादी उपाय अपनाए तथा जनता और सभी जापान-विरोधी पार्टियों को उन तमाम अधिकारों से पूरी तरह वंचित कर दिया जिन्हें उन्होंने प्रतिरोध-युद्ध के आरम्भिक काल में प्राप्त किया था। तब से, क्वोमिन्ताङ क्षेत्रों में सभी जनवादी पार्टियों, तथा सबसे पहले और मुख्य रूप से चीनी कम्युनिस्ट पार्टी को क्वोमिन्ताङ सरकार ने भूमिगत होने के लिए मजबूर कर दिया। इन क्षेत्रों के हर प्रान्त में जेलखाने और नजरबन्दी कैम्प कम्युनिस्टों, नौजवान देशभक्तों और जनवाद के लिए लड़ने वाले अन्य योद्धाओं से भर गए हैं। १६३६ से १६४३ के शरद तक पांच वर्ष की अवधि में, क्वोमिन्ताङ सरकार ने राष्ट्रीय एकता में फूट डालने के लिए तीन बड़े पैमाने के "कम्युनिस्ट-विरोधी हमले"[१] किए तथा इस प्रकार गृहयुद्ध का गम्भीर खतरा पैदा कर दिया। इसी अवधि में नई चौथी सेना को "भंग करने" का आदेश जारी किया गया तथा दक्षिणी आनह्वेइ में उसके ६ हजार से ज्यादा सैनिकों को नेस्तनाबूद कर दिया गया – यह एक ऐसी घटना थी जिसने सारी दुनिया को चौंका दिया। इस घड़ी तक भी क्वोमिन्ताङ फौजों द्वारा मुक्त क्षेत्रों की सैन्य-शक्तियों पर किए जाने वाले हमले बन्द नहीं हुए, और न इस बात के आसार ही नजर आ रहे हैं कि वे बन्द हो जाएंगे। साथ ही, क्वोमिन्ताङ प्रतिक्रियावादी हर तरह के लांछन लगा रहे हैं और हर किस्म की गालियों की बौछार कर रहे हैं। ये वही प्रतिक्रियावादी हैं जिन्होंने

"गद्दार पार्टी", "गद्दार सेना", "गद्दार क्षेत्र" तथा "प्रतिरोध-युद्ध में तोड़फोड़ करने और राज्य के लिए खतरा पैदा करने" जैसे लेबिल लगाकर और झूठे कथनों को गढ़कर कम्युनिस्ट पार्टी, आठवीं राह सेना और नई चौथी सेना तथा मुक्त क्षेत्रों पर कीचड़ उछालने की कोशिश की है। इस संकट का सामना करने के लिए, चीनी कम्युनिस्ट पार्टी की केन्द्रीय कमेटी ने ७ जुलाई १९३९ को एक घोषणा-पत्र जारी किया जिसमें ये नारे पेश किए गए: "प्रतिरोध-युद्ध पर डटे रहो और आत्मसमर्पण का विरोध करो! एकता पर डटे रहो और फूट का विरोध करो! प्रगति पर डटे रहो और प्रतिगमन का विरोध करो!" इन पांच वर्षों में, हमारी पार्टी ने इन सामयिक नारों पर अमल करते हुए तीन प्रतिक्रियावादी और जन-विरोधी "कम्युनिस्ट-विरोधी हमलों" को पूरी ताकत से पीछे ढकेल दिया तथा हर बार संकट को पार किया।

इन वर्षों में, क्वोमिन्ताङ के मोर्चे पर वास्तव में कोई गम्भीर लड़ाई नहीं हुई। जापानी हमलावरों ने अपनी तलवार की धार का निशाना मुख्य रूप से मुक्त क्षेत्रों को ही बनाया। १९४३ तक, मुक्त क्षेत्रों की सेना व जनता ने ६४ प्रतिशत जापानी हमलावर सैन्य-शक्ति से और ९५ प्रतिशत कठपुतली सैनिकों से लोहा लिया, जबकि क्वोमिन्ताङ के मोर्चे ने सिर्फ ३६ प्रतिशत जापानी हमलावर सैन्य-शक्ति का और ५ प्रतिशत कठपुतली सैनिकों का सामना किया।

१९४४ में, जापानी आक्रमणकारियों ने चीन में उत्तर से दक्षिण जाने वाली मुख्य रेलवे को सीधे यातायात के लिए जबरदस्ती खोल देने के लिए अपनी फौजी कार्यवाही की; डरी-सहमी हुई क्वो-

मिन्ताङ फौजें प्रतिरोध करने में बिलकुल असमर्थ रहीं। कुछ ही महीनों में हनान, हुनान, क्वाङशी और क्वाङतुङ प्रान्तों के विस्तृत क्षेत्र दुश्मन के कब्जे में चले गए। तब कहीं जाकर दोनों मोर्चों पर तैनात दुश्मन के सैनिकों के अनुपात में कुछ परिवर्तन हुआ। फिर भी, यह रिपोर्ट पेश करने के समय तक चीन में जापानी हमलावर सेना की कुल ४० डिवीजनों में से, जिनमें ५,८०,००० जापानी सैनिक हैं (इनमें उत्तर-पूर्व के तीन प्रान्तों में स्थित जापानी सैनिक शामिल नहीं हैं), २२.५ डिवीजनें, जिनमें ३,२०,००० सैनिक अथवा कुल सैन्य-शक्ति का ५६ प्रतिशत शामिल हैं, मुक्त क्षेत्रों के मोर्चे पर तैनात हैं, तथा ज्यादा से ज्यादा १७.५ डिवीजनें, जिनमें २,६०,००० सैनिक अथवा कुल सैन्य-शक्ति का केवल ४४ प्रतिशत शामिल हैं, क्वोमिन्ताङ के मोर्चे पर तैनात हैं। जहां तक दोनों मोर्चों पर तैनात कठपुतली सैनिकों का सवाल है, उनके अनुपात में कोई भी तब्दीली नहीं हुई है।

यह भी बता देना चाहिए कि कठपुतली फौजों में, जिनके सैनिकों की तादाद ८,००,००० से ज्यादा है (नियमित और स्थानीय दोनों प्रकार की सैन्य-शक्ति को मिलाकर), मुख्य रूप से वे यूनिटें शामिल हैं जो क्वोमिन्ताङ कमाण्डरों की अधीनता में आत्मसमर्पण कर चुकी हैं अथवा वे यूनिटें हैं जिन्हें क्वोमिन्ताङ अफसरों ने आत्मसमर्पण के बाद संगठित किया है। क्वोमिन्ताङ प्रतिक्रियावादियों ने इन कठपुतली फौजों को पहले से ही एक देशद्रोहपूर्ण झूठे सिद्धान्त, यानी "टेढ़ेमेढ़े रास्ते से राष्ट्र को बचाने" के सिद्धान्त, से लैस कर दिया है तथा उनके आत्मसमर्पण के बाद से उन्हें नैतिक और संगठनात्मक समर्थन प्रदान किया है और उन्हें हिदायत दी है कि वे

जापानी आक्रमणकारियों के साथ तालमेल कायम करके चीनी जनता के मुक्त क्षेत्रों पर आक्रमण करें। इसके अलावा, इन प्रतिक्रियावादियों ने शेनशी-कानसू-निङश्या सीमान्त क्षेत्र और अन्य मुक्त क्षेत्रों की नाकेबन्दी करने और उन पर आक्रमण करने के लिए ७,९७,००० सैनिकों वाली भारी सैन्य-शक्ति भी बटोर ली है। क्वोमिन्ताङ सरकार की समाचारों को दबाने की नीति की वजह से इस गम्भीर परिस्थिति की जानकारी बहुत से चीनी और विदेशी लोगों को नहीं हो पाती।

चीन के मुक्त क्षेत्र

चीन के मुक्त क्षेत्रों की, जिनका नेतृत्व कम्युनिस्ट पार्टी करती है, कुल आबादी अब ९,५५,००,००० हो गई है। उनका इलाका उत्तर में भीतरी मंगोलिया से दक्षिण में हाएनान द्वीप तक फैला हुआ है; जहां भी दुश्मन जाता है लगभग सभी जगह उसे आठवीं राह सेना, नई चौथी सेना अथवा जनता की किसी अन्य सैन्य-शक्ति की कार्यवाहियों का सामना करना पड़ता है। इस विशाल मुक्त प्रदेश में १९ प्रमुख मुक्त क्षेत्र हैं, जिनमें ल्याओनिङ, जेहोल, छाहाड़, स्वेय्वान, शेनशी, कानसू, निङश्या, शानशी, हपे, हनान, शानतुङ, च्याङसू, चच्याङ, आनह्वेइ, च्याङशी, हुपे, हुनान, क्वाङतुङ और फूच्येन प्रान्तों के बड़े या छोटे हिस्से शामिल हैं। येनान इनका केन्द्र है जहां से इन सभी मुक्त क्षेत्रों का मार्गदर्शन किया जाता है। शेनशी-कानसू-निङश्या सीमान्त क्षेत्र, जो पीली नदी के पश्चिम में स्थित है और जहां की आबादी सिर्फ १५,००,००० है, चीन के

इस विशाल मुक्त प्रदेश के १९ क्षेत्रों में से एक है तथा आबादी की दृष्टि से पूर्वी चच्याङ प्रान्त के एक मुक्त क्षेत्र और हाएनान द्वीप के एक अन्य मुक्त क्षेत्र को छोड़कर वह सबसे छोटा है। इस बात से अनभिज्ञ कुछ लोग यह समझते हैं कि चीन के मुक्त प्रदेश में मुख्य रूप से शेनशी-कानसू-निङश्या सीमान्त क्षेत्र ही है। यह गलत धारणा क्वोमिन्ताङ सरकार की नाकेबन्दी की नीति के कारण उत्पन्न होती है। हर मुक्त क्षेत्र में जापान-विरोधी राष्ट्रीय संयुक्त मोर्चे की सभी आवश्यक नीतियों पर अमल किया जा चुका है तथा जनता द्वारा चुनी गई सरकारों, यानी स्थानीय मिलीजुली सरकारों की स्थापना की जा चुकी है अथवा की जा रही है, जिनमें कम्युनिस्ट तथा अन्य जापान-विरोधी पार्टियों के प्रतिनिधि और किसी भी पार्टी से सम्बन्ध न रखने वाले व्यक्तियों के प्रतिनिधि आपस में सहयोग कर रहे हैं। मुक्त क्षेत्रों में जनता की समूची शक्ति को गोलबन्द किया जा चुका है। नतीजे के तौर पर, दुश्मन के भारी दबाव, क्वोमिन्ताङ की फौजी नाकेबन्दी और उसके हमलों तथा बाहर की मदद के पूर्ण अभाव के बावजूद, चीन के मुक्त क्षेत्र मजबूती से कायम रह सके हैं तथा दुश्मन के कब्जे में मौजूद क्षेत्रों को कम करते हुए और अपने क्षेत्रों का विस्तार करते हुए लगातार बढ़ते रहे हैं; उन्होंने एक जनवादी चीन का आदर्श उपस्थित कर दिया है तथा वे संश्रयकारी देशों के साथ फौजी तालमेल कायम करते हुए जापानी आक्रमणकारियों को बाहर खदेड़ने और चीनी जनता को मुक्त कराने वाली मुख्य शक्ति बन गए हैं। चीन के मुक्त क्षेत्रों की सशस्त्र सेनाएं – आठवीं राह सेना, नई चौथी सेना और अन्य जन-सेनाएं न सिर्फ जापान का मुकाबला करने में बहादुरी की मिसाल कायम

कर चुकी हैं, बल्कि जापान-विरोधी राष्ट्रीय संयुक्त मोर्चे की तमाम जनवादी नीतियों को कार्यान्वित करने में भी मिसाल कायम कर चुकी हैं। चीनी कम्युनिस्ट पार्टी की केन्द्रीय कमेटी द्वारा २२ सितम्बर १९३७ को जारी किया गया घोषणापत्र, जिसमें यह स्वीकार किया गया कि "डा० सुन यात-सेन के जिन तीन जन-सिद्धान्तों की आज चीन को जरूरत है, उन्हें पूर्ण रूप से कार्यान्वित करने के लिए संघर्ष करने को हमारी पार्टी तैयार है", चीन के मुक्त क्षेत्रों में पूरी तरह अमल में लाया जा चुका है।

क्वोमिन्ताङ क्षेत्र

अपने तानाशाही शासन को जारी रखते हुए, क्वोमिन्ताङ के मुख्य शासक गुट ने जापान का निष्क्रिय प्रतिरोध करने की नीति और जनता का विरोध करने की घरेलू नीति अपनाई है। इसके परिणामस्वरूप, उसकी सशस्त्र सेनाओं की संख्या उनकी मूल संख्या के मुकाबले घटकर आधी से भी कम रह गई है तथा ज्यादातर सेनाएं अपनी लड़ने की क्षमता खो बैठी हैं; इस गुट और व्यापक जन-समुदाय के बीच गहरी दरार पड़ गई है तथा व्यापक गरीबी, बढ़ते असन्तोष और व्यापक विद्रोह का गम्भीर संकट पैदा हो गया है; न सिर्फ प्रतिरोध-युद्ध में इसकी भूमिका बेहद कम हो गई है, बल्कि यह चीनी जनता की समूची जापान-विरोधी शक्तियों को गोलबन्द करने और उनके बीच एकता कायम करने के रास्ते का एक रोड़ा भी बन गया है।

आखिर क्वोमिन्ताङ के मुख्य शासक गुट के नेतृत्व में इस प्रकार

की गम्भीर परिस्थिति क्यों पैदा हो गई है? यह इसलिए पैदा हुई है क्योंकि यह गुट चीन के बड़े-बड़े जमींदारों, बड़े-बड़े बैंक-मालिकों और बड़े-बड़े दलाल-पूंजीपतियों के हितों का प्रतिनिधित्व करता है। इस प्रतिक्रियावादी तबके के मुट्ठीभर लोग क्वोमिन्ताङ सरकार के अधीन सभी महत्वपूर्ण फौजी, राजनीतिक, आर्थिक और सांस्कृतिक संगठनों पर अपना इजारा कायम किए हुए हैं। वे लोग अपने हितों की रक्षा करने के कार्य को प्रथम स्थान देते हैं और जापान का प्रतिरोध करने के कार्य को गौण स्थान। कहते तो वे लोग भी हैं कि "राष्ट्र सर्वोपरि है", लेकिन उनकी करनी राष्ट्र के भारी बहुसंख्यक जन-समुदाय की मांगों से मेल नहीं खाती। कहते तो वे लोग भी हैं कि "राज्य सर्वोपरि है", लेकिन राज्य से उनका तात्पर्य होता है बड़े-बड़े जमींदारों, बड़े-बड़े बैंक-मालिकों और बड़े-बड़े दलाल-पूंजीपतियों की सामन्ती-फासिस्ट तानाशाही, न कि जनता का जन-वादी राज्य। इसलिए वे लोग जनता के उठ खड़े होने से डरते हैं, जनवादी आन्दोलन से डरते हैं, तथा जापान का प्रतिरोध करने के लिए सारी जनता को पूर्ण रूप से गोलबन्द किए जाने से डरते हैं। यह है जापान का निष्क्रिय प्रतिरोध करने की उनकी नीति तथा जनता, जनवाद और कम्युनिस्ट पार्टी का विरोध करने की उनकी प्रतिक्रिया-वादी घरेलू नीति का मूल कारण। वे लोग हर मामले में दुरंगी नीति अपनाते हैं। मिसाल के लिए, एक तरफ तो वे जापान का प्रतिरोध कर रहे हैं और दूसरी तरफ निष्क्रियता की युद्ध नीति पर अमल कर रहे हैं, तथा इसके अलावा वे जापान द्वारा लगातार आत्मसमर्पण के लिए दिए जाने वाले प्रलोभनों का शिकार बनते जा रहे हैं। वे लोग मुंह से तो चीन की अर्थव्यवस्था का विकास करने की दुहाई

देते हैं, लेकिन वास्तव में अपनी खुद की नौकरशाह-पूंजी का, यानी बड़े-बड़े जमींदारों, बड़े-बड़े बैंक-मालिकों और बड़े-बड़े दलाल-पूंजीपतियों की पूंजी का निर्माण करते हैं, तथा किसानों, मजदूरों, निम्न-पूंजीपतियों और गैर-इजारेदार पूंजीपतियों का क्रूर उत्पीड़न करते हुए चीन की अर्थव्यवस्था के जीवन-स्रोतों पर अपना इजारा कायम किए हुए हैं। वे लोग "जनवाद" पर अमल करने तथा "राजसत्ता जनता को वापस लौटा देने" की बातें तो बघारते हैं, लेकिन फिर भी जनता के जनवादी आन्दोलन का निर्दयतापूर्वक दमन करते हैं तथा हल्के से हल्का जनवादी सुधार करने से इनकार करते हैं। वे लोग कहते तो हैं कि "कम्युनिस्ट समस्या एक राजनीतिक समस्या है और इसे राजनीतिक ढंग से ही हल किया जाना चाहिए", लेकिन फिर भी चीनी कम्युनिस्ट पार्टी को "अव्वल दर्जे का दुश्मन" समझते हुए बड़ी निर्दयता से उसका फौजी, राजनीतिक और आर्थिक दमन करते हैं और जापानी आक्रमणकारियों को केवल "दूसरे दर्जे का दुश्मन" समझते हैं, तथा गृहयुद्ध छेड़ने की दिन-रात तैयारी कर रहे हैं और कम्युनिस्ट पार्टी को नेस्तनाबूद करने की साजिशें रचने में व्यस्त रहते हैं। वे कहते तो यह हैं कि वे एक "आधुनिक राज्य" कायम करेंगे, लेकिन फिर भी बड़े-बड़े जमींदारों, बड़े-बड़े बैंक-मालिकों और बड़े-बड़े दलाल-पूंजीपतियों की सामन्ती-फासिस्ट तानाशाही को कायम रखने की जीतोड़ कोशिश करते हैं। हालांकि उन्होंने सोवियत संघ के साथ औपचारिक राजनयिक सम्बन्ध स्थापित कर रखे हैं, लेकिन वास्तव में वे सोवियत संघ के प्रति शत्रुता रखते हैं। वे लोग अमरीकी पृथकतावादियों के साथ मिलकर "योरप से पहले एशिया" का राग अलापते हैं ताकि फासिस्ट-

वादी जर्मनी की जिन्दगी और बढ़ाई जा सके, जिसका तात्पर्य है हर जगह के फासिस्टों की जिन्दगी को बढ़ाना जिसमें चीनी जनता पर उनके अपने फासिस्ट शासन की जिन्दगी को बढ़ाना भी शामिल है; लेकिन इसके साथ ही वे लोग राजनयिक दांवपेंच भी खेलते हैं और फासिस्ट-विरोधी सूरमा होने का झूठा स्वांग रचते हैं। अगर आप उनकी इन परस्पर विरोधी दुरंगी नीतियों के मूल में जाएं, तो आपको मालूम हो जाएगा कि वे सभी बड़े-बड़े जमींदारों, बड़े-बड़े बैंक-मालिकों और बड़े-बड़े दलाल-पूंजीपतियों के सामाजिक तबके में पैदा हुई हैं।

यह सब होने पर भी, क्वोमिन्ताङ कोई समरूप राजनीतिक पार्टी नहीं है। हालांकि क्वोमिन्ताङ पर उस प्रतिक्रियावादी गुट का नियंत्रण व नेतृत्व मौजूद है जो बड़े-बड़े जमींदारों, बड़े-बड़े बैंक-मालिकों और बड़े-बड़े दलाल-पूंजीपतियों के तबके का प्रतिनिधित्व करता है, फिर भी उसे पूरी तरह इस गुट के साथ अभिन्न रूप से जुड़ा हुआ नहीं समझना चाहिए। कुछ क्वोमिन्ताङ नेता इस गुट से ताल्लुक नहीं रखते, यहां तक कि इस गुट के द्वारा उन्हें दुतकारा जाता है, अलग धकेल दिया जाता है अथवा उन पर प्रहार किया जाता है। क्वोमिन्ताङ के बहुत से कार्यकर्ता और साधारण सदस्य तथा तीन जन-सिद्धान्त नौजवान संघ के अनेक सदस्य इस गुट के नेतृत्व से असन्तुष्ट हैं, यहां तक कि कुछ लोग इसका विरोध भी करते हैं। यही बात उन तमाम क्वोमिन्ताङ सेनाओं, सरकारी संगठनों और आर्थिक व सांस्कृतिक प्रतिष्ठानों पर भी लागू होती है जिन पर इस प्रतिक्रियावादी गुट का नियंत्रण है। इन सभी के अन्दर बहुत से जनवादी तत्व मौजूद हैं। इसके अलावा, यह प्रतिक्रियावादी गुट भी, जो

अनेक प्रतिद्वन्द्वी ग्रुपों में बंटा हुआ है, कोई सुसंगठित गुट नहीं है। क्वोमिन्ताङ को प्रतिक्रियावादियों का समरूप संगठन समझना निस्सन्देह गलत होगा।

एक अन्तर

चीनी जनता मुक्त क्षेत्रों और क्वोमिन्ताङ क्षेत्रों के स्पष्ट अन्तर को समझ चुकी है।

क्या तथ्य काफी स्पष्ट नहीं हैं? हमारे सामने दो कार्यदिशाएं मौजूद हैं, एक लोकयुद्ध की कार्यदिशा तथा एक ऐसे निष्क्रिय प्रतिरोध की कार्यदिशा जो लोकयुद्ध के खिलाफ है; इनमें से एक ऐसी है जो चीन के मुक्त क्षेत्रों की कठिन परिस्थितियों में और बाहरी सहायता का पूर्ण अभाव होने के बावजूद भी, विजय की ओर ले जाती है, तथा दूसरी ऐसी है जो क्वोमिन्ताङ क्षेत्रों की अत्यन्त अनुकूल परिस्थितियों में और विदेशी सहायता उपलब्ध होने के बावजूद भी पराजय की ओर ले जाती है।

क्वोमिन्ताङ सरकार अपनी असफलताओं का कारण हथियारों की कमी बताती है। फिर भी उससे पूछा जा सकता है, आखिर इन दोनों में से किसके पास हथियारों की कमी है, क्वोमिन्ताङ फौजों के पास अथवा मुक्त क्षेत्रों की फौजों के पास? चीन की सभी फौजों में मुक्त क्षेत्रों की फौजों के पास हथियारों की सबसे ज्यादा कमी है, तथा उनके पास केवल वे हथियार मौजूद हैं जिन्हें उन्होंने दुश्मन से छीना है अथवा अत्यन्त कठिन परिस्थितियों में खुद बनाया है।

क्या यह सच नहीं है कि क्वोमिन्ताङ की केन्द्रीय सरकार की प्रत्यक्ष अधीनता में मौजूद फौजें प्रान्तीय फौजों के मुकाबले कहीं ज्यादा बेहतर हथियारों से लैस हैं? फिर भी युद्ध-क्षमता में अधिकांश केन्द्रीय फौजें प्रान्तीय फौजों के मुकाबले कहीं अधिक घटिया हैं।

क्वोमिन्ताङ के पास जनशक्ति का विशाल भण्डार मौजूद है, फिर भी फौजी भरती के बारे में उसकी गलत नीति के कारण जनशक्ति की क्षतिपूर्ति करना बहुत मुश्किल हो जाता है। दुश्मन द्वारा एक दूसरे से जुदा किए जाने और निरन्तर युद्ध में जुटे रहने पर भी चीन के मुक्त क्षेत्र असीमित जनशक्ति को गोलबन्द करने में समर्थ रहे हैं, क्योंकि मिलिशिया और आत्मरक्षा कोर व्यवस्था, जो जनता की आवश्यकताओं के बिलकुल अनुरूप है, हर जगह लागू की जाती है, तथा क्योंकि जनशक्ति के दुरुपयोग और अनुचित व्यय से बचा जाता है।

हालांकि क्वोमिन्ताङ के नियंत्रण में वे विशाल क्षेत्र मौजूद हैं जिनमें अनाज की बहुतायत है तथा जनता उसे ७ करोड़ से १० करोड़ तान अनाज प्रतिवर्ष सप्लाई करती है, फिर भी उसकी सेना में हमेशा खुराक की कमी बनी रहती है और उसके सैनिक दुबले-पतले रह जाते हैं, क्योंकि ज्यादातर अनाज को वे लोग हड़प जाते हैं जिनके हाथों से वह गुजरता है। लेकिन हालांकि चीन के अधिकांश ऐसे मुक्त क्षेत्रों को, जो दुश्मन के पृष्ठभाग में स्थित हैं, दुश्मन की "सब कुछ जला डालने, सबको मार डालने और सब कुछ लूट लेने" की नीति के परिणामस्वरूप तबाही का सामना करना पड़ा है, तथा हालांकि उत्तरी शेनशी जैसे कुछ क्षेत्र बहुत अनुपजाऊ हैं, फिर भी

हमने खुद अपने ही प्रयत्नों से कृषि उत्पादन बढ़ाकर अनाज की समस्या सफलतापूर्वक हल कर ली है।

क्वोमिन्ताङ क्षेत्र अत्यन्त गम्भीर आर्थिक संकट का सामना कर रहे हैं; अधिकांश उद्योग-धन्धे दिवालिया हो गए हैं, और कपड़े जैसी आवश्यक चीजें भी अमरीका से आयात की जाती हैं। लेकिन चीन के मुक्त क्षेत्रों में कपड़े और अन्य आवश्यक चीजों की अपनी जरूरतें उद्योग-धन्धों का विकास करके खुद ही पूरी की जाती हैं।

क्वोमिन्ताङ क्षेत्रों में मजदूर, किसान, दुकान-कर्मचारी, सरकारी कर्मचारी, बुद्धिजीवी और सांस्कृतिक कर्मचारी बेहद कंगाली की हालत में रहते हैं। मुक्त क्षेत्रों में सभी लोगों के लिए अनाज, कपड़ा और रोजगार मुहय्या किया गया है।

क्वोमिन्ताङ क्षेत्रों की एक खासियत यह है कि मुनाफाखोरी का मकसद पूरा करने के लिए राष्ट्रीय संकट का फायदा उठाकर वहां के अफसर लज्जा या शालीनता त्यागकर व्यापारी और पक्के भ्रष्टाचारी बन गए हैं। चीन के मुक्त क्षेत्रों की एक खासियत यह है कि वहां के कार्यकर्ता सादा जीवन और कठोर परिश्रम की मिसाल कायम करते हुए अपनी नियमित ड्यूटी के अलावा उत्पादन-कार्य में भी भाग लेते हैं; ईमानदारी की बेहद कद्र की जाती है और भ्रष्टाचार की सख्त मनाही है।

क्वोमिन्ताङ क्षेत्रों में जनता को कोई आजादी हासिल नहीं है। चीन के मुक्त क्षेत्रों में जनता को पूरी आजादी हासिल है।

क्वोमिन्ताङ शासकों के सामने मौजूद इन तमाम अनियमितताओं का दोषी आखिर किसे ठहराया जाए? क्या इनका दोषी किसी और को ठहराया जाए अथवा खुद उन्हीं को ठहराया जाए? क्या अन्य

देशों को दोषी ठहराया जाए कि उन्होंने क्वोमिन्ताङ को पर्याप्त सहायता नहीं दी, अथवा क्वोमिन्ताङ सरकार के तानाशाही शासन, भ्रष्टाचार और अयोग्यता को ही दोषी ठहराया जाए? क्या इसका उत्तर स्पष्ट नहीं है?

भला कौन "प्रतिरोध-युद्ध में तोड़फोड़ कर रहा है और राज्य के लिए खतरा पैदा कर रहा है"?

इस अकाट्य प्रमाण की रोशनी में क्या यह सही नहीं है कि खुद क्वोमिन्ताङ सरकार ही चीनी जनता के प्रतिरोध-युद्ध को तहस-नहस कर रही है और हमारे देश को खतरे में डाल रही है? पूरे दस वर्ष तक यह सरकार पूरी तरह गृहयुद्ध में जुटी रही तथा इसने राष्ट्रीय प्रतिरक्षा-कार्य को बिलकुल नजरअन्दाज करते हुए अपनी तलवार का निशाना जनता को बनाया, और प्रतिरोध न करने की अपनी नीति के जरिए उत्तर-पूर्व के चार प्रान्त भेंट कर दिए। जब जापानी आक्रमणकारियों ने लम्बी दीवार के दक्षिण में कूच किया, तो इसने घबराहट के साथ प्रतिरोध किया तथा फिर लूकओ-छ्याओ से दूर क्वेइचओ प्रान्त तक पीछे हट गई। फिर भी क्वो-मिन्ताङ यह कहती है कि "कम्युनिस्ट पार्टी प्रतिरोध-युद्ध में तोड़फोड़ कर रही है और राज्य के लिए खतरा पैदा कर रही है" (देखिए क्वोमिन्ताङ की केन्द्रीय कार्यकारिणी कमेटी के सितम्बर १९४३ में आयोजित ग्यारहवें पूर्ण अधिवेशन के प्रस्ताव)। इसका एकमात्र प्रमाण यह है कि कम्युनिस्ट पार्टी ने जनता के सभी हिस्सों के साथ एकता कायम करके मुक्त क्षेत्रों की स्थापना की है, जो बड़ी बहादुरी

के साथ जापान का प्रतिरोध कर रहे हैं। क्वोमिन्ताङ का तर्क चीनी जनता के तर्क से इतना भिन्न है कि बहुत सी समस्याओं के बारे में दोनों के एकराय होने में असफल होने पर हैरानी नहीं होनी चाहिए।

यहां दो सवाल हैं।

पहले, क्या वजह है कि क्वोमिन्ताङ सरकार ने हेलुङच्याङ प्रान्त से लूकओछ्याओ तक और लूकओछ्याओ से क्वेइचओ तक फैले हुए इतने विशाल और इतनी घनी आबादी वाले प्रदेश को छोड़ दिया है? क्या इसकी वजह क्वोमिन्ताङ सरकार द्वारा अपनाई गई पहले जापान का प्रतिरोध न करने की नीति और फिर निष्क्रिय प्रतिरोध करने की नीति, तथा जनता का विरोध करने की घरेलू नीति के सिवाय और कोई भी हो सकती है?

दूसरे, क्या वजह है कि चीन के मुक्त क्षेत्र जापानी व कठपुतली फौजों के नृशंसतापूर्ण और दीर्घकालीन हमलों को तहस-नहस कर सके हैं, राष्ट्रीय दुश्मन के चंगुल से इतने विशाल प्रदेश को वापस ले सके हैं तथा इतनी बड़ी आबादी को मुक्त करा सके हैं? क्या इसकी वजह हमारी सही कार्यदिशा, लोकयुद्ध की कार्यदिशा, के सिवाय और कोई भी हो सकती है?

"सरकारी फरमानों और फौजी आदेशों की अवज्ञा"

क्वोमिन्ताङ सरकार चीनी कम्युनिस्ट पार्टी पर बार-बार यह आरोप भी लगाती है कि वह "सरकारी फरमानों और फौजी आदेशों की अवज्ञा" करती है। इस सिलसिले में हम सिर्फ यह बता देना

चाहते हैं कि भाग्यवश चीनी कम्युनिस्टों ने, चीनी जनता की सामान्य बुद्धि से काम लेकर, उन "सरकारी फरमानों और फौजी आदेशों" का पालन नहीं किया जिनका पालन करने का मतलब था वास्तव में उन मुक्त क्षेत्रों को जापानी आक्रमणकारियों के हवाले कर देना जिन्हें चीनी जनता ने भारी मुश्किलें व मुसीबतें झेलकर फिर एक बार अपने कब्जे में किया है। उनके कुछ उदाहरण ये हैं: "दुश्मन पार्टियों की कार्यवाहियों की रोकथाम करने के उपाय", जिन्हें १९३९ में जारी किया गया, "नई चौथी सेना को भंग करने" के बारे में तथा उसे "पीली नदी के पुराने मार्ग के उत्तर में हटा लेने" के बारे में आदेश, जिन्हें १९४१ में जारी किया गया, "चीनी कम्युनिस्ट पार्टी को भंग करने" के बारे में आदेश, जिसे १९४३ में जारी किया गया, "एक निश्चित अवधि के अन्दर केवल दस डिवीजनों को छोड़कर बाकी तमाम फौजों को भंग कर देने" के बारे में हमें दिया गया आदेश, जिसे १९४४ में जारी किया गया, तथा वह प्रस्ताव, जिसे क्वोमिन्ताङ सरकार ने हाल ही में हमारे साथ हुई बातचीत में "एक रियायत" का नाम दिया, तथा जिसमें हमसे यह मांग की गई है कि हम अपनी सशस्त्र सेनाओं और स्थानीय सरकारों को क्वोमिन्ताङ के हवाले कर दें और इसके बदले में मिलीजुली सरकार की स्थापना किए बिना ही क्वोमिन्ताङ की तानाशाही सरकार में चन्द ओहदे हासिल कर लें। भाग्यवश हमने इस प्रकार की चीजों के सामने माथा नहीं टेका तथा इस तरह चीनी जनता के लिए एक ऐसा प्रदेश जिस पर दुश्मन का साया नहीं पड़ा, सुरक्षित रखा तथा एक बहादुर जापान-विरोधी सेना को सुरक्षित रखा। क्या चीनी जनता को इस प्रकार की "अवज्ञा" के लिए अपने आपको बधाई नहीं देनी

चाहिए ? क्या क्वोमिन्ताङ सरकार यह महसूस नहीं करती कि उसने हेलुङच्याङ से क्वेइचओ तक फैला विशाल आबाद इलाका, खुद अपनी ही फासिस्ट सरकार के फरमानों और पराजयवादी फौजी आदेशों के जरिए जापानी आक्रमणकारियों को सौंपकर काफी बड़ा जुर्म किया है ? जापानी आक्रमणकारी और प्रतिक्रियावादी इन "सरकारी फरमानों और फौजी आदेशों" का स्वागत करते हैं, लेकिन क्या कोई ईमानदार चीनी देशभक्त ऐसी चीजों का स्वागत कर सकता है ? जब तक एक मिलीजुली सरकार, केवल आकार में नहीं बल्कि वास्तव में, फासिस्ट तानाशाही नहीं बल्कि जनवादी सरकार, कायम नहीं की जाती, तब तक क्या यह सोचा जा सकता है कि चीनी जनता चीनी कम्युनिस्टों को इस बात की इजाजत दे देगी कि वे उन मुक्त क्षेत्रों को, जहां की जनता ने स्वतंत्रता प्राप्त कर ली है, तथा उन जन-सेनाओं को, जिन्होंने प्रतिरोध-युद्ध में असाधारण सेवा की है, वर्तमान क्वोमिन्ताङ सरकार के हवाले कर दें, जो एक पराजयवादी, फासिस्ट और तानाशाही सरकार है ? मुक्त क्षेत्रों और जन-सेनाओं के बिना क्या चीनी जनता का जापान-विरोधी कार्य ऐसा हो सकता था जैसा कि वह आज है ? और क्या कोई सम्भवत: यह सोच सकता है कि चीनी राष्ट्र का भविष्य क्या होगा ?

गृहयुद्ध का खतरा

क्वोमिन्ताङ का मुख्य शासक गुट आज भी तानाशाही और गृहयुद्ध की अपनी प्रतिक्रियावादी नीति पर अड़ा हुआ है। बहुत सी बातें यह संकेत करती हैं कि वह काफी समय से इस बात की तैयारियां करता आ रहा है और विशेषत: अब इस बात की तैयारियों को तेज कर रहा है कि ज्योंही एक संश्रयकारी देश की सेनाएं चीन की मुख्यभूमि के काफी बड़े हिस्से से जापानी आक्रमणकारियों का सफाया कर देंगी, तो वह गृहयुद्ध छेड़ देगा। उसे यह भी उम्मीद है कि कुछ संश्रयकारी देशों के जनरल चीन में वैसी ही भूमिका अदा करेंगे जैसी कि यूनान में बरतानवी जनरल स्कोबी[१] अदा कर रहा है। वह स्कोबी और प्रतिक्रियावादी यूनान सरकार द्वारा किए गए हत्याकाण्ड की प्रशंसा करता है। वह चीन को फिर एक बार १९२७-३७ की ही तरह गृहयुद्ध के भंवर में धकेल देना चाहता है। "राष्ट्रीय एसेम्बली बुलाने" और "राजनीतिक हल निकालने" के धूमावरण का सहारा लेकर वह गुप्त रूप से गृहयुद्ध की तैयारी कर रहा है। अगर हमारे देशबन्धुओं ने इस बात पर ध्यान न दिया, उसकी स्कीमों की कलई न खोली तथा उसकी तैयारियों को न रोका, तो एक दिन उन्हें सहसा गृहयुद्ध की तोपों की आवाज सुनाई देगी।

समझौता-वार्ता

अन्य जनवादी पार्टियों की अनुमति लेने के बाद, चीनी कम्युनिस्ट पार्टी ने जापानी आक्रमणकारियों को परास्त करने, एक नए चीन का निर्माण करने और गृहयुद्ध की रोकथाम करने के उद्देश्य से सितम्बर १९४४ में जन राजनीतिक परिषद में यह मांग पेश की कि क्वोमिन्ताङ की एकदलीय तानाशाही को फौरन खत्म कर दिया जाए तथा एक जनवादी मिलीजुली सरकार कायम की जाए।

निस्सन्देह यह एक सामयिक मांग थी, तथा कुछ ही महीनों के अरसे में इसे व्यापक जन-समुदाय का हार्दिक समर्थन प्राप्त हो गया है।

एकदलीय तानाशाही को खत्म करने, मिलीजुली सरकार कायम करने और आवश्यक जनवादी सुधार लागू करने के सवाल के बारे में हमने क्वोमिन्ताङ सरकार के साथ अनेक बार समझौता-वार्ता की, लेकिन उसने हमारे सभी प्रस्ताव ठुकरा दिए हैं। क्वोमिन्ताङ न सिर्फ एकदलीय तानाशाही को खत्म करने और मिलीजुली सरकार कायम करने को तैयार नहीं, बल्कि कोई भी अत्यावश्यक जनवादी सुधार लागू करने को तैयार नहीं है, जैसे खुफिया पुलिस को खत्म करना, जनता की आजादी का दमन करने वाले प्रतिक्रियावादी कानूनों व फरमानों को रद्द कर देना, राजनीतिक बन्दियों को रिहा करना, राजनीतिक पार्टियों की कानूनी हैसियत को मान्यता देना, मुक्त क्षेत्रों को मान्यता देना, तथा मुक्त क्षेत्रों की नाकाबन्दी करने और उन पर आक्रमण करने वाली फौजों को पीछे हटा लेना। इसके परिणामस्वरूप चीन में राजनीतिक सम्बन्ध अत्यन्त तनावपूर्ण हो गए हैं।

दो भविष्य

समूची परिस्थिति की रोशनी में तथा वास्तविक अन्तरराष्ट्रीय व घरेलू परिस्थिति के उपर्युक्त विश्लेषण की रोशनी में, यहां उपस्थित हर आदमी से मैं अनुरोध करता हूं कि वह चौकन्ना हो जाए तथा यह उम्मीद न करे कि हमारा कार्य निर्विघ्न रूप से और आसानी से आगे बढ़ता जाएगा। नहीं, ऐसा नहीं होगा। वास्तव में

दो सम्भावनाएं हैं, दो भविष्य हैं, एक अच्छा और एक बुरा। एक सम्भावना अथवा भविष्य यह है कि फासिस्ट तानाशाही जारी रहेगी और जनवादी सुधारों की इजाजत नहीं दी जाएगी, जापानी आक्रमणकारियों के बदले जनता का विरोध करने पर जोर दिया जाएगा, तथा यहां तक कि जापानी आक्रमणकारियों के परास्त होने के बाद भी गृहयुद्ध छिड़ जाएगा और इस प्रकार चीन को फिर एक बार उसी दर्दनाक पुरानी हालत में धकेल दिया जाएगा जिसमें स्वाधीनता, स्वतंत्रता, जनवाद, एकीकरण, समृद्धि अथवा शक्ति का अभाव था। इस सम्भावना अथवा भविष्य का अस्तित्व अब भी मौजूद है, तथा यह महज इसलिए समाप्त नहीं हो गया अथवा अपने आप गायब नही हो गया क्योंकि अन्तरराष्ट्रीय परिस्थिति अनुकूल है और हमारी जनता की राजनीतिक चेतना में वृद्धि हो गई है तथा उसकी संगठित शक्ति बढ़ गई है। जो लोग यह उम्मीद करते है कि इस सम्भावना अथवा भविष्य को चीन में वास्तविकता की शकल हासिल हो जाएगी, वे देश में क्वोमिन्ताङ के भीतर मौजूद जन-विरोधी गुट के लोग हैं तथा विदेशों में साम्राज्यवादी विचार वाले प्रतिक्रियावादी हैं। यह समस्या का एक पहलू है जिस पर ध्यान दिया जाना चाहिए।

लेकिन समस्या का दूसरा पहलू भी है, और एक बार फिर समूची परिस्थिति की रोशनी में तथा अन्तरराष्ट्रीय व घरेलू परिस्थिति के उपर्युक्त विश्लेषण की रोशनी में, हम लोग दूसरी सम्भावना अथवा भविष्य के लिए प्रयत्न करते समय और अधिक आत्मविश्वास और साहस से भर सकते हैं। सम्भावना अथवा भविष्य यह है कि सभी कठिनाइयों पर काबू पा लिया जाएगा, समूची चीनी जनता को

एकताबद्ध कर लिया जाएगा, क्वोमिन्ताङ की फासिस्ट तानाशाही को खत्म कर दिया जाएगा, जनवादी सुधार लागू किए जाएंगे, जापान-विरोधी शक्तियों को सुदृढ़ बनाया जाएगा और उनका विस्तार किया जाएगा, जापानी आक्रमणकारियों को मुकम्मिल तौर पर शिकस्त दी जाएगी तथा एक स्वाधीन, स्वतंत्र, जनवादी, एकीकृत, समृद्ध और शक्तिशाली नए चीन का निर्माण किया जाएगा। जो लोग यह उम्मीद करते हैं कि इस सम्भावना अथवा भविष्य को चीन में वास्तविकता की शकल हासिल हो जाएगी, वे देश में व्यापक जन-समुदाय, कम्युनिस्ट पार्टी और अन्य जनवादी पार्टियां हैं, तथा विदेशों में हमारे साथ समानता का बरताव करने वाले सभी राष्ट्र, प्रगतिशील लोग और व्यापक जन-समुदाय हैं।

हम लोग यह बात अच्छी तरह जानते हैं कि हम कम्युनिस्टों और समूची चीनी जनता के सामने अब भी भारी कठिनाइयां और अनेक बाधाएं मौजूद हैं तथा हमें एक लम्बा और टेढ़ामेढ़ा रास्ता तय करना है। लेकिन साथ ही हम लोग यह भी जानते हैं कि समूची चीनी जनता के साथ मिलकर हम सभी कठिनाइयों और बाधाओं को जरूर पार कर लेंगे तथा उस कार्य को पूरा कर लेंगे जिसे इतिहास ने चीन को सौंपा है। हमारे सामने और समूची जनता के सामने यह महान कार्य मौजूद है कि पहली सम्भावना अथवा भविष्य का पूरी ताकत से विरोध करें तथा दूसरी सम्भावना अथवा भविष्य के लिए भरपूर शक्ति से प्रयत्न करें। अन्तरराष्ट्रीय और घरेलू परिस्थिति मूलतः हम कम्युनिस्टों और समूची चीनी जनता के अनुकूल है। यह बात मैं पहले ही बिलकुल स्पष्ट कर चुका हूं। हमें उम्मीद है कि क्वोमिन्ताङ अधिकारी, विश्व के सामान्य रुझान और चीन की लोक-भावना को देखते हुए अपनी वर्तमान गलत नीतियों को बदलने का साहस दिखाएंगे, ताकि प्रतिरोध-युद्ध में विजय प्राप्त की जा सके, चीनी जनता की तकलीफों को कम किया जा सके तथा जल्दी ही एक नए चीन की स्थापना की जा सके। यह बात समझ लेनी चाहिए कि रास्ता चाहे कितना ही टेढ़ामेढ़ा क्यों न हो, चीनी जनता अपनी स्वाधीनता और मुक्ति अवश्य प्राप्त करेगी, तथा उसके ऐसा करने का समय अब आ गया है। पिछली शताब्दी के असंख्य शहीदों की महान आकांक्षाओं को पूरा करने की जिम्मेदारी हमारी पीढ़ी के कन्धों पर है, तथा हमारा रास्ता रोकने की हर कोशिश निश्चित रूप से नाकाम साबित होगी।

४. चीनी कम्युनिस्ट पार्टी की नीति

चीन के प्रतिरोध-युद्ध की दो कार्यदिशाओं का विश्लेषण मैं कर चुका हूं। इस प्रकार का विश्लेषण निहायत जरूरी है। कारण इस घड़ी तक भी बहुत से चीनी लोग यह नहीं जानते कि इस युद्ध में दरअसल हो क्या रहा है। क्वोमिन्ताङ सरकार की नाकेबन्दी की नीति के परिणामस्वरूप क्वोमिन्ताङ क्षेत्रों और विदेशों में बहुत से लोग अन्धकार में हैं। वे लोग चीन के मुक्त क्षेत्रों के बारे में तब तक लगभग कुछ भी नहीं जानते थे जब तक चीनी और विदेशी संवाददाताओं का एक ग्रुप १९४४ में पर्यवेक्षण-यात्रा पर यहां नहीं आया। ज्योंही यह ग्रुप वापस लौटा, तो क्वोमिन्ताङ सरकार ने, जो इस बात से बहुत डरती थी कि कहीं मुक्त क्षेत्रों की असली परिस्थिति की जानकारी बाहर के लोगों तक न पहुंच जाए, दरवाजा बन्द कर

दिया तथा किसी भी अन्य संवाददाता को यहां नहीं आने दिया। इसी तरह उसने क्वोमिन्ताङ क्षेत्रों के बारे में भी सच्चाई को दबाया है। इसलिए मैं यह महसूस करता हूं कि इन "दोनों क्षेत्रों" की सच्ची तस्वीर को यथासम्भव लोगों के सामने पेश करना हमारा कर्तव्य है। जब लोग चीन की समूची परिस्थिति को स्पष्ट रूप से देख लेंगे, सिर्फ तभी वे यह समझ पाएंगे कि चीन की दो सबसे बड़ी पार्टियों, कम्युनिस्ट पार्टी और क्वोमिन्ताङ की नीति में इतना फर्क क्यों है, तथा इन दोनों की कार्यदिशाओं के बीच इतना संघर्ष क्यों है। सिर्फ तभी लोग इस बात को समझ पाएंगे कि इन दोनों पार्टियों के बीच का विवाद एक अनावश्यक या महत्वहीन अथवा महज पूर्वाग्रह के कारण हुआ झगड़ा नहीं है, जैसा कि कुछ लोग कहते हैं, बल्कि एक उसूली विवाद है जिस पर करोड़ों जनता की जिन्दगी निर्भर है।

चीन की मौजूदा गम्भीर परिस्थिति में, देश की जनता, जनवादी पार्टियां और जनवादी व्यक्ति तथा अन्य देशों के वे लोग जो चीन की परिस्थिति के बारे में व्यग्र रहते हैं, ये सभी उम्मीद करते हैं कि फूट की जगह एकता ले लेगी तथा जनवादी सुधार लागू किए जाएंगे, और ये सभी यह जानना चाहते हैं कि आज की अनेक महत्वपूर्ण समस्याओं को हल करने के बारे में चीनी कम्युनिस्ट पार्टी की नीति क्या है। बेशक, हमारी पार्टी के सदस्य इन मामलों के बारे में और अधिक गहरी दिलचस्पी रखते हैं।

युद्ध के दौरान जापान-विरोधी राष्ट्रीय संयुक्त मोर्चे की हमारी नीतियां हमेशा ही बिलकुल स्पष्ट और निश्चित रही हैं, तथा युद्ध के आठ वर्षों में उन्हें परखा जा चुका है। हमारी कांग्रेस को चाहिए

कि वह हमारे भावी संघर्षों के मार्गदर्शन के लिए उनसे निष्कर्ष निकाले।

यहां मैं चीन की समस्याओं को हल करने के लिए निर्धारित की गई मुख्य नीतियों के बारे में उन अनेक निश्चित निष्कर्षों की व्याख्या करूंगा जिन पर हमारी पार्टी पहुंची है।

हमारा आम कार्यक्रम

चीनी जनता की समस्त जापान-विरोधी शक्तियों को गोलबन्द और एकताबद्ध करने, जापानी आक्रमणकारियों का पूरी तरह सफाया कर देने, तथा एक स्वाधीन, स्वतंत्र, जनवादी, एकीकृत, समृद्ध और शक्तिशाली नए चीन का निर्माण करने के उद्देश्य से चीनी जनता, चीनी कम्युनिस्ट पार्टी और सभी जापान-विरोधी जनवादी पार्टियों को एक सर्वमान्य मुश्तरका कार्यक्रम की फौरी जरूरत है।

इस प्रकार के मुश्तरका कार्यक्रम को दो हिस्सों में बांटा जा सकता है, आम कार्यक्रम और ठोस कार्यक्रम। पहले हम आम कार्यक्रम पर विचार करेंगे और उसके बाद ठोस कार्यक्रम पर।

इस बात को मुख्य आधार मानते हुए कि जापानी आक्रमणकारियों का पूर्ण विनाश कर दिया जाना चाहिए और एक नए चीन का निर्माण करना चाहिए, हम कम्युनिस्ट लोग और जनता की भारी बहुसंख्या चीन के विकास की वर्तमान मंजिल में निम्नांकित बुनियादी स्थापनाओं के बारे में एकमत हैं। पहले, चीन में बड़े जमींदारों के वर्ग और बड़े पूंजीपतियों के वर्ग के अधिनायकत्व के अधीन एक सामन्ती, फासिस्ट और जन-विरोधी राज्य-व्यवस्था नहीं होनी चाहिए, क्योंकि

क्वोमिन्ताङ के मुख्य शासक गुट का १८ वर्ष का शासन उसके पूर्ण दिवालिएपन को पहले ही साबित कर चुका है। दूसरे, चीन में सम्भवतया पुराने किस्म के जनवादी अधिनायकत्व – एक विशुद्ध राष्ट्रीय-पूंजीवादी राज्य – की स्थापना नहीं की जा सकती, इसलिए उसे ऐसा करने की कोशिश भी नहीं करनी चाहिए, क्योंकि एक तरफ तो चीन का राष्ट्रीय पूंजीपति वर्ग आर्थिक और राजनीतिक दृष्टि से अपने आपको बेहद दुर्बल साबित कर चुका है, तथा दूसरी तरफ काफी समय से एक नया तत्व, यानी अपने नेता चीनी कम्युनिस्ट पार्टी के साथ जागृत चीनी सर्वहारा वर्ग विद्यमान है, जिसने राजनीतिक रंगमंच पर भारी क्षमता प्रदर्शित की है तथा किसान वर्ग, शहरी निम्न-पूंजीपति वर्ग, बुद्धिजीवियों और अन्य जनवादी शक्तियों का नेतृत्व सम्भाल लिया है। तीसरे, इसी तरह चीनी जनता के लिए यह भी असम्भव है कि वह मौजूदा मंजिल में एक समाजवादी राज्य-व्यवस्था की स्थापना करे, जबकि अब भी उसके सामने विदेशी और सामन्ती उत्पीड़न का मुकाबला करने का कार्य मौजूद है तथा एक समाजवादी राज्य के लिए आवश्यक सामाजिक व आर्थिक स्थितियों का अब भी अभाव बना हुआ है।

तो फिर हमारा प्रस्ताव क्या है? हमारा प्रस्ताव यह है कि जापानी आक्रमणकारियों को पूरी तरह शिकस्त देने के बाद एक ऐसी राज्य-व्यवस्था कायम की जाए जिसे हम नव-जनवाद कहते हैं, यानी मजदूर वर्ग के नेतृत्व में संयुक्त मोर्चे का एक जनवादी संश्रय, जो जनता की बेहद भारी बहुसंख्या पर आधारित हो।

सिर्फ इसी प्रकार की राज्य-व्यवस्था चीन की आबादी की बेहद भारी बहुसंख्या की मांग को सच्चे मायनों में पूरा करती है, क्योंकि

वह पहले, दसियों लाख औद्योगिक मजदूरों, करोड़ों दस्तकारों व खेत-मजदूरों का, दूसरे, किसानों का, जो चीन की आबादी का ८० प्रतिशत हिस्सा हैं, यानी ४५ करोड़ आबादी में से ३६ करोड़ हैं, तथा तीसरे, बड़ी तादाद में शहरी निम्न-पूंजीपतियों और साथ ही राष्ट्रीय पूंजीपतियों, जागृत शरीफजादों और अन्य देशभक्तों का समर्थन प्राप्त कर सकती है और सचमुच प्राप्त करती रही है।

बेशक, इन वर्गों के बीच अब भी अन्तरविरोध मौजूद हैं, विशेषत: श्रम और पूंजी के बीच का अन्तरविरोध उल्लेखनीय है, तथा इसके परिणामस्वरूप इनमें से हर एक की अपनी खास मांगें हैं। इन अन्तर-विरोधों और भिन्न-भिन्न प्रकार की मांगों के अस्तित्व को न मानना पाखण्डपूर्ण और गलत होगा। लेकिन नव-जनवाद की समूची मंजिल में ये अन्तरविरोध, ये भिन्न-भिन्न प्रकार की मांगें सबकी मुश्तरका मांगों से आगे नहीं बढ़ेंगी तथा उन्हें ऐसा करने की इजाजत भी नहीं दी जानी चाहिए ; उन्हें समायोजित किया जा सकता है। इस प्रकार के समायोजन द्वारा ये वर्ग मिलकर नव-जनवादी राज्य के राज-नीतिक, आर्थिक और सांस्कृतिक कार्यों को पूरा कर सकेंगे।

नव-जनवाद की राजनीति में, जिसका हम पक्षपोषण करते हैं, विदेशी उत्पीड़न और अन्दरूनी सामन्ती व फासिस्ट उत्पीड़न का तख्ता उलट देना, तथा उसके बाद पुरानी किस्म की जनवादी राज-नीतिक व्यवस्था की नहीं बल्कि एक ऐसी राजनीतिक व्यवस्था की स्थापना करना शामिल है जिसमें सभी जनवादी वर्गों का संयुक्त मोर्चा कायम किया गया हो। हमारे ये विचार डा० सुन यात-सेन के क्रान्तिकारी विचारों से पूर्ण रूप से मेल खाते हैं। क्वोमिन्ताङ की

प्रथम राष्ट्रीय कांग्रेस के घोषणापत्र में डा० सुन यात-सेन ने लिखा था :

> आधुनिक राज्यों की तथाकथित जनवादी व्यवस्था पर सामान्यतः पूंजीपति वर्ग का एकाधिकार है और यह महज आम लोगों को उत्पीड़ित करने का साधन बन गई है। इसके विपरीत क्वोमिन्ताङ के जनवाद के सिद्धान्त का मतलब है वह जनवाद, जिसमें सभी आम लोगों का हिस्सा हो और जो चन्द लोगों की निजी मिलकियत न हो।

यह डा० सुन का महान राजनीतिक निर्देश है। चीनी जनता, चीनी कम्युनिस्ट पार्टी और अन्य तमाम जनवादी व्यक्तियों को इसका सम्मान करना चाहिए, इसे दृढ़ता के साथ कार्यान्वित करना चाहिए, तथा उन तमाम व्यक्तियों व ग्रुपों के खिलाफ दृढ़ता से संघर्ष करना चाहिए जो इसका उल्लंघन अथवा विरोध करते हैं, तथा इस प्रकार नव-जनवाद के इस पूर्णतया सही राजनीतिक सिद्धान्त की रक्षा करनी चाहिए और उसका विकास करना चाहिए।

नव-जनवादी राज्य का संगठनात्मक सिद्धान्त जनवादी केन्द्रीयता होना चाहिए, जिसमें विभिन्न स्तरों की जन-प्रतिनिधि सभाएं मुख्य नीतियों का निर्णय करें तथा सरकारों का चुनाव करें। इसमें जनवाद के साथ-साथ केन्द्रीयता भी मौजूद होती है, यानी जनवाद के आधार पर केन्द्रीयता होती है और केन्द्रीयता के मार्गदर्शन में जनवाद। यही एकमात्र व्यवस्था है जिसमें जनवाद की पूर्ण अभिव्यक्ति हो सकती है और सभी स्तरों की जन-प्रतिनिधि सभाओं को पूरी सत्ता सौंप दी जाती है, तथा साथ ही जिसमें केन्द्रीकृत प्रशासन की गारन्टी की जा

सकती है और हर स्तर की सरकार उन तमाम मामलों का केन्द्रीकृत प्रबन्ध करती है जिन्हें उनके बराबर के स्तरों की जन-प्रतिनिधि सभाओं द्वारा उन्हें सौंपा जाता है, तथा उन तमाम चीजों की रक्षा की जाती है जो जनता के जनवादी जीवन के लिए आवश्यक हैं।

सेना और अन्य सशस्त्र शक्तियां नव-जनवादी राजसत्ता की मशीनरी के महत्वपूर्ण अंग हैं, जिनके बिना राज्य की रक्षा करना मुमकिन नहीं है। सत्ता के अन्य तमाम संगठनों की ही तरह नव-जनवादी राज्य की सशस्त्र सेनाएं भी जनता की ही होती हैं और जनता की ही रक्षा करती हैं; उनमें और पुरानी किस्म की सेना, पुलिस इत्यादि में, जो सिर्फ मुट्ठीभर लोगों की ही होती हैं और जनता का उत्पीड़न करती हैं, कोई समानता नहीं है।

नव-जनवाद की जिस अर्थव्यवस्था का हम पक्षपोषण करते हैं, वह भी डा० सुन के सिद्धान्त से मेल खाती है। भूमि के सवाल के बारे में डा० सुन ने "जमीन जोतने वालों को" का पक्षपोषण किया। उद्योग और व्यापार के बारे में डा० सुन ने उपर्युक्त घोषणापत्र में बताया था :

> ऐसे तमाम निजी कारोबारों को, चाहे वे चीनियों के हों अथवा विदेशियों के, जिनकी मिलकियत का स्वरूप इजारेदाराना है अथवा जिनका पैमाना इतना बड़ा है कि उन्हें निजी प्रबन्ध में नहीं चलाया जा सकता, जैसे बैंकिंग, रेलवे और हवाई उड़ान, सरकार अपने हाथ में ले लेगी, ताकि निजी पूंजी जनता के आर्थिक जीवन को नियंत्रित न करे। यह पूंजी का नियमन करने का एक मुख्य उसूल है।

वर्तमान मंजिल में, हम आर्थिक सवालों के बारे में डा० सुन के इन विचारों से पूर्ण रूप से सहमत हैं।

कुछ लोगों को यह शक है कि चीनी कम्युनिस्ट व्यक्तित्व के विकास, निजी पूंजी की बढ़ोतरी और निजी सम्पत्ति की रक्षा का विरोध करते हैं; लेकिन उनका खयाल गलत है। यह विदेशी उत्पीड़न और सामन्ती उत्पीड़न ही है जो चीनी जनता के व्यक्तित्व के विकास में बड़ी निर्दयता से बाधाएं खड़ी करता है, निजी पूंजी की बढ़ोतरी को रोकता है तथा व्यापक जनता की सम्पत्ति को नष्ट कर देता है। जिस नव-जनवाद का हम पक्षपोषण करते हैं, उसका कार्य यही है कि वह इन बाधाओं को दूर करे और इस विनाश को रोके, इस बात की गारन्टी करे कि व्यापक जनता, समाज के ढांचे के भीतर रहते हुए अपने व्यक्तित्व का स्वतंत्र रूप से विकास कर सके तथा एक ऐसी निजी पूंजीवादी अर्थव्यवस्था का स्वतंत्र रूप से विकास कर सके जो "जनता के आर्थिक जीवन को नियंत्रित" नहीं करती बल्कि उसे फायदा पहुंचाती है, तथा निजी सम्पत्ति के सभी समुचित रूपों की रक्षा करे।

डा० सुन के सिद्धान्तों और चीनी क्रान्ति के अनुभवों के अनुरूप, मौजूदा मंजिल में चीन की राष्ट्रीय अर्थव्यवस्था के अन्तर्गत राजकीय क्षेत्र, निजी क्षेत्र और सहकारी क्षेत्र शामिल होने चाहिए। लेकिन इस प्रकार के राज्य को निश्चित रूप से एक ऐसा राज्य नहीं होना चाहिए जो "चन्द लोगों की निजी मिलकियत" हो बल्कि एक ऐसा नव-जनवादी राज्य होना चाहिए जिसमें सर्वहारा वर्ग के नेतृत्व में "सभी आम लोगों का हिस्सा" हो।

इसी तरह नव-जनवाद की संस्कृति में "सभी आम लोगों का

हिस्सा" होना चाहिए, यानी उसे एक राष्ट्रीय, वैज्ञानिक और जन संस्कृति होना चाहिए, तथा किसी भी सूरत में एक ऐसी संस्कृति नहीं होना चाहिए जो "चन्द लोगों की निजी मिलकियत" हो।

ऐसा है वह आम अथवा बुनियादी कार्यक्रम जिसका हम कम्युनिस्ट लोग वर्तमान मंजिल के लिए, पूंजीवादी-जनवादी क्रान्ति की समूची मंजिल के लिए पक्षपोषण करते हैं। यह समाजवाद और कम्युनिज्म के हमारे भावी अथवा अधिकतम कार्यक्रम के मुकाबले हमारा न्यूनतम कार्यक्रम है। इसे कार्यान्वित करना चीनी राज्य और चीनी समाज को एक कदम आगे, एक औपनिवेशिक, अर्ध-औपनिवेशिक और अर्ध-सामन्ती राज्य व समाज से एक नव-जनवादी राज्य व समाज में ले जाएगा।

सर्वहारा वर्ग का राजनीतिक नेतृत्व तथा अर्थव्यवस्था के सर्वहारा नेतृत्व वाले राजकीय और सहकारी क्षेत्र, जिन्हें हमारे कार्यक्रम में निर्धारित किया गया है, समाजवादी तत्व हैं। फिर भी इस कार्यक्रम को कार्यान्वित करने से चीन एक समाजवादी समाज में नहीं बदल जाएगा।

हम कम्युनिस्ट अपने राजनीतिक विचारों को कभी नहीं छिपाते। यह निश्चित है और इसमें तनिक भी सन्देह नहीं कि चीन को समाजवाद और कम्युनिज्म की ओर ले जाना ही हमारा भावी अथवा अधिकतम कार्यक्रम है। हमारी पार्टी का नाम तथा हमारा मार्क्सवादी विश्व-दृष्टिकोण, ये दोनों ही स्पष्ट रूप से भविष्य के, असीमित रूप से उज्ज्वल और शानदार भविष्य के इसी सर्वोच्च आदर्श की ओर संकेत करते हैं। पार्टी में शामिल होने के समय से ही हर कम्युनिस्ट के दिल में दो स्पष्ट उद्देश्य मौजूद रहते हैं, वर्तमान काल में

नव-जनवादी क्रान्ति तथा भविष्य में समाजवाद व कम्युनिज्म, और इनके लिए वह इस बात के बावजूद संघर्ष करेगा कि कम्युनिज्म के दुश्मन उसके प्रति शत्रुता रखते हैं और बड़े भोंड़े, अज्ञानपूर्ण लांछनों, गालियों और अपशब्दों की बौछार करते हैं, जिनका हमें दृढ़ता से मुकाबला करना चाहिए। जहां तक नेकदिल सन्देहवादियों का सवाल है, उनको हमें सद्भाव और धीरज के साथ समझाना चाहिए तथा उन पर प्रहार नहीं करना चाहिए। यह सब अत्यन्त स्पष्ट, निश्चित और निर्विवाद है।

लेकिन चीन में तमाम कम्युनिस्टों और कम्युनिज्म से हमदर्दी रखने वाले लोगों को वर्तमान मंजिल के उद्देश्य को प्राप्त करने के लिए संघर्ष करना चाहिए ; उन्हें विदेशी और सामन्ती उत्पीड़न का विरोध करने, चीनी जनता को उसकी दर्दनाक औपनिवेशिक, अर्ध-औपनिवेशिक और अर्ध-सामन्ती स्थिति से छुटकारा दिलाने, और सर्वहारा वर्ग के नेतृत्व में एक ऐसे नव-जनवादी चीन की, जिसका मुख्य कार्य किसानों को मुक्त कराना हो, यानी डा० सुन यात-सेन के क्रान्तिकारी तीन जन-सिद्धान्तों वाले स्वाधीन, स्वतंत्र, जनवादी, एकीकृत, समृद्ध और शक्तिशाली चीन की स्थापना करने के लिए संघर्ष करना चाहिए। हम लोग वास्तव में यही सब करते रहे हैं। चीनी जनता के विशाल समुदाय के साथ मिलकर, हम कम्युनिस्ट पिछले चौबीस वर्षों से बड़ी बहादुरी के साथ इसी उद्देश्य के लिए संघर्ष करते रहे हैं।

अगर कोई कम्युनिस्ट अथवा कम्युनिस्ट हमदर्द समाजवाद और कम्युनिज्म की बातें तो करता हो किन्तु इस उद्देश्य की प्राप्ति के लिए संघर्ष न करता हो, अगर वह इस पूंजीवादी-जनवादी क्रान्ति

का मूल्य कम करके आंकता हो, जरा भी ढिलाई अथवा सुस्ती दिखाता हो, तनिक भी गैरवफादारी और निरुत्साह दिखाता हो अथवा इसके लिए अपना खून बहाने और जीवन निछावर करने में संकोच करता हो, तो जाने अथवा अनजाने में ऐसा व्यक्ति समाजवाद और कम्युनिज्म के प्रति कमोबेश विश्वासघात कर रहा है तथा यह निश्चित है कि वह राजनीतिक चेतना से लैस और निष्ठावान कम्युनिस्ट नहीं है। यह मार्क्सवाद का नियम है कि समाजवाद की प्राप्ति केवल जनवाद की मंजिल से गुजरकर ही की जा सकती है। और चीन में जनवाद की प्राप्ति का संघर्ष एक दीर्घकालीन संघर्ष है। एक संयुक्त नव-जनवादी राज्य की स्थापना किए बिना, नव-जनवादी अर्थव्यवस्था के राजकीय क्षेत्र, निजी पूंजी वाले क्षेत्र और सहकारी क्षेत्र का विकास किए बिना, तथा एक राष्ट्रीय, वैज्ञानिक और जन संस्कृति यानी एक नव-जनवादी संस्कृति का विकास किए बिना, और कोटि-कोटि लोगों के व्यक्तित्व की मुक्ति और विकास के बिना, संक्षेप में, कम्युनिस्ट पार्टी के नेतृत्व में एक नई किस्म की मुकम्मिल पूंजीवादी-जनवादी क्रान्ति किए बिना, एक औपनिवेशिक, अर्ध-औपनिवेशिक और अर्ध-सामन्ती व्यवस्था के खण्डहरों पर एक समाजवादी समाज का निर्माण करने की कोशिश करना महज एक कोरी कल्पना है।

कुछ लोग यह बात नहीं समझ पाते कि पूंजीवाद से डरने की बात तो दरकिनार, किसी विशेष परिस्थिति में कम्युनिस्ट आखिर उसके विकास का पक्षपोषण क्यों करते हैं। हमारा उत्तर बिलकुल सीधा है। विदेशी साम्राज्यवाद और घरेलू सामन्तवाद के उत्पीड़न के स्थान पर एक निश्चित मात्रा में पूंजीवाद का विकास करना न सिर्फ एक प्रगति

है बल्कि यह एक अनिवार्य प्रक्रिया भी है। इससे पूंजीपति वर्ग को और साथ ही सर्वहारा वर्ग को फायदा होता है, तथा शायद सर्वहारा वर्ग को ज्यादा फायदा होता है। आज चीन में घरेलू पूंजीवाद नहीं बल्कि विदेशी साम्राज्यवाद और घरेलू सामन्तवाद अनावश्यक हैं ; वास्तव में हमारे यहां पूंजीवाद बहुत कम है। यह बड़े आश्चर्य की बात है कि चीनी पूंजीपति वर्ग के कुछ प्रवक्ता पूंजीवाद के विकास का खुलेआम पक्षपोषण करने में संकोच करते हैं तथा उसकी घुमा-फिरा कर चर्चा करते हैं। दूसरी तरफ ऐसे लोग भी हैं जो इस बात से साफ इनकार करते हैं कि चीन में आवश्यक मात्रा में पूंजीवादी विकास की इजाजत दी जानी चाहिए तथा जो सिर्फ एक ही छलांग में समाजवाद तक पहुंचने तथा तीन जन-सिद्धान्तों और समाजवाद के कार्यों को "एक ही बार में पूरा करने" की बातें करते हैं। जाहिर है कि ये बातें या तो चीन के राष्ट्रीय पूंजीपति वर्ग की कमजोरी की अभिव्यक्ति हैं या जन-समुदाय को धोखा देने के लिए बड़े जमींदारों के वर्ग और बड़े पूंजीपतियों के वर्ग की चाल हैं। सामाजिक विकास के नियमों की अपनी मार्क्सवादी जानकारी के आधार पर हम कम्युनिस्ट यह बात साफ तौर पर समझते हैं कि चीन में नव-जनवाद की राज्य-व्यवस्था के अन्तर्गत, सामाजिक प्रगति के हित में यह अनिवार्य है कि अर्थव्यवस्था के राजकीय क्षेत्र और मेहनतकश जनता द्वारा संचालित व्यक्तिगत व सहकारी क्षेत्रों के अलावा निजी पूंजी वाले क्षेत्र के विकास की सुविधाएं भी प्रदान की जाएं, बशर्ते कि वह जनता के आर्थिक जीवन को नियंत्रित न करे। किसी भी कोरी डींग और धूर्ततापूर्ण चाल के जरिए हम कम्युनिस्टों की आंखों में धूल नहीं झोंकी जा सकेगी।

कुछ लोग ऐसे भी हैं जो इस बात में सन्देह करते हैं कि जब हम कम्युनिस्ट यह ऐलान करते हैं कि "जिन तीन जन-सिद्धान्तों की आज चीन को जरूरत है, उन्हें पूर्ण रूप से कार्यान्वित करने के लिए संघर्ष करने को हमारी पार्टी तैयार है", तो हम सच्चे दिल से ऐसा कहते हैं। इसकी वजह यह है कि वे लोग इस बात को नहीं समझ पाते कि तीन जन-सिद्धान्तों के बुनियादी उसूल, जिनकी डा० सुन यात-सेन ने १९२४ में क्वोमिन्ताङ की पहली राष्ट्रीय कांग्रेस के घोषणा-पत्र में व्याख्या की थी, वर्तमान काल के लिए हमारी पार्टी के कार्यक्रम, यानी हमारे न्यूनतम कार्यक्रम में निर्धारित कुछ बुनियादी उसूलों से मेल खाते हैं। यह बता देना जरूरी है कि डा० सुन यात-सेन के ये तीन जन-सिद्धान्त, वर्तमान काल के लिए हमारी पार्टी द्वारा प्रस्तुत किए गए कार्यक्रम के केवल कुछ ही बुनियादी उसूलों से मेल खाते हैं, न कि हर बात से। हमारी पार्टी का नव-जनवाद का कार्यक्रम निस्सन्देह डा० सुन के सिद्धान्तों के मुकाबले कहीं अधिक सर्वांगीण है, खास तौर पर डा० सुन की मृत्यु के बाद के बीस वर्षों में चीनी क्रान्ति के विकास के साथ-साथ हमारी पार्टी का नव-जनवाद का सिद्धान्त, कार्यक्रम और व्यवहार काफी विकसित हो चुका है तथा भविष्य में और अधिक विकसित होता रहेगा। लेकिन सार रूप में ये तीन जन-सिद्धान्त पहले के पुराने तीन जन-सिद्धान्तों से भिन्न नव-जनवाद का ही कार्यक्रम हैं ; स्वाभाविक है कि इन्हीं की "आज चीन को जरूरत है" तथा स्वाभाविक है कि इन्हें "पूर्ण रूप से कार्यान्वित करने के लिए संघर्ष करने को हमारी पार्टी तैयार है"। हम चीनी कम्युनिस्ट, अपनी पार्टी के न्यूनतम कार्यक्रम को कार्यान्वित करने के लिए संघर्ष करना तथा डा० सुन के क्रान्ति-

कारी अथवा नए तीन जन-सिद्धान्तों को कार्यान्वित करने के लिए संघर्ष करना, बुनियादी तौर पर (हर लिहाज से नहीं) एक ही बात समझते हैं। इसलिए चीनी कम्युनिस्ट अतीत और वर्तमान की ही तरह भविष्य में भी क्रान्तिकारी तीन जन-सिद्धान्तों को बेहद ईमानदारी के साथ और सर्वांगीण रूप से अमल में उतारने वाले साबित होंगे।

कुछ लोग शक करते हैं और ऐसा सोचते हैं कि जहां एक बार सत्ता कम्युनिस्ट पार्टी के हाथ में आ गई, तो वह रूस की मिसाल पर चलने लगेगी तथा सर्वहारा अधिनायकत्व और एकदलीय व्यवस्था को लागू कर देगी। इसके बारे में हमारा जवाब यह है कि जनवादी वर्गों के संश्रय पर आधारित एक नव-जनवादी राज्य सर्वहारा अधिनायकत्व वाले समाजवादी राज्य से उसूली तौर पर भिन्न होता है। इसमें कोई सन्देह नहीं कि हमारी नव-जनवाद की व्यवस्था का निर्माण सर्वहारा वर्ग और कम्युनिस्ट पार्टी के नेतृत्व में किया जाएगा, लेकिन नव-जनवाद की समूची मंजिल में चीन के अन्दर एकवर्गीय अधिनायकत्व और एकदलीय सरकार की स्थापना नहीं की जा सकेगी तथा इसलिए इस बात की कोशिश नहीं की जानी चाहिए। हमारे सामने इस बात का कोई कारण मौजूद नहीं कि हम सभी राजनीतिक पार्टियों, सामाजिक ग्रुपों और व्यक्तियों के साथ सहयोग करने से इनकार कर दें, बशर्ते कि कम्युनिस्ट पार्टी के प्रति उनका रुख सहयोगपूर्ण हो और शत्रुतापूर्ण न हो। रूसी व्यवस्था रूस के इतिहास की उपज है; रूस में मनुष्य द्वारा मनुष्य के शोषण को एक सामाजिक व्यवस्था के रूप में खत्म किया जा चुका है, बिलकुल नए किस्म के जनवाद यानी समाजवाद की राजनीतिक, आर्थिक और सांस्कृतिक व्यवस्था को लागू किया जा चुका है, तथा जनता तमाम समाजवाद-विरोधी राजनीतिक पार्टियों को त्यागकर केवल बोलशेविक पार्टी का समर्थन करने लगी है। इन सब बातों ने रूसी व्यवस्था को बनाने में योग दिया है जो वहां के हालात के मुताबिक बिलकुल आवश्यक और युक्तियुक्त है। लेकिन रूस में भी, जहां बोलशेविक पार्टी एकमात्र राजनीतिक पार्टी है, राजसत्ता के संगठनों में अब भी एक ऐसी व्यवस्था का पालन किया जाता है जो मजदूरों, किसानों व बुद्धिजीवियों के संश्रय की व्यवस्था तथा पार्टी-सदस्यों और गैरपार्टी व्यक्तियों के संश्रय की व्यवस्था है, एक ऐसी व्यवस्था का नहीं जिसमें सरकारी संगठनों में केवल मजदूर वर्ग तथा बोलशेविक ही काम करते हों। चीन की वर्तमान मंजिल के लिए जो व्यवस्था निर्धारित की जा रही है वह चीन के इतिहास की वर्तमान मंजिल की उपज होगी, तथा भविष्य में काफी लम्बे समय तक राज्य और राजनीतिक सत्ता के एक विशेष रूप का अस्तित्व बना रहेगा, एक ऐसे रूप का जो रूसी व्यवस्था से भिन्न है किन्तु हमारे लिए बिलकुल आवश्यक और युक्तियुक्त है, यानी जनवादी वर्गों के संश्रय पर आधारित नव-जनवादी राज्य और राजनीतिक सत्ता का रूप।

हमारा ठोस कार्यक्रम

इस आम कार्यक्रम के आधार पर हमारी पार्टी के पास हर काल के लिए एक ठोस कार्यक्रम होना चाहिए। नव-जनवाद का हमारा आम कार्यक्रम पूंजीवादी-जनवादी क्रान्ति की समूची मंजिल में, यानी अनेक दशाब्दियों तक नहीं बदलेगा। लेकिन इस मंजिल के

हर दौर में स्थिति बदल गई है अथवा बदलती जा रही है, तथा यह स्वाभाविक है कि हमें इसी के अनुरूप अपने ठोस कार्यक्रम में तब्दीलियां करनी पड़ती हैं। मिसाल के लिए, नव-जनवाद का हमारा आम कार्यक्रम उत्तरी अभियान के काल, भूमि-क्रान्ति युद्ध के काल और जापानी-आक्रमण-विरोधी युद्ध के काल में एक जैसा रहा है, लेकिन हमारे ठोस कार्यक्रम में तब्दीलियां होती रही हैं, क्योंकि इन तीनों कालों में हमारे दोस्त और दुश्मन एक जैसे नहीं रहे हैं।

इस समय चीनी जनता के सामने निम्नांकित परिस्थिति मौजूद है :

(१) जापानी आक्रमणकारी अभी परास्त नहीं हुए हैं ;

(२) चीनी जनता के लिए यह फौरी तौर पर जरूरी हो गया है कि वह जनवादी सुधार करने के लिए मिलजुल कर कोशिश करे, ताकि राष्ट्रीय एकता कायम की जा सके, तमाम जापान-विरोधी शक्तियों को तेजी से गोलबन्द और एकीकृत किया जा सके, और अपने संश्रयकारी देशों के साथ तालमेल कायम करके जापानी आक्रमणकारियों को परास्त किया जा सके; तथा

(३) क्वोमिन्ताङ सरकार राष्ट्रीय एकता को तहस-नहस कर रही है और इस प्रकार के जनवादी सुधार में बाधा डाल रही है।

ऐसी परिस्थिति में हमारा ठोस कार्यक्रम क्या है, अथवा दूसरे शब्दों में, जनता की फौरी मांगें क्या हैं ?

हम समझते हैं कि निम्नांकित मांगें उचित और न्यूनतम हैं :

संश्रयकारी देशों के साथ तालमेल कायम करके जापानी आक्रमणकारियों को पूर्ण रूप से परास्त करने तथा अन्तरराष्ट्रीय शान्ति स्थापित करने के लिए सभी उपलब्ध शक्तियों को गोलबन्द करो ;

क्वोमिन्ताङ की एकदलीय तानाशाही को खत्म कर दो और एक जनवादी मिलीजुली सरकार और संयुक्त सर्वोच्च कमान की स्थापना करो ;

उन जापान-परस्त तत्वों, फासिस्टवादियों और पराजयवादियों को सजा दो जो जनता का विरोध कर रहे हैं और राष्ट्रीय एकता को तहस-नहस कर रहे हैं, तथा इस प्रकार राष्ट्रीय एकता कायम करने में मदद करो ;

उन प्रतिक्रियावादियों को सजा दो जो गृहयुद्ध का खतरा पैदा कर रहे हैं, तथा इस प्रकार अन्दरूनी शान्ति की गारन्टी कर दो ;

चीनी गद्दारों को सजा दो, उन अफसरों के खिलाफ सजा देने की कार्यवाही करो जो दुश्मन के सामने आत्मसमर्पण कर देते हैं, तथा जापानियों के एजेन्टों को सजा दो ;

जनता का दमन करने वाले तमाम प्रतिक्रियावादी खुफिया विभागों को और उनकी तमाम सरगरमियों को खत्म कर दो तथा नजरबन्दी कैम्पों को भंग कर दो ;

उन तमाम प्रतिक्रियावादी कानूनों और आदेशों को खत्म कर दो जिनका मकसद जनता की भाषण, प्रेस, सभा, संगठन, राजनीतिक आस्था व धार्मिक विश्वास की आजादियों और व्यक्तिगत आजादी का दमन करना है, तथा जनता को पूर्ण नागरिक अधिकार देने की गारन्टी करो ;

सभी जनवादी पार्टियों व ग्रुपों की कानूनी हैसियत को मान्यता दो ;

सभी देशभक्त राजनीतिक बन्दियों को रिहा करो ;

उन तमाम फौजों को पीछे हटा लो जो चीन के मुक्त क्षेत्रों को घेरे हुए हैं और उन पर हमले कर रही हैं, तथा उन्हें जापान-विरोधी मोर्चे पर भेज दो ;

चीन के मुक्त क्षेत्रों की जापान-विरोधी सशस्त्र सेनाओं और जनता द्वारा चुनी गई सरकारों को मान्यता दो ;

मुक्त क्षेत्रों और उनकी सशस्त्र सेनाओं को सुदृढ़ बनाओ और उनका विस्तार करो, तथा समूचे खोए हुए प्रदेश को फिर से हासिल करो ;

जापान-अधिकृत क्षेत्रों की जनता को सशस्त्र विद्रोह करने के लिए भूमिगत सशस्त्र सेनाओं का संगठन करने में मदद दो ;

चीनी जनता को अपने आपको हथियारबन्द करने और अपने घरों व अपने देश की रक्षा करने की इजाजत दो ;

क्वोमिन्ताङ की सर्वोच्च कमान की प्रत्यक्ष अधीनता वाली उन सेनाओं का राजनीतिक व फौजी रूपान्तर करो जो लगातार लड़ाइयों में हार खाती हैं, जनता का उत्पीड़न करती हैं और उन सेनाओं से भेदभाव बरतती हैं जो उसकी प्रत्यक्ष अधीनता में नहीं हैं, तथा उन कमाण्डरों को सजा दो जो भीषण पराजयों के लिए उत्तरदायी हैं।

फौजी भरती की व्यवस्था और अफसरों व सिपाहियों के रहन-सहन की स्थिति में सुधार करो ;

प्रतिरोध-युद्ध में लड़ने वाले सैनिकों के परिवारों को तरजीह दो, ताकि मोर्चे पर तैनात अफसर व सिपाही घरेलू चिन्ताओं से मुक्त रहें ;

अपाहिज सैनिकों को तथा उन सैनिकों के परिवारों को तरजीह दो जिन्होंने देश के लिए अपने प्राण निछावर कर दिए हैं, तथा सेवामुक्त सैनिकों को बसाने और उनकी जीविका का प्रबन्ध करने में उनकी मदद करो ;

युद्ध को चलाने में सहायता करने के लिए युद्ध-उद्योगों का विकास करो ;

संश्रयकारी देशों से प्राप्त होने वाली फौजी व वित्तीय सहायता को बिना किसी भेदभाव के प्रतिरोध-युद्ध में लड़ने वाली सभी सेनाओं में बांट दो ;

भ्रष्टाचारी अफसरों को सजा दो और स्वच्छ शासन कायम करो ;

मध्यम और निम्न दर्जे के सरकारी कर्मचारियों की आमदनी में बढ़ोतरी करो ;

चीनी जनता को जनवादी अधिकार प्रदान करो ;

उत्पीड़नकारी "पाओ-च्या" व्यवस्था * को खत्म करो ;

युद्ध के शरणार्थियों और प्राकृतिक विपत्तियों से पीड़ित लोगों को सहायता प्रदान करो ;

चीन के खोए हुए प्रदेशों को फिर से प्राप्त करने के बाद, उन लोगों को व्यापक रूप से सहायता प्रदान करने के लिए जिन्होंने दुश्मन के कब्जे के दौरान हानि उठाई थी, पर्याप्त धन मुहय्या करो ;

भारी टैक्सों और तरह-तरह की लेवियों को खत्म कर दो तथा एकीकृत वर्धमान टैक्स लागू करो ;

देहातों में सुधार लागू करो, लगान और सूद कम करो,

काश्तकारों के अधिकारों की रक्षा की समुचित व्यवस्था करो, कंगाली के शिकार किसानों को कम ब्याज पर कर्जा दो तथा किसानों को संगठित होने में सहायता करो, ताकि कृषि-उत्पादन का विकास किया जा सके ;

नौकरशाही पूंजी को अवैध घोषित कर दो ;

आर्थिक नियंत्रण की मौजूदा नीति को खत्म कर दो ;

बेलगाम मुद्राप्रसार और बेहद महंगाई की रोकथाम करो ;

निजी उद्योग को सहायता दो तथा उसे कर्जा लेने, कच्चा माल खरीदने और तैयार माल बेचने की सुविधाएं प्रदान करो ;

मजदूरों की जीविका में सुधार करो, बेरोजगार मजदूरों को सहायता दो, तथा मजदूरों को संगठित होने में मदद दो, ताकि औद्योगिक उत्पादन का विकास किया जा सके ;

शिक्षा के क्षेत्र में क्वोमिन्ताङ सिद्धान्तों[४] को लादना बन्द करो तथा एक राष्ट्रीय, वैज्ञानिक और जन संस्कृति व शिक्षा को आगे बढ़ाओ ;

अध्यापकों व शिक्षा-प्रतिष्ठानों के अन्य कर्मचारियों की जीविका की गारन्टी करो तथा विद्याध्ययन सम्बन्धी स्वतंत्रता की गारन्टी करो ;

नौजवानों, महिलाओं और बच्चों के हितों की रक्षा करो – पढ़ने के मौके से वंचित गरीब नौजवान विद्यार्थियों की सहायता करो, जापानी-आक्रमण-विरोधी युद्ध और सामाजिक प्रगति की दृष्टि से उपयोगी सभी कामों में समानता के आधार पर शामिल होने के उद्देश्य से नौजवानों व महिलाओं को संगठित होने में मदद करो, विवाह की स्वतंत्रता तथा पुरुष और स्त्री की समानता की गारन्टी करो, तथा नौजवानों और बच्चों को उपयोगी शिक्षा दो ;

चीन की अल्पसंख्यक जातियों के प्रति बेहतर बरताव करो तथा उन्हें स्वायत्त शासन के अधिकार प्रदान करो ;

प्रवासी चीनियों के हितों की रक्षा करो तथा उन लोगों की सहायता करो जो मातृभूमि की गोद में लौट आए हैं ;

उन विदेशी नागरिकों की रक्षा करो जो जापानी उत्पीड़न के कारण भागकर चीन आ गए हैं तथा जापानी आक्रमणकारियों के खिलाफ उनके संघर्ष का समर्थन करो ;

चीन-सोवियत सम्बन्धों में सुधार करो।

इन मांगों को पूरा करने के लिए सबसे महत्वपूर्ण काम यह है कि क्वोमिन्ताङ की एकदलीय तानाशाही फौरन खत्म कर दी जाए तथा एक जनवादी अस्थाई केन्द्रीय सरकार कायम कर दी जाए, एक ऐसी मिलीजुली सरकार जिसे व्यापक राष्ट्रव्यापी समर्थन प्राप्त हो तथा जिसमें सभी जापान-विरोधी पार्टियों के और किसी भी पार्टी से सम्बन्ध न रखने वाले व्यक्तियों के प्रतिनिधि शामिल हों। इस पूर्वशर्त के बिना यह असम्भव है कि क्वोमिन्ताङ क्षेत्रों में और इसलिए समूचे देश में किसी भी तरह का असली सुधार किया जाए।

इन मांगों में चीन के व्यापक जन-समुदाय तथा साथ ही संश्रयकारी देशों के जनवादी लोकमत के व्यापक तबकों की आकांक्षाओं को व्यक्त किया गया है।

एक ऐसा न्यूनतम ठोस कार्यक्रम, जिससे तमाम जापान-विरोधी जनवादी पार्टियां सहमत हों, अत्यन्त आवश्यक है, तथा उपर्युक्त

कार्यक्रम के आधार पर उनके साथ सलाह-मशविरा करने को हम तैयार हैं। अलग-अलग पार्टियों की अलग-अलग मांगें हो सकती हैं, लेकिन सभी पार्टियों को एक मुश्तरका कार्यक्रम पर एकराय हो जाना चाहिए।

जहां तक क्वोमिन्ताङ क्षेत्रों का ताल्लुक है, इस प्रकार का कार्यक्रम अब भी जनता की मांग की ही मंजिल में है; जहां तक जापान-अधिकृत क्षेत्रों का ताल्लुक है, यह एक ऐसा कार्यक्रम है जिसे पूरा करने के लिए इन क्षेत्रों को फिर से प्राप्त करना जरूरी है, केवल सशस्त्र विद्रोह के लिए भूमिगत शक्तियों का संगठन करने की बात को छोड़कर; जहां तक मुक्त क्षेत्रों का ताल्लुक है, यह एक ऐसा कार्यक्रम है जिसे पहले ही अमल में उतारा जा चुका है, उतारा जा रहा है और लगातार उतारा जाना चाहिए।

चीनी जनता की जिन फौरी मांगों अथवा जिस ठोस कार्यक्रम की रूपरेखा ऊपर पेश की गई है, उसमें बहुत सी ऐसी महत्वपूर्ण युद्धकालीन और युद्धोत्तरकालीन समस्याएं शामिल हैं जिनका और अधिक स्पष्टीकरण किया जाना चाहिए। नीचे इन समस्याओं की व्याख्या करते समय हम क्वोमिन्ताङ के मुख्य शासक गुट के कुछ गलत दृष्टिकोणों की आलोचना करेंगे तथा साथ ही अन्य लोगों द्वारा उठाए गए कुछ सवालों का जवाब भी देंगे।

१. जापानी आक्रमणकारियों को पूरी तरह नष्ट कर दो, बीच में ही सुलह-समझौता करने की इजाजत हरगिज न दो

काहिरा सम्मेलन[1] ने ठीक ही फैसला किया है कि जापानी आक्रमणकारियों को बिनाशर्त आत्मसमर्पण करने के लिए मजबूर

किया जाए। लेकिन अब जापानी आक्रमणकारी सुलह-शान्ति स्थापित करने के लिए पर्दे के पीछे कार्यवाही कर रहे हैं, जबकि क्वोमिन्ताङ सरकार के भीतर मौजूद जापान-परस्त तत्व नानकिङ की कठपुतली सरकार के जरिए जापान के गुप्त दूतों से सांठगांठ कर रहे हैं, तथा इसकी जरा भी रोकथाम नहीं की जा रही। इसलिए बीच में ही सुलह-समझौता करने का खतरा अभी पूरी तरह नहीं टला। काहिरा सम्मेलन ने एक अन्य अच्छा फैसला किया, यानी चार उत्तर-पूर्वी प्रान्तों और थाइवान व फङहू द्वीपसमूह को चीन को लौटा दिया जाए। लेकिन क्वोमिन्ताङ सरकार की वर्तमान नीतियों को देखते हुए उस पर सम्भवतया इस बात के लिए भरोसा नहीं किया जा सकता कि वह दूर यालू नदी तक लड़ेगी और हमारे समूचे खोए हुए प्रदेश को फिर से प्राप्त कर लेगी। ऐसी परिस्थिति में चीनी जनता को आखिर क्या करना चाहिए? उसे यह मांग करनी चाहिए कि क्वोमिन्ताङ सरकार जापानी आक्रमणकारियों को पूरी तरह नष्ट कर दे तथा बीच में ही सुलह-समझौता करने की इजाजत हरगिज न दे। सुलह-समझौता करने की सभी साजिशों को फौरन बन्द कर दिया जाए। चीनी जनता को यह मांग करनी चाहिए कि क्वोमिन्ताङ सरकार निष्क्रिय प्रतिरोध की अपनी वर्तमान नीति को छोड़ दे तथा अपनी समूची फौजी शक्ति को जापान के खिलाफ सक्रिय युद्ध में लगा दे। चीनी जनता को चाहिए कि वह अपनी खुद की सशस्त्र सेनाओं – आठवीं राह सेना, नई चौथी सेना और जनता की अन्य फौजी यूनिटों – का विस्तार करे, तथा जहां भी दुश्मन पहुंच चुका है, वहां अपनी ही पहलकदमी से बड़े पैमाने पर जापान-विरोधी सशस्त्र सेनाओं का विकास करे, तथा उसे चाहिए

कि वह संश्रयकारी देशों के साथ प्रत्यक्ष तालमेल कायम करके युद्ध के जरिए, समूचे खोए हुए प्रदेश को फिर से प्राप्त करने की तैयारी करे ; किसी भी परिस्थिति में उसे क्वोमिन्ताङ पर पूर्ण रूप से निर्भर नहीं रहना चाहिए। जापानी आक्रमणकारियों को परास्त करना चीनी जनता का पवित्र अधिकार है। अगर प्रतिक्रियावादियों ने उसे इस अधिकार से वंचित करने, उसकी जापान-विरोधी गतिविधियों का दमन करने अथवा उसकी शक्ति का उन्मूलन करने की कोशिश की, तो समझाने-बुझाने में असफल होने पर चीनी जनता को आत्मरक्षा के लिए दृढ़ता से जवाबी प्रहार करना चाहिए। कारण, चीनी प्रतिक्रियावादियों की इस प्रकार की राष्ट्रद्रोही कार्यवाही से केवल जापानी आक्रमणकारियों को ही मदद मिलती है।

२. क्वोमिन्ताङ की एकदलीय तानाशाही को खत्म करो, जनवादी मिलीजुली सरकार कायम करो

जापानी आक्रमणकारियों का पूरी तरह सफाया करने के लिए यह जरूरी है कि समूचे देश में जनवादी सुधार लागू किए जाएं। लेकिन यह तब तक नामुमकिन है जब तक क्वोमिन्ताङ की एकदलीय तानाशाही को खत्म नहीं किया जाता और एक जनवादी मिलीजुली सरकार कायम नहीं की जाती।

क्वोमिन्ताङ की एकदलीय तानाशाही वास्तव में क्वोमिन्ताङ के भीतर मौजूद जन-विरोधी गुट की तानाशाही है, तथा यह तानाशाही वास्तव में चीन की राष्ट्रीय एकता को नष्ट करती है, युद्ध में क्वोमिन्ताङ के मोर्चे पर पराजय की सृष्टि करती है तथा चीनी जनता की जापान-विरोधी शक्तियों को गोलबन्द करने व एकीकृत

करने में खड़ी होने वाली बुनियादी बाधा है। चीनी जनता प्रतिरोध-युद्ध के आठ वर्ष के कड़वे अनुभवों के जरिए इस तानाशाही के अपराधों से पूरी तरह परिचित हो चुकी है, और वह कुदरती तौर पर उसे फौरन खत्म करने की मांग करती है। यह जन-विरोधी तानाशाही गृहयुद्ध का पोषण भी करती है, तथा यदि इसे फौरन खत्म न कर दिया गया तो यह एक बार फिर चीनी जनता के सामने गृहयुद्ध का संकट ला खड़ा करेगी।

इस जन-विरोधी तानाशाही को खत्म करने के बारे में चीनी जनता ने इतनी व्यापक और इतनी गगनभेदी आवाज उठाई है कि क्वोमिन्ताङ अधिकारी खुद भी खुलेआम इस "राजनीतिक अभिभावकता को जल्दी से जल्दी समाप्त करने" की बात मानने को मजबूर हो गए हैं, जिससे यह जाहिर होता है कि इस "राजनीतिक अभिभावकता" अथवा एकदलीय तानाशाही ने उसके जन-समर्थन को और उसकी प्रतिष्ठा को कितना आघात पहुंचाया है। चीन में एक भी व्यक्ति ऐसा नहीं है जो अब भी यह कहने की जुर्रत रखता हो कि "राजनीतिक अभिभावकता" अथवा एकदलीय तानाशाही कोई अच्छी चीज है, या यह कि उसे भंग अथवा "समाप्त" नहीं किया जाना चाहिए, तथा यह बात परिस्थिति में एक भारी परिवर्तन की द्योतक है।

यह निश्चित है और इसमें तनिक भी सन्देह नहीं कि उसे "समाप्त" कर दिया जाना चाहिए। लेकिन यह कैसे किया जाए, इसके बारे में अलग-अलग राय हैं। कुछ लोग कहते हैं, उसे तुरन्त समाप्त कर दो और अस्थाई जनवादी मिलीजुली सरकार कायम करो। दूसरे लोग कहते हैं, जरा इन्तजार करो, "राष्ट्रीय एसेम्बली" बुलाओ

और "राजसत्ता जनता को वापस लौटा दो", मिलीजुली सरकार को नहीं।

इसका क्या मतलब है ?

इसका मतलब यह है कि काम करने के दो तरीके होते हैं, ईमानदारी का तरीका और बेईमानी का तरीका।

पहला, ईमानदारी का तरीका है। ईमानदारी का तरीका यह है कि क्वोमिन्ताङ की एकदलीय तानाशाही को खत्म करने का फौरन ऐलान किया जाए, एक अस्थाई केन्द्रीय सरकार कायम की जाए, जिसमें क्वोमिन्ताङ, कम्युनिस्ट पार्टी और जनवादी लीग के तथा किसी भी पार्टी से सम्बन्ध न रखने वाले लोगों के प्रतिनिधि शामिल हों, तथा राजनीतिक कार्यवाही के एक जनवादी कार्यक्रम का ऐलान किया जाए, जैसे चीनी जनता की वे फौरी मांगें जिन्हें हमने ऊपर पेश किया है, तथा इस कार्यक्रम का मकसद होना चाहिए राष्ट्रीय एकता की पुनर्स्थापना करना और जापानी आक्रमणकारियों को परास्त करना। विभिन्न पार्टियों के और किसी भी पार्टी से सम्बन्ध न रखने वाले लोगों के प्रतिनिधियों का एक गोलमेज सम्मेलन बुलाया जाना चाहिए, जिसमें इन मामलों पर बहस की जाए और मतैक्य कायम किया जाए, और इसके बाद उसके अनुरूप कार्यवाही की जानी चाहिए। यह एकता का रास्ता है, जिसका चीनी जनता दृढ़ता-पूर्वक समर्थन करेगी।

दूसरा, बेईमानी का तरीका है। बेईमानी का तरीका यह है कि व्यापक जन-समुदाय की तथा सभी जनवादी पार्टियों की मांगों की अवहेलना करना, तथा क्वोमिन्ताङ के जन-विरोधी गुट की मुट्ठी में मौजूद तथाकथित राष्ट्रीय एसेम्बली बुलाने और उसे एक ऐसा

"संविधान" स्वीकार करने के लिए मजबूर करना जो अमल में जनवाद-विरोधी होगा और उक्त गुट की तानाशाही को सम्बल प्रदान करेगा, और जिसका मकसद होगा एक गैरकानूनी "राष्ट्रीय सरकार" को – एक ऐसी सरकार को जिसे चुपचाप चन्द दर्जन क्वोमिन्ताङ सदस्यों को नियुक्त करके जनता पर लाद दिया गया है तथा लोकमत में जिसकी कतई कोई बुनियाद नहीं है – कानूनी लबादा पहनाना तथा इस प्रकार "राजसत्ता जनता को वापस लौटा देने" का ढोंग रचना जबकि वास्तव में उसे क्वोमिन्ताङ के भीतर मौजूद उसी जन-विरोधी गुट को "वापस लौटा देना"। जो भी इससे सहमत नहीं होगा, उस पर "जनवाद" और "एकीकरण" को तहस-नहस करने का इलजाम लगाया जाएगा, जो बाद में उसके खिलाफ दण्डात्मक कार्यवाही करने का "कारण" बन जाएगा। यह फूट का रास्ता है, जिसका चीनी जनता दृढ़ता से विरोध करेगी।

इस फूटपरस्त नीति के अनुरूप हमारे जन-विरोधी सूरमा जो कदम उठाने की तैयारी कर रहे हैं, उनसे शायद वे अपने सर्वनाश की ओर बढ़ते जाएंगे। वे लोग खुद अपने ही गले में फन्दा डाल रहे हैं तथा उसे कस रहे हैं, और यह फन्दा "राष्ट्रीय एसेम्बली" है। उनका इरादा यह है कि "राष्ट्रीय एसेम्बली" को एक जादू के डण्डे के रूप में इस्तेमाल करके पहले, मिलीजुली सरकार की स्थापना को रोका जाए, दूसरे, अपनी तानाशाही कायम रखी जाए तथा तीसरे, गृहयुद्ध का औचित्य सिद्ध करने के लिए कोई कारण गढ़ लिया जाए। लेकिन इतिहास का तर्क उनकी इच्छा के विपरीत चलता है, और वे "किसी बड़े पत्थर को उठाकर खुद अपने ही पांव तोड़ बैठेंगे"। कारण, अब यह बात सभी लोगों के सामने स्पष्ट हो चुकी

है कि क्वोमिन्ताङ क्षेत्रों की जनता को कोई आजादी हासिल नहीं है और जापान-अधिकृत क्षेत्रों की जनता चुनाव में हिस्सा नहीं ले सकती, जबकि मुक्त क्षेत्रों को, जहां आजादी है, क्वोमिन्ताङ सरकार मान्यता नहीं देती। ऐसी हालत में भला राष्ट्रीय प्रतिनिधि कैसे हो सकते हैं? भला "राष्ट्रीय एसेम्बली" कैसे हो सकती है? जिस राष्ट्रीय एसेम्बली के बारे में वे लोग शोरगुल मचा रहे हैं वह एक ऐसी एसेम्बली है जिसे क्वोमिन्ताङ तानाशाही ने आज से आठ वर्ष पहले गृहयुद्ध काल में हर बारीकी के साथ जैसे-तैसे रच डाला था। अगर इस प्रकार की एसेम्बली बुलाई गई, तो समूचे देश की जनता अनिवार्य रूप से इसके खिलाफ उठ खड़ी होगी, तथा यह पूछा जा सकता है कि हमारे जन-विरोधी सूरमा इस असमंजस की स्थिति से कैसे उबरेंगे? सब बातों की एक बात, इस बोगस राष्ट्रीय एसेम्बली को बुलाकर वे लोग खुद अपने ही विनाश को आमंत्रित कर लेंगे।

क्वोमिन्ताङ की एकदलीय तानाशाही को खत्म करने के लिए हम कम्युनिस्टों का सुझाव है कि दो कदम उठाए जाएं। पहले, मौजूदा मंजिल में सभी पार्टियों के और किसी भी पार्टी से सम्बन्ध न रखने वाले लोगों के प्रतिनिधियों की सहमति से एक अस्थाई मिलीजुली सरकार बनाई जाए। दूसरे, अगली मंजिल में स्वतंत्र और निर्बन्ध चुनावों के जरिए एक राष्ट्रीय एसेम्बली बुलाई जाए तथा एक नियमित मिलीजुली सरकार बनाई जाए। दोनों ही स्थितियों में एक मिलीजुली सरकार बनाई जाएगी, जिसमें उन सभी वर्गों और राजनीतिक पार्टियों के प्रतिनिधि जो इसमें शामिल होने की इच्छा रखते हों, एक जनवादी मुश्तरका कार्यक्रम के आधार पर, आज जापान के खिलाफ लड़ने के लिए और कल राष्ट्रीय निर्माण के लिए एकताबद्ध होकर संघर्ष करेंगे।

यही एकमात्र रास्ता है जिस पर चीन चल सकता है, चाहे क्वोमिन्ताङ अथवा अन्य पार्टियों, ग्रुपों या व्यक्तियों का इरादा कुछ भी क्यों न हो, चाहे वे इस बात को पसन्द करें अथवा न करें तथा चाहे वे इसके प्रति जागरूक हों अथवा न हों। यह एक ऐतिहासिक नियम है, एक अदम्य धारा है जिसे दुनिया की कोई ताकत मोड़ नहीं सकती।

इस सम्बन्ध में और जनवादी सुधार से ताल्लुक रखने वाली तमाम अन्य समस्याओं के बारे में, हम कम्युनिस्ट यह ऐलान करते हैं कि हालांकि क्वोमिन्ताङ अधिकारी अब भी बड़ी हठधर्मी के साथ अपनी गलत नीतियों पर अड़े हुए हैं और समझौता-वार्ता का इस्तेमाल वक्त हासिल करने और लोकमत को धोखा देने के लिए कर रहे हैं, फिर भी ज्योंही वे लोग यह जाहिर करेंगे कि वे अपनी वर्तमान गलत नीतियों को छोड़ने को तैयार हैं और जनवादी सुधार लागू करने को सहमत हैं, हम उनके साथ फिर से समझौता-वार्ता शुरू करने को तैयार हो जाएंगे। लेकिन समझौता-वार्ता प्रतिरोध, एकता और जनवाद के आम उसूल पर आधारित होनी चाहिए, तथा हम लोग किन्हीं भी ऐसे तथाकथित उपायों, योजनाओं अथवा खोखले ऐलानों को मंजूर नहीं करेंगे जिनमें इस आम उसूल की अवहेलना की गई हो, फिर चाहे वे कितने ही आकर्षक क्यों न हों।

३. जनता के लिए आजादी

इस समय चीनी जनता के आजादी के संघर्ष का प्राथमिक और मुख्य निशाना जापानी आक्रमणकारी हैं। लेकिन क्वोमिन्ताङ

सरकार उसे आजादी से वंचित करके और उसके हाथ-पांव बांधकर, उसे जापानी आक्रमणकारियों के खिलाफ लड़ने से रोक रही है। जब तक यह समस्या हल नहीं होती, तब तक राष्ट्र की सभी जापान-विरोधी शक्तियों को गोलबन्द और एकीकृत करना असम्भव होगा। जनता को बन्धन-मुक्त करके उसे जापान का प्रतिरोध करने, एकताबद्ध हो जाने और जनवाद को प्राप्त करने में समर्थ बनाने के लिए ही हमारे कार्यक्रम में इस प्रकार की मांगें पेश की गई हैं, जैसे एकदलीय तानाशाही को खत्म करना; मिलीजुली सरकार कायम करना; खुफिया पुलिस को भंग करना; दमनकारी कानूनों और आदेशों को रद्द करना; चीनी गद्दारों, जासूसों, जापान-परस्त तत्वों, फासिस्टों और भ्रष्टाचारी अफसरों को सजा देना; राजनीतिक बन्दियों को रिहा करना; सभी जनवादी पार्टियों व ग्रुपों की कानूनी हैसियत को मान्यता देना; मुक्त क्षेत्रों को घेरने अथवा उन पर आक्रमण करने वाली फौजों को वापस बुलाना; मुक्त क्षेत्रों को मान्यता देना; "पाओ-च्या" व्यवस्था को खत्म करना; तथा अर्थव्यवस्था, संस्कृति और जन-आन्दोलन से सम्बन्धित अनेक अन्य मांगें।

आजादी एक ऐसी चीज है जिसे जनता संघर्ष के जरिए हासिल करती है, इसे किसी के अनुग्रह के रूप में प्राप्त नहीं किया जा सकता। चीन के मुक्त क्षेत्रों की जनता आजादी हासिल कर चुकी है, तथा अन्य क्षेत्रों की जनता भी आजादी हासिल कर सकती है और उसे आजादी हासिल करनी चाहिए। चीनी जनता को जितनी ज्यादा आजादी हासिल होगी और उसकी संगठित जनवादी शक्तियां जितनी ज्यादा मजबूत होंगी, उतनी ही ज्यादा एक एकीकृत और

अस्थाई मिलीजुली सरकार बनाने की सम्भावना बढ़ती जाएगी। जहां एक बार इस तरह की मिलीजुली सरकार कायम हो गई, तो वह जनता को पूरी आजादी देगी और इस प्रकार अपनी बुनियाद को भी मजबूत बनाएगी। सिर्फ तभी जापानी आक्रमणकारियों का तख्ता उलट देने के बाद समूचे देश में एक स्वतंत्र और निर्बन्ध चुनाव करना, एक जनवादी राष्ट्रीय एसेम्बली बनाना तथा एक एकीकृत और नियमित मिलीजुली सरकार बनाना सम्भव हो सकेगा। जब तक जनता को आजादी हासिल नहीं होती, तब तक जनता द्वारा सच्चे मायनों में चुनी गई कोई भी राष्ट्रीय एसेम्बली अथवा सरकार नहीं हो सकती। क्या यह बात बिलकुल स्पष्ट नहीं है?

भाषण, प्रेस, सभा, संगठन, राजनीतिक आस्था व धार्मिक विश्वास की आजादियां तथा व्यक्तिगत आजादी जनता की अत्यन्त महत्वपूर्ण आजादियां हैं। चीन में केवल मुक्त क्षेत्रों में ही जनता को ये आजादियां पूर्ण रूप से हासिल हुई हैं।

१९२५ में डा० सुन यात-सेन ने अपनी मृत्यु से ठीक पहले की गई वसीयत में ऐलान किया था:

> पिछले चालीस वर्षों से मैं चीन के लिए आजादी और समानता प्राप्त करने के उद्देश्य से राष्ट्रीय क्रान्ति के कार्य में जुटा हुआ हूं। इन चालीस वर्षों के अनुभवों से मुझे गहराई से मालूम हो गया है कि इस उद्देश्य को पूरा करने के लिए हमें व्यापक जन-समुदाय को जागृत करना चाहिए और दुनिया के हर ऐसे राष्ट्र के साथ, जो हमारे साथ समानता का बर्ताव करे, एकता कायम करके मुश्तरका संघर्ष करना चाहिए।

डा० सुन के वेत्रफा उत्तराधिकारी, जो उनके प्रति विश्वासघात कर चुके हैं, व्यापक जन-समुदाय को जागृत करने के बदले उसका उत्पीड़न करते हैं तथा उसे भाषण, प्रेस, सभा, संगठन, राजनीतिक आस्था व धार्मिक विश्वास की आजादियों तथा व्यक्तिगत आजादी से पूरी तरह वंचित रखते हैं। वे लोग कम्युनिस्ट पार्टी, आठवीं राह सेना, नई चौथी सेना और मुक्त क्षेत्रों पर, जो सच्चे मायनों में व्यापक जन-समुदाय को जागृत कर रहे हैं और उसकी आजादियों व अधिकारों की रक्षा कर रहे हैं, "गद्दार पार्टी", "गद्दार सेना" और "गद्दार क्षेत्र" का लेबिल लगाते हैं। हम उम्मीद करते हैं कि सही को गलत में बदलने का यह सिलसिला जल्दी ही खत्म कर दिया जाएगा। यदि इसमें देर हुई तो चीनी जनता अपना तमाम धैर्य खो बैठेगी।

४. जनता का एकीकरण

जापानी आक्रमणकारियों को नष्ट करने, गृहयुद्ध की रोकथाम करने और एक नए चीन का निर्माण करने के लिए यह आवश्यक है कि एक विभाजित चीन को एक एकीकृत चीन में बदल दिया जाए। चीनी जनता का यही ऐतिहासिक कार्य है।

लेकिन चीन को एकीकृत कैसे किया जाए? एक डिक्टेटर के तानाशाही एकीकरण के जरिए अथवा जनता के जनवादी एकीकरण के जरिए? य्वान श-खाए के जमाने से ही उत्तरी युद्ध-सरदारों ने तानाशाही एकीकरण पर जोर दिया था। लेकिन नतीजा क्या निकला? उनकी इच्छा के विपरीत, जो कुछ उनके हाथ लगा वह एकीकरण नहीं बल्कि विभाजन था, और अन्त में उन्हें सत्ता से

ही हाथ धोना पड़ा। य्वान श-खाए के ही पदचिन्हों पर चलकर, क्वोमिन्ताङ के जन-विरोधी गुट ने तानाशाही एकीकरण करना चाहा तथा पूरे दस साल तक गृहयुद्ध चलाया और इसका सिर्फ यही नतीजा हुआ कि जापानी आक्रमणकारियों को चीन के भीतर आने का मौका मिल गया जबकि वह खुद पीछे हटकर अमेइ पहाड़* में जा पहुंचा। और अब इस पहाड़ की चोटी से वह फिर एक बार गला फाड़कर तानाशाही एकीकरण का अपना सिद्धान्त बघार रहा है। आखिर वह किसके लिए गला फाड़ रहा है? क्या कोई सच्चा देशभक्त चीनी उसकी बात सुनेगा? सोलह वर्ष तक उत्तरी युद्ध-सरदारों के शासन में और अठारह वर्ष तक क्वोमिन्ताङ के तानाशाही शासन में रहने के बाद, जनता को काफी अनुभव प्राप्त हो गया है और उसकी आंखों में जांचने-परखने की शक्ति पैदा हो गई है। वह चाहती है कि जन-समुदाय द्वारा जनवादी एकीकरण किया जाए न कि डिक्टेटर द्वारा तानाशाही एकीकरण। काफी समय पहले १९३५ में ही हम कम्युनिस्टों ने जापान-विरोधी राष्ट्रीय संयुक्त मोर्चे की नीति पेश की थी और तभी से हम इसकी स्थापना के लिए संघर्ष करते रहे हैं। १९३९ में, जब क्वोमिन्ताङ "दुश्मन पार्टियों की कार्यवाहियों की रोकथाम करने के उपाय" के नाम से अपने प्रतिक्रियावादी उपायों को लागू कर रही थी तथा इस प्रकार आत्म-समर्पण, फूट और प्रतिगमन का खतरा पैदा कर रही थी, और जब वह अपने तानाशाही एकीकरण के बारे में शोरगुल मचा रही थी, तो हमने ऐलान किया था: एकीकरण प्रतिरोध के आधार पर किया जाना चाहिए न कि आत्मसमर्पण के आधार पर, एकता के आधार पर किया जाना चाहिए न कि फूट के आधार पर, प्रगति के आधार

पर किया जाना चाहिए न कि प्रतिगमन के आधार पर। केवल प्रतिरोध, एकता और प्रगति के आधार पर किया गया एकीकरण ही सच्चा है, किसी भी अन्य प्रकार का एकीकरण झूठा है।" छै वर्ष बीत चुके हैं, लेकिन मसला वैसे का वैसा ही बना हुआ है।

क्या जनता को स्वतंत्रता या जनवाद हासिल हुए बिना एकीकरण कायम किया जा सकता है? ज्योंही उसे ये दोनों हासिल हो जाएंगे तो एकीकरण भी कायम हो जाएगा। चीनी जनता द्वारा स्वतंत्रता, जनवाद और मिलीजुली सरकार के लिए चलाया गया आन्दोलन साथ ही एकीकरण के लिए चलाया गया आन्दोलन भी है। जब हम अपने ठोस कार्यक्रम में स्वतंत्रता, जनवाद और मिलीजुली सरकार के बारे में बहुत सी मांगें पेश करते हैं, तो हमारा मकसद साथ ही एकीकरण कायम करना भी होता है। यह एक साधारण सूझबूझ की बात है कि जब तक क्वोमिन्ताङ के जन-विरोधी गुट की तानाशाही खत्म नहीं कर दी जाएगी और एक जनवादी मिलीजुली सरकार कायम नहीं कर दी जाएगी, तब तक न सिर्फ क्वोमिन्ताङ क्षेत्रों में कोई जनवादी सुधार करना तथा वहां जापानी आक्रमणकारियों को परास्त करने के लिए सेना और जनता को गोलबन्द करना असम्भव होगा बल्कि गृहयुद्ध का संकट फिर पैदा हो जाएगा। क्या वजह है कि बहुत से जनवादी व्यक्ति, चाहे वे किसी पार्टी से सम्बन्ध रखते हों अथवा न रखते हों, जिनमें क्वोमिन्ताङ के बहुत से जनवादी व्यक्ति भी शामिल हैं, एक स्वर से यह मांग कर रहे हैं कि मिलीजुली सरकार कायम की जाए? इसका कारण यह है कि वे वर्तमान संकट से स्पष्ट रूप से परिचित हैं तथा यह समझते हैं कि इस पर काबू पाने तथा दुश्मन के खिलाफ एकता कायम करने और राष्ट्रीय

निर्माण के लिए एकता कायम करने का कोई अन्य रास्ता नहीं है।

५. जन-सेना

एक ऐसी सेना के बिना जो जनता के पक्ष में खड़ी हो, चीनी जनता के लिए आजादी और एकीकरण हासिल करना, मिलीजुली सरकार कायम करना, जापानी आक्रमणकारियों को पूर्ण रूप से परास्त करना तथा एक नए चीन का निर्माण करना असम्भव है। इस समय जनता का पूर्ण रूप से पक्षपोषण करने वाली सैन्य-शक्तियां केवल मुक्त क्षेत्रों की आठवीं राह सेना और नई चौथी सेना ही हैं, जो ज्यादा बड़ी नहीं हैं; और वे अपर्याप्त हैं। फिर भी क्वोमिन्ताङ का जन-विरोधी गुट मुक्त क्षेत्रों की सेनाओं को तहस-नहस करने और उनका सफाया करने के लिए लगातार साजिशें रच रहा है। १९४४ में क्वोमिन्ताङ सरकार ने तथाकथित मैमोरेण्डम प्रस्तुत करके यह मांग की कि कम्युनिस्ट पार्टी को मुक्त क्षेत्रों की सशस्त्र सैन्य-शक्तियों का ४ बटा ५ हिस्सा "एक निश्चित अवधि के अन्दर भंग कर देना" चाहिए। १९४५ में, अभी हाल ही में हुई समझौता-वार्ता के दौरान, उसने यह मांग भी पेश की कि कम्युनिस्ट पार्टी मुक्त क्षेत्रों की सभी सेनाओं को उसके हवाले कर दे, तथा इसके बाद क्वोमिन्ताङ सरकार कम्युनिस्ट पार्टी को "कानूनी हैसियत" दे देगी।

वे लोग कम्युनिस्टों से कहते हैं, "अपनी फौजों को हमारे हवाले कर दो, और हम तुम्हें आजादी दे देंगे।" उनके इस सिद्धान्त के मुताबिक एक ऐसी राजनीतिक पार्टी को, जिसके पास अपनी कोई सेना नहीं है, आजादी मिल जानी चाहिए। फिर भी चीनी कम्युनिस्ट

पार्टी को १९२४-२७ के काल में, जब उसके पास अपनी एक छोटी सी सेना थी, जो आजादी मिली हुई थी वह क्वोमिन्ताङ सरकार की "पार्टी-शुद्धि" और कत्लेआम की नीतियों के कारण खत्म हो गई। और न आज चीनी जनवादी लीग को और न क्वोमिन्ताङ के भीतर मौजूद जनवादी व्यक्तियों को ही, जिनके पास कोई सशस्त्र सैन्य-शक्ति नहीं है, कोई आजादी मिली हुई है। जरा क्वोमिन्ताङ शासन के अधीन मजदूरों, किसानों व विद्यार्थियों तथा सांस्कृतिक, शैक्षणिक व औद्योगिक जगतों के प्रगतिशील रुझान रखने वाले सभी लोगों को लीजिए – पिछले अठारह वर्षों से उनमें से किसी के पास कोई सेना नहीं रही, तथा उनमें से किसी को भी कोई आजादी हासिल नहीं हो सकी। क्या यह हो सकता है कि उपरोक्त तमाम जनवादी पार्टियों और जनता को आजादी से इसलिए वंचित रखा गया क्योंकि उन्होंने सेनाओं को संगठित किया, "सामन्ती पृथकतावाद" पर अमल किया, "गद्दार क्षेत्रों" की स्थापना की तथा "सरकारी फरमानों और फौजी आदेशों" का उल्लंघन किया? नहीं, हरगिज नहीं। इसके विपरीत उन्हें आजादी से ठीक इसलिए वंचित किया गया क्योंकि उन्होंने ऐसा नहीं किया।

"सेना राज्य की होती है" – यह बात बिलकुल सही है, और दुनिया में कोई भी सेना ऐसी नहीं है जो किसी न किसी राज्य की न हो। लेकिन यह किस किस्म का राज्य है? बड़े-बड़े जमींदारों, बड़े-बड़े बैंक-मालिकों और बड़े-बड़े दलाल-पूंजीपतियों की सामन्ती व फासिस्ट तानाशाही वाला राज्य अथवा व्यापक जन-समुदाय का नव-जनवादी राज्य? चीन में केवल नव-जनवादी राज्य की ही स्थापना होनी चाहिए, तथा इसके आधार पर चीन को एक

नव-जनवादी मिलीजुली सरकार की स्थापना करनी चाहिए; चीन की तमाम सेनाओं को ऐसे राज्य की ऐसी ही सरकार के अधिकार में होना चाहिए, ताकि वे जनता की आजादी की हिफाजत कर सकें तथा विदेशी आक्रमणकारियों का कारगर रूप से मुकाबला कर सकें। जब चीन में नव-जनवादी मिलीजुली सरकार की स्थापना होगी, तब चीन के मुक्त क्षेत्र अपनी सेनाओं को उसके हवाले कर देंगे। लेकिन क्वोमिन्ताङ को भी अपनी समूची सेनाओं को उसी समय उसके हवाले करना होगा।

१९२४ में डा० सुन यात-सेन ने कहा था, "आज के दिन को राष्ट्रीय क्रान्ति में एक नए युग के सूत्रपात का द्योतक मानना चाहिए।...पहला कदम है जनता के साथ सशस्त्र सैन्य-शक्तियों की एकता कायम करना, तथा दूसरा कदम है उन्हें जनता की सशस्त्र सैन्य-शक्तियों में बदल देना।"[९] चूंकि आठवीं राह सेना और नई चौथी सेना ने ठीक इसी नीति पर अमल किया, तथा वे "जनता की सशस्त्र सैन्य-शक्तियां" यानी जन-सेना बन गईं, इसलिए उन्हें विजयें प्राप्त हो सकीं। उत्तरी अभियान के आरम्भिक काल में क्वोमिन्ताङ सेनाओं ने डा० सुन यात-सेन द्वारा निर्धारित "पहला कदम" उठाया और इसलिए उन्होंने जीतें हासिल कीं। उत्तरी अभियान के अन्तिम काल में उन्होंने "पहले कदम" को भी तिलांजलि दे दी, जन-विरोधी दृष्टिबिन्दु अपनाया तथा तब से आज तक वे अधिकाधिक भ्रष्ट और पतित होती चली गई हैं; अन्दरूनी युद्ध को तो वे बड़ी लगन से लड़ती हैं, लेकिन बाहरी युद्ध लड़ते समय अनिवार्य रूप से अनभिज्ञता की स्थिति में पड़ जाती हैं। क्वोमिन्ताङ सेना में हर ऐसे देशभक्त अफसर को, जिसके पास जमीर है, सुन यात-सेन की

भावना को पुनर्जीवित करने और अपनी फौजों का रूपान्तर करने के कार्य में जुट जाना चाहिए।

पुरानी सेनाओं का रूपान्तर करने के कार्य में उन तमाम अफसरों को समुचित शिक्षा दी जानी चाहिए जिन्हें शिक्षित किया जा सकता है, ताकि उन्हें अपने पुराने घिसेपिटे दृष्टिकोण से पिण्ड छुड़ाने तथा सही दृष्टिकोण अपनाने में मदद मिल सके और इस प्रकार वे जन-सेना में शामिल होकर उसकी सेवा कर सकें।

समूचे देश की जनता का कर्तव्य है कि वह चीनी जनता की सेना का निर्माण करने के लिए संघर्ष करे। यदि जनता के पास एक जन-सेना नहीं है, तो उसके पास कुछ भी नहीं है। इस मसले पर कोरे सिद्धान्त नहीं बघारने चाहिए।

हम कम्युनिस्ट लोग चीनी सेना का रूपान्तर करने के कार्य का समर्थन करने को तैयार हैं। आठवीं राह सेना और नई चौथी सेना को चाहिए कि वे उन तमाम सेनाओं को, जो जनता के साथ एकता कायम करने को, और चीन के मुक्त क्षेत्रों का विरोध करने के बजाय जापानी आक्रमणकारियों का विरोध करने को तैयार हैं, अपनी मित्र-सेनाएं समझें तथा उनकी समुचित सहायता करें।

६. भूमि-समस्या

जापानी हमलावरों का सफाया करने और एक नए चीन का निर्माण करने के लिए, भूमि-व्यवस्था में सुधार करना और किसानों को मुक्ति दिलाना आवश्यक है। डा० सुन यात-सेन की "जमीन जोतने वालों को" की स्थापना हमारी क्रान्ति के मौजूदा काल में, जिसका स्वरूप अभी पूंजीवादी-जनवादी है, बिलकुल सही है।

हम ऐसा क्यों कहते हैं कि मौजूदा काल में हमारी क्रान्ति का स्वरूप पूंजीवादी-जनवादी है? ऐसा कहने से हमारा तात्पर्य यह है कि इस क्रान्ति का निशाना सामान्य तौर पर पूंजीपति वर्ग नहीं बल्कि राष्ट्रीय तथा सामन्ती उत्पीड़न है, इस क्रान्ति में हम जिन उपायों का इस्तेमाल कर रहे हैं उनका लक्ष्य सामान्य तौर पर निजी सम्पत्ति का खात्मा करना नहीं बल्कि उसकी हिफाजत करना है, और इस क्रान्ति के फलस्वरूप मजदूर वर्ग चीन को समाजवाद की ओर अग्रसर करने के लिए अपनी शक्ति का निर्माण कर सकेगा, यद्यपि साथ ही पूंजीवाद को भी काफी लम्बे अरसे तक उचित सीमा तक बढ़ने का अवसर दिया जाएगा। "जमीन जोतने वालों को" का मतलब है जमीन को सामन्ती शोषकों से लेकर किसानों को सौंप देना, सामन्ती जमींदारों की निजी सम्पत्ति को किसानों की निजी सम्पत्ति में बदल देना, तथा किसानों को सामन्ती भूमि-सम्बन्धों से मुक्ति दिलाना, जिससे कि एक कृषि-प्रधान देश एक औद्योगिक देश में रूपान्तरित हो सके। इस प्रकार "जमीन जोतने वालों को" की मांग का स्वरूप पूंजीवादी-जनवादी है न कि सर्वहारा-समाजवादी; यह सभी क्रान्तिकारी जनवादियों की मांग है, सिर्फ हम कम्युनिस्टों की ही नहीं। फर्क इतना है कि चीन की परिस्थितियों में सिर्फ हम कम्युनिस्ट लोग ही इस मांग को विशेष गम्भीरता के साथ लेते हैं, और केवल इसके बारे में बात ही नहीं करते हैं बल्कि इसे अमल में भी लाते हैं। क्रान्तिकारी जनवादी आखिर कौन लोग हैं? सर्वहारा वर्ग के अलावा, जो सबसे ज्यादा मुकम्मिल क्रान्तिकारी जनवादी हैं, किसान लोग क्रान्तिकारी जनवादियों का सबसे बड़ा समूह हैं। धनी किसानों को छोड़कर, जिनकी सामन्ती पृष्ठ-

भूमि है, किसानों की भारी बहुसंख्या सक्रियता के साथ "जमीन जोतने वालों को" की मांग करती है। शहर में रहने वाले निम्न-पूंजीपति वर्ग के लोग भी क्रान्तिकारी जनवादी हैं और "जमीन जोतने वालों को" की मांग उनके लिए भी लाभदायक साबित होगी, क्योंकि इससे कृषि के क्षेत्र में उत्पादक शक्तियों के विकास में मदद मिलेगी। राष्ट्रीय पूंजीपति वर्ग एक ढुलमुल वर्ग है – वह भी "जमीन जोतने वालों को" की मांग को मंजूर करता है क्योंकि उसे बाजारों की जरूरत है, लेकिन इस वर्ग के भी बहुत से लोग इस नारे से डरते हैं क्योंकि इनमें बहुत से लोगों का भूमि-सम्पत्ति के साथ सम्बन्ध है। डा० सुन यात-सेन चीन के सबसे पहले क्रान्तिकारी जनवादी थे। राष्ट्रीय पूंजीपति वर्ग के क्रान्तिकारी हिस्से तथा शहरी निम्न-पूंजीपति वर्ग और किसानों का प्रतिनिधित्व करते हुए, उन्होंने सशस्त्र क्रान्ति चलाई तथा "जमीन की मिलकियत का समानीकरण" और "जमीन जोतने वालों को" की स्थापनाओं का प्रतिपादन किया। परन्तु दुर्भाग्यवश, जब सत्ता उनके हाथ में थी उस समय उन्होंने पहलकदमी से भूमि-व्यवस्था में सुधार नहीं किया। और जब क्वोमिन्ताङ के जन-विरोधी गुट ने सत्ता हथिया ली, तो उसने पूरी तरह डा० सुन यात-सेन की स्थापनाओं के साथ विश्वासघात किया। यह वही गुट है जो आज बड़ी हठधर्मी के साथ "जमीन जोतने वालों को" की मांग का विरोध कर रहा है, क्योंकि यह बड़े-बड़े जमींदारों, बड़े-बड़े बैंक-मालिकों और बड़े-बड़े दलाल-पूंजीपतियों के तबके का प्रतिनिधित्व करता है। चूंकि चीन में केवल किसानों का प्रतिनिधित्व करने वाली कोई राजनीतिक पार्टी नहीं है और राष्ट्रीय पूंजीपति वर्ग की जो राजनीतिक पार्टियां

हैं उनके पास भूमि सम्बन्धी कोई मुकम्मिल कार्यक्रम नहीं है, इसलिए सिर्फ चीनी कम्युनिस्ट पार्टी ही, जिसने भूमि सम्बन्धी एक मुकम्मिल कार्यक्रम बनाया है और उस पर अमल किया है, किसानों के हितों के लिए ईमानदारी से संघर्ष किया है और इसीलिए किसानों की भारी बहुसंख्या को अपने महान संश्रयकारी के रूप में अपने पक्ष में कर लिया है, किसानों और तमाम दूसरे क्रान्तिकारी जनवादियों की नेता बन गई है।

१९२७ से १९३६ तक चीनी कम्युनिस्ट पार्टी ने भूमि-व्यवस्था में मुकम्मिल सुधार करने के लिए अनेक कदम उठाए और डा० सुन यात-सेन की "जमीन जोतने वालों को" की स्थापना को कार्यान्वित किया। यह क्वोमिन्ताङ का जन-विरोधी गुट ही था, डा० सुन यात-सेन के बेवफा उत्तराधिकारियों का गिरोह ही था, जिसने अपने खूंखार दांत और पंजे दिखाकर दस वर्षों तक "जमीन जोतने वालों को" की मांग के खिलाफ जन-विरोधी युद्ध किया।

चीनी कम्युनिस्ट पार्टी ने जापानी-आक्रमण-विरोधी युद्ध के काल में "जमीन जोतने वालों को" की नीति की जगह लगान और सूद कम करने की नीति अपनाकर एक बहुत बड़ी रियायत दी है। यह रियायत एक सही रियायत है क्योंकि इससे क्वोमिन्ताङ को प्रतिरोध-युद्ध में ले आने में मदद मिली है और मुक्त क्षेत्रों में युद्ध के लिए हम लोगों द्वारा किसानों की लामबन्दी के प्रति जमींदारों के प्रतिरोध में भी कमी आई है। अगर कोई विशेष बाधा पैदा न हुई, तो हम युद्ध के बाद भी इस नीति को जारी रखने के लिए तैयार रहेंगे, पहले लगान और सूद कम करने की नीति को समूचे देश में फैलाया जाएगा और उसके बाद "जमीन जोतने वालों को" की

नीति को कार्यान्वित करने के लिए कदम-ब-कदम उचित उपाय अपनाए जाएंगे।

फिर भी जिन लोगों ने डा० सुन यात-सेन के साथ विश्वासघात किया है, "जमीन जोतने वालों को" की मांग की बात तो दरकिनार, वे लगान और सूद कम करने की नीति का भी विरोध करते हैं। क्वोमिन्ताङ सरकार ने "लगान में २५ प्रतिशत कमी करने" के आदेश और ऐसे ही दूसरे आदेशों को, जिन्हें उसने खुद ही जारी किया है, लागू नहीं किया ; सिर्फ हम लोगों ने मुक्त क्षेत्रों में उन्हें लागू किया है, और इस अपराध के लिए मुक्त क्षेत्रों पर "गद्दार क्षेत्र" होने का लेबिल लगा दिया गया है।

जापानी-आक्रमण-विरोधी युद्ध के काल में दो मंजिलों, एक "राष्ट्रीय क्रान्ति" की मंजिल और दूसरी "जनवाद तथा जन-जीविका के लिए क्रान्ति" की मंजिल, का तथाकथित सिद्धान्त सामने आया है। यह सिद्धान्त गलत है।

"एक जबरदस्त दुश्मन से मुकाबला होने पर, हमें जनवादी सुधारों या जन-जीविका का सवाल नहीं उठाना चाहिए ; बेहतर यह होगा कि हम तब तक इन्तजार करें जब तक जापानी हमलावर देश से बाहर नहीं निकल जाते" – इस प्रकार का बेहूदा सिद्धान्त क्वोमिन्ताङ के जन-विरोधी गुट ने युद्ध में मुकम्मिल जीत न होने देने के लिए पेश किया है। फिर भी कुछ लोग ऐसे हैं जो इस सिद्धान्त के सुर में सुर मिला रहे हैं और इसके गुलाम बन गए हैं।

"एक जबरदस्त दुश्मन से मुकाबला होने पर, हमारे लिए जापानी हमलावरों के खिलाफ आधार-क्षेत्रों का निर्माण करना और उनके हमलों का प्रतिरोध करना असम्भव है, जब तक कि हम जनवाद और जन-जीविका के सवाल को हल नहीं कर लेते" – यह बात चीनी कम्युनिस्ट पार्टी कहती रही है और इससे भी आगे बढ़कर इस पर अमल कर चुकी है और शानदार नतीजे हासिल कर चुकी है।

जापानी-आक्रमण-विरोधी युद्ध के काल में, लगान व सूद कम करना और दूसरे जनवादी सुधार करना, ये सभी काम प्रतिरोध-युद्ध के लिए लाभकर हैं। युद्ध-प्रयास में जमींदारों के प्रतिरोध को कम करने के लिए हम लोगों ने उनकी जमीन की मिलकियत को खत्म नहीं किया, तथा सिर्फ लगान और सूद को ही कम किया है ; साथ ही उन्हें इस बात के लिए प्रोत्साहित किया है कि वे अपनी पूंजी को उद्योग-धन्धों में लगाएं और जागृत शरीफजादों को भी इस बात का मौका दिया है कि वे जनता के अन्य प्रतिनिधियों के साथ-साथ प्रतिरोध-युद्ध के लिए सार्वजनिक गतिविधियों तथा सरकारी कार्यों में भाग लें। जहां तक धनी किसानों का सवाल है, हमने उन्हें उत्पादन बढ़ाने के लिए प्रोत्साहित किया है। यह सब देहाती क्षेत्रों में जनवादी सुधार करने की अविचल कार्यदिशा का हिस्सा है और नितान्त आवश्यक है।

यहां दो कार्यदिशाएं हैं। या तो चीनी किसानों द्वारा जनवाद और जन-जीविका से सम्बन्धित समस्या को हल करने के लिए की जाने वाली कोशिशों का हठधर्मी के साथ विरोध करें, तथा भ्रष्ट हो जाएं, प्रभावहीन हो जाएं और जापान का मुकाबला करने में बिलकुल असमर्थ हो जाएं ; अथवा दृढ़तापूर्वक चीनी किसानों को उनकी कोशिशों में मदद दें और आबादी के ८० प्रतिशत हिस्से को अपना सबसे महान संश्रयकारी बना लें, और इस प्रकार अपनी

भारी जुझारू शक्ति को और अधिक मजबूत बना लें। पहली कार्यदिशा क्वोमिन्ताङ सरकार की है, और दूसरी कार्यदिशा चीन के मुक्त क्षेत्रों की है।

अवसरवादियों की कार्यदिशा है इन दोनों के बीच डांवाडोल होना, यानी मुंह से तो किसानों के समर्थन का दावा करना, मगर फिर भी लगान व सूद कम करने, किसानों को हथियारों से लैस करने और देहाती क्षेत्रों में जनवादी राजनीतिक सत्ता कायम करने के संकल्प से रहित होना।

अपने पास मौजूद सभी शक्तियों का इस्तेमाल करके क्वोमिन्ताङ के जन-विरोधी गुट ने चीनी कम्युनिस्ट पार्टी को, खुल्लमखुल्ला और गुप्त, सैनिक और राजनीतिक, रक्तपातपूर्ण और रक्तपातहीन हर तरह के घृणित हमलों का निशाना बनाया है। सामाजिक स्वरूप की दृष्टि से दोनों पार्टियों के बीच का यह विवाद दरअसल देहाती सम्बन्धों के इसी मसले से ताल्लुक रखता है। क्वोमिन्ताङ के जन-विरोधी गुट को हमने आखिर किस मामले में आघात पहुंचाया है? क्या वह आघात इसी मसले पर नहीं पहुंचाया गया? क्या यह सही नहीं है कि ठीक इसी मसले पर क्वोमिन्ताङ का जन-विरोधी गुट जापानी हमलावरों को बेहद सहायता देकर उनका कृपापात्र बन गया है और उसने उनसे प्रोत्साहन प्राप्त किया है? क्या यह सही नहीं है कि चीनी कम्युनिस्ट पार्टी पर "प्रतिरोध-युद्ध में तोड़फोड़ करने और राज्य के लिए खतरा पैदा करने", "गद्दार पार्टी", "गद्दार सेना", "गद्दार क्षेत्र" तथा "सरकारी फरमानों और फौजी आदेशों की अवज्ञा करने" के आरोप सिर्फ इसीलिए लगाए

गए हैं क्योंकि उसने इस मसले में सच्चे राष्ट्र-हित को ध्यान में रखते हुए ईमानदारी से काम किया है?

ये किसान ही हैं जो चीन के औद्योगिक मजदूरों के स्रोत हैं। भविष्य में फिर करोड़ों किसान शहरों में जाएंगे और कारखानों में काम करेंगे। अगर चीन में शक्तिशाली राष्ट्रीय उद्योग-धन्धों और अनेक बड़े आधुनिक शहरों की स्थापना करनी है, तो ग्रामवासियों का नगरवासियों में रूपान्तर करने की एक लम्बी प्रक्रिया से गुजरना होगा।

ये किसान ही हैं जो चीन के औद्योगिक उत्पादनों का मुख्य बाजार हैं। सिर्फ किसान ही भारी मात्रा में खाद्यान्न और कच्चा माल सप्लाई कर सकते हैं और काफी मात्रा में तैयार माल की खपत कर सकते हैं।

ये किसान ही हैं जो चीनी सेना के स्रोत हैं। हमारे सैनिक दरअसल फौजी वेशभूषा में किसान ही हैं जो जापानी हमलावरों के जानी दुश्मन हैं।

ये किसान ही हैं जो मौजूदा मंजिल में चीन में जनवाद की प्राप्ति के लिए मुख्य राजनीतिक शक्ति हैं। चीन के जनवादी लोग तब तक कुछ भी हासिल नहीं कर सकेंगे जब तक वे ३६ करोड़ किसानों के समर्थन पर निर्भर नहीं रहेंगे।

ये किसान ही हैं जो मौजूदा मंजिल में चीन के सांस्कृतिक आन्दोलन से मुख्य रूप से सम्बन्धित हैं। यदि ३६ करोड़ किसानों को छोड़ दिया जाए, तो क्या "निरक्षरता को खत्म करने", "शिक्षा का प्रचार-प्रसार करने", "कला-साहित्य का निर्माण जन-समुदाय के

लिए करने" और "सार्वजनिक स्वास्थ्य" की बातें अधिकांशत: थोथी बातें नहीं कहलाएंगी ?

ऐसा कहते समय मैं बाकी जनता के, जो लगभग ९ करोड़ है, राजनीतिक, आर्थिक और सांस्कृतिक महत्व को बिलकुल नजर-अन्दाज नहीं कर रहा और खास तौर से मजदूर वर्ग को, जो राजनीतिक दृष्टि से सबसे अधिक जागरूक वर्ग है और इसीलिए समूचे क्रान्तिकारी आन्दोलन का नेतृत्व करने के योग्य है, नजर-अन्दाज नहीं कर रहा। इसके बारे में कोई गलतफहमी नहीं होनी चाहिए।

इन बातों को भलीभांति समझ लेना न सिर्फ चीनी कम्युनिस्टों के लिए बल्कि चीन के तमाम जनवादी व्यक्तियों के लिए अत्यन्त आवश्यक है।

जब कभी भूमि-व्यवस्था में सुधार किया जाता है – यहां तक कि जब कभी लगान और सूद कम करने जैसा प्रारम्भिक सुधार भी किया जाता है – तो किसान उत्पादन-कार्य में पहले से अधिक रुचि लेने लगते हैं। उसके बाद जब किसानों को स्वेच्छा से कदम-ब-कदम कृषि सहकारी समितियां तथा दूसरी सहकारी समितियां बनाने में मदद दी जाने लगेगी, तो उत्पादक शक्तियां बढ़ जाएंगी। कृषि सहकारी समितियां इस समय सिर्फ सामूहिक और परस्पर सहायता करने वाले श्रम संगठनों का ही रूप ले सकती हैं जो व्यक्तिगत किसान अर्थव्यवस्था (किसानों की निजी मिलकियत) पर आधारित होते हैं, जैसे श्रम-विनिमय दल, आपसी सहायता दल तथा कार्य-विनिमय ग्रुप ; ऐसा होने पर भी श्रम-उत्पादकता और उत्पादन में आश्चर्यजनक वृद्धि हुई है। चीन के मुक्त क्षेत्रों में ऐसे

संगठनों का व्यापक रूप से विकास किया गया है और आगे इनका यथासम्भव अधिक से अधिक प्रसार किया जाना चाहिए।

यहां यह भी बता दिया जाए कि श्रम-विनिमय दल की तरह के सहकारी संगठन किसानों के बीच काफी समय से चले आए हैं, पर अतीत काल में उन्हें किसानों द्वारा अपनी दीन-हीन स्थिति में सुधार करने के साधन के रूप में इस्तेमाल किया जाता था। आज चीन के मुक्त क्षेत्रों के श्रम-विनिमय दल अपने वाह्य रूप और अन्तर्वस्तु दोनों की दृष्टि से अतीत के श्रम-विनिमय दलों से भिन्न हैं ; ये एक साधन बन गए हैं जिसके जरिए किसान जन-समुदाय उत्पादन में वृद्धि करता है और बेहतर जिन्दगी के लिए प्रयत्न करता है।

अन्ततोगत्वा, किसी भी चीनी राजनीतिक पार्टी की नीति और उसके व्यवहार का जनता पर अच्छा या बुरा, ज्यादा या थोड़ा, प्रभाव पड़ता है, इस बात का निर्णय इससे होता है कि क्या वह जनता की उत्पादक शक्तियों को विकसित करने में सहायता पहुंचाती है या नहीं, और कितनी सहायता पहुंचाती है, तथा वह इन शक्तियों को जंजीरों से जकड़ लेती है अथवा मुक्ति दिलाती है। चीन की सामाजिक उत्पादक शक्तियों को सिर्फ जापानी हमलावरों को नेस्तनाबूद करके, भूमि-सुधार को कार्यान्वित करके, किसानों को मुक्ति दिलाकर, आधुनिक उद्योग-धन्धों का विकास करके तथा एक स्वाधीन, स्वतंत्र, जनवादी, एकीकृत, समृद्ध और शक्तिशाली नए चीन की स्थापना करके ही मुक्त कराया जा सकता है – और इसी को चीनी जनता का समर्थन प्राप्त होगा।

यहां यह भी बता देना चाहिए कि शहर के बुद्धिजीवी लोगों

का, जो देहातों में काम करने के लिए आते हैं, ग्रामीण क्षेत्रों की विशेषताओं को समझना आसान नहीं है, यानी ग्रामीण क्षेत्र अब भी बिखरी हुई और पिछड़ी हुई, व्यक्तिगत अर्थव्यवस्था पर आधारित हैं, तथा इसके अलावा मुक्त क्षेत्रों को दुश्मन ने अस्थाई तौर पर एक दूसरे से अलग कर दिया है और ये क्षेत्र इस समय छापामार युद्ध में लगे हुए हैं। इन सब विशेषताओं को न समझ सकने के कारण, वे अक्सर ग्रामीण समस्याओं और ग्रामीण कार्यों को अनुपयुक्त ढंग से शहरों की जिन्दगी और कार्य की दृष्टि से समझने और हल करने की कोशिश करते हैं, और इसका नतीजा यह होता है कि वे अपने आपको ग्रामीण जिन्दगी की वास्तविकताओं से अलग कर लेते हैं और किसानों के साथ एकरूप होने में असमर्थ हो जाते हैं। इस कमी को शिक्षा द्वारा पूरा करना जरूरी है।

चीन के असंख्य क्रान्तिकारी बुद्धिजीवियों को इस बात के प्रति जागरूक होना चाहिए कि उनका किसानों के साथ एकरूप होना आवश्यक है। किसानों को उनकी जरूरत है और वे उनकी सहायता की प्रतीक्षा कर रहे हैं। उन्हें उत्साह के साथ गांवों में जाना चाहिए, विद्यार्थी की पोशाक को उतार फेंकना चाहिए और मोटी पोशाक पहन लेनी चाहिए, और किसी तरह का काम, चाहे वह छोटे से छोटा ही क्यों न हो, करना शुरू कर देना चाहिए ; उन्हें यह समझ लेना चाहिए कि किसान क्या चाहते हैं, और ग्रामीण इलाकों में जनवादी क्रान्ति को, जो चीन की जनवादी क्रान्ति का एक अत्यन्त महत्वपूर्ण कार्य है, पूरा करने के संघर्ष में किसानों को जागृत करने और संगठित करने में मदद करनी चाहिए।

जापानी हमलावरों का सफाया कर देने के बाद, हम लोगों को

चाहिए कि उनके द्वारा तथा मुख्य चीनी गद्दारों द्वारा हथियाई गई जमीन को जब्त कर लें और उसे ऐसे किसानों में बांट दें जिनके पास बहुत थोड़ी जमीन है या बिलकुल जमीन नहीं है।

७. उद्योग की समस्या

जापानी हमलावरों को शिकस्त देने और नए चीन का निर्माण करने के लिए उद्योगों का विकास करना आवश्यक है। परन्तु क्वोमिन्ताङ सरकार के शासन में हर वस्तु के लिए विदेशों पर निर्भर रहना पड़ता है, और उसकी वित्तीय व आर्थिक नीति जनता के समस्त आर्थिक जीवन को बरबाद कर रही है। केवल थोड़े से छोटे औद्योगिक कारोबार ही क्वोमिन्ताङ क्षेत्रों में पाए जाते हैं, और उनमें अधिकांश कारोबार ऐसे हैं जो दिवालिया होने से बच नहीं सके। राजनीतिक सुधारों के अभाव में तमाम उत्पादक शक्तियां नष्ट हो रही हैं, और यह बात कृषि और उद्योग दोनों क्षेत्रों पर लागू होती है।

कुल मिलाकर यह कहा जा सकता है कि जब तक चीन एक स्वाधीन, स्वतंत्र, जनवादी तथा एकीकृत राष्ट्र नहीं बन जाता तब तक उद्योगों का विकास करना असम्भव है। जापानी हमलावरों का खात्मा करने का मतलब है स्वाधीनता हासिल करना। क्वोमिन्ताङ की एकदलीय तानाशाही को खत्म करने, एक जनवादी और एकीकृत मिलीजुली सरकार स्थापित करने, चीन की तमाम फौजों को जनता की सशस्त्र सैन्य-शक्ति में बदल देने, भूमि-सुधार का काम करने और किसानों को मुक्ति दिलाने का मतलब है स्वतंत्रता, जनवाद और एकीकरण हासिल करना। स्वाधीनता,

स्वतंत्रता, जनवाद और एकीकरण के बिना सच्चे मायनों में बड़े पैमाने पर उद्योगों की स्थापना करना असम्भव है। उद्योगों के बिना सुदृढ़ राष्ट्रीय प्रतिरक्षा नहीं हो सकती, जनता के रहन-सहन में सुधार नहीं हो सकता, और राष्ट्र को समृद्ध और शक्तिशाली नहीं बनाया जा सकता। १८४० के अफीम-युद्ध के बाद के १०५ वर्षों और खास तौर पर क्वोमिन्ताङ द्वारा सत्ता हथियाए जाने के बाद के १८ वर्षों के इतिहास ने इस महत्वपूर्ण बात को चीनी जनता के सामने पूरी तरह स्पष्ट कर दिया है। एक ऐसे चीन से जो गरीब और कमजोर न हो बल्कि समृद्ध और शक्तिशाली हो, हमारा मतलब एक ऐसे चीन से है जो औपनिवेशिक या अर्ध-औपनिवेशिक न हो बल्कि स्वाधीन हो, अर्ध-सामन्ती न हो बल्कि स्वतंत्र और जनवादी हो, अलग-अलग टुकड़ों में बंटा न हो बल्कि एकीकृत हो। अर्ध-औपनिवेशिक, अर्ध-सामन्ती और अलग-अलग टुकड़ों में बंटे हुए चीन में, बहुत से लोग वर्षों से औद्योगिक विकास, राष्ट्रीय प्रतिरक्षा के निर्माण, और जन-कल्याण तथा समृद्ध व शक्तिशाली राष्ट्र के सपने देखते रहे, किन्तु उनके सारे सपने मिट्टी में मिल गए। बहुत से नेकदिल शिक्षक, वैज्ञानिक तथा विद्यार्थी अपने ही कार्य में अथवा अध्ययन में लगे रहे तथा उन्होंने राजनीति में कोई दिलचस्पी नहीं ली, यह सोचकर कि वे अपने ज्ञान से देश की सेवा कर सकते हैं, लेकिन यह भी महज एक सपना साबित हुआ, एक ऐसा सपना जो चूर-चूर हो गया। यह सचमुच एक अच्छी बात की निशानी है, क्योंकि इन बचकाने सपनों का चूर-चूर होना चीन के समृद्धि और शक्ति के रास्ते पर आगे बढ़ने की शुरुआत है। चीनी जनता ने प्रतिरोध-युद्ध में बहुत सी बातें सीखी हैं ; वह जानती है

कि जापानी हमलावरों को शिकस्त देने के बाद उसे एक ऐसे नव-जनवादी चीन का निर्माण करना है जिसमें स्वाधीनता, स्वतंत्रता, जनवाद, एकीकरण, समृद्धि और शक्ति सभी चीजें मौजूद होंगी तथा ये सभी चीजें एक दूसरे से सम्बन्धित और अनिवार्य हैं। यदि उसने ऐसा किया, तो चीन एक उज्ज्वल भविष्य में पदार्पण करेगा। चीनी जनता के अन्दर मौजूद उत्पादक शक्तियां सिर्फ तभी बन्धन-मुक्त हो सकेंगी और उनके सामने विकास की हर सम्भावना सिर्फ तभी खुल जाएगी, जब नव-जनवाद की राजनीतिक व्यवस्था चीन के सभी भागों में स्थापित हो जाएगी। अधिकाधिक लोग दिन-प्रति-दिन इस बात को समझते जा रहे हैं।

जब नव-जनवाद की राजनीतिक व्यवस्था कायम हो जाएगी, तो चीनी जनता और उसकी सरकार को कई सालों तक कदम-ब-कदम भारी और हल्के उद्योगों का निर्माण करने के लिए और चीन को एक कृषि-प्रधान देश से बदलकर एक औद्योगिक देश बनाने के लिए व्यावहारिक कदम उठाने पड़ेंगे। नव-जनवाद वाले राज्य को तब तक सुदृढ़ नहीं बनाया जा सकता, जब तक वह ठोस अर्थ-व्यवस्था पर आधारित न हो, उसके पास मौजूदा समय से कहीं अधिक उन्नत कृषि-व्यवस्था न हो, उसके पास बड़े पैमाने के उद्योग न हों जो राष्ट्रीय अर्थव्यवस्था में एक प्रमुख स्थान रखते हों और जो अपने अनुकूल संचार, वाणिज्य और वित्त से भी लैस हों।

हम कम्युनिस्ट लोग इस उद्देश्य की पूर्ति के लिए देशभर की सभी जनवादी पार्टियों और औद्योगिक जगतों के साथ मिलकर संघर्ष करने के लिए तैयार हैं। इस उत्तरदायित्व को निभाने में चीनी मजदूर वर्ग एक महान भूमिका अदा करेगा।

प्रथम विश्वयुद्ध से ही चीनी मजदूर वर्ग ने जागरूक रूप से चीन की स्वाधीनता और मुक्ति के लिए संघर्ष किया है। १६२१ में मजदूर वर्ग के हिरावल दस्ते चीनी कम्युनिस्ट पार्टी का जन्म हुआ, और उसके बाद चीन का मुक्ति-संघर्ष एक नई मंजिल में पहुंच गया। उत्तरी अभियान, भूमि-क्रान्ति युद्ध और जापानी-आक्रमण-विरोधी युद्ध इन तीन कालों में, चीनी मजदूर वर्ग और चीनी कम्युनिस्ट पार्टी ने चीनी जनता के मुक्ति-कार्य के लिए बेहद परिश्रम से काम किया और उसमें बहुमूल्य योगदान किया। जापानी हमलावरों को अन्तिम शिकस्त देने के संघर्ष में और विशेषकर बड़े शहरों और महत्वपूर्ण संचार-पंक्तियों को दुश्मन से वापस लेने के संघर्ष में, चीनी मजदूर वर्ग एक अत्यन्त महत्वपूर्ण भूमिका अदा करेगा। और इस बात की भविष्यवाणी की जा सकती है कि जापानी-आक्रमण-विरोधी युद्ध के बाद, चीनी मजदूर वर्ग की कोशिशें और उसका योगदान और भी अधिक महत्वपूर्ण होगा। चीनी मजदूर वर्ग का कार्य सिर्फ एक नव-जनवाद वाले राज्य की स्थापना के लिए संघर्ष करना ही नहीं, बल्कि चीन का औद्योगीकरण करने और उसकी कृषि का आधुनिकीकरण करने के लिए संघर्ष करना भी है।

श्रम और पूंजी के हितों को समायोजित करने की नीति नव-जनवाद वाली राज्य-व्यवस्था के अन्तर्गत अपनाई जाएगी। एक तरफ, यह नीति मजदूरों के हितों की रक्षा करेगी, परिस्थिति के अनुसार ८ से १० घण्टे तक के श्रमदिन का नियम निर्धारित करेगी, बेरोजगारों को समुचित राहत देने और सामाजिक बीमा करने की व्यवस्था करेगी और ट्रेड यूनियन अधिकारों की हिफाजत करेगी ; दूसरी तरफ यह नीति उचित ढंग से संचालित किए जाने वाले

राजकीय, निजी तथा सहकारी कारोबारों के न्यायोचित मुनाफे की गारन्टी करेगी, ताकि सार्वजनिक क्षेत्र और निजी क्षेत्र दोनों तथा श्रम और पूंजी दोनों मिलजुल कर औद्योगिक उत्पादन का विकास करने के लिए प्रयत्न कर सकें।

जापान की हार के बाद जापानी हमलावरों और मुख्य चीनी गद्दारों के चीन-स्थित सभी कारोबारों और उनकी समूची सम्पत्ति को जब्त कर लिया जाएगा और सरकार को सौंप दिया जाएगा।

८. संस्कृति, शिक्षा और बुद्धिजीवियों की समस्या

विदेशी और सामन्ती उत्पीड़न द्वारा चीनी जनता पर लादी गई मुसीबतों ने हमारी राष्ट्रीय संस्कृति को भी नुकसान पहुंचाया है। प्रगतिशील सांस्कृतिक व शैक्षणिक संस्थाएं और प्रगतिशील सांस्कृतिक कार्यकर्ता व शिक्षक खास तौर पर इसके शिकार हुए हैं। विदेशी और सामन्ती उत्पीड़न का खात्मा करने और एक नव-जनवादी चीन का निर्माण करने के लिए, हमें जनता के लिए काफी तादाद में शिक्षकों और अध्यापकों तथा जनसेवी वैज्ञानिकों, इंजीनियरों, तकनीशियनों, डाक्टरों, पत्रकारों, लेखकों, साहित्यकारों, कलाकारों और साधारण सांस्कृतिक कार्यकर्ताओं की जरूरत है। उनमें जनसेवा की भावना कूट-कूट कर भरी हुई होनी चाहिए और उन्हें कठिन परिश्रम करना चाहिए। सभी बुद्धिजीवियों की इज्जत करनी चाहिए और उन्हें बहुमूल्य राष्ट्रीय तथा सामाजिक सम्पत्ति समझना चाहिए, बशर्ते कि वे जनता की अच्छी तरह सेवा करें। बुद्धिजीवियों की समस्या चीन में खास तौर से इसलिए महत्वपूर्ण है क्योंकि विदेशी तथा सामन्ती उत्पीड़न के फलस्वरूप चीन सांस्कृ-

तिक दृष्टि से पिछड़ा हुआ है और क्योंकि जनता के मुक्ति-संघर्ष में बुद्धिजीवियों की फौरी जरूरत है। व्यापक क्रान्तिकारी बुद्धिजीवियों ने जनता के पिछली अर्ध-शताब्दी के मुक्ति-संघर्ष में, और विशेषकर ४ मई १९१९ के आन्दोलन से लेकर अनेक संघर्षों में और ८ साल के जापानी-आक्रमण-विरोधी युद्ध में एक बहुत महत्वपूर्ण भूमिका अदा की है। आगे आने वाले संघर्षों में वे इससे भी ज्यादा महत्वपूर्ण भूमिका अदा करेंगे। इसलिए जन-सरकार का कार्य है कि वह जनता की पांतों में से हर तरह के बौद्धिक कार्यकर्ताओं को योजनाबद्ध रूप से तैयार करे और साथ ही इस समय मौजूद तमाम उपयोगी बुद्धिजीवियों के साथ एकता स्थापित करने और उन्हें पुनर्शिक्षित करने के काम पर ध्यान दे।

८० प्रतिशत आबादी की निरक्षरता को दूर करना नए चीन के सामने मौजूद एक महत्वपूर्ण कार्य है।

गुलाम बनाने वाली, सामन्ती और फासिस्ट संस्कृति व शिक्षा को नेस्तनाबूद करने के लिए समुचित और सुदृढ़ कदम उठाए जाने चाहिए।

जनता में फैली हुई स्थानीय तथा दूसरी बीमारियों की रोकथाम करने और उनका इलाज करने के लिए जोरदार कोशिशें की जानी चाहिए और जनता की चिकित्सा व स्वास्थ्य-सेवाओं का प्रसार किया जाना चाहिए।

पुराने किस्म के सांस्कृतिक व शैक्षणिक कार्यकर्ताओं और डाक्टरों को समुचित रूप से पुनर्शिक्षित किया जाना चाहिए, ताकि वे जनता की सेवा करने के लिए नए दृष्टिकोण और नए तरीकों को अपना सकें।

चीनी जनता की संस्कृति व शिक्षा का स्वरूप नव-जनवादी होना चाहिए, अर्थात चीन को चाहिए कि वह अपनी नई राष्ट्रीय, वैज्ञानिक और जन संस्कृति व शिक्षा स्थापित करे।

जहां तक विदेशी संस्कृति का सम्बन्ध है, उसकी तरफ से अपना दरवाजा बन्द कर लेना एक गलत नीति होगी, बल्कि उसमें जो प्रगतिशील बातें हैं उनको हमें यथासम्भव चीन की नई संस्कृति के विकास के लिए इस्तेमाल कर लेना चाहिए ; विदेशी संस्कृति का अन्धानुकरण करना भी गलत होगा, इसके विपरीत चीनी जनता की वास्तविक आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए हमें उसके गुण-दोषों का विवेचन करके ही उसे अपनाना चाहिए। सोवियत संघ में जिस नई संस्कृति का निर्माण किया गया है, उसे अपनी जन संस्कृति का निर्माण करने में एक नमूना समझना चाहिए। इसी प्रकार, प्राचीन चीनी संस्कृति का भी न तो पूरी तरह परित्याग कर देना चाहिए और न बिना सोचे-समझे अन्धानुकरण ही करना चाहिए, बल्कि उसकी अच्छाइयों और बुराइयों को परखकर उसे अपना लेना चाहिए, जिससे चीन की नई संस्कृति की प्रगति में उससे मदद मिल सके।

६. अल्पसंख्यक जातियों की समस्या

क्वोमिन्ताङ का जन-विरोधी गुट इस बात को मानने से इनकार करता है कि चीन में बहुत सी जातियां रहती हैं, और वह हान जाति को छोड़कर बाकी सभी जातियों को "कबीलों" की संज्ञा देता है[१९]। अल्पसंख्यक जातियों के सिलसिले में इस गुट ने छिङ वंश और उत्तरी युद्ध-सरदारों की सरकार की प्रतिक्रियावादी नीति को ही

अपना लिया है और वह हर तरह से उनका उत्पीड़न और शोषण कर रहा है। १९४३ में इखचाओ लीग में मंगोल जाति के लोगों का कत्लेआम, १९४४ से आज तक सिनच्याङ में अल्पसंख्यक जातियों का सशस्त्र दमन और हाल के कुछ वर्षों में कानसू प्रान्त में ह्वेइ जाति के लोगों का कत्लेआम इसके कुछ स्पष्ट उदाहरण हैं। ये सब बातें हान-शोविनिज्म पर आधारित गलत विचारधारा और गलत नीति के परिणाम हैं।

१९२४ में क्वोमिन्ताङ की प्रथम राष्ट्रीय कांग्रेस के घोषणापत्र में डा० सुन यात-सेन ने लिखा था कि "क्वोमिन्ताङ के राष्ट्रवाद के उसूल के दो अर्थ हैं, पहला, चीनी राष्ट्र की मुक्ति तथा दूसरा, चीन में रहने वाली सभी जातियों की समानता" और यह कि "क्वोमिन्ताङ गम्भीरता के साथ ऐलान करती है कि वह चीन में रहने वाली सभी जातियों के आत्म-निर्णय के अधिकार को मानती है और साम्राज्यवाद-विरोधी तथा युद्ध-सरदार-विरोधी क्रान्ति के विजयी होने पर एक स्वतंत्र और एकीकृत चीनी गणराज्य (तमाम जातियों का स्वतंत्र संघ) की स्थापना की जाएगी।"

जातियों के बारे में डा० सुन यात-सेन की उपर्युक्त जातीय नीति से चीनी कम्युनिस्ट पार्टी पूरी तरह सहमत है। कम्युनिस्टों को चाहिए कि इस उद्देश्य की पूर्ति के लिए सभी अल्पसंख्यक जातियों की जनता द्वारा किए जाने वाले संघर्षों में सक्रियता के साथ सहायता दें, तथा सभी अल्पसंख्यक जातियों की जनता और उनके सभी नेताओं द्वारा, जिनका जन-समुदाय के साथ गहरा सम्पर्क है, राजनीतिक, आर्थिक व सांस्कृतिक आजादी और विकास के लिए किए जाने वाले संघर्षों में मदद दें, और उनकी ऐसी सेनाएं कायम करने

में मदद दें जो जनता के हितों की हिफाजत करें। उनकी बोली और लिपि, उनके तौर-तरीकों तथा रीति-रिवाजों और धार्मिक विश्वासों का आदर किया जाना चाहिए।

मंगोल जाति और ह्वेइ जाति के प्रति शेनशी-कानसू-निङश्या सीमान्त क्षेत्र तथा उत्तरी चीन के मुक्त क्षेत्रों में कई सालों से जो रुख अपनाया गया है वह सही है, तथा उनके बीच जो काम किया गया है वह लाभदायक सिद्ध हुआ है।

१०. विदेश नीति की समस्या

चीनी कम्युनिस्ट पार्टी अटलान्टिक चार्टर तथा मास्को, काहिरा, तेहरान और क्रीमिया में हुए अन्तरराष्ट्रीय सम्मेलनों[११] में किए गए निर्णयों से सहमत है, क्योंकि ये सभी निर्णय फासिस्ट हमलावरों को शिकस्त देने और विश्वशान्ति बनाए रखने में योग देते हैं।

चीनी कम्युनिस्ट पार्टी द्वारा प्रतिपादित की गई विदेश नीति के बुनियादी उसूल इस प्रकार हैं : चीन सभी देशों के साथ राजनयिक सम्बन्ध स्थापित करेगा और उन्हें मजबूत बनाएगा तथा आपसी हितों से सम्बन्धित सभी सवालों, जैसे युद्ध में फौजी कार्यवाहियों के बीच तालमेल कायम करने, शान्ति सम्मेलन और व्यापार व पूंजी-विनियोग से सम्बन्धित सवालों, को हल करेगा, शर्त यह होगी कि जापानी हमलावरों को पूरी तरह परास्त कर दिया जाए और विश्वशान्ति बनाए रखी जाए, एक दूसरे की राष्ट्रीय स्वाधीनता और समानता का आदर किया जाए, विभिन्न राज्यों और जनगण के आपसी हितों और उनके बीच की मैत्री को बढ़ावा दिया जाए।

चीनी कम्युनिस्ट पार्टी डम्बार्टन ओक्स सम्मेलन के उन प्रस्तावों

और क्रीमिया सम्मेलन में किए गए उन निर्णयों से पूरी तरह सहमत है जिनके अन्तर्गत युद्ध के बाद अन्तरराष्ट्रीय शान्ति और सुरक्षा की हिफाजत करने के लिए एक संगठन की स्थापना की जाएगी। वह सान फ्रांसिस्को में अन्तरराष्ट्रीय संगठन के बारे में हुए संयुक्त राष्ट्र सम्मेलन का स्वागत करती है। इस सम्मेलन में चीनी जनता की आकांक्षा को प्रकट करने के लिए उसने चीन से भेजे जाने वाले प्रतिनिधिमण्डल में अपना प्रतिनिधि भी नियुक्त कर दिया है।[१२]

हमारी यह राय है कि क्वोमिन्ताङ सरकार सोवियत संघ के प्रति अपने शत्रुता के रवैये को अवश्य समाप्त कर दे और चीन-सोवियत सम्बन्धों को तुरन्त सुधार ले। सोवियत संघ पहला देश था जिसने असमान सन्धियों को रद्द कर दिया और चीन के साथ नई समान सन्धि पर हस्ताक्षर किए। क्वोमिन्ताङ की प्रथम राष्ट्रीय कांग्रेस के समय, जिसे डा० सुन यात-सेन ने १९२४ में बुलाया था, और उसके बाद उत्तरी अभियान के समय, सिर्फ सोवियत संघ ही एक ऐसा देश था जिसने चीन के मुक्ति-संघर्ष की सहायता की। १९३७ में जब जापानी-आक्रमण-विरोधी युद्ध शुरू हुआ, तो सोवियत संघ ही पहला देश था जिसने जापानी हमलावरों के खिलाफ चीन की मदद की। सोवियत सरकार और सोवियत जनता की इस सहायता के लिए चीनी जनता उनकी आभारी है। हमारा विश्वास है कि प्रशान्त महासागर क्षेत्र की समस्याओं का कोई भी अन्तिम और सम्पूर्ण हल तब तक नहीं निकाला जा सकता जब तक सोवियत संघ इस कार्य में शामिल नहीं होता।

संश्रयकारी देशों की सभी सरकारों, और सबसे पहले अमरीका व बरतानिया की सरकारों से हम यह मांग करते हैं कि वे चीनी

जनता की आवाज की तरफ गम्भीरतापूर्वक ध्यान दें तथा ऐसी विदेश नीतियों को अपनाकर जो उसकी इच्छा के विपरीत हों, उसके साथ अपनी मित्रता को हानि न पहुंचाएं। हमारा यह मत है कि यदि कोई भी विदेशी सरकार चीनी प्रतिक्रियावादियों की मदद करेगी और चीनी जनता के जनवादी कार्यों का विरोध करेगी, तो वह बड़ी भारी गलती करेगी।

अनेक विदेशी सरकारों ने चीन के साथ अपनी असमान सन्धियों को रद्द कर देने और नई समान सन्धियां करने के लिए जो कदम उठाए हैं उनका चीनी जनता स्वागत करती है। लेकिन हमारा यह मत है कि केवल समान सन्धियां कर लेने का मतलब यह नहीं है कि चीन ने वास्तव में सच्ची समानता हासिल कर ली है। सच्ची और वास्तविक समानता कभी भी विदेशी सरकारों से उपहार के रूप में प्राप्त नहीं हुआ करती, बल्कि उसे तो मुख्यतः चीनी जनता को स्वयं अपनी ही कोशिशों के जरिए हासिल करना होगा, और उसे हासिल करने का रास्ता है राजनीतिक, आर्थिक और सांस्कृतिक दृष्टि से एक नव-जनवादी चीन का निर्माण करना ; अन्यथा सिर्फ नाममात्र की ही स्वाधीनता और समानता हासिल हो सकेगी, वास्तविक नहीं। कहने का तात्पर्य यह है कि क्वोमिन्ताङ सरकार की वर्तमान नीति पर चलकर चीन सच्ची स्वाधीनता और समानता हरगिज हासिल नहीं कर सकता।

हम समझते हैं कि जापानी आक्रमणकारियों की पराजय होने और उनके द्वारा बिनाशर्त आत्मसमर्पण किए जाने के बाद, यह आवश्यक हो जाएगा कि हम जापानी जनता की तमाम जनवादी शक्तियों को उनकी अपनी जनवादी व्यवस्था कायम करने में मदद

दें, ताकि जापानी फासिस्टवाद और सैन्यवाद को तथा उनकी राजनीतिक, आर्थिक और सामाजिक जड़ों को मुकम्मिल तौर पर नेस्तनाबूद किया जा सके। जब तक जापानी जनता एक जनवादी व्यवस्था कायम नहीं करती, तब तक जापानी फासिस्टवाद और सैन्यवाद को मुकम्मिल तौर पर नेस्तनाबूद करना तथा प्रशान्त महासागर क्षेत्र में शान्ति बनाए रखने की गारन्टी करना असम्भव है।

हम समझते हैं कि कोरिया की स्वाधीनता के बारे में काहिरा सम्मेलन का फैसला सही है। चीनी जनता को चाहिए कि वह कोरियाई जनता की मुक्ति प्राप्त करने में सहायता करे।

हमें उम्मीद है कि भारत भी स्वाधीनता प्राप्त करेगा। कारण, एक स्वाधीन और जनवादी भारत की न सिर्फ भारतीय जनता को जरूरत है बल्कि यह विश्वशान्ति के लिए भी अनिवार्य है।

जहां तक दक्षिण-पूर्वी एशिया के देशों – बर्मा, मलाया, इन्दोनेशिया, वियतनाम और फिलिपीन – का ताल्लुक है, हमें उम्मीद है कि जापानी आक्रमणकारियों की पराजय के बाद इन देशों की जनता अपने स्वाधीन और जनवादी राज्यों की स्थापना के अधिकार को प्राप्त करेगी। जहां तक थाइलैण्ड का सवाल है, उसके साथ वैसा ही व्यवहार होना चाहिए जैसा कि योरप में फासिस्टवाद के पिछलग्गू देशों के साथ होता है।

• • •

यह सब हमारे ठोस कार्यक्रम की मुख्य बातों के बारे में हुआ। मैं फिर से दोहराता हूं कि इस ठोस कार्यक्रम के एक भी मुद्दे को

राष्ट्रव्यापी पैमाने पर तब तक सफलता के साथ कार्यान्वित नहीं किया जा सकता जब तक एक ऐसी जनवादी मिलीजुली सरकार कायम नहीं हो जाती जिसे समूचे राष्ट्र का समर्थन प्राप्त हो।

चीनी जनता के मुक्ति-कार्य के लिए चौबीस वर्ष तक संघर्ष करने के बाद, चीनी कम्युनिस्ट पार्टी ने एक ऐसा दर्जा हासिल कर लिया है कि यदि किसी भी राजनीतिक पार्टी या सामाजिक ग्रुप ने अथवा किसी भी चीनी या विदेशी व्यक्ति ने चीन के बारे में उसकी राय की अवहेलना की, तो वह गम्भीर गलती कर बैठेगा और निश्चित रूप से असफल हो जाएगा। ऐसे लोग पहले भी थे और अब भी हैं जो हमारी राय की उपेक्षा करते रहे हैं और अपने खुद के ही रास्ते पर बड़ी हठधर्मी के साथ अड़े रहे हैं, लेकिन वे सभी एक अंधी गली में फंस गए हैं। ऐसा क्यों हुआ है? महज इसलिए क्योंकि हमारी राय चीनी जन-समुदाय के हितों से मेल खाती है। चीनी कम्युनिस्ट पार्टी चीनी जनता की सबसे अधिक वफादार प्रवक्ता है, तथा जो कोई भी उसका सम्मान नहीं करता, वह वास्तव में चीनी जन-समुदाय का सम्मान नहीं करता और ऐसे व्यक्ति की हार होना अनिवार्य है।

क्वोमिन्ताङ क्षेत्रों में कार्य

अब मैं अपनी पार्टी के आम और ठोस कार्यक्रम की विस्तार से व्याख्या कर चुका हूं। इसमें सन्देह नहीं कि अन्त में ये कार्यक्रम समूचे चीन में लागू किए जाएंगे; अन्तरराष्ट्रीय और घरेलू परिस्थिति ने चीनी जनता के सामने इस भविष्य की रूपरेखा प्रस्तुत कर दी है। लेकिन इस समय क्वोमिन्ताङ क्षेत्रों, जापान-अधिकृत क्षेत्रों

और मुक्त क्षेत्रों की परिस्थिति एक दूसरे से भिन्न है, तथा हमारे कार्यक्रम को लागू करते समय इनके अन्तर को समझना आवश्यक है। अलग-अलग परिस्थितियों में अलग-अलग कार्य होते हैं। इनमें से कुछ कार्यों की व्याख्या मैं ऊपर कर चुका हूं, जबकि दूसरे कार्यों का स्पष्टीकरण करने की अब भी आवश्यकता है।

क्वोमिन्ताङ क्षेत्रों में, जनता को देशभक्तिपूर्ण गतिविधियों में जुटने की आजादी नहीं है, और जनवादी आन्दोलनों को गैरकानूनी समझा जाता है, फिर भी विभिन्न सामाजिक तबके, जनवादी पार्टियां और व्यक्ति अधिकाधिक सक्रिय होते जा रहे हैं। चीनी जनवादी लीग ने इस साल जनवरी में एक घोषणापत्र जारी किया, जिसमें क्वोमिन्ताङ की एकदलीय तानाशाही को समाप्त करने और मिली-जुली सरकार की स्थापना करने की मांग की गई। जनता के बहुत से तबकों ने इसी तरह के ऐलान किए हैं। क्वोमिन्ताङ के भीतर भी, बहुत से लोग अपनी खुद की पार्टी की नेतृत्वकारी संस्थाओं की नीतियों के बारे में अधिकाधिक सन्देह और असन्तोष व्यक्त कर रहे हैं, अपनी पार्टी का व्यापक जनता से अलगाव होने के खतरे के प्रति अधिकाधिक सचेत होते जा रहे हैं, तथा इसलिए समय के अनुकूल जनवादी सुधारों की मांग कर रहे हैं। छुङकिङ और दूसरी जगहों पर, जनवादी आन्दोलन मजदूरों, किसानों, सांस्कृतिक जगत, विद्यार्थियों, शैक्षणिक जगत, महिलाओं, उद्योग-वाणिज्य जगत, सरकारी कर्मचारियों और यहां तक कि कुछ सैनिकों और अफसरों के बीच भी फैलते जा रहे हैं। इन तथ्यों से पता चलता है कि सभी उत्पीड़ित तबकों के जनवादी आन्दोलन कदम-ब-कदम एक मुश्तरका उद्देश्य की प्राप्ति के लिए आपस में एक दूसरे में सम्मिलित होते

जा रहे हैं। मौजूदा आन्दोलनों की एक कमजोरी यह है कि समाज के बुनियादी तबके अभी तक बड़े पैमाने पर इन आन्दोलनों में शामिल नहीं हुए, और सबसे महत्वपूर्ण शक्तियों, यानी किसानों, मजदूरों, सैनिकों और निचले स्तर के सरकारी कर्मचारियों और अध्यापकों को, जो घोर उत्पीड़न का शिकार हैं, अभी तक संगठित नहीं किया गया। दूसरी कमजोरी यह है कि इस आन्दोलन में बहुत से जनवादी व्यक्ति बुनियादी नीति के बारे में, यानी इस बात के बारे में कि जनवादी उसूलों के आधार पर संघर्ष छेड़कर ही परिस्थिति में परिवर्तन लाया जाना चाहिए, अब भी अस्पष्ट हैं और हिचकिचाते हैं। लेकिन वस्तुगत परिस्थिति सभी उत्पीड़ित तबकों, राजनीतिक पार्टियों और सामाजिक ग्रुपों को कदम-ब-कदम जागृत और एकताबद्ध होने के लिए बाध्य कर रही है। क्वोमिन्ताङ सरकार द्वारा किया गया किसी भी प्रकार का दमन इस आन्दोलन को आगे बढ़ने से रोक नहीं सकता।

क्वोमिन्ताङ क्षेत्रों के सभी उत्पीड़ित तबकों, राजनीतिक पार्टियों और सामाजिक ग्रुपों को अपना जनवादी आन्दोलन बड़े पैमाने पर आगे बढ़ाना चाहिए और कदम-ब-कदम अपनी बिखरी हुई शक्तियों को एकजुट करना चाहिए, ताकि राष्ट्रीय एकता कायम करने, मिलीजुली सरकार की स्थापना करने, जापानी हमलावरों को परास्त करने और एक नए चीन का निर्माण करने के लिए संघर्ष किया जा सके। चीनी कम्युनिस्ट पार्टी और मुक्त क्षेत्रों की जनता को उन्हें हर सम्भव सहायता देनी चाहिए।

क्वोमिन्ताङ क्षेत्रों में कम्युनिस्टों को चाहिए कि वे एक व्यापक जापान-विरोधी राष्ट्रीय संयुक्त मोर्चे की नीति को कार्यान्वित करते

रहें। अपने मुश्तरका मकसदों को हासिल करने के लिए संघर्ष करते समय, हमें हर ऐसे व्यक्ति के साथ सहयोग करना चाहिए जो आज हमारा विरोध नहीं करता, भले ही कल तक वह हमारा विरोध करता रहा हो।

जापान-अधिकृत क्षेत्रों में कार्य

जापान-अधिकृत क्षेत्रों में, कम्युनिस्टों को चाहिए कि वे जापान का प्रतिरोध करने वाले तमाम लोगों का आवाहन करें कि वे फ्रांस और इटली के उदाहरणों का अनुसरण करें तथा सशस्त्र विद्रोह की तैयारी करने के लिए संगठन बनाएं और भूमिगत सैन्य-शक्तियों को एकजुट करें, ताकि समय आने पर वे बाहर से आक्रमण करने वाली सेनाओं के साथ तालमेल कायम करके भीतर से कार्यवाही कर सकें और इस प्रकार जापानी हमलावरों का सफाया कर सकें। जापान-अधिकृत क्षेत्रों में जापानी हमलावरों और उनके टुकड़खोर गुर्गों के हाथों हमारे भाइयों और बहिनों को जो अत्याचार, लूट-खसोट, बलात्कार और अपमान सहन करना पड़ता है, उसने तमाम चीनियों में रोष की ज्वालाएं भड़का दी हैं तथा बदला लेने की घड़ी तेजी से नजदीक आती जा रही है। योरप की युद्ध-भूमि में प्राप्त की गई विजयों तथा हमारी आठवीं राह सेना और नई चौथी सेना द्वारा प्राप्त की गई विजयों ने जापान-अधिकृत क्षेत्रों की जनता में जापान-विरोधी भावना को उजागर किया है और बहुत बढ़ाया है। वह तुरन्त संगठित हो जाना चाहती है, ताकि वह जल्दी से जल्दी मुक्ति प्राप्त कर सके। इसलिए हमें जापान-अधिकृत क्षेत्रों में अपने कार्य के महत्व को बढ़ाकर उसी स्तर तक पहुंचा देना चाहिए जिस स्तर पर वह मुक्त क्षेत्रों में है। हमारे कार्यकर्ताओं को बड़ी तादाद में वहां भेजा जाना चाहिए। वहां की जनता के बीच मौजूद सक्रिय लोगों को बड़ी तादाद में ट्रेनिंग दी जानी चाहिए और उनकी पदोन्नति की जानी चाहिए, तथा उन्हें स्थानीय कार्य में भी भाग लेना चाहिए। हमें उन चार उत्तर-पूर्वी प्रान्तों में भी अपना भूमिगत काम बढ़ाना चाहिए जो किसी भी अन्य क्षेत्र के मुकाबले ज्यादा लम्बे अरसे तक जापान के कब्जे में रहे हैं तथा जो उद्योग व सैन्य-केन्द्रीकरण की दृष्टि से जापानी हमलावरों के लिए प्रधान क्षेत्र हैं। इन खोए हुए इलाकों को फिर से प्राप्त करने के लिए हमें उन लोगों के साथ सुदृढ़ एकता कायम करनी चाहिए जो उत्तर-पूर्व को छोड़कर लम्बी दीवार के दक्षिण में आ गए हैं।

कम्युनिस्टों को चाहिए कि वे सभी जापान-अधिकृत क्षेत्रों में व्यापकतम जापान-विरोधी राष्ट्रीय संयुक्त मोर्चा कायम करने की नीति अपनाएं। अपने मुश्तरका दुश्मन का तख्ता उलट देने के लिए उन्हें हर ऐसे व्यक्ति के साथ एकता कायम करनी चाहिए जो जापानी हमलावरों और उनके टुकड़खोर गुर्गों का विरोध करता हो।

हमें तमाम कठपुतली फौजों, कठपुतली पुलिस और दूसरे लोगों को, जो दुश्मन की मदद करते हैं और अपने देशबन्धुओं का विरोध करते हैं, चेतावनी देनी चाहिए कि वे फौरन अपनी कार्यवाहियों के अपराधमय स्वरूप को समझ लें, समय रहते पश्चात्ताप कर लें और दुश्मन के खिलाफ अपने देशबन्धुओं की मदद करके अपने अपराधों का प्रायश्चित्त कर लें। वरना जिस दिन दुश्मन का पतन हो जाएगा, उस दिन राष्ट्र इन लोगों से अवश्य पूरा हिसाब लेगा।

कम्युनिस्टों को चाहिए कि वे जन-समुदाय को अपने पीछे लगाने वाले तमाम कठपुतली संगठनों के बीच प्रचार-कार्य के जरिए समझाने-बुझाने की कोशिश करें, ताकि वे गुमराह जन-समुदाय को राष्ट्रीय दुश्मन के खिलाफ अपने पक्ष में कर लें। साथ ही उन चीनी गद्दारों के खिलाफ सबूत इकट्ठे करने चाहिए जो अत्यन्त जघन्य अपराध कर चुके हैं और अपने अपराधों का पश्चात्ताप तक नहीं करते, ताकि खोए हुए प्रदेशों को फिर से प्राप्त करने के बाद उन्हें अदालत के कटघरे में खड़ा किया जा सके।

उन क्वोमिन्ताङ प्रतिक्रियावादियों को, जिन्होंने चीनी जनता, चीनी कम्युनिस्ट पार्टी, आठवीं राह सेना, नई चौथी सेना और जनता की अन्य सैन्य-शक्तियों के खिलाफ चीनी गद्दारों को संगठित करके राष्ट्र के प्रति विश्वासघात किया है, चेतावनी दी जानी चाहिए कि वे समय रहते पश्चात्ताप कर लें। वरना जब खोए हुए प्रदेशों को फिर से प्राप्त कर लिया जाएगा, तो निश्चय ही उन्हें भी चीनी गद्दारों के साथ-साथ उनके जुर्मों की सजा दी जाएगी तथा उनके प्रति जरा भी दया नहीं दिखाई जाएगी।

मुक्त क्षेत्रों में कार्य

मुक्त क्षेत्रों में हमारी पार्टी ने समूचे नव-जनवादी कार्यक्रम को उल्लेखनीय सफलता के साथ अमली जामा पहना दिया है, तथा इस प्रकार जापान-विरोधी प्रचण्ड शक्ति का संचय कर लिया है, और अब से इस शक्ति का हर तरह से विकास किया जाना चाहिए और उसे सुदृढ़ बनाया जाना चाहिए।

मौजूदा परिस्थिति में मुक्त क्षेत्रों की फौजों को चाहिए कि वे उन तमाम स्थानों पर व्यापक आक्रमण कर दें जिन्हें जापानियों और कठपुतली शासकों के चंगुल से छुड़ाया जा सकता है, ताकि मुक्त क्षेत्रों का विस्तार किया जा सके और जापान-अधिकृत क्षेत्रों का इलाका घटाया जा सके।

लेकिन साथ ही इस बात को ध्यान में रखना चाहिए कि दुश्मन अब भी शक्तिशाली है और मुक्त क्षेत्रों पर फिर हमले कर सकता है। हमारे क्षेत्रों की सेना और जनता को चाहिए कि वह दुश्मन के हमलों को चकनाचूर करने के लिए हर समय तैयार रहे तथा इन क्षेत्रों को सुदृढ़ बनाने के लिए हर तरह से काम करे।

हमें मुक्त क्षेत्रों की फौजों, छापामार यूनिटों, मिलिशिया और आत्मरक्षा कोर का विस्तार करना चाहिए तथा उनको ट्रेनिंग देने और मजबूत बनाने के कार्य की रफ्तार बढ़ाकर उनकी युद्ध-क्षमता को बढ़ाना चाहिए, ताकि हमलावरों को आखिरी शिकस्त देने के लिए पर्याप्त शक्ति जुटाई जा सके।

मुक्त क्षेत्रों में सेना को चाहिए कि वह सरकार का समर्थन करे और जनता के साथ आत्मीयता बढ़ाए, जबकि जनवादी सरकारों को चाहिए कि वे सेना का समर्थन करने और जापान के खिलाफ लड़ने वाले सैनिकों के परिवारों को तरजीह देने में जनता का नेतृत्व करें। इस प्रकार सेना और जनता के बीच के सम्बन्ध और अधिक अच्छे हो जाएंगे।

स्थानीय मिलीजुली सरकारों और जन-संगठनों के कार्य में कम्युनिस्टों को चाहिए कि वे नव-जनवादी कार्यक्रम के आधार पर

तमाम जापान-विरोधी जनवादी लोगों के साथ घनिष्ठ रूप से सहयोग करते रहें।

इसी प्रकार फौजी कार्य में भी कम्युनिस्टों को चाहिए कि वे उन तमाम जापान-विरोधी जनवादी लोगों के साथ घनिष्ठ सहयोग कायम रखें जो हमारे साथ सहयोग करने को तैयार हैं, चाहे वे मुक्त क्षेत्रों की फौजों के सदस्य हों अथवा न हों।

मजदूरों, किसानों और अन्य मेहनतकश लोगों के जन-समुदाय के अन्दर प्रतिरोध-युद्ध और उत्पादन के उत्साह को बढ़ाने के लिए हमें लगान व सूद कम करने तथा मजदूरों और दफ्तर के कर्मचारियों की आमदनी में बढ़ोतरी करने की नीति को मुकम्मिल तौर पर लागू करना चाहिए। मुक्त क्षेत्रों के कार्यकर्ताओं को चाहिए कि वे मेहनत के साथ आर्थिक काम करना सीखें। कृषि, उद्योग और व्यापार का बड़े पैमाने पर विकास करने तथा सिपाहियों और जनता के रहन-सहन में सुधार करने के लिए तमाम उपलब्ध शक्तियों को गोलबन्द करना चाहिए। इस उद्देश्य को प्राप्त करने के लिए श्रम-होड़ आन्दोलन चलाया जाना चाहिए तथा श्रमवीरों और आदर्श कार्यकर्ताओं को पुरस्कार दिए जाने चाहिए। जब जापानी आक्रमणकारियों को शहरों से खदेड़ दिया जाएगा, तो हमारे कार्यकर्ताओं को शहरों का आर्थिक काम करना तेजी से सीखना होगा।

हमारे सांस्कृतिक व शैक्षणिक कार्य का विकास किया जाना चाहिए, जिससे मुक्त क्षेत्रों की जनता की तथा सबसे पहले मजदूरों, किसानों और सैनिकों के व्यापक जन-समुदाय की राजनीतिक चेतना का स्तर उन्नत किया जा सके, और कार्यकर्ताओं को बड़ी संख्या में ट्रेनिंग दी जा सके। यह काम करते समय उन लोगों को

जो इसमें लगे हुए हैं, देहातों की मौजूदा ठोस परिस्थितियों और देहातों की जनता की आवश्यकताओं व आकांक्षाओं के मुताबिक बाह्य रूप और विषय-वस्तु को अपनाना चाहिए।

मुक्त क्षेत्रों में अपने सभी कामों में हमें जनशक्ति और भौतिक साधन-स्रोतों को बहुत किफायत से इस्तेमाल करना चाहिए तथा कार्य के हर क्षेत्र में दीर्घकालीन योजनाएं बनाई जानी चाहिए और दुरुपयोग व अपव्यय से बचना चाहिए। जापानी हमलावरों को शिकस्त देने और नए चीन का निर्माण करने, दोनों ही कामों के लिए इसकी जरूरत है।

मुक्त क्षेत्रों में अपने सभी कामों में हमें इस बात पर खास ध्यान देना चाहिए कि स्थानीय मामलों का प्रशासन स्थानीय लोगों द्वारा ही चलाए जाने में मदद की जाए, तथा बेहतरीन स्थानीय लोगों के बीच से बहुत से स्थानीय कार्यकर्ता तैयार किए जाएं। देहातों में जनवादी क्रान्ति के महान कार्य को पूरा करना तब तक असम्भव है जब तक अन्य स्थानों से आए हुए कामरेड स्थानीय लोगों के साथ एकरूप नहीं हो जाते, तथा स्थानीय कार्यकर्ताओं की बड़े उत्साह के साथ, मेहनत से और ठोस परिस्थितियों के अनुरूप उपायों से मदद नहीं करते, तथा जब तक वे स्थानीय कार्यकर्ताओं को अपने भाइयों व बहिनों की तरह प्यार नहीं करते।

आठवीं राह सेना, नई चौथी सेना अथवा जनता की अन्य किसी सशस्त्र सैन्य-शक्ति की कोई यूनिट जब किसी जगह पहुंचे, तो उसे तुरन्त स्थानीय कार्यकर्ताओं के नेतृत्व में काम करने वाली सैन्य-शक्तियों को, जिनमें न सिर्फ मिलिशिया और आत्मरक्षा कोर शामिल हैं बल्कि स्थानीय फौजें और क्षेत्रीय फौजी फारमेशनें भी

शामिल हैं, संगठित करने में स्थानीय लोगों की मदद करनी चाहिए। इससे बाद में स्थानीय लोगों के नेतृत्व में काम करने वाली नियमित सेनाओं और नियमित फौजी फारमेशनों का निर्माण सम्भव हो जाएगा। यह एक अत्यन्त महत्वपूर्ण कार्य है। जब तक इसे पूरा नहीं किया जाएगा, तब तक हम न तो स्थाई जापान-विरोधी आधार-क्षेत्रों का निर्माण कर सकेंगे और न जन-सेना का विस्तार कर सकेंगे।

बेशक, स्थानीय लोगों को भी चाहिए कि वे अपनी तरफ से उन क्रान्तिकारी कार्यकर्ताओं और जन-सेनाओं का हार्दिक स्वागत करें और उनकी मदद करें जो अन्य क्षेत्रों से वहां आए हों।

राष्ट्रीय कार्य का छिपकर विध्वंस करने वाले तत्वों से निपटने के सवाल के बारे में हर आदमी को चौकन्ना कर दिया जाए। कारण, खुले शत्रुओं और राष्ट्रीय कार्य का खुले तौर पर विध्वंस करने वालों का पता लगाना और उनसे निपटना तो आसान है, लेकिन छिपकर काम करने वालों का पता लगाना और उनसे निपटना आसान नहीं। इसलिए इस मामले को हमें अत्यन्त गम्भीरता के साथ हाथ में लेना चाहिए, तथा साथ ही इस प्रकार के लोगों से निपटते समय बहुत सावधानी बरतनी चाहिए।

चीन के मुक्त क्षेत्रों में धार्मिक विश्वास की आजादी के उसूल के मुताबिक सभी धर्मों को मानने की इजाजत है। प्रोटेस्टेन्ट, कैथोलिक, इस्लाम, बौद्ध और अन्य धर्मों के सभी अनुयायियों को जन-सरकार तब तक संरक्षण प्रदान करती रहेगी जब तक वे उसके कानून का पालन करते रहेंगे। हर आदमी को धार्मिक विश्वास रखने अथवा न रखने की आजादी है; न तो मजबूर करने की इजाजत है और न भेदभाव बरतने की।

हमारी कांग्रेस को चाहिए कि वह मुक्त क्षेत्रों की जनता के सामने यह प्रस्ताव रखे कि चीन के मुक्त क्षेत्रों की जनता का सम्मेलन यथासम्भव जल्दी से जल्दी येनान में बुलाया जाए, जिसमें विभिन्न मुक्त क्षेत्रों की गतिविधियों के बीच तालमेल कायम करने, प्रतिरोध-युद्ध में उनके कार्य को सुदृढ़ बनाने, क्वोमिन्ताङ क्षेत्रों में जनता के जापान-विरोधी जनवादी आन्दोलन को मदद देने, जापान-अधिकृत क्षेत्रों में जनता की भूमिगत सैन्य-शक्तियों को मदद देने, तथा राष्ट्रीय एकता और मिलीजुली सरकार की स्थापना के कार्य को आगे बढ़ाने से सम्बन्धित सवालों पर विचार किया जाए।[11] आज जबकि चीन के मुक्त क्षेत्र जापान का प्रतिरोध करने और राष्ट्र को बचाने के राष्ट्रव्यापी जन-संघर्ष का गुरुत्व-केन्द्र बन गए हैं, समूचे देश के व्यापक जन-समुदाय की आशाएं हम पर केन्द्रित हैं और हमारा कर्तव्य है कि उसे निराश न करें। इस प्रकार का सम्मेलन चीनी जनता के राष्ट्रीय मुक्ति कार्य को भारी प्रोत्साहन प्रदान करेगा।

५. समूची पार्टी एक हो जाए और अपने कार्यों को पूरा करने के लिए संघर्ष करे

साथियो! अब जबकि हम अपने कार्यों को और उन्हें पूरा करने के लिए निर्धारित की जाने वाली नीतियों को समझ गए हैं, इन नीतियों को कार्यान्वित करते समय और इन कार्यों को पूरा करते समय हमारा रुख कैसा होना चाहिए?

वर्तमान अन्तरराष्ट्रीय और घरेलू परिस्थिति ने हमारे लिए

ग्रौर चीनी जनता के लिए उज्ज्वल भविष्य का रास्ता खोल दिया है तथा अभूतपूर्व अनुकूल परिस्थितियां पैदा कर दी हैं ; यह स्पष्ट है ग्रौर इसके बारे में किसी किस्म के सन्देह की गुंजाइश नहीं है। लेकिन साथ ही अब भी कुछ गम्भीर कठिनाइयां मौजूद हैं। जो लोग सिर्फ उज्ज्वल पक्ष को ही देखते हैं ग्रौर कठिनाइयों को नहीं देखते, वे पार्टी द्वारा निर्धारित कार्यों को पूरा करने के लिए कारगर रूप से संघर्ष नहीं कर सकते।

चीनी जनता के साथ मिलकर हमारी पार्टी ने अपने इतिहास के चौबीस वर्षों में, जिनमें जापानी-आक्रमण-विरोधी युद्ध के आठ वर्ष भी शामिल हैं, चीनी राष्ट्र के अन्दर भारी शक्ति का निर्माण किया है ; हमारे काम की सफलता बिलकुल स्पष्ट है ग्रौर इसके बारे में किसी किस्म के सन्देह की गुंजाइश नहीं है। लेकिन साथ ही हमारे काम में अब भी कमियां मौजूद हैं। जो लोग सिर्फ सफलता के पक्ष को ही देखते हैं ग्रौर कमियों को नहीं देखते, वे पार्टी द्वारा निर्धारित कार्यों को पूरा करने के लिए कारगर रूप से संघर्ष नहीं कर सकते।

१९२१ में जन्म लेने के बाद से चौबीस वर्षों में चीनी कम्युनिस्ट पार्टी तीन महान संघर्षों से गुजर चुकी है – उत्तरी अभियान, भूमि-क्रान्ति युद्ध ग्रौर जापानी-आक्रमण-विरोधी युद्ध, जो अब भी जारी है। हमारी पार्टी ने शुरू से ही मार्क्सवादी-लेनिनवादी सिद्धान्त को अपना आधार बनाया है, क्योंकि मार्क्सवाद-लेनिनवाद दुनिया के सर्वहारा वर्ग की सबसे ज्यादा सही ग्रौर सबसे ज्यादा क्रान्तिकारी वैज्ञानिक विचारधारा का निचोड़ है। जब मार्क्सवाद-लेनिनवाद की सर्वव्यापी सच्चाई को चीनी क्रान्ति के ठोस अमल के साथ

मिलाया जाने लगा, तो चीनी क्रान्ति ने एक बिलकुल नई शकल अख्तियार कर ली तथा नव-जनवाद की एक समूची ऐतिहासिक मंजिल का उदय हो गया। मार्क्सवादी-लेनिनवादी सिद्धान्त ग्रौर विचारधारा से लैस होकर चीनी कम्युनिस्ट पार्टी ने चीनी जनता के लिए एक नवीन कार्यशैली को खोज निकाला है, एक ऐसी कार्य-शैली को जो मुख्यतः सिद्धान्त को व्यवहार के साथ मिलाती है, जनता के साथ घनिष्ठ सम्पर्क कायम करती है ग्रौर आत्म-आलोचना के तरीके पर अमल करती है।

मार्क्सवाद-लेनिनवाद की सर्वव्यापी सच्चाई को, जो समूची दुनिया के सर्वहारा वर्ग के संघर्ष के व्यवहार को प्रतिबिम्बित करती है, जब चीनी सर्वहारा वर्ग ग्रौर विशाल जन-समुदाय के क्रान्तिकारी संघर्ष के ठोस अमल के साथ मिलाया जाता है तो वह चीनी जनता के लिए एक अजेय शस्त्र बन जाती है। यह स्थिति चीनी कम्युनिस्ट पार्टी हासिल कर चुकी है। हमारी पार्टी हर तरह के कठमुल्लावाद ग्रौर अनुभववाद के, जो इस उसूल के विपरीत है, खिलाफ दृढ़ता से संघर्ष करके विकसित हुई है ग्रौर आगे बढ़ी है। कठमुल्लावाद ठोस व्यवहार से नाता तोड़ लेता है, जबकि अनुभववाद आंशिक अनुभव को सर्वव्यापी सच्चाई समझ बैठता है ; ये दोनों ही प्रकार के अवसरवादी विचार मार्क्सवाद के विपरीत हैं। हमारी पार्टी ने अपने चौबीस वर्षों के संघर्ष के दौरान इस प्रकार के गलत विचारों के खिलाफ सफलतापूर्वक संघर्ष चलाया है ग्रौर वह अब भी यह संघर्ष चला रही है, तथा इस प्रकार अपने को विचारधारात्मक तौर पर अधिकाधिक सुदृढ़ बनाती जा रही है। अब हमारी पार्टी के सदस्यों की तादाद १२,१०,००० हो गई है। इन सदस्यों की

भारी बहुसंख्या प्रतिरोध-युद्ध के दौरान पार्टी में शामिल हुई है, तथा उनकी विचारधारा में विभिन्न प्रकार के दोष मौजूद हैं। यही बात कुछ ऐसे सदस्यों पर भी लागू होती है जो प्रतिरोध-युद्ध से पहले पार्टी में शामिल हुए। पिछले कुछ वर्षों में किया गया दोष-निवारण का काम अत्यन्त सफल रहा है और उक्त दोषों को दूर करने में काफी कामयाबी हासिल हो चुकी है। इस कार्य को जारी रखा जाना चाहिए तथा "भावी गलतियों से बचने के लिए पिछली गलतियों से सबक सीखने" और "मरीज को बचाने के लिए उसकी बीमारी का इलाज करने" की भावना के साथ पार्टी के भीतर विचार-धारात्मक शिक्षा का और अधिक व्यापक रूप से विकास किया जाना चाहिए। हमें पार्टी के सभी स्तरों पर काम करने वाले नेतृत्वकारी कार्यकर्ताओं को यह बात समझा देनी चाहिए कि सिद्धान्त और व्यवहार की घनिष्ठ एकरूपता एक ऐसी विशेषता है जो हमारी पार्टी को बाकी तमाम राजनीतिक पार्टियों से भिन्न बना देती है। इसलिए विचारधारात्मक शिक्षा वह मुख्य कड़ी है जिस पर महान राजनीतिक संघर्षों के लिए समूची पार्टी को एकताबद्ध करते समय मजबूत गिरफ्त रखनी चाहिए। जब तक यह नहीं किया जाता, तब तक पार्टी अपना कोई भी राजनीतिक कार्य पूरा नहीं कर सकती।

एक अन्य विशेषता, जो हमारी पार्टी को बाकी तमाम राजनीतिक पार्टियों से भिन्न बना देती है, यह है कि व्यापकतम जन-समुदाय के साथ हमने अत्यन्त घनिष्ठ सम्बन्ध कायम कर लिए हैं। हमारा प्रस्थान-बिन्दु है तन-मन से जनता की सेवा करना और एक क्षण के लिए भी जन-समुदाय से अलग न होना, सभी मामलों में केवल जनता के हितों को ही आधार बनाना, न कि अपने व्यक्तिगत हितों अथवा

किसी छोटे ग्रुप के हितों को, तथा जनता के प्रति अपनी जिम्मेदारी को पार्टी के नेतृत्वकारी संगठनों के प्रति अपनी जिम्मेदारी के साथ एकरूप कर देना। कम्युनिस्टों को हर समय सच्चाई का पक्षपोषण करने के लिए तैयार रहना चाहिए, क्योंकि हर सच्चाई जनता के हित में होती है; कम्युनिस्टों को हर समय अपनी गलतियां सुधारने के लिए तैयार रहना चाहिए, क्योंकि गलतियां जनता के हित के विरुद्ध होती हैं। पिछले चौबीस वर्षों का अनुभव हमें यह सिखाता है कि सही कार्य, सही नीति और सही कार्यशैली एक निश्चित समय और स्थान में अनिवार्य रूप से जन-समुदाय की मांगों के अनुरूप होते हैं और अनिवार्य रूप से जन-समुदाय के साथ हमारे सम्बन्धों को सुदृढ़ बना देते हैं, तथा गलत कार्य, गलत नीति और गलत कार्य-शैली एक निश्चित समय और स्थान में अनिवार्य रूप से जन-समुदाय की मांगों के अनुरूप नहीं होते और अनिवार्य रूप से हमें जन-समुदाय से अलग कर देते हैं। कठमुल्लावाद, अनुभववाद, फरमानशाही, दुमछल्लावाद, संकीर्णतावाद, नौकरशाही और काम के दौरान अहंकारपूर्ण रवैया अपनाना, इस प्रकार की बुराइयां आखिर निश्चित रूप से नुकसानदेह और असहनीय क्यों हैं तथा इन बुराइयों से ग्रस्त लोगों को आखिर इन्हें क्यों दूर करना चाहिए, इसका कारण यह है कि ये बुराइयां हमें जन-समुदाय से अलग कर देती हैं। हमारी कांग्रेस को समूची पार्टी का आवाहन करना चाहिए कि वह सतर्क रहे और इस बात की ओर ध्यान दे कि किसी भी पद पर काम करने वाला कोई भी साथी जन-समुदाय से अलग न रहे। उसे हर एक साथी को यह सिखाना चाहिए कि वह जनता को प्यार करे तथा जन-समुदाय की आवाज को ध्यान से सुने ; जहां कहीं भी वह जाए,

जन-समुदाय के साथ एकरूप हो जाए, तथा जन-समुदाय से ऊपर रहने के बजाय उसके बीच घुलमिल जाए ; तथा उसके वर्तमान स्तर को देखते हुए उसे जागृत करे अथवा उसकी राजनीतिक चेतना को उन्नत करे, और कदम-ब-कदम स्वेच्छा से संगठित होने और उन तमाम आवश्यक संघर्षों को कदम-ब-कदम चलाने में उसकी मदद करे जिन्हें उस समय और उस स्थान की अन्दरूनी और बाहरी परिस्थितियों में चलाया जा सकता है। फरमानशाही पर अमल करना सभी तरह के कामों में गलत है, क्योंकि जन-समुदाय की राजनीतिक चेतना के स्तर से आगे बढ़ने और स्वेच्छा के उसूल का उल्लंघन करने वाली यह प्रवृत्ति जल्दबाजी की बीमारी को जाहिर करती है। हमारे साथियों को यह नहीं सोचना चाहिए कि जिन बातों को वे खुद समझते हैं उन्हें जन-समुदाय भी समझता है। आम जनता उन बातों को समझती है अथवा नहीं तथा वह कार्यवाही करने के लिए तैयार है अथवा नहीं, इसका पता सिर्फ जन-समुदाय के बीच जाने और जांच-पड़ताल करने से ही चल सकता है। अगर हम ऐसा करेंगे, तो हम फरमानशाही से बच जाएंगे। किसी काम में दुमछल्लावादी रुख अपनाना भी गलत है, क्योंकि जन-समुदाय की राजनीतिक चेतना के स्तर से पिछड़ जाने वाली और जन-समुदाय का आगे की ओर नेतृत्व करने के उसूल का उल्लंघन करने वाली यह प्रवृत्ति सुस्ती की बीमारी को जाहिर करती है। हमारे साथियों को यह नहीं सोचना चाहिए कि उन बातों को जन-समुदाय भी नहीं समझता जिन्हें हमारे साथी खुद अभी तक नहीं समझ पाते। यह बात अक्सर देखने में आती है कि जन-समुदाय हमसे आगे बढ़ जाता है तथा एक कदम और आगे बढ़ने के लिए लालायित रहता है ; फिर भी हमारे

साथी जन-समुदाय के नेता की भूमिका अदा नहीं कर पाते और कुछ पिछड़े हुए तत्वों के दुमछल्ले बन जाते हैं, उनके विचारों को प्रतिबिम्बित करते हैं, इतना ही नहीं उनके विचारों को गलती से व्यापक जन-समुदाय के विचार समझ बैठते हैं। संक्षेप में, हर कामरेड को यह समझा देना चाहिए कि एक कम्युनिस्ट की कथनी और करनी की सबसे बड़ी कसौटी यह है कि वे जनता की भारी बहुसंख्या के सर्वोच्च हितों के अनुरूप हैं अथवा नहीं तथा उनका जनता की भारी बहुसंख्या समर्थन करती है अथवा नहीं। हर एक साथी को यह बात समझने में मदद दी जानी चाहिए कि यदि हम जनता पर भरोसा रखेंगे, जन-समुदाय की असीमित सृजन-शक्ति पर पक्का विश्वास रखेंगे तथा इस प्रकार जन-समुदाय पर विश्वास करेंगे और उसके साथ एकरूप हो जाएंगे, तो हम हर मुश्किल पर काबू पा सकेंगे, तथा हमें कोई भी दुश्मन पछाड़ नहीं सकेगा और हम हर दुश्मन को पछाड़ देंगे।

सच्चे दिल से आत्म-आलोचना करना एक अन्य विशेषता है जो हमारी पार्टी तथा बाकी तमाम राजनीतिक पार्टियों के बीच फर्क कर देती है। जैसा कि हम कहते हैं, अगर किसी कमरे में नियमित रूप से झाड़ू न लगाया गया तो उसमें धूल जमा हो जाएगी ; अगर हम रोजाना अपना मुंह नहीं धोएंगे, तो उस पर मैल जम जाएगी। हमारे साथियों के दिमाग पर और हमारी पार्टी के काम पर भी धूल जमा हो सकती है और उसे झाड़ू से साफ करने और धोने की जरूरत होती है। कहावत है "चलता पानी कभी नहीं सड़ता और किवाड़ के कब्जे को कभी दीमक नहीं लगती"। इसका मतलब यह है कि जो वस्तु लगातार गतिशील रहती है उसके अन्दर कीटाणुओं और दूसरे

जीवों की घुसपैठ नहीं हो सकती। अपने काम की नियमित रूप से जांच करते रहना तथा इस प्रक्रिया के दौरान एक जनवादी कार्य-शैली का विकास करना, न आलोचना से डरना और न आत्म-आलोचना से, तथा इस प्रकार की लोकप्रिय चीनी सूक्तियों को लागू करना जैसे "जो कुछ तुम जानते हो, वह सब बिना किसी संकोच के बता दो", "कहने वाले को दोषी न ठहराओ और उसकी बात को एक चेतावनी समझो", तथा "अगर तुम गलतियां कर चुके हो तो उन्हें सुधार लो और अगर तुमने गलतियां न की हों तो उनसे बचते रहो" – यही एकमात्र कारगर तरीका है जिसके जरिए हम अपने साथियों के विचारों और अपने पार्टी-संगठनों को सभी प्रकार की राजनीतिक धूल और कीटाणुओं से बचा सकते हैं। दोष-निवारण आन्दोलन, जिसका मकसद "भावी गलतियों से बचने के लिए पिछली गलतियों से सबक सीखना और मरीज को बचाने के लिए उसकी बीमारी का इलाज करना" है, इतना ज्यादा कारगर इसलिए साबित हुआ क्योंकि इसमें आलोचना और आत्म-आलोचना सच्चे दिल से और ईमानदारी से की गई तथा सतही तौर पर और तोड़-मरोड़ कर नहीं की गई। चूंकि हम चीनी कम्युनिस्ट अपनी तमाम कार्यवाहियों का आधार व्यापकतम चीनी जनता के सर्वोच्च हितों को बनाते हैं तथा इस बात का पक्का यकीन रखते हैं कि हमारा कार्य एक पूर्ण न्यायोचित कार्य है, तथा इस प्रकार हम किसी भी तरह की व्यक्तिगत कुरबानी देने में पीछे नहीं रहते और अपने कार्य के लिए हर समय अपनी जिन्दगी निछावर करने को तैयार रहते हैं, इसलिए यह कैसे हो सकता है कि हम किसी ऐसे विचार, दृष्टिकोण, मत अथवा तरीके को त्यागने में अनिच्छा प्रकट करें जो जनता की जरूरतों के

अनुरूप न हो? यह कैसे हो सकता है कि हम राजनीतिक धूल और कीटाणुओं से अपना स्वच्छ मुख गन्दा होने दें अथवा अपने स्वास्थ्य को हानि पहुंचने दें? अनगिनत क्रान्तिकारी शहीदों ने जनता के हित में अपने जीवन का बलिदान किया है तथा हम जीवित लोगों को जब कभी उनकी याद आती है तो हमारा हृदय दुख से भर जाता है – ऐसी सूरत में भला यह कैसे हो सकता है कि हम अपने निजी हितों को बलिदान नहीं करेंगे अथवा अपनी गलतियों को दूर नहीं करेंगे?

साथियो! जब यह कांग्रेस समाप्त हो जाएगी, तो हम लोग मोर्चे पर जाएंगे, तथा इस कांग्रेस के फैसलों के मार्गदर्शन में जापानी आक्रमणकारियों को आखिरी शिकस्त देने और एक नए चीन का निर्माण करने के लिए संघर्ष करेंगे। इस उद्देश्य को प्राप्त करने के लिए हम अपने देश की समूची जनता के साथ एकता कायम करेंगे। मैं फिर एक बार दोहरा दूं: हम किसी भी वर्ग, किसी भी राजनीतिक पार्टी, किसी भी सामाजिक ग्रुप अथवा व्यक्ति के साथ एकता कायम करने को तैयार हैं बशर्ते कि वह जापानी आक्रमणकारियों को शिकस्त देने और एक नए चीन का निर्माण करने का पक्षपोषण करता हो। इस उद्देश्य को प्राप्त करने के लिए हम संगठन और अनुशासन के जनवादी केन्द्रीयतावादी उसूलों के आधार पर अपनी पार्टी की सभी शक्तियों को मजबूती के साथ एकताबद्ध करेंगे। हम हर ऐसे कामरेड के साथ एकता कायम करेंगे जो पार्टी के कार्यक्रम, संविधान और फैसलों का पालन करता है। उत्तरी अभियान के काल में हमारी पार्टी के सदस्यों की संख्या ६०,००० से कम थी, जिनमें से अधिकांश लोगों को बाद में दुश्मन ने तितर-बितर कर दिया; भूमि-क्रान्ति युद्ध

के काल में हमारे सदस्यों की संख्या ३,००,००० से कम थी, और उनमें से भी अधिकांश लोगों को दुश्मन ने तितर-बितर कर दिया। अब हमारे सदस्यों की संख्या १२,००,००० से ज्यादा है; इस बार हमें किसी भी सूरत में दुश्मन को इस बात की इजाजत नहीं देनी चाहिए कि वह हमें तितर-बितर कर दे। अगर हम इन तीनों कालों के अनुभव से फायदा उठा सकें, अगर हम नम्र बने रहें और घमण्ड से दूर रहें तथा पार्टी के भीतर सभी साथियों की एकता को और पार्टी के बाहर समूची जनता के साथ अपनी एकता को सुदृढ़ बनाने में कामयाब रहें, तो यह निश्चित है कि दुश्मन द्वारा तितर-बितर किए जाने के बजाय हम जापानी आक्रमणकारियों और उनके टुकड़खोर पालतू कुत्तों को दृढ़तापूर्वक, सर्वांगीण रूप से, समग्र रूप से और सम्पूर्ण रूप से नष्ट कर देंगे तथा उसके बाद एक नव-जनवादी चीन का निर्माण कर सकेंगे।

तीन क्रान्तिकारी कालों और खास तौर से जापानी-आक्रमण-विरोधी युद्ध के काल के अनुभव से हमें और समूची चीनी जनता को यह पक्का यकीन हो गया है कि चीनी कम्युनिस्ट पार्टी के प्रयत्नों के बिना, और चीन के कम्युनिस्टों के चीनी जनता का मुख्य सम्बल बने बिना, चीन अपनी स्वाधीनता और मुक्ति कदापि प्राप्त नहीं कर सकता, अथवा अपना औद्योगीकरण और अपनी कृषि का आधुनिकीकरण कदापि नहीं कर सकता।

साथियो! मुझे पक्का यकीन है कि चीनी कम्युनिस्ट पार्टी के रहते, जो तीन क्रान्तियों के अनुभव से लैस है, हम अपने महान राजनीतिक कार्य को अवश्य पूरा कर सकते हैं।

हजारों शहीद बड़ी बहादुरी के साथ जनता के लिए अपनी

जिन्दगी निछावर कर चुके हैं; आइए, हम उनका झण्डा बुलन्द रखें तथा उनके खून से सींचे हुए रास्ते पर आगे बढ़ते जाएं!

शीघ्र ही एक नव-जनवादी चीन का जन्म होने जा रहा है। आइए, हम उस महान दिवस का अभिनन्दन करें!

नोट

१ चीनी राष्ट्रीय मुक्ति हिरावल कोर, जिसे संक्षिप्त रूप से "राष्ट्रीय हिरावल कोर" का नाम दिया जाता था, एक क्रान्तिकारी नौजवान संगठन था, जिसे चीनी कम्युनिस्ट पार्टी के नेतृत्व में फरवरी १९३६ में उन प्रगतिशील नौजवानों ने कायम किया था जिन्होंने १९३५ के ९ दिसम्बर आन्दोलन में भाग लिया। प्रतिरोध-युद्ध शुरू होने के बाद इसके बहुत से सदस्यों ने फौजी कार्यवाही में हिस्सा लिया तथा दुश्मन के मोर्चे के पृष्ठभाग में आधार-क्षेत्रों की स्थापना करने के लिए काम किया। क्वोमिन्ताङ क्षेत्रों में राष्ट्रीय हिरावल कोर के संगठनों को च्याङ काई-शेक सरकार ने १९३८ में जबरन भंग कर दिया; उसके जो संगठन मुक्त क्षेत्रों में थे उन्हें देशोद्धार नौजवान संघ में, जो इससे भी ज्यादा बड़े पैमाने का संगठन था, मिला दिया गया।

२ तीन कम्युनिस्ट-विरोधी हमलों के विस्तृत विवरण के लिए देखिए इसी ग्रन्थ में: "क्वोमिन्ताङ की केन्द्रीय कार्यकारिणी कमेटी के ग्यारहवें पूर्ण अधिवेशन और तीसरी जन राजनीतिक परिषद के दूसरे अधिवेशन के बारे में एक टिप्पणी"।

३ स्कोबी यूनान में बरतानवी साम्राज्यवादियों की आक्रमणकारी सेनाओं का कमाण्डर था। अक्तूबर १९४४ में, जब जर्मन आक्रमणकारी योरप महाद्वीप में हार खाकर पीछे हट रहे थे, उस समय स्कोबी की फौजें यूनान में घुस गईं तथा अपने साथ उस प्रतिक्रियावादी यूनानी सरकार को भी ले गईं जिसे देश के बाहर लन्दन में कायम किया गया था। स्कोबी ने यूनान की जन-मुक्ति सेना पर,

जिसने जर्मन आक्रमणकारियों के खिलाफ दीर्घकाल तक वीरतापूर्ण संघर्ष चलाया था, आक्रमण करने में तथा यूनानी देशभक्तों का कत्लेआम करने में इस सरकार का निर्देशन किया और उसे सहायता दी, और इस प्रकार यूनान में खून की नदियां बहा दीं।

४ "पाओ-च्या" एक प्रकार की प्रशासनिक व्यवस्था थी जिसके जरिए क्वोमिन्ताङ प्रतिक्रियावादी गुट बुनियादी स्तर पर अपना फासिस्ट शासन लागू करता था। १ अगस्त १९३२ को च्याङ काई-शेक ने हूनान, हुपे और आनह्वेइ इन तीन प्रान्तों में "काउन्टियों में 'पाओ' और 'च्या' को संगठित करने और जनगणना करने के नियमों" को जारी किया। इन "नियमों" में यह व्यवस्था की गई थी कि " 'पाओ' और 'च्या' को परिवारों के आधार पर संगठित किया जाए ; हर परिवार का, हर 'च्या' का, जिसमें दस परिवार होंगे, तथा हर 'पाओ' का, जिसमें दस 'च्या' होंगे, एक मुखिया होना चाहिए"। पड़ोसियों से मांग की जाती थी कि वे एक दूसरे की गतिविधियों पर निगरानी रखें और उनकी सूचना अधिकारियों को दें, तथा यदि उनमें से एक भी कसूरवार साबित होता था तो सबको सजा दी जाती थी ; बेगार कराने के प्रतिक्रान्तिकारी तरीके भी निर्धारित किए गए थे। ७ नवम्बर १९३४ को क्वोमिन्ताङ सरकार ने अधिकृत रूप से यह घोषणा कर दी कि फासिस्ट शासन की यह व्यवस्था उसके शासन के अन्तर्गत सभी प्रान्तों और म्युनिसिपलटियों में लागू कर दी जाए।

५ यहां तात्पर्य क्वोमिन्ताङ सरकार द्वारा लागू की गई सामन्ती और दलाल-पूंजीवादी फासिस्ट शिक्षा से है।

६ चीन, अमरीका और बरतानिया द्वारा नवम्बर १९४३ में आयोजित काहिरा सम्मेलन ने काहिरा घोषणा जारी की, जिसमें स्पष्ट रूप से यह व्यवस्था की गई कि थाइवान और कुछ अन्य प्रदेशों को चीन को वापस लौटा दिया जाए। जून १९५० में अमरीका सरकार ने इस समझौते का खुल्लमखुल्ला उल्लंघन करते हुए अपना एक नौबेड़ा थाइवान पर कब्जा करने भेज दिया, और इस प्रकार चीन को थाइवान पर अपनी प्रभुसत्ता लागू करने से वंचित करने की कोशिश की।

७ अमेइ पहाड़ सछ्वान प्रान्त के दक्षिण-पश्चिमी भाग में एक प्रसिद्ध पहाड़ है। यहां इसका सछ्वान प्रान्त के एक पहाड़ी इलाके के प्रतीक के रूप में उल्लेख किया गया है, जिसने जापानी-आक्रमण-विरोधी युद्ध में च्याङ काई-शेक गुट की आखिरी पनाह का काम किया था।

८ देखिए "माओ त्सेतुङ की संकलित रचनाएं" ग्रन्थ २ के लेख : "प्रतिक्रियावादियों को सजा देनी ही होगी", "तमाम जापान-विरोधी शक्तियों को एकताबद्ध करो और कम्युनिस्ट-विरोधी कट्टरतावादियों के खिलाफ संघर्ष करो", "क्वोमिन्ताङ से दस मांगें" आदि।

९ डा० सुन यात-सेन के १० नवम्बर १९२४ के "उत्तर की ओर प्रस्थान के बारे में वक्तव्य" से उद्धृत।

१० यहां तात्पर्य च्याङ काई-शेक की प्रतिक्रान्तिकारी पुस्तिका "चीन का भाग्य" में लिखी गई बकवास से है।

११ अटलान्टिक चार्टर अमरीका और बरतानिया द्वारा अगस्त १९४१ में अटलान्टिक सम्मेलन समाप्त होने पर जारी किया गया था। मास्को सम्मेलन अक्तूबर १९४३ में सोवियत संघ, अमरीका और बरतानिया के विदेश मंत्रियों द्वारा आयोजित किया गया। सोवियत संघ, अमरीका और बरतानिया का तेहरान सम्मेलन ईरान की राजधानी में नवम्बर से दिसम्बर १९४३ तक आयोजित किया गया। सोवियत संघ, अमरीका और बरतानिया का क्रीमिया सम्मेलन फरवरी १९४५ में याल्टा में आयोजित किया गया। इन सभी अन्तरराष्ट्रीय सम्मेलनों में भाग लेने वाले पक्षों ने अपने समझौतों में यह संकल्प व्यक्त किया कि वे फासिस्ट जर्मनी और जापान को मिलकर परास्त करेंगे, तथा युद्ध के बाद, आक्रमणकारी शक्तियों और फासिस्टवाद के बचेखुचे अंशों के पुनरुत्थान की रोकथाम करेंगे, विश्वशान्ति बनाए रखेंगे तथा सभी देशों की जनता को स्वाधीनता व जनवाद की आकांक्षाएं पूरी करने में मदद करेंगे। लेकिन युद्ध के फौरन बाद ही अमरीका और बरतानिया की सरकारों ने इन तमाम अन्तरराष्ट्रीय समझौतों का उल्लंघन कर दिया।

१२ चीन के मुक्त क्षेत्रों के प्रतिनिधि के रूप में कामरेड तुङ पी-ऊ ने अन्तरराष्ट्रीय संगठन के बारे में संयुक्त राष्ट्र सम्मेलन में भाग लिया। यह सम्मेलन अप्रैल से जून १९४५ तक सान फ्रांसिस्को में बुलाया गया और इसमें ५० देशों के प्रतिनिधियों ने भाग लिया। मास्को और तेहरान सम्मेलनों के फैसलों के

अनुसार अगस्त से अक्तूबर १६४४ तक सोवियत संघ, अमरीका, बरतानिया और चीन के प्रतिनिधियों ने अमरीका के डम्बार्टन ओक्स नामक स्थान में संयुक्त राष्ट्र संघ के संगठन के बारे में प्रस्तावों का मसौदा तैयार किया था।

[११] चीनी कम्युनिस्ट पार्टी की सातवीं राष्ट्रीय कांग्रेस के बाद येनान में चीन के मुक्त क्षेत्रों की जनता का सम्मेलन बुलाने के लिए एक तैयारी कमेटी बनाई गई तथा उसने एक उद्घाटन अधिवेशन का भी आयोजन किया जिसमें सभी मुक्त क्षेत्रों के प्रतिनिधि शामिल हुए। लेकिन जापान के आत्मसमर्पण के बाद परिस्थिति बदल गई और चीन के मुक्त क्षेत्रों की जनता का सम्मेलन नहीं बुलाया जा सका।

एक मूर्ख बूढ़ा आदमी, जिसने पहाड़ों को हटा दिया*

११ जून १६४५

हमारी कांग्रेस बहुत सफल रही है। हमने तीन काम किए हैं। पहला, हमने पार्टी की कार्यदिशा यह निर्धारित की है कि साहस के साथ जन-समुदाय को गोलबन्द किया जाए और जनशक्ति का विस्तार किया जाए, जिससे वह हमारी पार्टी के नेतृत्व में जापानी आक्रमणकारियों को पराजित करे, समूची जनता को मुक्त कराए और एक नव-जनवादी चीन की स्थापना करे। दूसरा, हमने पार्टी का नया संविधान स्वीकार किया है। तीसरा, हमने पार्टी की नेतृत्वकारी संस्था – केन्द्रीय कमेटी – को चुना है। अब से हमारा कार्य है पार्टी की कार्यदिशा को कार्यान्वित करने में तमाम सदस्यों का नेतृत्व करना। हमारी यह कांग्रेस विजय की कांग्रेस है, एकता की कांग्रेस है। प्रतिनिधियों ने तीनों रिपोर्टों पर बेहतरीन विचार प्रकट किए हैं। बहुत से साथियों ने आत्म-आलोचना की ; तथा एकता के उद्देश्य को नजर में रखते हुए आत्म-आलोचना के जरिए एकता प्राप्त की गई। इस कांग्रेस ने एकता का, आत्म-आलोचना

* यह चीनी कम्युनिस्ट पार्टी की सातवीं राष्ट्रीय कांग्रेस में कामरेड माओ त्सेतुङ द्वारा दिया गया समापन भाषण है।

का और पार्टी के भीतर जनवाद लागू करने का आदर्श उपस्थित किया है।

इस कांग्रेस की समाप्ति पर बहुत से साथी अपने कार्य-स्थलों और विभिन्न युद्ध-मोर्चों पर चले जाएंगे। साथियो, आप जहां कहीं भी जाएं, आपको इस कांग्रेस की कार्यदिशा का प्रचार करना चाहिए और पार्टी-सदस्यों के जरिए इसे व्यापक जन-समुदाय को समझा देना चाहिए।

इस कांग्रेस की कार्यदिशा का प्रचार करने का हमारा उद्देश्य सारी पार्टी और समूची जनता में क्रान्ति की निश्चित विजय के प्रति विश्वास पैदा करना है। हमें सबसे पहले हिरावल दस्ते की राजनीतिक चेतना को बढ़ाना चाहिए, ताकि वह दृढ़ संकल्प रखकर और कुरबानियों से डरे बिना, हर तरह की कठिनाइयों को दूर करते हुए विजय प्राप्त करता जाए। लेकिन इतना ही काफी नहीं ; हमें समूची जनता की राजनीतिक चेतना को भी जागृत करना चाहिए, ताकि वह विजय प्राप्त करने के लिए स्वेच्छापूर्वक और खुशी-खुशी हमारे कन्धे से कन्धा मिलाकर लड़े। हमें समूची जनता को यह विश्वास दिला देना चाहिए कि चीन चीनी जनता का है, न कि प्रतिक्रियावादियों का। प्राचीन काल में चीन में एक नीतिकथा प्रचलित थी जिसका शीर्षक है "एक मूर्ख बूढ़ा आदमी, जिसने पहाड़ों को हटा दिया"। इस नीतिकथा में पुराने जमाने के एक बूढ़े आदमी का वर्णन किया गया है जो उत्तरी चीन में रहता था और "उत्तरी पहाड़ का मूर्ख बूढ़ा आदमी" कहलाता था। उसके घर का दरवाजा दक्षिण की ओर था जिसके सामने थाएहाङ व वाङऊ नामक दो बड़े पहाड़ खड़े थे, जो उसके रास्ते में बाधा पहुंचाते थे। उसने

अपने बेटों को बुलाया और उन्होंने हाथ में फावड़ा लेकर दृढ़ निश्चय के साथ उन दोनों पहाड़ों को खोदना शुरू कर दिया। एक दूसरा बूढ़ा आदमी, जो "बुद्धिमान बूढ़ा आदमी" कहलाता था, उन्हें देखकर खिल्ली उड़ाते हुए बोला : "तुम लोग कितने मूर्ख हो, जो यह सब कर रहे हो ! इन दो बड़े पहाड़ों को खोद डालना तुम बाप-बेटों के लिए बिलकुल असम्भव है।" मूर्ख बूढ़े आदमी ने उत्तर दिया : "मेरी मृत्यु के बाद मेरे बेटे यह काम जारी रखेंगे, बेटों के बाद पोते और पोतों के बाद परपोते इसी प्रकार पीढ़ी-दर-पीढ़ी इसे जारी रखेंगे। हालांकि ये पहाड़ बहुत ऊंचे हैं, परन्तु इससे ज्यादा ऊंचे तो ये हो नहीं सकते, और हम इन्हें जितना ही खोदते जाएंगे ये उतने ही छोटे होते जाएंगे। फिर हम इन्हें क्यों नहीं हटा सकते ?" बुद्धिमान बूढ़े आदमी के गलत विचार का खण्डन करने के बाद, उसने प्रतिदिन उन पहाड़ों को खोदना जारी रखा और अपने विश्वास में जरा भी ढील नहीं आने दी। इससे भगवान बड़े प्रभावित हुए और उन्होंने दो देवदूतों को भेजा, जो इन दोनों पहाड़ों को अपनी पीठ पर उठा ले गए।[१] आज चीनी जनता के ऊपर भी दो अत्यन्त भारी बड़े-बड़े पहाड़ मौजूद हैं। इनमें एक का नाम साम्राज्यवाद है और दूसरे का सामन्तवाद। चीनी कम्युनिस्ट पार्टी ने बहुत पहले ही इन दोनों पहाड़ों को उखाड़ फेंकने का पक्का इरादा कर लिया है। हमें अपने इरादे पर डटे रहना चाहिए और लगातार काम करते रहना चाहिए, तब हम भी भगवान को प्रभावित कर सकेंगे। हमारा भगवान दूसरा कोई न होकर चीनी जनता ही है। यदि वह उठ खड़ी हो और हमारे साथ इन पहाड़ों को खोदने लगे, तो हम इन्हें क्यों नहीं हटा सकते ?

। कल दो अमरीकियों के साथ, जो अमरीका के लिए रवाना हो रहे थे, बात करते समय मैंने कहा कि अमरीका सरकार हमारी जड़ काटने की कोशिश कर रही है जिसकी उसे इजाजत नहीं दी जा सकती। कम्युनिस्टों के विरुद्ध च्याङ काई-शेक की मदद करने की अमरीका सरकार की नीति का हम विरोध करते हैं। लेकिन हमें एक तो अमरीकी जनता और अमरीका सरकार के बीच तथा दूसरे, अमरीका सरकार के अन्दर उसके नीति-निर्माताओं और उनके मातहत आम कर्मचारियों के बीच फर्क करना चाहिए। मैंने इन दोनों अमरीकियों से कहा, "तुम अपनी सरकार के नीति-निर्माताओं को बताओ कि हम तुम अमरीकियों को मुक्त क्षेत्रों में जाने की इजाजत इसलिए नहीं देते क्योंकि तुम्हारी नीति कम्युनिस्टों के विरुद्ध च्याङ काई-शेक की मदद करना है, तथा हमें अपनी सतर्कता बनाए रखनी पड़ती है। तुम मुक्त क्षेत्रों में आ सकते हो, बशर्ते कि तुम्हारा मकसद जापान से लड़ना हो। लेकिन इसके लिए सबसे पहले एक समझौता होना चाहिए। हम तुम्हें जहां-तहां टोह लेने की इजाजत नहीं देंगे। पैट्रिक जे० हरले ने चीनी कम्युनिस्ट पार्टी के साथ सहयोग न करने का खुलेआम ऐलान कर दिया है,[२] फिर तुम हमारे मुक्त क्षेत्रों में आकर इधर-उधर क्यों चक्कर मारते फिरना चाहते हो ?"

कम्युनिस्टों के विरुद्ध च्याङ काई-शेक की मदद करने की अमरीका सरकार की नीति से अमरीकी प्रतिक्रियावादियों की बेहयाई जाहिर होती है। लेकिन चीनी और विदेशी प्रतिक्रियावादियों की वे तमाम साजिशें जो चीनी जनता को विजय प्राप्त करने से रोकती हैं, निश्चय ही विफल होकर रहेंगी। वर्तमान विश्व में जनवादी शक्तियों की

धारा ही मुख्य धारा है, जबकि जनवाद-विरोधी प्रतिक्रियावादी धारा महज एक प्रतिकूल धारा है। प्रतिक्रियावादी प्रतिकूल धारा राष्ट्रीय स्वाधीनता और जनता की लोकशाही की मुख्य धारा को बहा ले जाने की कोशिश कर रही है, लेकिन वह मुख्य धारा कभी नहीं बन सकती। आज भी वैसी ही स्थिति बनी हुई है जिसके बारे में स्तालिन ने बहुत पहले बता दिया था, यानी पुराने विश्व में तीन बड़े अन्तरविरोध मौजूद हैं : पहला, साम्राज्यवादी देशों में सर्वहारा वर्ग और पूंजीपति वर्ग के बीच का अन्तरविरोध ; दूसरा, विभिन्न साम्राज्यवादी देशों के बीच का अन्तरविरोध ; तीसरा, उपनिवेशों व अर्ध-उपनिवेशों और उन पर आधिपत्य जमाने वाले साम्राज्यवादी देशों के बीच का अन्तरविरोध।[३] ये तीनों बड़े अन्तरविरोध न सिर्फ मौजूद हैं, बल्कि वे अधिकाधिक तीव्र तथा विस्तृत भी होते जा रहे हैं। इन अन्तरविरोधों की मौजूदगी और इनके विकास की वजह से एक दिन ऐसा आएगा, जब सोवियत-विरोधी, कम्युनिस्ट-विरोधी और जनवाद-विरोधी प्रतिक्रियावादी प्रतिकूल धारा, जो आज भी मौजूद है, विलीन हो जाएगी।

आज चीन में दो कांग्रेसों का आयोजन हो रहा है। एक है क्वोमिन्ताङ की छठी राष्ट्रीय कांग्रेस और दूसरी है कम्युनिस्ट पार्टी की सातवीं राष्ट्रीय कांग्रेस। इन दोनों का उद्देश्य बिलकुल भिन्न है : एक का उद्देश्य है कम्युनिस्ट पार्टी और चीन की जनवादी शक्तियों को मिटा देना और इस प्रकार चीन को अन्धेरे में ढकेल देना ; दूसरे का उद्देश्य है जापानी साम्राज्यवाद व उसके गुर्गों — चीनी सामन्ती शक्तियों — का तख्ता उलट देना और एक नव-जनवादी चीन का निर्माण करना तथा इस प्रकार चीन को प्रकाश की ओर ले जाना।

इन दोनों कार्यदिशाओं के बीच टकराव मौजूद है। हमें पक्का विश्वास है कि चीनी जनता, चीनी कम्युनिस्ट पार्टी के नेतृत्व में और चीनी कम्युनिस्ट पार्टी की सातवीं कांग्रेस की कार्यदिशा के मार्गदर्शन में पूर्ण विजय प्राप्त करेगी, जबकि क्वोमिन्ताङ की प्रतिक्रान्तिकारी कार्यदिशा अनिवार्यतः विफल हो जाएगी।

नोट

[१] यह नीतिकथा "ल्ये चि" नामक पुस्तक में संकलित है।

[२] पैट्रिक जे० हरले अमरीकी रिपब्लिकन पार्टी का एक प्रतिक्रियावादी राजनीतिज्ञ था, जिसे १९४४ के अन्त में चीन में अमरीकी राजदूत नियुक्त किया गया था। च्याङ काई-शेक की कम्युनिस्ट-विरोधी नीति का समर्थन करने की वजह से उसे चीनी जनता के दृढ़ विरोध का सामना करना पड़ा और नवम्बर १९४५ में मजबूर होकर त्यागपत्र देना पड़ा। चीनी कम्युनिस्ट पार्टी के साथ सहयोग न करने की घोषणा हरले ने २ अप्रैल १९४५ को वाशिंगटन में अमरीकी विदेश विभाग के प्रेस सम्मेलन में की थी। इस घोषणा के बारे में विस्तृत जानकारी प्राप्त करने के लिए इसी ग्रन्थ में "हरले और च्याङ के युगल-अभिनय की टांय-टांय फिस" शीर्षक लेख देखिए।

[३] जे० वी० स्तालिन, "लेनिनवाद के आधारभूत सिद्धान्त" का पहला भाग, "लेनिनवाद का ऐतिहासिक स्रोत"।

सेना द्वारा आत्मनिर्भरता के लिए किए जाने वाले उत्पादन के बारे में तथा दोष-निवारण और उत्पादन के महान आन्दोलनों के महत्व के बारे में*

२७ अप्रैल १९४५

१ मौजूदा परिस्थिति में जबकि हमारी सेना को बेइन्तहा भौतिक कठिनाइयों का सामना करना पड़ रहा है और जब वह बिखरी हुई फौजी कार्यवाहियों में जुटी हुई है, इस बात की इजाजत कतई नहीं दी जा सकती कि नेतृत्वकारी संस्थाएं सेना की रसद जुटाने की पूरी जिम्मेदारी अपने ऊपर ले लें, क्योंकि ऐसा करने से न सिर्फ निचले स्तरों के व्यापक अफसरों व सैनिकों की पहलकदमी में बाधा पड़ेगी बल्कि उनकी जरूरतें भी पूरी नहीं हो पाएंगी। हमें यह कहना चाहिए : "साथियो, आओ! हम सबके सब अमल के मैदान में उतर पड़ें और अपनी कठिनाइयों को सर कर लें।" बस अगर ऊपरी स्तर का नेतृत्व हमारे कार्यों को कुशलतापूर्वक निर्धारित कर दे और अपने मातहतों को इस बात की खुली छूट दे दे कि स्वावलम्बन

* यह सम्पादकीय कामरेड माओ त्सेतुङ ने येनान के "मुक्ति दैनिक" के लिए लिखा था।

के जरिए वे खुद अपनी कठिनाइयों को सर कर लें, तो समस्या हल हो जाएगी तथा सचमुच और भी अधिक सन्तोषजनक ढंग से हल हो जाएगी। लेकिन अगर इसके बजाय ऊपरी स्तर का नेतृत्व ऐसे तमाम बोझ सदा अपने कन्धों पर उठा ले जिन्हें उठाना सचमुच उसके अपने बूते के बाहर है, अपने मातहतों को अपनी कठिनाइयां सर करने की छूट देने का साहस न करे और व्यापक जन-समुदाय में स्वावलम्बन के प्रति उत्साह न जगाए, तो ऊपरी स्तर के नेतृत्व की तमाम कोशिशों के बावजूद फल यह होगा कि ऊपरी स्तर का नेतृत्व और उसके मातहत काम करने वाले, दोनों ही अपने आपको बड़ी विकट स्थिति में फंसा हुआ पाएंगे, और मौजूदा परिस्थिति में समस्या कभी भी हल नहीं हो सकेगी। पिछले कुछ वर्षों का अनुभव इस बात को पूरी तरह साबित कर देता है। "एकीकृत नेतृत्व और विकेन्द्रित प्रबन्ध" का उसूल मौजूदा परिस्थिति में हमारे मुक्त क्षेत्रों के समूचे आर्थिक जीवन को संगठित करने के सिलसिले में सही उसूल साबित हुआ है।

मुक्त क्षेत्रों की सशस्त्र सेना में सैनिकों की संख्या ६,००,००० से ऊपर पहुंच चुकी है। जापानी हमलावरों को हराने के लिए हमें यह संख्या अभी और कई गुनी अधिक बढ़ानी होगी। लेकिन अभी तक हमें कोई भी बाहरी सहायता नहीं मिली। आगे चलकर यदि यह सहायता हमें मिल भी जाए, तो भी जीविका के साधन तो हमें फिर भी खुद ही जुटाने होंगे ; इस मामले में लेशमात्र भी मनोगतवाद नहीं आने देना चाहिए। निकट भविष्य में हमें अपनी जरूरतभर फौजी फारमेशनों को उन क्षेत्रों से, जहां अब वे बिखरी हुई फौजी कार्यवाहियां चला रही हैं, हटाकर शत्रु के खास-खास सामरिक

लक्ष्यों पर हमला करने के लिए केन्द्रित करना होगा। केन्द्रित कार्यवाही के लिए बनाई गई ऐसी बड़ी फारमेशनें अपनी आत्म-निर्भरता के लिए उत्पादन-कार्य में नहीं लग सकेंगी और इससे भी बड़ी बात यह है कि उन्हें पृष्ठभाग से काफी बड़ी मात्रा में रसद सप्लाई किए जाने की जरूरत पड़ जाएगी ; केवल पीछे रह जाने वाली स्थानीय फौजी यूनिटें और प्रादेशिक फौजी फारमेशनें (और उनकी संख्या फिर भी काफी बड़ी होगी) ही पहले की तरह दोनों कार्य करती रहेंगी – लड़ती भी रहेंगी और साथ ही उत्पादन भी करती रहेंगी। ऐसी सूरत में क्या इस बात में कोई सन्देह रह जाता है कि लड़ाई और ट्रेनिंग में बाधा डाले बिना हमारी समूची सेना को निरपवाद रूप से उत्पादन के जरिए आंशिक रूप से आत्मनिर्भर बन जाने का कार्य सीख लेने के लिए मौजूदा अवसर का उपयोग करना चाहिए ?

हमारी परिस्थितियों में, आत्मनिर्भरता के लिए खुद सेना के हाथों उत्पादन-कार्य किया जाना हालांकि बाहरी रूप की दृष्टि से पिछड़ा हुआ या प्रतिगामी होगा, लेकिन सार रूप में वह प्रगतिशील है और बड़े ही ऐतिहासिक महत्व का है। ऊपरी तौर से देखा जाए तो हम श्रम-विभाजन के उसूल का उल्लंघन कर रहे हैं। लेकिन फिर भी, हमारी परिस्थितियों, यानी देश की गरीबी और फूट (जो क्वोमिन्ताङ के मुख्य शासक गुट के अपराधों के फलस्वरूप पैदा हुई) को देखते हुए और लम्बे अरसे तक चलने वाले जनता के बिखरे छापामार युद्ध को देखते हुए, हम जो कुछ इस समय कर रहे हैं वह प्रगतिशील ही है। जरा गौर कीजिए, क्वोमिन्ताङ के सिपाही कितने निस्तेज और निर्बल हैं और मुक्त क्षेत्रों के हमारे

सैनिक कैसे हट्टे-कट्टे और बलिष्ठ हैं ! और इस पर भी गौर कीजिए कि अपनी आत्मनिर्भरता के लिए उत्पादन-कार्य शुरू करने के पहले खुद हमें भी कितनी कठिनाइयों का सामना करना पड़ता था और उत्पादन-कार्य करने के बाद से हम कितने अधिक खुशहाल हो गए हैं ! आइए, किन्हीं दो सैन्य-दलों से, मसलन किन्हीं दो कम्पनियों से हम यह सवाल पूछें कि बताओ, दोनों तरीकों में से कौन सा तरीका चुनते हो, एक तो यह कि तुम्हारी जीविका के तमाम साधनों की पूर्ति की व्यवस्था ऊपरी स्तर का नेतृत्व किया करे और दूसरा यह कि ऊपरी स्तर का नेतृत्व तुम्हें कुछ भी न दे अथवा दे भी तो बहुत थोड़ा सा और अपनी जरूरत की हर चीज या जरूरत की कुल सामग्री का अधिकांश या आधा अथवा आधे से भी कम स्वयं पैदा कर लेने दे । बेहतर नतीजे किस तरीके से हासिल होंगे ? किस तरीके को अपनाने के लिए वे अधिक इच्छुक होंगे ? आत्मनिर्भरता के लिए उत्पादन-कार्य करने के सालभर के गम्भीर तजरबे के बाद वे उक्त प्रश्न के उत्तर में निश्चय ही यही कहेंगे कि बेहतर नतीजे तो दूसरे तरीके से ही हासिल होते हैं ; लिहाजा वे दूसरा तरीका अपनाने के ही इच्छुक होंगे, तथा उक्त प्रश्न के उत्तर में वे निश्चय ही यही कहेंगे कि पहले तरीके के नतीजे दूसरे तरीके के मुकाबले घटिया होते हैं, लिहाजा पहला तरीका अपनाने के लिए वे अनिच्छुक ही होंगे । कारण यह है कि दूसरा तरीका हमारी सेना के हर व्यक्ति की जीवन-स्थिति को सुधार सकता है जबकि पहला तरीका मौजूदा कठिन भौतिक परिस्थितियों में उनकी जरूरतें हरगिज पूरी नहीं कर सकता, चाहे ऊपरी स्तर का नेतृत्व कितना ही जोर क्यों न लगा ले । हमने चूंकि देखने में "पिछड़ा हुआ" और "प्रतिगामी"

तरीका अपनाया है, इसलिए हमारी सेनाएं जीविका के साधनों की कमी दूर कर लेने और अपने रहन-सहन की हालत सुधार लेने में समर्थ हैं, जिसके फलस्वरूप हर सैनिक अब हट्टा-कट्टा और बलिष्ठ है ; और परिणाम यह हुआ है कि हम खुद भी कठिनाइयों में पड़ी जनता का कर-भार हल्का करने में समर्थ हुए हैं और इस तरह हमने जनता का समर्थन हासिल कर लिया है, तथा हम इस दीर्घकालीन युद्ध को जारी रखने और अपनी सशस्त्र सेनाओं का विस्तार करने में समर्थ हुए हैं और इस तरह हम मुक्त क्षेत्रों का विस्तार कर सकेंगे, शत्रु-अधिकृत क्षेत्रों का साइज छोटा कर देंगे और अन्तिम रूप से हमलावरों का नाश करने व पूरे चीन को मुक्त कराने का अपना लक्ष्य हासिल कर लेंगे । यह बात क्या महान ऐतिहासिक महत्व की नहीं है ?

सेना द्वारा आत्मनिर्भरता के लिए किए जाने वाले उत्पादन-कार्य से न सिर्फ सेना के रहन-सहन की स्थितियों में सुधार हुआ है और जनता का बोझ हल्का हुआ है और इस प्रकार सेना का और अधिक विस्तार करना सम्भव हो सका है, बल्कि साथ ही इसके बहुत से सहायक परिणाम भी हुए हैं । वे इस प्रकार हैं :

(१) अफसरों और सिपाहियों के आपसी सम्बन्धों में सुधार । अफसर और सिपाही एक साथ मिलकर उत्पादन-कार्य करते हैं और उनमें भाईचारा पैदा हो जाता है ।

(२) श्रम के प्रति बेहतर रुख । इस समय हमारी जो फौजी भरती की व्यवस्था है, वह न तो पुराने ढंग की भाड़े की सेना की व्यवस्था है और न ही अनिवार्य भरती की व्यवस्था ; हमारी

व्यवस्था एक तीसरी ही व्यवस्था है, यानी स्वयंसेवकों की लामबन्दी की व्यवस्था। भाड़े की सेना की व्यवस्था से यह व्यवस्था बेहतर इसलिए है कि यह इतने ज्यादा लोगों को आवारागर्द नहीं बना डालती ; लेकिन अनिवार्य भरती की व्यवस्था से यह कुछ घटकर है। फिर भी हमारी मौजूदा परिस्थितियां हमें स्वयंसेवकों की लामबन्दी की व्यवस्था अपनाने भर की ही इजाजत देती हैं, अनिवार्य भरती की व्यवस्था लागू करने की इजाजत नहीं देतीं। स्वयंसेवकों के रूप में जुटाए गए सैनिकों को लम्बे समय तक सैन्य-जीवन बिताना पड़ता है, और इस कारण श्रम के प्रति उनका रुख बिगड़ सकता है और इस प्रकार उनमें से कुछ आवारागर्द भी बन सकते हैं या युद्ध-सरदारों की सेनाओं में जो बुरी आदतें पाई जाती थीं, उनमें से कुछ की उन्हें भी लत लग सकती है। लेकिन जब से सेना ने आत्मनिर्भरता के लिए उत्पादन-कार्य शुरू किया है, तब से श्रम के प्रति बेहतर रुख अपनाया जाने लगा है तथा आवारागर्दी के तौर-तरीकों पर काबू पा लिया गया है।

(३) अनुशासन में दृढ़ता। उत्पादन के दौरान अपनाया जाने वाला श्रम-अनुशासन लड़ाई के अनुशासन और सैनिक जीवन के अनुशासन को कमजोर नहीं बनाता बल्कि वास्तव में उसे और अधिक मजबूत बना देता है।

(४) सेना और जनता के बीच के सम्बन्धों में सुधार। जहां एक बार सशस्त्र सेना ने खुद अपनी "गृहस्थी सम्भालना" शुरू कर दिया, तो जनता की सम्पत्ति में हस्तक्षेप बहुत कम हो जाता है अथवा बिलकुल नहीं होता। चूंकि उत्पादन-कार्य में

सेना और जनता श्रम का आदान-प्रदान करते हैं और एक दूसरे की मदद करते हैं, इसलिए उनकी आपसी मैत्री सुदृढ़ बनती जाती है।

(५) सेना में सरकार के प्रति शिकवे-शिकायतें कम हो जाती हैं, तथा दोनों के पारस्परिक सम्बन्धों में सुधार हो जाता है।

(६) जनता के महान उत्पादन आन्दोलन को प्रोत्साहन। जहां एक बार सेना उत्पादन-कार्य में जुट गई, तो सरकारी संगठनों और अन्य संगठनों द्वारा भी उसमें जुट जाने की आवश्यकता और अधिक स्पष्ट हो जाती है तथा वे और अधिक सक्रियता के साथ ऐसा करने लगते हैं ; साथ ही उत्पादन बढ़ाने के लिए समूची जनता द्वारा व्यापक आन्दोलन चलाए जाने की आवश्यकता भी स्वाभाविक रूप से और अधिक स्पष्ट हो जाती है तथा यह आन्दोलन भी और अधिक सक्रियता के साथ चलाया जाने लगता है।

दोष-निवारण के लिए और उत्पादन-कार्य के लिए जो व्यापक आन्दोलन क्रमशः १९४२ और १९४३ में शुरू हुए, उन्होंने एक निर्णायक भूमिका अदा की और वही निर्णायक भूमिका वे आज भी अदा कर रहे हैं ; दोष-निवारण आन्दोलन की निर्णायक भूमिका हमारे विचारधारात्मक जीवन में और उत्पादन आन्दोलन की निर्णायक भूमिका हमारे भौतिक जीवन में अदा की गई है और अब भी की जा रही है। इन दोनों कड़ियों को यदि हमने उचित समय पर न पकड़ा, तो क्रान्ति की पूरी शृंखला को पकड़ने में भी

हम असमर्थ रह जाएंगे और हमारा संघर्ष आगे नहीं बढ़ सकेगा।

जैसा कि हम जानते हैं, १९३७ के पहले पार्टी में शामिल हुए लोगों में से अब महज दसियों हजार लोग ही रह गए हैं, तथा इस समय हमारे पार्टी-सदस्यों की संख्या बारह लाख से ज्यादा है और उनमें अधिकतर लोग किसान और निम्न-पूंजीपति वर्ग के अन्य हिस्सों से आए हैं। इन साथियों का क्रान्तिकारी जोश सराहनीय है और मार्क्सवादी प्रशिक्षण पाने की चाह भी इनमें है, पर साथ ही यह भी सच है कि ये साथी अपने साथ ऐसी-ऐसी धारणाएं पार्टी में लाए हैं जो मार्क्सवाद से मेल नहीं खातीं या पूरे तौर पर मेल नहीं खातीं। १९३७ के पहले पार्टी में शामिल हुए लोगों पर भी यही बात लागू होती है। यह एक अत्यन्त गम्भीर अन्तरविरोध है, एक अत्यन्त भारी कठिनाई है। ऐसी परिस्थिति में अगर मार्क्सवादी शिक्षण का व्यापक आन्दोलन, यानी दोष-निवारण आन्दोलन हमने न चलाया होता तो क्या हम अबाध गति से आगे बढ़ सकते? जाहिर है कि नहीं। लेकिन चूंकि हमने कार्यकर्ताओं की एक बड़ी तादाद के बीच इस अन्तरविरोध को – पार्टी के भीतर मौजूद सर्वहारा विचारधारा और गैर-सर्वहारा विचारधाराओं (जिनमें निम्न-पूंजीपति वर्ग, पूंजीपति वर्ग और यहां तक कि जमींदार वर्ग की विचारधाराएं, मगर मुख्य रूप से निम्न-पूंजीपति वर्ग की विचारधारा शामिल हैं) के बीच के अन्तरविरोध को, यानी मार्क्सवादी विचारधारा और गैर-मार्क्सवादी विचारधाराओं के बीच के अन्तरविरोध को – हल कर लिया है या हल कर लेने की प्रक्रिया से गुजर रहे हैं, इसलिए हमारी पार्टी एक अभूतपूर्व (सम्पूर्ण नहीं) विचारधारात्मक, राजनीतिक और संगठनात्मक एकता में निबद्ध होकर

लम्बे और मजबूत डग भरती हुई आगे बढ़ सकती है। अब से हमारी पार्टी का और भी बड़ा विकास होगा और ऐसा होना भी चाहिए, तथा मार्क्सवादी विचारधारा के उसूलों के मार्गदर्शन में हम अपनी पार्टी का और भी कारगर ढंग से आगे विकास करने में समर्थ होंगे।

दूसरी कड़ी है उत्पादन के लिए छेड़ा गया आन्दोलन। प्रतिरोध-युद्ध आठ साल से चल रहा है। जब यह युद्ध शुरू हुआ था तो हमारे पास अनाज व कपड़ा मौजूद था। लेकिन आगे चलकर हालात बिगड़ते ही चले गए और हम बड़ी कठिनाई में फंस गए; अनाज की कमी पड़ गई, खाद्य-तेल और नमक की कमी पड़ गई, बिस्तर और कपड़े-लत्ते की कमी पड़ गई और रोकड़ की कमी पड़ गई। यह भारी कठिनाई, यह घोर अन्तरविरोध १९४०-४३ के दौरान जापान द्वारा किए गए भारी आक्रमणों और क्वोमिन्ताङ सरकार द्वारा किए गए बड़े पैमाने के तीन जन-विरोधी हमलों ("कम्युनिस्ट-विरोधी हमलों") के तुरत बाद ही पैदा हो गया। अगर हमने इस कठिनाई पर काबू न पाया होता, इस अन्तरविरोध को हल न किया होता, इस कड़ी को मजबूती से न पकड़ा होता, तो क्या हमारा जापान-विरोधी संघर्ष आगे बढ़ सकता? जाहिर है कि नहीं। लेकिन हमने उत्पादन करना सीख लिया है और आज भी सीख रहे हैं, तथा इसलिए हम फिर ओजस्वी हो उठे हैं और जीवन-शक्ति से भरपूर हो गए हैं। कुछ ही वर्षों में हम किसी भी शत्रु से न डरने और सभी प्रकार के शत्रुओं पर विजय प्राप्त करने में समर्थ हो जाएंगे।

इस तरह, दोष-निवारण और उत्पादन के लिए छेड़े गए दोनों

महान आन्दोलनों के ऐतिहासिक महत्व के बारे में किसी प्रकार के सन्देह की कोई गुंजाइश नहीं रहती।

आइए, हम एक कदम और आगे बढ़ें और अपने संघर्ष के दूसरे कार्यों की पूर्ति की आधार-शिला के रूप में इन दोनों महान आन्दोलनों को हर कहीं फैला दें। अगर हम यह काम कर सकें, तो फिर चीनी जनता की पूर्ण मुक्ति की गारन्टी हो जाएगी।

अब वसन्त की जुताई का समय आ गया है और आशा है कि हर मुक्त क्षेत्र में सभी नेतृत्वकारी साथी, कार्यकर्ता और जन-समुदाय के लोग उत्पादन की कड़ी को समय रहते मजबूती से पकड़ लेंगे और पिछले वर्ष से भी अधिक बड़ी उपलब्धियां प्राप्त करने की कोशिश करेंगे। खासकर उन इलाकों में जहां के लोगों ने उत्पादन का विकास करना अभी तक नहीं सीख लिया है, इस वर्ष और अधिक बड़े प्रयास करने होंगे।

हरले और च्याङ के युगल-अभिनय की टांय-टांय फिस*

१० जुलाई १९४५

च्याङ काई-शेक के तानाशाही शासन पर पर्दा डालने के लिए चौथी जन राजनीतिक परिषद के अधिवेशन का उद्घाटन ७ जुलाई को, छुङकिङ में हुआ। यह अब तक का सबसे छोटा उद्घाटन-अधिवेशन था। इसमें न सिर्फ चीनी कम्युनिस्ट पार्टी का कोई सदस्य उपस्थित नहीं था बल्कि परिषद में अन्य ग्रुपों का प्रतिनिधित्व करने वाले अनेक सदस्य भी अनुपस्थित थे। परिषद के कुल २९० सदस्यों में से सिर्फ १८० सदस्यों ने ही शिरकत की। च्याङ काई-शेक ने उद्घाटन-अधिवेशन में यह कहा :

> राष्ट्रीय एसेम्बली बुलाने से सम्बन्धित सवालों के बारे में सरकार कोई ठोस प्रस्ताव नहीं रखने जा रही, तथा इसलिए आप साहेबान इन मामलों पर पूरी तरह विचार-विमर्श कर सकते हैं। सरकार इन तमाम सवालों के बारे में आपकी राय को पूरी सच्चाई और ईमानदारी के साथ सुनने को तैयार है।

* यह टिप्पणी कामरेड माओ त्सेतुङ ने शिनह्वा समाचार-एजेन्सी के लिए लिखी थी।

इससे सम्भवतया इस वर्ष १२ नवम्बर को राष्ट्रीय एसेम्बली बुलाने के समूचे मामले का अन्त हो जाएगा। साम्राज्यवादी पैट्रिक जे० हरले का इस मामले से भी ताल्लुक रहा है। पहले उसने च्याङ काई-शेक को ऐसा करने के लिए भारी प्रोत्साहन दिया, तथा इसी की वजह से च्याङ काई-शेक के नववर्ष-दिवस के भाषण[१] में कुछ कड़ापन आ गया तथा इससे कहीं ज्यादा कड़ापन उसके १ मार्च के भाषण[२] में आ गया, जिसमें उसने अपने इस संकल्प का ऐलान किया कि वह १२ नवम्बर को "राजसत्ता जनता को वापस लौटा देगा"। अपने १ मार्च के भाषण में उसने चीनी कम्युनिस्ट पार्टी के इस प्रस्ताव को, जिसमें चीनी जनता का आम संकल्प प्रकट किया गया था, बिलकुल ठुकरा दिया कि सभी पार्टियों का सम्मेलन बुलाया जाए और एक मिलीजुली सरकार कायम की जाए। उसने चीनी कम्युनिस्ट पार्टी की सशस्त्र सेनाओं का "पुनर्गठन" करने के लिए तथाकथित तीन व्यक्तियों की कमेटी, जिसमें एक अमरीकी भी शामिल हो, बनाने के विचार को जोश-खरोश के साथ पेश किया। उसने यह कहने की भी गुस्ताखी की कि वह चीनी कम्युनिस्ट पार्टी को "कानूनी हैसियत" सिर्फ तभी देगा जब चीनी कम्युनिस्ट पार्टी अपनी सेनाओं को उसके हवाले कर देगी। इन सब बातों में जनाब पैट्रिक जे० हरले साहब की हिमायत का निर्णयात्मक महत्व है। २ अप्रैल को वाशिंगटन में दिए गए एक बक्तव्य में हरले ने चीनी कम्युनिस्ट पार्टी की भूमिका से इनकार करने, उसकी गतिविधियों पर कीचड़ उछालने, उसके साथ असहयोग का ऐलान करने तथा ऐसी ही अन्य साम्राज्यवादी बेहूदा बातें करने के अलावा, च्याङ काई-शेक की "राष्ट्रीय एसेम्बली" और इसी प्रकार की अन्य दुष्टतापूर्ण

स्कीमों को बढ़ावा देने की भरपूर कोशिश की। इस प्रकार अमरीका के हरले और चीन के च्याङ काई-शेक का युगल-अभिनय, जिसका मुश्तरका उद्देश्य चीनी जनता की बलि चढ़ाना है, कर्कशता की पराकाष्ठा पर पहुंच गया। तब से इस तमाशे की टांय-टांय फिस होती नजर आ रही है। हर जगह इसका विरोध करने के लिए अनगिनत आवाजें उठ रही हैं, चीनियों और विदेशियों दोनों में, क्वोमिन्ताङ के भीतर और बाहर दोनों जगह, किसी पार्टी में शरीक लोगों और निर्दलीय लोगों दोनों में। इसका एकमात्र कारण यह है कि हरले-च्याङ गिरोह चाहे कितनी ही लच्छेदार बातें क्यों न करे, उसका मकसद है दरअसल चीनी जनता के हितों को कुरबान करना, चीनी जनता की एकता को और अधिक तहस-नहस करना और चीन में बड़े पैमाने का गृहयुद्ध छेड़ने के लिए भूमिगत माइन बिछाना तथा इस प्रकार फासिस्ट-विरोधी युद्ध में और युद्ध के बाद शान्तिपूर्ण सहअस्तित्व की स्थिति में अमरीका और अन्य संश्रयकारी देशों की जनता के मुश्तरका हितों को नष्ट करना। मालूम होता है कि फिलहाल हरले कुछ समय के लिए दुबककर न जाने क्या करने में मशगूल हो गया है, जिसके परिणामस्वरूप च्याङ काई-शेक को जन राजनीतिक परिषद के सामने बेहूदा बातें कहनी पड़ती हैं। पहले, १ मार्च को च्याङ काई-शेक ने कहा :

> हमारे देश की स्थिति अन्य देशों के मुकाबले भिन्न है : राष्ट्रीय एसेम्बली बुलाने से पहले, हमारे यहां कोई भी जिम्मेदार संगठन ऐसा नहीं है जो जनता का प्रतिनिधित्व करता हो तथा जिसके जरिए सरकार जनता से सलाह-मशविरा करके उसकी राय ले सके।

अगर ऐसी बात है तो हमारे जनरलिज्मो साहब "राय" "सुनने" के लिए जन राजनीतिक परिषद के पास क्यों जाते हैं? उसके कथन के अनुसार समूचे चीन में कोई भी "जिम्मेदार संगठन" ऐसा नहीं है जिसके जरिए कोई "जनता से सलाह-मशविरा करके उसकी राय ले सके"; इससे यह साबित होता है कि जन राजनीतिक परिषद एक "संगठन" के रूप में महज खाने-पीने के लिए है, तथा जनरलिज्मो साहब द्वारा इस संगठन की बात "सुनने" का कोई कानूनी आधार नहीं है। लेकिन चाहे जो भी हो, अगर जन राजनीतिक परिषद ने बोगस "राष्ट्रीय" एसेम्बली बुलाना रोकने के बारे में एक भी शब्द कहा, तो यह उसका अच्छा काम समझा जाएगा तथा इसका श्रेय उसे प्राप्त होगा, हालांकि ऐसा करके वह १ मार्च के "शाही हुक्म" का उल्लंघन करेगी और "राजद्रोह" की अपराधी बन जाएगी। निस्सन्देह, जन राजनीतिक परिषद पर टीका-टिप्पणी करने का उचित समय अभी नहीं आया, क्योंकि वह जनरलिज्मो के "सुनने" के लिए आखिर क्या पैदा करती है यह देखने के लिए हमें अभी कुछ दिन और इन्तजार करना पड़ेगा। लेकिन एक बात निश्चित है : जब से चीनी जनता ने इस राष्ट्रीय एसेम्बली के खिलाफ अपनी आवाज बुलन्द करनी शुरू की है, तभी से "वैधानिक राजतंत्र" की दुहाई देने वाले लोग भी हमारे "बादशाह" के बारे में चिन्ता करने लगे हैं, तथा उसे यह सलाह दे रहे हैं कि कहीं वह "सुअरों की संसद"[१] बुलाकर अपने गले में फन्दा न डाल ले और उसका हश्र भी य्वान श-खाए जैसा ही न हो। कौन जानता है कि हमारा "बादशाह" इसके परिणामस्वरूप अपना हाथ खींच लेगा अथवा नहीं? लेकिन यह बिलकुल निश्चित है कि यदि उन्हें एक तिनका भी गंवाना

पड़ा तो हमारा "बादशाह" और उसके नौकर-चाकर लोग जनता को रत्तीभर सत्ता हासिल नहीं करने देंगे। इस बात का फौरी सबूत यह है कि "बादशाह सलामत" ने जनता की यथोचित आलोचना को "बेलगाम हमलों" की संज्ञा दी है। उसने कहा है :

> ...जाहिर है कि युद्ध की स्थिति में जापान-अधिकृत क्षेत्रों में आम चुनाव कराना बिलकुल असम्भव है। इसके परिणामस्वरूप दो वर्ष पूर्व क्वोमिन्ताङ की केन्द्रीय कार्यकारिणी कमेटी के पूर्ण अधिवेशन में यह फैसला किया गया कि युद्ध समाप्त होने के बाद एक वर्ष के भीतर राष्ट्रीय एसेम्बली बुलाई जाए और वैधानिक सरकार कायम कर दी जाए। लेकिन कुछ पक्षों ने उस समय बेलगाम हमले किए।

और इन हमलों का कारण यह था कि यह तारीख बहुत दूर पड़ जाएगी। "बादशाह सलामत" ने उसके बाद यह प्रस्ताव रखा कि "इस बात की सम्भावना को देखते हुए कि युद्ध के अन्तिम निर्णय में देरी हो सकती है तथा युद्ध का अन्त होने के बाद भी हर जगह जल्दी व्यवस्था पुनर्स्थापित नहीं की जा सकती, ज्योंही युद्ध की स्थिति में कुछ स्थिरता आए, राष्ट्रीय एसेम्बली बुला ली जाए।" उसे अनुमान नहीं था कि वे लोग फिर से "बेलगाम हमले" कर डालेंगे। इससे "बादशाह सलामत" भारी दुविधा में पड़ गया। लेकिन चीनी जनता को चाहिए कि वह च्याङ काई-शेक व उसके गिरोह को सबक सिखाए और उन्हें बता दे : तुम चाहे जो भी कहो अथवा करो, जनता की आकांक्षाओं का उल्लंघन करने वाली तुम्हारी किसी भी चाल को कतई बरदाश्त नहीं किया जाएगा। चीनी जनता जिस चीज

की मांग करती है वह है तुरन्त जनवादी सुधार करना, जैसे राजनीतिक कैदियों को रिहा करना, खुफिया विभाग को खत्म करना, तथा जनता को आजादियां देना और राजनीतिक पार्टियों को कानूनी हैसियत देना। तुम इनमें से कोई भी काम नहीं कर रहे, बल्कि "राष्ट्रीय एसेम्बली" बुलाने की तारीख की झूठी समस्या का प्रपंच रच रहे हो ; इससे किसी दुधमुंहे बच्चे को भी धोखा नहीं दिया जा सकता। जब तक न्यूनतम सच्चे जनवादी सुधार नहीं किए जाते, तब तक तुम्हारे द्वारा बुलाई जाने वाली तमाम एसेम्बलियां, चाहे वे बड़ी हों अथवा छोटी, गन्दे पोखर में डाल दी जाएंगी। इसे तुम भले ही "बेलगाम हमलों" का नाम दो, लेकिन इस तरह की हर धोखाधड़ी का दृढ़तापूर्वक, सर्वांगीण रूप से, समग्र रूप से और सम्पूर्ण रूप से पर्दाफाश कर दिया जाना चाहिए तथा उसका नामोनिशान भी बाकी नहीं रहने देना चाहिए। इसका कारण केवल यह है कि यह एक धोखाधड़ी है। एक राष्ट्रीय एसेम्बली का होना अथवा न होना एक बात है, तथा न्यूनतम जनवादी सुधारों का होना अथवा न होना बिलकुल दूसरी बात है। फिलहाल पहली के बिना काम चल सकता है, लेकिन दूसरी को तुरन्त लागू किया जाना चाहिए। जब च्यांङ काई-शेक और उसका गिरोह "जल्दी ही राजसत्ता जनता को वापस लौटा देने" को तैयार हैं, तो वे भला "जल्दी ही" न्यूनतम जनवादी सुधार करने को तैयार क्यों नहीं होते? क्वोमिन्ताङ के साहेबान! जब आप लोग ये अन्तिम पंक्तियां पढ़ेंगे, तो आपको यह मानना पड़ेगा कि चीनी कम्युनिस्ट किसी भी तरह आप पर "बेलगाम हमले" नहीं कर रहे, बल्कि आपसे सिर्फ एक छोटा सा सवाल पूछ रहे हैं। क्या हम आपसे एक सवाल भी नहीं पूछ सकते? क्या आप हमारे सवाल

का जवाब देने में आनाकानी कर सकते हैं? जिस सवाल का आपको जवाब देना चाहिए वह इस प्रकार है : क्या वजह है कि आप "राजसत्ता जनता को वापस लौटा देने" को तो तैयार हैं लेकिन जनवादी सुधार करने को तैयार नहीं?

नोट

[1] यह च्यांङ काई-शेक द्वारा १ जनवरी १९४५ को दिया गया रेडियो-भाषण है, जिसमें न सिर्फ गत वर्ष जापानी हमलावरों के हाथों क्वोमिन्ताङ फौजों की शर्मनाक हार का जिक्र तक नहीं किया गया, बल्कि मनमाने ढंग से जनता पर कीचड़ उछाला गया तथा क्वोमिन्ताङ की एकदलीय तानाशाही खत्म करने और एक मिलीजुली सरकार और संयुक्त सर्वोच्च कमान कायम करने के प्रस्ताव का, एक ऐसे प्रस्ताव का जिसे देश की समूची जनता और समस्त जापान-विरोधी पार्टियों का समर्थन प्राप्त था, विरोध किया गया। उसने क्वोमिन्ताङ की एकदलीय तानाशाही को जारी रखने की जिद की तथा जनता की आलोचना से बचने के लिए एक ढाल के रूप में क्वोमिन्ताङ नियंत्रित तथाकथित "राष्ट्रीय एसेम्बली" को, जिसे देश की समूची जनता नफरत की नजर से देखती थी, बुलाने की बात कही।

[2] १ मार्च १९४५ को च्यांङ काई-शेक ने छुङकिङ में वैधानिक सरकार स्थापना संघ के सामने एक भाषण दिया। उसमें च्यांङ काई-शेक ने अपने "नववर्ष-दिवस भाषण" में प्रकट किए गए प्रतिक्रियावादी विचारों पर अड़े रहने के अलावा यह प्रस्ताव भी रखा कि तीन व्यक्तियों की एक कमेटी बनाई जाए, जिसमें एक अमरीकी प्रतिनिधि भी मौजूद रहे, जिसे आठवीं राह सेना और नई चौथी सेना का "पुनर्गठन" करने का कार्य सौंपा जाए ; इसका मतलब था अमरीकी साम्राज्यवादियों को चीन के घरेलू मामलों में हस्तक्षेप करने के लिए खुला निमंत्रण देना।

[3] १९२३ में उत्तरी युद्ध-सरदार छाओ खुन ने प्रत्येक संसद-सदस्य को

५,००० चांदी के डालर घूस देकर अपने आपको "चीन गणराज्य का प्रेसिडेन्ट" निर्वाचित करवा लिया। वह घूस देकर चुने जाने वाले प्रेसिडेन्ट के रूप में बदनाम हो गया, तथा जिन संसद-सदस्यों को घूस दी गई थी, वे "सुअरों की संसद के सदस्य" कहलाने लगे। कामरेड माओ त्सेतुङ ने यहां क्वोमिन्ताङ की बोगस "राष्ट्रीय एसेम्बली" की तुलना "सुअरों की संसद" से की है।

हरले की नीति के खतरे के बारे में*

१२ जुलाई १९४५

यह बात अधिकाधिक स्पष्ट होती जा रही है कि चीन के प्रति अमरीका की नीति, जिसका प्रतिनिधित्व चीन स्थित अमरीकी राजदूत पैट्रिक जे० हरले करता है, चीन में गृहयुद्ध का संकट पैदा कर रही है। अपनी प्रतिक्रियावादी नीतियों से चिपकी रहकर, क्वोमिन्ताङ सरकार आज से अठारह वर्ष पूर्व अपनी स्थापना से ही गृहयुद्ध का सहारा लेती आई है ; सिर्फ १९३६ में शीआन घटना के समय तथा १९३७ में लम्बी दीवार के दक्षिण में जापानी आक्रमण के समय ही उसे मजबूर होकर कुछ समय के लिए देशव्यापी गृहयुद्ध को छोड़ देना पड़ा था। लेकिन १९३९ से स्थानीय पैमाने पर गृहयुद्ध फिर से चलाया जाने लगा और कभी नहीं रुका। "पहले कम्युनिस्टों से लोहा लो" का नारा क्वोमिन्ताङ सरकार द्वारा अपने लोगों की जत्थेबन्दी के लिए इस्तेमाल किया जाने वाला नारा है, जबकि जापान का प्रतिरोध करने के कार्य को गौण स्थान दिया गया है। इस समय उसके समस्त सैन्य-विनियोजन को जापानी आक्रमणकारियों का प्रतिरोध करने के कार्य में नहीं बल्कि चीन के मुक्त क्षेत्रों से "खोए

---

* यह टिप्पणी कामरेड माओ त्सेतुङ ने शिनह्वा समाचार-एजेन्सी के लिए लिखी थी।

हुए प्रदेश वापस लेने" तथा चीनी कम्युनिस्ट पार्टी का सफाया करने के कार्य में केन्द्रित किया जा रहा है। इस परिस्थिति पर, प्रतिरोध-युद्ध में विजय प्राप्त करने के संघर्ष और युद्ध के बाद शान्तिपूर्ण निर्माण करने के संघर्ष, इन दोनों ही की दृष्टि से हमें गम्भीरता से गौर करना चाहिए। मरहूम प्रेसिडेन्ट रूजवैल्ट ने इस बात पर गौर किया था, और नतीजे के तौर पर, अमरीका के हित में, उसने चीनी कम्युनिस्ट पार्टी पर सशस्त्र आक्रमण करने में क्वोमिन्ताङ को मदद देने की नीति अपनाने से हाथ खींच लिया था। नवम्बर १९४४ में जब हरले ने रूजवैल्ट के निजी प्रतिनिधि की हैसियत से येनान की यात्रा की थी, उस समय उसने क्वोमिन्ताङ की एकदलीय तानाशाही को खत्म करने और एक जनवादी मिलीजुली सरकार कायम करने के बारे में चीनी कम्युनिस्ट पार्टी की योजना से सहमति प्रकट की थी। लेकिन बाद में उसने अपना रुख बदल दिया और जो कुछ उसने येनान में कहा था उससे मुकर गया। यह परिवर्तन २ अप्रैल को उसके द्वारा वाशिंगटन में दिए गए वक्तव्य में नग्न रूप में प्रकट हो गया। इस बीच उसी हरले के कथनानुसार, क्वोमिन्ताङ सरकार, जिसका प्रतिनिधित्व च्याङ काई-शेक करता है, एक सुन्दरी में बदल गई है जबकि चीनी कम्युनिस्ट पार्टी एक राक्षसी में बदल गई है, तथा उसने दोटूक ऐलान कर दिया है कि अमरीका केवल च्याङ काई-शेक के साथ ही सहयोग करेगा, चीनी कम्युनिस्ट पार्टी के साथ नहीं। बेशक, यह केवल हरले का अपना खुद का मत नहीं है, बल्कि अमरीका सरकार के एक समूचे ग्रुप के लोगों का मत है। यह एक गलत और खतरनाक मत है। इस अवसर पर रूजवैल्ट की मृत्यु हो गई है और हरले हर्षोल्लास के साथ छुङकिङ स्थित अमरीकी

दूतावास में लौट आया है। अमरीका की चीन सम्बन्धी नीति का, जिसका प्रतिनिधित्व हरले करता है, खतरा यह है कि वह क्वोमिन्ताङ सरकार को और अधिक प्रतिक्रियावादी बनने का बढ़ावा देती है तथा चीन के गृहयुद्ध के संकट में बढ़ोतरी करती है। अगर हरले की नीति जारी रही, तो अमरीका सरकार चीनी प्रतिक्रियावाद के गहरे सड़ांधभरे गड्ढे में फंस जाएगी, जिसमें से बाहर निकलना उसके लिए असम्भव हो जाएगा; वह दसियों करोड़ जागृत अथवा जागृत हो रही चीनी जनता से दुश्मनी मोल ले लेगी तथा वर्तमान काल में जापानी-आक्रमण-विरोधी युद्ध के लिए और भविष्य में विश्वशान्ति के लिए बाधक बन जाएगी। क्या यह स्पष्ट नहीं है कि उसका यही अनिवार्य परिणाम होगा? अमरीकी लोकमत का एक अंश, जिसे चीन के भविष्य के बारे में स्पष्टतया यह दिखाई देता है कि चीनी जनता की स्वाधीनता, आजादी और एकता की मांग करने वाली शक्तियां अदम्य हैं और वे अनिवार्य रूप से प्रस्फुटित होंगी और विदेशी व सामन्ती उत्पीड़न पर हावी हो जाएंगी, चीन के प्रति हरले जैसी नीति के खतरों के बारे में चिन्तित है और उसे बदलना चाहता है। अभी हम यह नहीं कह सकते कि अमरीकी नीति बदलेगी भी अथवा नहीं और यदि बदलेगी तो कब। लेकिन हम निश्चित रूप से यह कह सकते हैं कि यदि चीन की जन-विरोधी शक्तियों को सहायता देने और शह देने तथा इतनी व्यापक चीनी जनता से दुश्मनी मोल लेने की हरले की नीति बिना किसी तब्दीली के जारी रही, तो अमरीका की सरकार और जनता भारी बोझ से लद जाएगी तथा बेअन्त मुसीबतों में डूब जाएगी। यह बात अमरीकी जनता को समझा देनी चाहिए।

कामरेड विलियम जेड० फोस्टर के नाम तार

२६ जुलाई १९४५

कामरेड विलियम जेड० फोस्टर तथा संयुक्त राज्य अमरीका की कम्युनिस्ट पार्टी की राष्ट्रीय कमेटी :

हमें यह जानकर खुशी हुई है कि अमरीकी कम्युनिस्ट राजनीतिक संघ के विशेष सम्मेलन में ब्राउडर की संशोधनवादी यानी आत्मसमर्पणवादी कार्यदिशा[1] का परित्याग करने और मार्क्सवादी नेतृत्व की पुनर्स्थापना करने का फैसला किया गया है तथा अमरीकी कम्युनिस्ट पार्टी का पुनरुद्धार किया गया है। अमरीका के मजदूर वर्ग और मार्क्सवादी आन्दोलन की इस महान विजय पर हम आपको हार्दिक बधाई देते हैं। ब्राउडर की समूची संशोधनवादी-आत्मसमर्पणवादी कार्यदिशा (जो उसकी पुस्तक "तेहरान" में पूरी तरह अभिव्यक्त हुई है) सार रूप में अमरीका के मजदूर आन्दोलन पर प्रतिक्रियावादी अमरीकी पूंजीपति ग्रुपों के प्रभाव को प्रतिबिम्बित करती है। ये ग्रुप अब अपना प्रभाव चीन में भी फैलाने की भरपूर कोशिश कर रहे हैं; ये ग्रुप क्वोमिन्ताङ के भीतर मौजूद प्रतिक्रियावादी गुट की गलत नीति का, एक ऐसी नीति का जो राष्ट्र और जनता के हितों के विरुद्ध है, समर्थन कर रहे हैं, और इस प्रकार चीनी जनता

के सामने गृहयुद्ध का गम्भीर खतरा पैदा कर रहे हैं तथा हमारे दोनों महान देशों, चीन और अमरीका, की जनता के हितों को हानि पहुंचा रहे हैं। इसमें जरा भी सन्देह नहीं कि अमरीकी मजदूर वर्ग और उसके हिरावल दस्ते अमरीकी कम्युनिस्ट पार्टी द्वारा ब्राउडर की संशोधनवादी-आत्मसमर्पणवादी कार्यदिशा पर प्राप्त की गई विजय उस महान कार्य में जिसमें चीनी जनता और अमरीकी जनता जुटी हुई हैं, जापान के खिलाफ युद्ध जारी रखने तथा युद्ध के बाद एक शान्तिपूर्ण और जनवादी विश्व का निर्माण करने के कार्य में उल्लेखनीय योगदान करेगी।

नोट

[1] अर्ल ब्राउडर १९३० से १९४४ तक संयुक्त राज्य अमरीका की कम्युनिस्ट पार्टी का महासचिव रहा। दूसरे विश्वयुद्ध के दौरान, अमरीकी कम्युनिस्ट पार्टी के भीतर मौजूद दक्षिणपंथी विचार, जिनका प्रतिनिधित्व ब्राउडर करता था, एक मार्क्सवाद-विरोधी संशोधनवादी-आत्मसमर्पणवादी कार्यदिशा में विकसित हो गए। दिसम्बर १९४३ से ब्राउडर ने अपने अनेक भाषणों व लेखों में इस कार्यदिशा की पैरवी की, तथा अप्रैल १९४४ में उसने अपने दक्षिणपंथी अवसरवादी प्रोग्राम के रूप में "तेहरान" प्रकाशित कराया। इस बुनियादी लेनिनवादी स्थापना में संशोधन करके कि साम्राज्यवाद इजारेदार, सड़ा-गला और मरणासन्न पूंजीवाद है, तथा इस बात से इनकार करते हुए कि अमरीकी पूंजीवाद का स्वरूप साम्राज्यवादी है, ब्राउडर ने ऐलान किया कि अमरीकी पूंजीवाद में "एक युवा पूंजीवाद की कुछ विशेषताएं अब भी मौजूद हैं" ("युवा" शब्द को ब्राउडर ने इटेलिक्स में रखा है), तथा अमरीका के सर्वहारा वर्ग और बड़े पूंजीपतियों के वर्ग के बीच "मुश्तरका हित" मौजूद हैं।

इस प्रकार उसने इजारेदार ट्रस्टों की व्यवस्था की हिफाजत करने की पैरवी की तथा वह वर्ग-समन्वय के जरिए अमरीकी पूंजीवाद को उसके अनिवार्य संकट से बचाने का सपना देखने लगा। अमरीकी पूंजीवाद के बारे में इस बेहूदा मूल्यांकन को आधार बनाकर तथा इजारेदार पूंजी के साथ वर्ग-सहयोग करने की अपनी आत्मसमर्पणवादी कार्यदिशा का अनुसरण करते हुए, ब्राउडर ने मई १९४४ में अमरीकी सर्वहारा वर्ग की पार्टी – अमरीकी कम्युनिस्ट पार्टी को भंग करने की कार्यवाही की अध्यक्षता की तथा अमरीकी कम्युनिस्ट राजनीतिक संघ के नाम से एक गैरपार्टी संगठन की स्थापना कर दी। ब्राउडर की गलत कार्यदिशा का अमरीकी कम्युनिस्ट पार्टी के अनेक सदस्यों ने कामरेड विलियम जेड० फोस्टर की अगुवाई में शुरू से ही विरोध किया। कामरेड फोस्टर के नेतृत्व में कम्युनिस्ट राजनीतिक संघ ने जून १९४५ में एक प्रस्ताव स्वीकार किया जिसमें ब्राउडर की कार्यदिशा की निन्दा की गई। जुलाई में उक्त संघ ने एक विशेष राष्ट्रीय सम्मेलन बुलाया तथा यह फैसला किया कि इस कार्यदिशा को पूरी तरह खत्म कर दिया जाए और अमरीकी कम्युनिस्ट पार्टी की फिर से स्थापना की जाए। फरवरी १९४६ में ब्राउडर को पार्टी से निकाल दिया गया क्योंकि वह अपने उस दृष्टिबिन्दु पर अड़ा रहा जिसमें सर्वहारा वर्ग के प्रति गद्दारी की गई थी, तथा क्योंकि उसने ट्रूमैन सरकार की साम्राज्यवादी नीति का खुल्लमखुल्ला समर्थन किया और पार्टी के खिलाफ गुटपरस्ती की कार्यवाहियां कीं।

जापानी हमलावरों के खिलाफ युद्ध का अन्तिम दौर

९ अगस्त १९४५

सोवियत सरकार द्वारा ८ अगस्त को जापान के खिलाफ युद्ध का ऐलान किए जाने का चीनी जनता हार्दिक स्वागत करती है। सोवियत संघ की इस कार्यवाही से जापान-विरोधी युद्ध की अवधि में काफी कटौती हो जाएगी। यह युद्ध अपने अन्तिम दौर में पहुंच चुका है तथा जापानी आक्रमणकारियों और उनके तमाम पालतू कुत्तों को अन्तिम रूप से परास्त करने का समय आ पहुंचा है। ऐसी परिस्थिति में चीनी जनता की समस्त जापान-विरोधी शक्तियों को चाहिए कि वे सोवियत संघ और अन्य संश्रयकारी देशों की फौजी कार्यवाहियों के साथ घनिष्ठ और कारगर तालमेल कायम करते हुए एक राष्ट्रव्यापी प्रत्याक्रमण शुरू कर दें। आठवीं राह सेना, नई चौथी सेना और जनता की अन्य सशस्त्र सैन्य-शक्तियों को चाहिए कि वे हर मौके का फायदा उठाकर उन तमाम आक्रमणकारियों और उनके पालतू कुत्तों पर व्यापक रूप से हमला करें जो आत्म-समर्पण करने से इनकार करते हैं, इन दुश्मनों की शक्तियों को नष्ट-भ्रष्ट कर दें, इनके हथियारों व सामग्री को अपने कब्जे में कर लें तथा भरपूर शक्ति से मुक्त क्षेत्रों का विस्तार करें और दुश्मन द्वारा

अधिकृत क्षेत्रों को घटा दें। हमें साहस के साथ सशस्त्र कार्यदल संगठित करने चाहिए, जो सैंकड़ों-हजारों की तादाद में शत्रु के पृष्ठभाग के बिलकुल पिछले इलाकों में घुस जाएं, जनता को संगठित करें, दुश्मन की संचार-पंक्तियों को तहस-नहस कर दें तथा नियमित सेना के साथ तालमेल कायम करके युद्ध करें। हमें साहस के साथ दुश्मन द्वारा अधिकृत क्षेत्रों की कोटि-कोटि जनता को जागृत करना चाहिए तथा तुरन्त भूमिगत सैन्य-शक्तियों को संगठित करना चाहिए, ताकि सशस्त्र विद्रोहों की तैयारी की जा सके और बाहर से हमला करने वाली सेनाओं के साथ तालमेल कायम करके दुश्मन को नेस्त-नाबूद किया जा सके। इस बीच मुक्त क्षेत्रों को सुदृढ़ बनाने के कार्य की भी उपेक्षा नहीं करनी चाहिए। मुक्त क्षेत्रों की १० करोड़ जनता के बीच तथा मुक्त होने वाले अन्य सभी क्षेत्रों की जनता के बीच, हमें इस साल जाड़ों में और अगले साल वसन्त में व्यापक रूप से लगान और सूद कम करना चाहिए, उत्पादन बढ़ाना चाहिए, जनता की राजनीतिक सत्ता और जनता की सशस्त्र सैन्य-शक्तियों का निर्माण करना चाहिए, मिलिशिया के कार्य में बढ़ोतरी करनी चाहिए, सेना के अनुशासन को मजबूत बनाना चाहिए, सभी तबकों की जनता के संयुक्त मोर्चे का दृढ़ता से विकास करना चाहिए तथा जनबल और भौतिक साधन-स्रोतों के अपव्यय से बचना चाहिए। इन सब बातों का मकसद यह है कि हमारी सेना द्वारा दुश्मन पर किए जाने वाले आक्रमण में और अधिक जोर पैदा किया जाए। समूचे देश की जनता को चाहिए कि वह सतर्कता से गृहयुद्ध के खतरे की रोकथाम करे तथा एक जनवादी मिलीजुली सरकार बनाने की भरसक

कोशिश करे। चीन का राष्ट्रीय मुक्ति युद्ध एक नई मंजिल में पहुंच गया है, और समूचे देश की जनता को चाहिए कि वह अपनी एकता को मजबूत बनाए तथा अन्तिम विजय के लिए संघर्ष करे।